Ath Kenopanishbhadashantaram Prabhyeta

G. K. V.
HARDWAR

॥ अथ केनोपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

॥ १ ॥ ॐ नमःपरमात्मने ॥ अबसामवेदकीकेनउपनिषत्केअर्थकूं दिखावेहैं ॥ केनउपनिषत्कानामही तलवकारहै ॥ कोईएकमुमुक्षु इसलोककेभोगोंसें तथापरलोककेभोगोंसें विरक्तहूआ याप्रकारके विवेककूं प्राप्तभया ॥ जो आत्मानित्यहै तासेंभिन्नसर्वप्रपंचअनित्यहै ॥ और शमदमादिकसाधनोंसहित तथा उत्कटमोक्षकीइच्छासहितहूआ ब्रह्मश्रोत्रिय तथा ब्रह्मनिष्ठगुरुको शरणकूंप्राप्तभया ॥ गुरुशिष्यद्वाराकथनसें ब्रह्मविद्या शीघ्रबुद्धिमै स्थितहोवेहै ॥ ऐसे भाष्यकारश्रीशंकराचार्यजीनेलिखाहै ॥ तिनकेअनुसारहमनेभी अवतरणिकाकिंचित् दिखाईहै ॥ अब उपनिषत्के अक्षरोंकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ शिष्यप्रश्नकरेहै ॥ हेगुरो यहमन किसकरिप्रेरणकरा आपने अनुकूलपदार्थमै प्राप्तहोवेहै ॥ और किसीचेतनप्रेरकबिनातौ याजडमनकीस्वतंत्रप्रवृत्तिबनेनहीं ॥ जबी स्वतंत्रअंगीकारकरें ॥ तौअनर्थकेहेतुकूं जानकरिभी दुष्टसंकल्पकूंकरेहै ॥ सोक्लेशदातासंकल्प नहींकरनाचाहिये ॥ यातें इसमनकाकौनप्रेरकहै यहकृपाकरिकहो ॥ और हेगुरो जिसप्राणविना किसीइंद्रियकीचेष्टाहोवेनहीं ऐसामुख्यप्राणकिसकाप्रेराभया चलेहै॥ यहप्राण जड भौतिक परिच्छिन्न सक्रियहोनेसें अनात्माहै ॥ यातें इसप्राणकाप्रेरककृपाकरिकहो ॥ और जिसवाक्इंद्रियकरि सर्वप्राणी शब्दकूंउच्चारणकरेहैं ॥ सोवाक्इंद्रिय किसकरिप्रेराभया नानाप्रकारके संस्कृतभाषादिशब्दोंकूं उच्चारणकरेहै ॥ तथाश्रवणइंद्रिय किसदेवकरिप्रेराभया नानाप्रकारके शब्दकूंश्रवणकरेहै ॥ तथा नेत्रइंद्रिय किसदेवकरिप्रेराभया नानाप्रकारके हरितपीतादिरूपकूंदेखेहै ॥ रसना रसकूंग्रहणकरेहै ॥ घ्राणइंद्रियगंधकूं ग्रहणकरेहै ॥ त्वक् स्पर्शकूंग्रहणकरेहै ॥ ऐसेअन्यइंद्रियमैभीजानना ॥ स्थूलसूक्ष्मसंघातका प्रेरककौनहै यहकृपाकरिकहो ॥ १ ॥ ऐसे शिष्यकेप्रश्नकूंसुनकरि गुरुउपदेशकरेहैं ॥ हेशिष्य जोतुमनेश्रोत्रमनआदिकोंकाप्रेरकपूछाहै ॥ सो आत्माश्रोत्रकाश्रोत्रहै मनकामनहै वाक्कावाक्है प्राणकाप्राणहै नेत्रोंकानेत्रहै ॥ तात्पर्ययहहै ॥ जोमनप्राणादिक आत्माकीसत्तास्फु

सूर्यभगवान् उदयहूआ चक्षुआदिकोंकाअनुग्रहकरताहै इत्यादिकथनसें चक्षुआदिरूपबाह्यअधिभूतकूं मुख्यप्राणसूर्यआदिरूपसें धार
॥ ५ ॥ णकरेहै यहसूचनकरा ॥ औरअन्यश्रुतिमैंयहकहाहै सोप्राणहीचक्षुवाक्मनश्रोत्रादिरूपसेंस्थितहोवेहै याकथनसें चक्षुआदिअध्यात्म
काधारणकहा ॥ हेआश्वलायन जोपुरुषं पूर्वकहीरीतिसें प्राणकूंउत्पत्ति आदिसें ... ॥ सोज्ञातापुरुष यालोकमै पुत्रपौत्रादिकों
केवियोगकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरशरीरकूंत्यागकरि प्राणसायुज्यरूप अमृतभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ उक्तअर्थकूंही संक्षेपसें यहमंत्रकहेहै ॥ जोपु
रुष प्राणकीउत्पत्ति परमात्मासेंजानेहै ॥ कर्मकरियाशरीरमैंस्थितिकूंजानेहै ॥ तथाप्राणसर्वकास्वामीहै तथाप्राणअपानादिपंचरूपसें स्थि
तहै ॥ तथाबाह्यआदित्यादिरूपसें अध्यात्मनेत्रादिरूपसें स्थितिकूंजानताहूआ सोपुरुष प्राणसायुज्यरूप अमृतत्वकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे
आश्वलायनऋषि श्रवणकरितूर्ष्णींकूंप्राप्तभया ॥ अबगार्ग्यनामा सौर्यायणिऋषि प्रश्नकरेहै ॥ गार्ग्यउवाच ॥ हेभगवन् याशरीरमैकौन
शयनकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोजागताहोगा सोई शयनकरेगा यातेंजाग्रतकिसकाधर्महै ॥ १ ॥ औरयाशरीरमै कौनजागरितकूंप्राप्तहोवेहै ॥
अर्थयह ॥ शरीरकीअवस्थात्रयमै रक्षाकौनकरेहै सावधानहूआही याशरीरकीरक्षाकरेगा यातेंजागरितकूं कौनप्राप्तहोवेहै ॥ २ ॥ और
कौनस्वप्नोंकूंदेखेहै ॥ अर्थयह ॥ जोस्वप्नमै सावधानरहेगा तिसीकेआश्रयस्वप्नहोगा यातेंस्वप्नकाआश्रय कौनहै यहप्रश्नहै ॥ ३ ॥ और
सुषुप्तिअवस्थामै कौनसुखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अर्थयह ॥ सुषुप्तिमैजोरहेगा तिसीकूंसुषुप्तीका सुखप्राप्तहोगा ॥ औरतामैही सुषुप्तिकीआश्रयताहो
गी यातेंसुषुप्तिकाआश्रयकौनहै ॥ यहचतुर्थप्रश्नहै ॥ ४ ॥ औरसुषुप्तिमै सर्वप्राणादिक किसमैस्थितहोवेहैं ॥ याप्रश्नसें अवस्थात्रयरहित तुरी ॥ २१ ॥
यअक्षरकूंपूछा ॥ ऐसेप्रश्नोंकाअभिप्रायहै ॥ ५ ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेगार्ग्य जैसेसूर्यकेअस्तहोनेकालमै जेतीसूर्यकीयांकिरणांहैं तेसर्व
सूर्यमैलयभावकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ जबीसूर्यउदयहोवे तबीपुनः तेकिरणां उदयहोवेहैं ॥ तैसे नेत्रादिकोंकाप्रकाशकजोमन है सोमनसुषुप्तिमै

रिके किसद्वारसें तथाकिसवृत्तिसें तथाकिसनिमित्तसें प्राणनिकसेहै याप्रश्नमैंदोप्रथमअंशोंकाउत्तरकहदीया ॥ सुषुम्नानाडीरूपद्वारसें तथाउदानवृत्तिसेंनिकसेहै ॥ ऐसेप्रथमदोअंशोंकाउत्तरकहिकरि अबकिसनिमित्तसेंनिकसेहै यातृतीयअंशकाउत्तरकहेहैं ॥ हेआश्वलायन जापुरुषनेपुण्यकर्मकरेहैं तापुरुषकूं उदाननामाप्राण स्वर्गादिऊर्ध्वलोककूं लेजावेहै ॥ औरजापुरुषने पापकर्मकरेहैं ॥ तापुरुषकूं सोउदान नरकादिनीचलोककूं प्राप्तकरेहै ॥ जापुरुषनेपुण्यपापमिश्रितकर्मकरेहैं तापुरुषकूं मानुष्यलोकमैं सोउदाननामाप्राण, प्राप्तकरेहै ॥ ४ ॥ अबबाह्य अधिदैवरूपजगत्कूं तथाअधिभूतरूपबाह्यजगत्कूं कैसेधारणकरेहै तथाअध्यात्मजगत्कूं कैसेधारणकरेहै यापंचम तथाषष्ठ प्रश्नकाउत्तरकहेहैं ॥ हेआश्वलायन बाह्यजोआदित्यरूप अधिदैवप्राणहै यहबाह्यअध्यात्मरूपजगत्काधारणकरेहै ॥ यहआदित्यरूपप्राण उदयहूआ नेत्रोंमैंस्थितअध्यात्मप्राणकूं घटादिज्ञानमैं उपकारकरेहै औरपृथिवीमैंअभिमानी जोप्रसिद्धअग्निदेवताहै सोयहदेवता पुरुषकोअपानवृत्तिकूं आपनेआधीनकरिकेवर्त्तेहै ॥ तिसदेवताविना शरीरभारीहोनेसेंगिरपडेवाआकाशमैं उपरिचलाजावे नीचेनगिरना वाउपरिनजाना यहकेवलअग्निरूप पृथिवीकीहीकृपाहै ॥ पुरुषकेशरीरमैंजोसमानवायुहै ॥ सोसमानवायु आकाशस्थ बाह्यवायुरूप है ॥ जोबाह्यपृथिवी स्वर्गकेमध्यमैंस्थितहूआ अंतर समानवायुउपरिअनुग्रहकरेहै ॥ सोसामान्यरूपसें बाह्यव्यापकवायुहै सोव्यानरूपहै ॥ व्यानभी सर्वनाडीयोंमैंव्यापकहै व्यापकतासेंहीबाह्यवायुकूंव्यानरूपकह्या ॥ सोसामान्यरूपसें बाह्यवायु व्यानकेउपरिअनुग्रहकरताहूआवर्तेहै ॥ जैसेउदान ऊर्ध्वगमनकरेहै तैसेबाह्यतेजभी ऊर्ध्वगमनकरेहै ॥ याततेंजउदानरूपहै ॥ बाह्यतेजकीकृपासेंही उदान याशरीरमैंवर्त्तताहै ॥ जबयहशरीर शीतलहोइ जावे तबयाकूं लोकमरणेवालाजानेहैं ॥ तबमनमैं वागादिकइंद्रियसर्व मिलजावेहैं ॥ तामनसहितइंद्रियोंकरि यहजीवअन्यशरीरकूंप्राप्तहोवेहै ॥ मरणकालमैं याजीवका जाशुभशरीरमैं वाअशुभशरीरमैं चित्तहोवेहै प्राणतिंकारकहां आपनेआपनेकार्योंकूंकरेहै ॥ आत्माकीसत्तास्फूर्तिविना किंचित्मात्रभी करिसकतेनहीं ॥ यातेंहीश्रुतिमाताने इंद्रि

पहूआ मुख्यप्राण सूर्यअग्निआदिकबाह्य अधिदैवकूंधारणकर्त्ताहै ॥ सूर्यआदिरूपमेंस्थितहोनाही तिनसूर्यआदिकोंकाधारणहै ॥ और यहप्राण

बाह्यअधिदैव तथा अधिभूतकूं कैसेधारणकरेहै ॥ ५ ॥ औरयहप्राणअध्यात्मकूंकैसेधारणकरेहै ॥ ६ ॥ याप्रश्नोंकाहमकूं आपउत्तर
॥ ४ ॥ कहो ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेआश्वलायन तुमअतिशयकरिकेब्रह्मपरायणहो यातेंब्रह्मिष्ठहो जिसहेतुसें तुमने अतिसूक्ष्मप्रश्नकरेहैं
यातेंहीतुमब्रह्मिष्ठहो ॥ अबमैंतुमारेप्रश्नोंका उत्तरकहताहूं तुमसावधानहोइकरि श्रवणकरो ॥ यहप्राणआत्मासेंउत्पन्नहोवेहै ॥ यहप्र
थमप्रश्नकाउत्तरहै ॥ १ ॥ मनकेसंकल्पकरिकेउत्पन्नभयेजेशुभाशुभकर्महैं तिनकर्मोंकरिकेही यास्थूलशरीरमैंप्राप्तहोवेहै ॥ यहदूसरेप्रश्न
काउत्तरहै ॥ २ ॥ औरजैसेचक्रवर्तीराजा आपनेमंत्रीयोंकूं आज्ञाकरेहै ॥ इनग्रामोंमैंतुमआज्ञाकरो औरन्यायकरो ऐसेद्वितीयतृती
यादि आपनेसर्वमंत्रीयोंकूं प्रेरणकरेहै ॥ ऐसेयहप्राण सर्वनेत्रादिकोंकूं आपनेआपनेस्थानोंमै स्थापनकरिके तिनसर्वनेत्रादिकोंकूं प्रे
रणकरेहै ॥ और पायु उपस्थमैअपानरूपसें यहप्राण स्थितहोवेहै ॥ दोनेत्रदोश्रोत्र दोनासिकाएकमुख इनसप्तछिद्रोंविषे प्रधानप्राण
रूपकरिके आपप्राणस्थितहोवेहै ॥ तथामुखनासिकाद्वारा बाह्यगमनागमनकरेहै ॥ यहसमाननामाप्राण शरीरकेसर्वदेशोंमै व्यापक
होइकरिरहेहै ॥ सोसमाननामाप्राणही भक्षणकरे अन्नकूंतथापानकरेजलकूं समानकरेहै ॥ यातेंसर्वशरीरमै व्यापकरूपसेंरहेहै ॥ अब
व्यानकेआश्रयकहनेवासते प्रथमनाडीयोंकी संख्याकथनकरेहैं ॥ हेआश्वलायन हृदयदेशमै यहजीवात्मा विशेषकरिकेरहेहै ॥ याहृदय
देशमै एकसुषुम्नारूपमूलसहितएकसोएक १०१ नाडीहैं ॥ तिससुषुम्नानाडीकूं छोडकरितिनशतस्कंधनाडीयोंमैभी एकएकनाडीमै
सौसौशाखानाडीयांरहेहैं ॥ तिनसौसौशाखानाडीयोंमैभी एकएकमै बहत्तरसहस्र बहत्तरसहस्रप्रतिशाखा नाडीयांरहेहैं ॥ शाखाप्रति ॥ २८ ॥
शाखानाडीयांमिलकरि तेनाडीयां बहत्तरकोटि ७२०००००००० संख्यावालीहोवेहैं ॥ तिनसर्वमैंव्याननामाप्राणवर्तेहै ॥ औरतिनसर्वमै
जासुषुम्नानामानाडीहै ॥ ताकरिकेउदाननामाप्राणहीविचरेहै ॥ कैसाभीउदानहै ऊर्ध्वगमनकरणेकाहैस्वभावजिसका ॥ ३ ॥ इतनेक

सर्वजगतस्थितहै ॥ ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यज्ञ क्षत्रिय ब्राह्मण यहसर्व तुमारेमैंस्थितहैं ॥ प्रजापति विराट्तुमही तुमहीमाताके गर्भमैंप्रथमस्थितहोइकरि उत्पन्नहोतेहो ॥ जोतुमप्राणरूपकरि याशरीरमैंस्थितहोतुमारेवासते यहमनुष्यादिसर्वजीव नेत्रादिकोंकरि रूपादिकोंकेज्ञानरूपबलीयोंकूंदेवेहैं ॥ हेप्राण देवतावोंमै हविकेभक्षणकरणेहारा जोश्रेष्ठअग्निहै सोतुमारास्वरूपहै ॥ पित्रोंकाअन्नभी तुमहो ॥ इंद्रियोंकेमध्यमै जोश्रेष्ठतुमप्राणहो तुमारेकरिकेही याशरीरकीचेष्टाहोवेहै ॥ हेप्राण तुमहीपरमेश्वरहो औरशिवरूपहूए आपनेबलकरियाजगतकानाशकरतेहो ॥ औरविष्णुरूपसें जगतकीपालनाकरतेहो ॥ औरसर्वज्योतियोंकेपतिसूर्यरूपसें अंतरिक्षमै विचरतेहो ॥ औरहेप्राण जबीतुममेघरूपहोइकरिवर्षाकरतेहो तबअन्नबहुतहोवेहै ॥ ताअन्नकूंप्राप्तहोइकरि यहसर्वतेरीप्रजासुखकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेप्राण तुमस्वभावसेंशुद्धहो ॥ अथर्वणवेदकेवेत्ताजेऋषिहैं तिनकेअग्निकानाम एकर्षीहै ॥ हेप्राण एकर्षिअग्नि हविभ क्षणकर्तातुमहो ॥ याजगतकेश्रेष्ठपतितुमहो ॥ हमश्रोत्रादि तुमारेकूंहविदेनेहारेहैं ॥ हेप्राण तुम हमारेसर्वकेपिताहो ॥ हमारेअप राधकूंआप क्षमाकरो ॥ जातुमारीमूर्त्तिवाकमैंस्थितहै औरजाश्रोत्रमैं तथानेत्रोंमैंस्थितहै तथाजा तुमारी मूर्त्ति मनमैंस्थितहै ॥ तामूर्त्तिकरिही सर्वहमारेमैंबलहै ॥ तामूर्त्तिकूं कृपाकरि मतिनिकासो ॥ तामूर्तिकरिही हमारासर्वका कल्याणहै ॥ हमसर्व आपके किंकरहैं ॥ हेप्राण हमबहुतक्याकहैं जोस्वर्गमैंभीपदार्थहैं तिनसर्वकेआपरक्षकहो ॥ जैसेमातापुत्रोंकीरक्षाकरेहै तैसेतुम हमारीरक्षा करो ॥ हमारीधनादिरूपजा श्रीहै ताकीरक्षाकरो तथाताश्रीकीरक्षावास्ते हमारेतांई बुद्धिकादानकरो ॥ ऐसेअन्यश्रोत्रादिरूपदेवता प्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥ यातेंप्राणहीसर्वसेंश्रेष्ठहै ॥ ऐसेभार्गवऋषिश्रवणकरि तूर्ष्णींकूंप्राप्तभया ॥ तिसकेअनंतर आश्वलायननाम वाला कौशल्यऋषि प्राणकेउत्पत्तिस्थिति आदिकोंकेनिर्णयवासते षट्प्रश्नोंकूंकरताभया ॥ आश्वलायनउवाच ॥ हेभगवन् याप्राणकी किससेंउत्पत्तिहोवेहै ॥ १ ॥ किसनिमित्तसें याशरीरमैंसंबंधहोवेहै ॥ २ ॥ औरयहप्राण आपनेकूंभिन्नभिन्नकरिके किसप्रकारसें

 हिमाचलकीकन्याहै ॥ अनेकस्वर्णकेभूषणोंकरिभूषितहै ॥ और जाब्रह्मविद्यारूपीउमादेवीकीकृपासें संन्यासी आपने अखंडस्वरूपकूं
जानेहैं ॥ जाउमादेवी महादेवजो कामकेनाशकरणेहाराहै ताकेसाथहीरहेहै ॥ तादेवीकूंदेखकरि इंद्रपूछताभया ॥ हेदेवी यहअंतर्धा
 नभयाजोयक्षहै सोकोनथा ॥ २५ ॥ सादेवीकहेहै ॥ हेइंद्र यहयक्षतौब्रह्मरूपहै ॥ तुमारे अभिमानकीनिवृत्तिअर्थ यक्षरूपकूं धारणकर
ताभयाहै ॥ और इसब्रह्मकीकृपाकरिकेही तुमशत्रुवोंकूं जीततेभयेहो ॥ तथापूज्यभयेहो ॥ तुमारा यश बल ऐश्वर्य सर्वताकीकृपासें
हीसिद्धहै ॥ तिसदेवीकेवाक्यकूं सुनकरि देवताभी जानतेभये ॥ जोहमारेकूं सर्वसुखतापरमेश्वरकीकृपासें प्राप्तभयाहै ॥ ऐसे देवीकी
कृपासें परमेश्वरकूंही याजगत्का उपादानतथानिमित्तकारण तेदेवता जानतेभये ॥ २६ ॥ तायक्षरूपब्रह्मकूं इंद्रदेवता तथाअग्निदेवता
तथावायुदेवता अत्यंतसमीपताकरि प्राप्तहोतेभये ॥ यातें यहतीनदेवता औरदेवतावोंसें अधिकहै ॥ २७ ॥ यातीनोंविषेभी इंद्रदेव
ताअधिकहै ॥ जिससें सोइंद्रदेवता याब्रह्मकेस्वरूपकूं उमादेवीकेमुखसें यथार्थजानताभया ॥ २८ ॥ अब ताब्रह्मके अधिदैवरूपकूं
तथाअध्यात्मरूपकूं कथनकरेहैं ॥ ब्रह्मकाअधिदैवरूपतौयहहै ॥ जोसमष्टिहिरण्यगर्भभगवान्काशरीरहै तिसहिरण्यगर्भकेसमष्टिदेहमें
जोपरमात्मा विद्युत्केसमान् प्रकाशमानहै ॥ विद्युतकाप्रकाशतौजडहै तासेंविलक्षण चेतनप्रकाश और आपनीसमीपताकरिके सर्वप्रा
णीयोंके इंद्रियोंका तथामनकाप्रेरकहै ॥ सोतत्त्वही ताब्रह्मका वास्तवस्वरूप अधिदैवरूपहै ॥ जैसेविद्युतकीउपमाब्रह्मकूंश्रुतीदेतीभयी ॥
तैसेनेत्रके निमीलनकीउपमाभी श्रुतिदेतीभयी ॥ सोदिखावेहैं ॥ नेत्रकेनिमीलनकरणेकीन्यांई आत्माकाप्रकाशहै ॥ अर्थयह ॥ जोब्र
ह्मयक्षरूपकूंधारकरि अंतर्धानताकूंप्राप्तहूआ सोविद्युतकेप्रकाशकीन्यांई तथानेत्रके निमीलनकीन्यांई अंतर्धानहोताभया ॥ २९ ॥
अब अध्यात्मरूपकूंश्रवणकरो ॥ यहमन जोसंकल्पविकल्पकरेहै सोयाआत्मासाक्षीकरिकेही संकल्पादिककरेहै ॥ मनकाविषयोंमें
गमनभी साक्षीप्रत्यग्देवकेहीआधीनहै ॥ स्वतंत्रमनकिंचित्भीकरणेकूं समर्थनहीं ॥ ऐसाअध्यात्मरूप आत्माकाहै ॥ ३० ॥ ऐसा

हूआ अग्निकेआगे एकशुष्कतृण राखकरि कहताभया ॥ तुम यातृणकूं भस्मकरो ॥ तबी ताअग्निदेवताने अतिवेगकरिके तथासर्वयत्न करिके तातृणकेदाहकरणेका उद्यमकराभी ॥ परंतु तिसतृणकेदाहकरणेकूं समर्थनभया ॥ तबीसोअग्निदेवता लज्जितहूआ तथाभयभीतहूआ तादेवतावोंकीसभामै आइकरि सर्वदेवतावोंकूं यहकहताभया ॥ मै यायक्षकेजाननेमै समर्थनहींहूं ॥ तुमआपहीनिश्चयकरो ॥ १९ ॥ ऐसे सर्वदेवता अग्निकेवचनकूंसुनकरि वायुदेवताकूं कहतेभये ॥ हेवायो तुमनिश्चयकरो यहयक्षकौनहै ॥ तथा याकाक्या अभिप्रायहै ॥ वायुदेवता तथाऽस्तु यहकहकरि यक्षभगवान्केपास आताभया ॥ २० ॥ ताकूं यक्षभगवान् पूछतेभये तूंकौनहै ॥ वायुकहेहै ॥ मै वायुहूं तथामेरानाम मातरिश्वाहै ॥ अर्थयह ॥ जो आकाशमै विचरणेहाराहूं ॥ २१ ॥ यक्षनेकहा तेरेमैक्याबलहै ॥ वायुकहेहै मेरेमै यहबलहै जोसर्वविश्वकूं आपनेकुक्षिमैगेरकरि याब्रह्मांडसें बाह्यलेजानेकूं समर्थहूं ॥ जैसे सूक्ष्मतृणकूं बालक आपने मुखमै गेरकरि कहींअन्यदेशमै लेजावेहै ॥ तैसे याजगत्कूं अन्यदेशमै लेजानेकूं मैसमर्थहूं ॥ २२ ॥ ऐसे वायुके अभिमानसहितवचनकूं सुनकरि यक्षकहेहै ॥ हेवायो तुमयातृणकूं ग्रहणकरो ॥ अग्निकीन्यांई वायुभी अपनासर्व बललगाइकरिकेभी जबीतृणके ग्रहणकरणेकूं समर्थनहींभया ॥ तबीसोवायु लज्जितहूआ तथाभयभीतहूआ देवतावोंकीसभामै आइकरि कहताभया ॥ मैया यक्षकेजाननेमै समर्थ नहींहूं ॥ २३ ॥ याप्रकारके वायुकेवचनकूं श्रवणकरि सभावासीदेवता इंद्रकूंकहतेभये ॥ हेदेवराज तुम यायक्षकेअभिप्रायकूं निश्चयकरो ॥ ऐसे देवतावोंके वचनकूंमानकरि यक्षकेपास इंद्रआताभया ॥ ताइंद्रकूं समीपआतादेखकरि यक्षभगवान् ताके विशेषअभिमाननिवृत्तिअर्थ अंतर्धानहोताभया ॥ २४ ॥ तिसकालमै देवराजइंद्र चारोंदिशावोंविषे देखताहूआ तास्थानविषेहीस्थितहोताभया ॥ और यक्षकेदेखनेकी उत्कटइच्छावालाइंद्र तथागर्वआदिकदोषरहितहूआ जादेशमै यक्षअंतर्धानहूआ तादेशमैही एक किसीअपूर्वस्त्रीकूं देखताभया ॥ कैसाहै सादेवी बहुतशोभावाली[illegible] धारणकरणेहारीहै ॥ ब्रह्मविद्या यानामकरिके जाप्रसिद्धहै ॥

दाचित् तिसउपकारकर्त्ताकूं नहींमाने ॥ तौ सोकृतघ्नपुरुष शतअयुत जन्मपर्यंत महान्दुःखकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा कोटीकल्पपर्यंत
विष्ठाविषे कृमिशरीरकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातें ऐसेकृतघ्नतादोषकी निवृत्तिअर्थ ॥ इनआपने प्रियदेवतावोंका कृतघ्नतादिक दोषोंकाज
॥ ४ ॥ नक जो गर्वहै ताकूंनिवृत्तकरूं ॥ याप्रकारकाचिंतनकरिके एकअद्भुतयक्षकेस्वरूपकूं आपनीमायाकेबलसें सोपरमात्मा धारणकरता
भया ॥ कैसाहैसोयक्ष अनंतहैंनेत्रजिसके ॥ तथा अनंतहैंमस्तकजाके ॥ तथासर्वजीवोंकेजेमुखहैं तिनसर्वमुखोंकरिसहितहै ॥ तथा
जायक्षभगवान्मै सर्वभूत भौतिक पदार्थप्रतीतहोवैहैं ॥ तथासर्वशस्त्रोंकूं तथासर्ववस्त्रोंकूं तथासर्वमालावोंकूं तथास्त्रीपुरुषनपुंसकचि
न्होंकूं धारणकरणेहाराहै ॥ ताआश्चर्यरूपयक्षभगवान्कूं देखकरि तेस्थितहूए देवता महान्आश्चर्यकूं प्राप्तहोतेभये ॥ तथा यहयक्ष कौ
नहै कौनहै याप्रकारकेवचनकूं परस्परकहतेभये ॥ भगवान्नेभी ऐसारूपदिखाया जारूपकूंदेखकरि देवतावोंकूं महान्विस्मयकी त
थाभयकीप्राप्तिभयी ॥ महान्भयकूं तथाविस्मयकूं प्राप्तहूए ॥ तिनदेवतावोंकेनेत्रउत्फुल्लहोतेभये ॥ तथारोमखडेहोतेभये ॥ कौनहै
कौनहै याप्रकारकावचनहीवारंवार कहतेभये ॥ आपनेप्रभावकूं सर्वविस्मरणकरतेभये ॥ कोईदेवता यक्षकेसमीप जानेकूंसमर्थनहीं
भया ॥ १५ ॥ तिसकेअनंतर तेसर्वदेवता मिलकरि अग्निकूंकहतेभये ॥ हेअग्ने तुमयायक्षके समीपजाइकरि निश्चयकरो जोयहयक्ष ह
मारे अनुकूलहै वा प्रतिकूलहै ॥ कैसाहै सोअग्नि जोअग्रगमनकरणेहाराहै ॥ तथा अति बुद्धिमान्है ॥ १६ ॥ सोअग्निदेवता इंद्रा
दिकोंकीआज्ञाकूंमानकरि यक्षकेसमीपजाताभया ॥ ताकूंयक्षभगवान्पूछतेभये तूंकौनहै ॥ ऐसेतायक्षकेवचनकूं श्रवणकरि अग्निदेव
ता अभिमानसहित याप्रकारकेवचनकूं कहताभया ॥ मै अग्निहूं तथामेरानामजातवेदहै ॥ जातवेदपदका अर्थयह ॥ जोधनकादाता ॥ ॥ ७ ॥
वा व्यापक ॥ वा अत्यंतबुद्धिमान्है ॥ याप्रकारकेवचनकूं सुनकरि यक्षकहेहै ॥ हेअग्ने ऐसेतुमारेमैंक्याबलहै ॥ अग्निरुवाच ॥ हेयक्ष जि
तनामूर्तिमान्पृथिवीमै दिखेहै ॥ तासर्वविश्वकूं मै अग्निदेवता एकक्षणविषे दाहकरदेवों इतनामेरेमैबलहै ॥ १८ ॥ तबीसोयक्ष मंदमंदहसता

मानेतौ ब्रह्मरूपबलहमसर्वकेहै ॥ काहेतै ब्रह्मसर्वका आत्माहै यातें हमारेसर्वशत्रुनाशकूं प्राप्तहोइजावें और हमाराही सर्वत्रजयहूआ चाहिये ॥ समाधान ॥ यद्यपि ब्रह्मतौ सर्वत्रसमहै ॥ परंतु जैसेसूर्यसर्वत्रव्यापकहूआभी सूर्यकांतमणिमै स्थितहूआ पटादिकोंकादाहकरैहै ॥ अन्यमै स्थितहूआभी दाहरूपकार्यकूं करेनहीं ॥ तैसे यहब्रह्मात्मा सर्वत्रव्यापकहूआभी संत्वगुणप्रधानदेवताकेंविषे विशेषकरिप्राप्तहोवेहै ॥ यातें तेदेवताबलवालेहूए असुरोंका नाशकरतेभये ॥ इसप्रकार तेब्रह्मवेत्तादेवताभी भोगोंविषे आसक्तहूए हमारा ब्रह्मसामर्थ्यसेंहीजयभयाहै ॥ याकूंभूलजातेभये ॥ उलटा यहमानतेभये ॥ जोहमनेआपने बलसेंही असुरोंकानाशकराहै ॥ जैसे कोई मनुष्य मरणपर्यंतदुःखकूंप्राप्तहोइके किसीकृपालुदेवता वामुनिकीकृपासें तादुःखसेंरहितहोइजावे ॥ पुनःविषयोंमै सोईपुरुष आसक्तहूआ तिनके उपकारकूं विस्मरणकरदेवे ॥ तैसे ब्रह्मबलकीकृपाकरि जयकूंप्राप्तहूएभी सर्वदेवताभोगोंमै आसक्तहोइकरि ब्रह्मकूं विस्मरणकरतेभये ॥ तिसके अनंतर रजोगुणकरियुक्तहूए तेदेवता याप्रकारकेअभिमानकूं प्राप्तहोतेभये ॥ जाअभिमानकरिपुरुषनाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ देवताकहेहैं ॥ हमाराहीविजयहै ॥ हमाराहीयशहै ॥ हमदेवताही महान्भाग्यवालेहैं ॥ हमहीसुंदरहैं ॥ रूपयौवनकरिसहितहैं ॥ हमयुद्धमैबंहुतकुशलहैं ॥ हमारेआगे राक्षसक्याहैं ॥ हमारेआगे असुरोंकाबलतुच्छहै ॥ हमारेमै शमदमादिसर्वहैं ॥ हमारेजैसाकोईभी याब्रह्मांडमैनहीं ॥ ऐसे महान्गर्वकूं तेदेवता प्राप्तहोतेभये ॥ कैसाहैगर्व जोरजोगुणसेंउत्पन्नहोनेहाराहै ॥ तथापापकीउत्पत्तिका कारणहै ॥ तथापराक्रमकां और यशकानाशकहै ॥ १४ ॥ ऐसे देवतावोंकेगर्वकूं देखकरिसोब्रह्म पिताकीन्यांई तिनदेवके हितकी इच्छाकरताहूआ इसप्रकारका चिंतनकरताभया ॥ यहदेवता मेरीकृपासेंही सर्वअसुरोंकूं जीतकरि महिमाकूंप्राप्तभयेहैं ॥ उपकारकरणेहारा जोमैब्रह्महूं ॥ ऐसेमेरेस्वरूपकूं भूलकरि कृतघ्नपुरुषकीन्यांई आपनीस्तुतिकरतेहूए मै उपकारकर्त्ताकूं सर्वथा विस्मरणकरतेभये हैं ॥ यातें यहअत्यंतमूढबालकहैं ॥ कृतघ्नतातौ महान्पापहै ॥ जोपुरुष जिसपुरुषके अनुग्रहसें उत्कृष्टताकूं प्राप्तहूआ मोहकेवशसें क

...कृतघ्नतातो महान्पापहै ॥ जोपुरुष जिससुरुषके अनुग्रहसे उत्कृष्टताकूं प्राप्तहूआ मोहकेवशसें के

निवृत्तहोनेसें आपनीसर्वरूपताकूं तथासर्वज्ञताकूं प्राप्तहूएकीन्यांईप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेकंठमैभूषणविस्मृतहूआ बो

प्तहोवेहै ॥ तैसे यहआपसेवरूपहै तथासर्वज्ञपरमात्मारूपहै आपनेज्ञानकरि आपनेस्वरूपकूंही प्राप्तहोवेहै ॥

उपदेशकूंश्रवणकरितूष्णींकूंप्राप्तभया ॥ जापुरुषकेचित्तमै अक्षरकेउपदेशकरनेसेंभी ताअक्षरपरमात्माका ज्ञानहो

र्थप्रणवकीउपासनाअबकहेहैं ॥ शैब्यनामवाला सत्यकामऋषि तापिप्पलादकेआगे याप्रकारकाप्रश्नकरेहै ॥ स

वन् पुरुषोंकेमध्यमै जोअधिकारी आपनेमरणपर्यंत ॐकाररूपप्रणवकाध्यानकरेहै ॥ सोध्यातापुरुष पृथिवीअ

ककूं प्राप्तहोवेहै ॥ याप्रकारकेप्रश्नकूं श्रवणकरि तासत्यकामकेप्रति पिप्पलादमुनि याप्रकारकाउत्तरकहेहैं ॥ पि

काम यहॐअक्षर परब्रह्महै तथाअपरब्रह्महै ॥ परब्रह्मनामअक्षरकाहै अपरब्रह्मनामप्राणस्वरूपकाहै ॥ जैसेशा

नशास्त्रमैविधानकराहै तैसेॐकारमैपरब्रह्मकातथाअपरब्रह्मकाध्यानकहाहै ॥ जोपुरुषपरब्रह्मरूपसें ॐकार

क्षरब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुषअपररूपसें ॐकारकाध्यानकरेहै सोपुरुषअपरब्रह्मरूपप्राणकूं प्राप्तहोवेहै

कारकीजाअकारमात्राहै ताकूंऋग्वेदरूपकरिकेजोपुरुष चिंतनकरेताध्यातापुरुषकूं ऋग्वेदकेअभिमानीदेवता

प्राप्तकरेहैं ॥ औरयामानुष्यलोकमै प्राप्तहूआ अधिकारीदेहमै इंद्रियसंयमरूपीतपकूं तथाब्रह्मचर्यकूं तथाश्र

उत्तमसाधनोंसें यथार्थशुद्धरूपब्रह्मकूं निश्चयकरि ताशुद्धब्रह्मस्वरूपकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ औरजापुरुष अ

दोमात्रावोंकूं यजुर्वेदरूपसें चिंतनकरेहै ॥ ताध्यातापुरुषकूं यजुर्वेदकेअभिमानीदेवता स्वर्गलोकमै प्रा

कमै अनेकप्रकारकीविभूतिकूं अनुभवकरिके यामानुष्यलोकमैही प्राप्तहोवेहै ॥ औरजोपुरुष अकारउकारमकार

कारकाचिंतनकरेहै तथाताॐकारकूं अक्षरब्रह्मरूपसेंध्यानकरेहै ॥ सोध्यातापुरुष सामवेदकेअभिमानीदेवतावोंकरि

प्र०उ० होवेहै ॥ औरध्यानकेप्रभावसें सूर्यमंडलमैंप्राप्तहूआ ब्रह्मलोकमैंप्राप्तहोवेहै तथातासें आवृत्तिकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ स्वर्गही सर्वत्रजयहूआ
मेंफलभोगअनंतर आवृत्तिहोवेहै ॥ ॐकारका ब्रह्मरूपकरि ध्यातापुरुषआवृत्तिकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरजैसे सर्पअहूआ पटादिकोंकादा
॥ ७ ॥ जानकरि त्यागकरेहै औरपुनःनवीनदूसरीत्वचासहितहोवेहै ॥ तैसे यहउपासक सर्वपापरहितहूआ ब्रह्मलोककूंधानदेवताकेंविषे विशे
लोकमै प्राप्तहोइकरि हिरण्यगर्भसें उपदेशकूंग्रहणकरि अज्ञानसेंपरे·तथा·परिपूर्णआत्माकूं प्रत्यक्षकरेहै ॥ ... गोंविषे आसक्तहूए हमारा
थनकरेहैं ॥ ॐकारकी तीनमात्राके भिन्नभिन्नध्यानकरणेहारातौ मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जोअधिकारी त...नाशकराहै ॥ जैसे कोई
करताहै ॥ सोध्यातापुरुष जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तथास्थूल सूक्ष्म कारण शरीरतथातीनशरीरोंकेअभिमानी विषयोंमै सोईपुरुष आसक्त
ष्टिशरीरअभिमानी वैश्वानर हिरण्यगर्भ ईश्वर तिनसर्वका क्रमसें अकार उकार मकारकेसाथअभेदचिंतनकरसक्तहोइकरि ब्रह्मकूं विस्म
प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरयाॐकार उपासनाकी विशेषरीतितौ मांडूक्यउपनिषत्मैकहेंगे ॥ ईहांश्रुतिमै रीतिमात्रमानकरिपुरुषनाशकूंप्राप्त
केभयसें हमनेअधिकअर्थलिखानहीं ॥ ऐसेहीपूर्वउक्तअर्थकेकहनेहारेदोमंत्रोंके अर्थकूंकहेहैं ॥ अकारमात्राके... ॥ रूपयौवनकरिसहित
दकेअभिमानीदेवता यामानुष्यलोकमै प्राप्तकरेहैं ॥ तथाअकारउकाररूपदोमात्राकेध्यानसें यजुर्वेदकेअभिमानीसर्वहैं ॥ हमारेजैसाको
हैं ॥ औरॐकारकूं तीनमात्रासें ध्यानकर्त्तापुरुष ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताकूं सामवेदकेअभिमानीदेवता ॥ तथापापकीउत्पत्ति
औरहिरण्यगर्भकेउपदेशसें शांतब्रह्म तथाअजर अमृत अभयब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अथवाईहांमानुष्यलोकमैंही ध्यांई तिनदेवके हितकी
सभया पुरुष अजर अमर ब्रह्मकेउपदेशसें ताब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे सत्यकामऋषि उपदेशकूंग्रहणकरि तूष्णींभयेहैं ॥ उपकारकर
अनंतर भरद्वाजकापुत्रहोनेसें भारद्वाजनामवाला सुकेशाऋषिप्रश्नकरेहै ॥ सुकेशाउवाच ॥ हेभगवन् हिरण्यनाभ... तथा विस्मरणकरतेभये
शका राजाक्षत्रिय मेरेकूंप्राप्तहोइकरि यहपूछताभया ॥ हेभारद्वाज तुम षोडशकलाकेपुरुषकूंजानतेहैं तौताकू ...हूआ मोहकेवशसें क

राजक्षत्रिय मेरेकूंप्राप्तहोइकार यहपूछताभया ॥ हेभारद्वाज तुम षोडशकलावालेपुरुषकूंजानतेहैं तौताप्र ... आ. मोहकेवंशसे के

॥ इति केनोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥

साक्षीआत्माकास्वरूपही बनेहै ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीपुरुषोंकरिके भजनीयहै ॥ जोपुरुषवनं इसनामकरिके ताब्रह्मकूंध्यानधा
है ॥ सर्वभूत आराधनकरणेवासते तापुरुषकीइच्छाकरतेहैं ॥ ३१ ॥ ऐसे अध्यात्म अधिदैव रूपकरि आचार्यनेशिष्यकूं उपदेशकरा ॥
अब उक्तअर्थका प्रश्न उत्तरद्वारा निरूपणकरेहैं ॥ हेगुरो मेरेकूं उपनिषत्श्रवणकरावो ॥ गुरुकहेहैं हेशिष्य ब्रह्मकेस्वरूपकूं कथनकरणे
हारी उपषित् तेरेकूं हमपूर्वकथनकरिआएहै ॥ ३२ ॥ साधनतो ताब्रह्मविद्याके यहहैं ॥ तपब्रह्मविद्याकीप्राप्तिमै साधनहै ॥ तपका
अर्थ इसस्थानमैयहहै ॥ जोमनकीएगाग्रता ॥ तथादमभी ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिमैसाधनहै ॥ दमका अर्थ यहजोबाह्यनेत्र श्रोत्र आदिक
इंद्रियोंकीस्ववशता ॥ तथाजेनिष्कामकर्महैं तेभीअंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ब्रह्मविद्याकेउत्पादकहैं ॥ तप दम कर्म यहतीनब्रह्मविद्याकेप्र
तिष्ठाहैं ॥ प्रतिष्ठाकहीये स्थितिकेहेतु याप्रसंगमैपादलेने ॥ ऋग् यजुर् साम अथर्व यहच्यारिवेद ब्रह्मविद्याकेअन्यअंगहैं ॥ सर्वदास
त्यवचनकाकथन यहब्रह्मविद्याकाआयतनहै ॥ अर्थयह ॥ जोयाकेआश्रयब्रह्मविद्यारहेहै ॥ सत्यवचनकहनायहहीपरमधर्म शास्त्रमै
प्रसिद्धहै ॥ यातें सत्यवक्तापुरुषमै विद्यारहेहै ॥ ३३ ॥ जोअधिकारी याब्रह्मविद्याकूं प्राप्तहोवेहै सोपुरुष सर्वपापोंकूं तथासर्वअनर्थ
केकारण अज्ञानकूं निवृत्तकरि परमब्रह्मानंदमै स्थितिकूंपावेहै जोआनंदसर्वथाअविनाशीहै ॥ ३४ ॥ ॐशांतिःशांतिःशांतिः ॐतत्स
त् ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामि अच्युतानन्दगिरि
विरचितेप्राकृतोपनिषत्सारे तलवकारार्थनिर्णयः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ इति ईशोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥

13

र्भकूंप्राप्तहोवें ॥ कर्मतथाउपासनाकेसंस्कारसहित जोयहमेरालिंगशरीरहै सोयहलिंगशरीर यास्थूलशरीरसेंबाह्यगमनकरे ॥ और यहमेरास्थूलशरीर भस्मीभावकूंप्राप्तहोवे ॥ मैस्थूलशरीरसेंभिन्नहूं ॥ यहपंचभूतोंकाकार्यदेह मेरास्वरूपनहींहै ॥ अब मरणकालमैं उपासक आपनेमनकूंकहेहै ॥ हेमन पूर्वजादेशमैं तथाजाकालमैं जिसपदार्थकूं तूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ तिसपदार्थकूं तूं संकल्पसहि तकर्मकरिकेहीप्राप्तहोताभयाहै ॥ संकल्पसहितकर्मोंसेंविना किंचित मात्रभीप्राप्तभयानहीं ॥ इसप्रकारकासंकल्पका तथाकर्मकाप्र भाव अबीकिसवासते तुमनेविस्मरणकराहै ॥ विहितउपासना तथाविहितकर्मकेस्मरणकाकालप्राप्तभयाहै यातें जेतुमनेबाल्यादिअव स्थाविषे विहितकर्म तथाविहितउपासनाकरेहैं तिनकूंस्मरणकरो ॥ १७ ॥ ऐसेमनकूं वारंवारकहिकरि अबअग्निदेवताकेआगेप्रार्थ नाकरेहै ॥ हेअग्ने आपहमारेकूं सुखकेभोगवासते देवयानमार्गकरिकेब्रह्मलोकविषेलेचलो कैसाहैदेवयानमार्ग जोप्रकाशमान तथा सर्वदुःखसेंरहितहै ॥ और पापीजेकामक्रोधादिकहमारेशत्रुहैं तिनकानाशकरो ॥ जेहमनेशुभकर्म औरउपासनाकरेहैं तिनकूंजानक रि हमारेकूंब्रह्मलोकविषेलेचलो ॥ और आपकेउपकारकूंहम निवृत्तनहींकरिसकते ॥ यातें हम अधिकारीजनोंका आपकेतांईवारं वारनमस्कारहोवे ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॐ तत्सत् ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशि ष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामि अच्युतानन्दगिरिविरचितेप्राकृतोपनिषत्सारे ईशावास्यार्थनिर्णयः ॥ १ ॥

ऐसे बुद्धिमान् आचार्योंकेवचनकूं हमनेश्रवणकराहै ॥ जेकृपालुआचार्यहमारेकूं कृपाकरिकेवचनकहतेभये ॥ १० ॥ जोपुरुष क
र्मतथाउपासनाकूं साथहीकरताहै ॥ सोपुरुष निषिद्धकर्मरूपमृत्युकूं त्यागकरि देवभावरूप अमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ११ ॥ कार्यउपास
नातथा कारणउपासनाके समुच्चयविधानअर्थ भिन्नभिन्नकार्यउपासनाका तथाकारणउपासनाकानिरोधकरेहैं ॥ जेपुरुष कारण अ
व्याकृतनाममायाकीउपासनाकरतेहैं ॥ तेपुरुष अदर्शनरूप तमकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ जेपुरुषहिरण्यगर्भनामकार्यकीउपासनाकरतेहैं ॥ तेपु
रुष अधिकघोरतमकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ १२ ॥ अब एकएक अवयवउपासनाकाफलप्रतिपादनकरेहैं ॥ हिरण्यगर्भरूपकार्यकीउपासनासें
अणिमादि ऐश्वर्यरूपफलप्राप्तहोवेहै ॥ कारणरूपमायाकीउपासनासें मायामैलयरूपफलप्राप्तहोवेहै ॥ जैसे सुषुप्तिमैलयहोनेसें विक्षे
पकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैसे मायामैलयहोनोभीफलसंभवेहै ॥ ऐसे बुद्धिमान् आचार्योंकेवचनकूं हमनेश्रवणकराहै ॥ जे आचार्य हम
मुमुक्षुजनोंकूं कहतेभये ॥ १३ ॥ जोपुरुष कार्यउपासनाकूं तथाकारणउपासनाकूं मेलकरिकरताहै ॥ सोपुरुष हिरण्यगर्भरूपकार्य
कीउपासनासें अनैश्वर्य अधर्म कामादिरूप मृत्युकूंदूरकरि प्रकृतिमैलयरूपफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ १४ ॥ कर्म तथाउपासना इनदोनूं
करियुक्त जोतत्त्वज्ञानार्थीपुरुषहै ॥ सो अधिकारी मरणकालविषे आदित्यभगवान्के आगेप्रार्थनाकरेहै ॥ तिनप्रार्थनामंत्रोंके अ
र्थकूंदिखावेहैं ॥ हेसूर्य सत्यपरमात्माकास्वरूप जोआदित्यमंडलमैस्थितहै ॥ सोप्रकाशमयपात्रसें आच्छादितहै यातें प्रतीतहोवेनहीं
सत्यपरमात्माकाउपासकजोमैहूं तिसमैउपासककेअर्थ आवरणकूं दूरकरो जिससेंमै सत्यपरमात्माकादर्शनकरूं ॥ १५ ॥ हेजगत्पा
लकसूर्य हेएकलेगमनकरणेहारे हेसर्वकेनियंता हेरसोंके अंगीकारकरणेहारे हेप्रजापतिकेपुत्र ॥ आपनीरश्मीयोंकूं दूरकरो रश्मी
योंकेउपसंहारकरणेसें तुमारेप्रकाशरूपकूं तथाकल्याणरूपकूं मैप्रत्यक्षकरूं ॥ मैउपासकभृत्यकीन्यांईनहींयांचाकरता किंतु आदित्य
मंडलमैस्थितपुरुषमैहूं स्वयंज्योतिरूपहीमेरावास्तवरूपहै ॥ १६ ॥ मेरेप्राण परिच्छिन्नअभिमानकूंत्यागकरि समष्टिवायुरूप हिरण्यग

किसीदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं वा निंदाकूंकरेनहीं ॥ ६ ॥ जिसविवेकीपुरुषके ज्ञानदशामैं सर्व शंकरंप्रभुम् ॥ प्राकृतेनवदिष्याम ईशाद्य
जिसविद्वान्ने गुरुशास्त्रकेउपदेशसें आत्माकीएकतानिश्चयकरीहै ॥ तिसविवेकीपुरुषके त णरूप व्यासभगवान्कूं प्रणामकरि तथा
पमोहकी तथा विक्षेपरूपशोककी प्राप्तिहोवेनहीं ॥ शोकमोहकीनिवृत्तिभी मूलअविद्यारूपक कथनकरेंगे ॥ प्रथमईशावास्ययजुर्वेदकी
नेसें पुनःकदाचित्भी शोकमोहहोवेंनहीं ॥ ७ ॥ पुनःआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं औरमंत्रउपत्तकाने घटादिव्याप्तकरेहैं ॥ अभिप्राय
कहै तथास्वयंज्योतिहै ॥ लिंगशरीरसेंरहितहै ॥ तथाव्रणऔरनाडीसेंरहितहै ॥ व्रणऔरनाडी हींहै ॥ तैसे परमात्माही जगत्रूपसें
चनकरा ॥ शुद्धहै यातेंकारणशरीरसेंभीरहितहै ॥ धर्मअधर्मसेंरहितसर्वकाद्रष्टाहै ॥ मनकेप्रेरणेहा औरईश्वररूपहीजीवात्माहै यातेंजी
केउपरिहै ॥ औरस्वयंभूःकहीये आपहीनीचे तथाआपउपरिहै ॥ सो परमात्मा प्रजापतिरूपसें सर्व पदार्थहैं तिनमैंरागकूं त्यागकरि
केफलोंकूं यथार्थरूपसें धारणकरेहै ॥ ८ ॥ अब आत्मज्ञानकीप्राप्तिविषे साधनजोचित्तशुद्धिहै ता भीनहींहै ॥ आत्माकापालनय
पासनाहैं तिनको भिन्नभिन्नरूपसेंनिंदाकरेहैं सोनिंदा समुच्चयविधानके अर्थहै ॥ समुच्चयकहीये उप पजगत्मैं सत्यत्वबुद्धिका त्याग
मैंकरणे ॥ जैसे भिन्नभिन्नकर्मकी तथा उपासनाकीनिंदाकरीहै सोदिखावेंहैं ॥ जेपुरुष केवलकर्म ताकूंकरो ॥ ऐसे अधिकारीपुरु
प्राप्तहोवेहैं ॥ और जेपुरुष केवलउपासनामैंप्रीतिवालेहैं तेपुरुषदारुणतमकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ९ ॥ कर्म कर्मकाउपदेशद्वितीयमंत्रकरेहै ॥
धिकारी पुरुषोंके कर्मतथाउपासनाके त्यागकराणेमैं वेदकातात्पर्यनहींहै ॥ किंतु उपासनासहितक नहींहोगा ॥ इससेंदूसराप्रकार
तात्पर्यकेबोधनअर्थ प्रथमकर्म तथा उपासनाकाफलकहेहैं ॥ जबी अनधिकारीपुरुषोंनेभी कर्मतथाउ आत्मामैंप्रीतिवालेहैं तिन्होंका
न्नकर्मतथा उपासनाकाफलनलिखते लिखातोहै ॥ यातें अनधिकारीपुरुषोंने चित्तकी शुद्धिवासते क जेपुण्यपापकर्मकाफललोकहैं
भिन्नभिन्नकर्मतथाउपासनाके फलकाअबनिरूपणकरेहै ॥ उपासनाकाफल ब्रह्मलोककीप्राप्तिहै ॥ कर्मतमकरि यासहैं ॥ तिनलोकोंकूं

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ अथमंगलाचरणपूर्वक ग्रंथकरणप्रतिज्ञा ॥ नत्वागणपतिंदेवं श्रीव्यासशंकरंप्रभुम् ॥ प्राकृतेनवदिष्याम ईशाद्यर्थमविस्तरम् ॥ १ ॥ अर्थयह ॥ सर्वविघ्नविनाशक श्रीगणपतिदेवकूं प्रणामकरि तथाश्रीनारायणरूप व्यासभगवानकूं प्रणामकरि तथा सर्वकेप्रभुश्रीशंकराचार्योंकूं प्रणामकरि हमभाषावाणीसें ईशादिउपनिषदोंकेअर्थकूं संक्षेपसेंकथनकरेंगे ॥ प्रथमईशावास्ययजुर्वेदकी उपनिषत्केअर्थकूं कथनकरतेहैं ॥ ईशजोपरमात्माहै तिसनेयहजगत् व्याप्तकराहै ॥ जैसे मृत्तिकाने घटादिव्याप्तकरेहैं ॥ अभिप्राय यह ॥ जैसे मृत्तिकाही घटादिरूपसें स्थितहोरहीहै ॥ मृत्तिकासेंभिन्न कदाचित्भी घटादिकनहींहै ॥ तैसे परमात्माही जगत्रूपसें स्थितहोरहाहै ॥ यातेंजोकुछ नामरूपजगत् यापृथिवीमंडलमैं प्रतीतहोवेहै सोईश्वरसेंपृथक्नहीं ॥ औरईश्वररूपहीजीवात्माहै यातेंजीवात्मासेंभी यहजगत्पृथक्नहीं ॥ ऐसे आपनेस्वरूप आत्मासें विमुखकरणेहारे जेस्त्रीपुत्रधनादिकपदार्थहैं तिनमैंरागकूं त्यागकरि आपनेआत्माकापालनकरो ॥ औरकिसीके धनकीइच्छाकूं मतिकरो ॥ धनतौझूठाहोनेसें किसीकाभीनहींहै ॥ आत्माकापालनयहहै ॥ जैसे गंधर्वनगर आकाशसेंभिन्ननहीं ॥ तैसे यहजगत् परमात्मासेंभिन्ननहीं ॥ यातें नामरूपजगत्मैं सत्यत्वबुद्धिका त्याग करो ॥ और आत्माकेनिश्चयवासते वेदांतश्रवण आदिकोंमैं प्रवृत्तहोवो ॥ यहही आत्माकापालनहै ताकूंकरो ॥ ऐसे अधिकारीपुरुषोंकूं वेदभगवान् उपदेशकरेहै ॥ १ ॥ अब आत्मज्ञानमैं साधनोंके अभावसें अनधिकारीपुरुषोंकूं कर्मकाउपदेशद्वितीयमंत्रकरेहै ॥ पुरुषशतवर्ष कर्मकरताहूआही जीवनेकीइच्छाकूंकरे ॥ ऐसे कर्मकरतेहूए ॥ तुम पुरुषमैं कर्मकासंबंधनहींहोगा ॥ इससेंदूसराप्रकार बंधनरूपकर्मसें छूटनेकानहींहै ॥ २ ॥ आगेकामंत्र अज्ञानीपुरुषोंकी निंदाकूंकरेहै ॥ जे विद्वान्पुरुष आत्मामैंप्रीतिवालेहैं तिन्होंका नामसुरहै तिन्सेंभिन्नअज्ञानीदेवादिकभी असुरहैं ॥ तिनब्रह्मबोधरहितअसुरपुरुषोंकरिप्राप्तहोणेयोग्य जेपुण्यपापकर्मकाफललोकहैं तिनलोकोंकानामअसुर्यहै ॥ तेअसुर्यनामालोक आत्माकेशुद्धरूपकूं आवरणकरणहारे अज्ञानरूपअंधतमकरिव्याप्तहैं ॥ तिनलोकोंकूं

तिनलोकोंकानामअसुर्यहै ॥ तेअसुर्यनामालोक आत्माकेशुद्धरूपकूं आवरणकरणेहारे अज्ञानरूपअंधतमकरिव्याप्तहैं ॥ तिनलोकोंकूं

9

भूतिसर्वहीमि[illegible]लहै ॥ याग्रंथवरकेछपावनेसें यहग्रंथसुलभहोवेगा ॥ अनेकमुमुक्षुजन [illegible]सग्रंथकूंविचारकरि ज्ञानद्वारामोक्षकूं प्राप्तहोवेंगे ॥ इससें अधिकऔरउपकारक्याहे ॥ जोकोईपुरुष किसीपात्रपुरुषकूं अन्नजलव[illegible]दिकोंकाभी दानकरताहै सोदातापुरुषकूं उत्तमलोककीप्राप्ति शास्त्रमैंकहीहै ॥ जबीमोक्षरूपपरमपुरुषार्थकेप्राप्तकरणेहारे याग्रंथकी[illegible]मुमुक्षुजनोंकूं अल्पद्रव्यसें सुलभताहोवेगी तबसुलभताकरणेवालेपुरुषकूं उत्तमोसेंउत्तमफल कैसेनहींप्राप्तहोवेगा किंतुअवश्यहीप्राप्तहो[illegible]वेगा ॥ परंतु खेदयहहै जोदृष्टफलार्थी पुरुष यासंसारमैंबहुतहोएगये अदृष्टफलार्थीउत्तमपुरुष न्यूनसेंन्यूनहोतेचलेजातेहैं ॥ श्रीस्वामि[illegible]च्चिदानन्दसरस्वतीजी अतिउत्तमहैं ॥ इनजैसासंसारभरमैंदुर्लभहै ॥

भवानीशंकर वि° नरोत्तम द्विवेदी.

॥ अथ कठोपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

ॐनमःश्रीगुरुभ्यः ॥ अबयजुर्वेदकी कठउपनिषत्का अर्थकहेहैं ॥ एकउद्दालकनामाऋषि वरुणऋषिकापुत्र होताभया ॥ जो उद्दालक
अन्नकेदानसें महान्कीर्तिकूं प्राप्तभयाथा ॥ सोउद्दालकमुनि विश्वजित्नामकयज्ञकरणेका आरंभकरताहूआ सर्वधनकेदेनेकासंकल्प
॥ १ ॥ करताभया ॥ और तिसउद्दालकमुनिका नचिकेता नामवालापुत्रहोताभया ॥ और उद्दालककेगृहमै धनतौगोरूपहीबहुतथा ॥ और
आपनेपुत्रमै ताऋषिकाबहुतस्नेहथा ॥ सोउद्दालकमुनि आपनीगौवोंके दोविभागकरताभया ॥ सुंदरगौवां जो दूध तथासंतान देने
वालीहैं तिनका एक विभागकीया ॥ सोसर्वगौवां आपनेपुत्रवासते रखलेताभया ॥ और दूसराविभाग दानकरणेवासते राखा जिन
कादानकरणाहै तेगौवां ऐसीहैं ॥ जिनोंनेजलपानकरिलीयाहै ॥ तथा तृणादिकोंकूं भक्षणकरलीयाहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोअबसाम
र्थ्यजिनकी जलकेपीनेमै तथातृणादिकोंके भक्षणकरणेमैनहींहै ॥ जबीजलपानादिकोंमैभी तिनकीसामर्थ्यनहींतौ तेदूधदेवैंगी वा
संतानदेवैंगी यामैक्याआशाहै ॥ ऐसीगौवोंकेदानका जबीताउद्दालकमुनिने आरंभकरा तबी नचिकेतानामा उद्दालककापुत्र स्व
भावसेंही शास्त्रमैंश्रद्धावान् पंचवर्षकाबालक याप्रकारकेविचारकूं करताभया ॥ जोप्राणी किसीकूं सुखदेताहै सोसुखदातापुरुषभी
सुखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोकिसीकूं दुःखदेवेहै सोदुःखदातापुरुषभी दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यहमेरापिता दुःखदेनेहारीगौवोंकूं ब्राह्मणोंकेतांई
देकरि कैसेसुखकूं प्राप्तहोवेगा किंतु दुःखकूंहीप्राप्तहोवेगा और सुंदरगौवोंजेमेरी वासतेराखीहैं ॥ तिनकूं ब्राह्मणोंकेतांई किसवासतेन
हींदेता ॥ मेरीचिंता किसवासतेकरताहै ॥ अंतर्यामीहीमेरापालकहै ॥ यातें पिताकूं मेरीचिंताकरणी निष्फलहै ॥ औरमै इसउद्दाल
कऋषिकापुत्रहूं ॥ पुत्रसोईहै जोनरकादिकदुःखोंसें पिताकीरक्षाकरे ॥ जोदुःखसें पिताकीरक्षानहींकरे सोपिताकामलहै पुत्रपदकाअ ॥ १० ॥
र्थ तामै घटेनहीं ॥ यातें मै इसनिषिद्धदानसें पिताकूं निवृत्तकरूं ॥ याअभिप्रायकूंमनमैधारकरि ॥ नचिकेता पिताकूंकहेहै ॥ हेपिता
जैसेगौवां आपकाधनहै तैसेमै पुत्रभी आपकाधनहूं मेरेकूं किसब्राह्मणकेतांई देवोगे ॥ यहवचन नचिकेताने इसवासतेकहा जो मे

रापिता सुंदरगौवांकादानकरेगा अथवा मेरेसेंपूछेगा ॥ तबमै धर्मशास्त्रके अनुसार आपनाअभिप्रायकहूंगा ॥ ऐसे पिताकूं जबी दूसरीवारकहा मेरेकूं किसब्राह्मणकेतांई देवोगे ॥ पितातूष्णींरहे जबीतीसरीवार फेरकहा तबी पिता क्रुद्धहूआ यहकहताभया तेरेकूं मृत्युकेतांईदेवोंगा ॥ याप्रकारकेवचनकूं नचिकेताश्रवणकरि विचारकरताभया ॥ यहजोमेरेपिताने हमारेकूं वचनकहाहै इसकरिके कुछमेरीहानिनहींहै ॥ उलटा मेरेकूंतो पुण्यकीप्राप्तिहोवेगी ॥ काहेते जो जो शरीर उत्पन्नभयाहै ॥ सो सो किसीकालमै तो अवश्य मृत्युकूं प्राप्तहोवेगा ॥ सो मैनेभी मरणातोथाही ॥ परंतु अब पिताकी आज्ञाकापालनहोगा ॥ यापिताकी आज्ञाकेपालनसें कल्याणकरणेहारा और धर्मकौनहै पिताकी आज्ञाहीपरमधर्महै ॥ ऐसेमेरेकूं पुण्यप्राप्तिअवश्यहोवेगी ॥ परंतु यापिताका मेरेमैं महान्स्नेह है ॥ यातें मेरेबिना पिता महान्दुःखकूं प्राप्तहोवेगा ॥ तापिताकेदुःखकूं विचारकरि मेरेचित्तविषे महान्क्लेशहोवेहै ॥ आपनेमृत्युकरि हमारेकूं किंचित्मात्रभी क्लेशनहींहै ॥ यातें हमारेकूं अवश्य मृत्युकेपास जानाचाहिये ॥ उत्तमसोपुरुषहै जो गुरु वा पिताके मनकीबातकूं समझकरि करताहै ॥ और मध्यमसोहै जो कह्यामानकरिकरे ॥ अधमसोहै जोकहेपरभी नकरे ॥ मेरेपिताके शिष्यबहुत हैं ॥ तिनसर्वमें मै नचिकेता अधमभावकूं नहींप्राप्तहोवों ॥ उत्तमभावकूं वामध्यमभावकूं प्राप्तहोवों ॥ उत्तमभावकीप्राप्ति वामध्यमभावकीप्राप्तितो पिताकीआज्ञामाननेसेंही होवेगी ॥ और मेरे धर्मराजकेपासजानेसें धर्मराजका ॥ तथा पिताजीका किंचित्मात्रभी प्रयोजनसिद्धहोनानहीं ॥ केवल पिताकूं दुःखहीप्राप्तहोवेगा ॥ और जबी मै मृत्युपासनहीजावों तो मेरेपिताकूं मिथ्यासंभाषणसें महान्दुःखकी प्राप्तिहोगी ॥ और मैअधमभावकूं प्राप्तहोवोंगा ॥ यह चित्तमै धारकरि नचिकेतापिताकूंकहेहै हेपिताजी आप आपनेपिता पितामहादिकोंकूं देखो तिनोंने कबीमिथ्यासंभाषणनहींकरा ॥ और दूसरे जेमहात्मा यासंसारमै वर्तमानहैं ॥ तिनकूंदेखो और तिनकेआचारकूं धारणकरो ॥ और आपनेभी अबतक आगेकबीनहींमिथ्यासंभाषणकरा ॥ यातें मेरेमैंस्नेहकूंत्यागकरि मृ

त्युकेपासभेजो ॥ आपनासत्यपालनकरो ॥ और यहशरीरतौक्षणभंगुरहैं ॥ जैसे सूर्यकरि पाककूंप्राप्तहूए आम्रआदिफल पृथिवीप रगिरेहैं ॥ तैसे कालभगवान्करि जीव वारंवार मृत्युकूंप्राप्तहोवेहैं तथाजन्मकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंहेपिता ऐसेक्षणभंगुरशरीरमै स्नेहकूंत्या

॥ २ ॥ गकरि और आपने सत्यधर्ममैस्थितहोइकरि मेरेकूं धर्मराजकेपासभेजदेवो ॥ इसप्रकार जबीपिताकूं नानावाक्यकहे तबी सोउद्दाल कपिता अत्यंतदुःखीहूआभी जावो ऐसेकहताभया ॥ तबी नचिकेता आपनेपिताकीभक्तिके बलसें ॥ तथा आपने तपकेप्रभावसें तथा चित्तशुद्धिकेप्रभावसें स्थूलशरीरसहितही गमनकरताभया ॥ और आगे यमराजाकहीं ग्राममैगयाथा ॥ पीछे आए धर्मराजकूं यम राजकेभृत्योंनेयहकहा हेयमराज नचिकेतानामब्राह्मण अतितेजवाला साक्षात् अग्निआयाहै ताकूंप्रसन्नकरो ॥ तानचिकेताने ती नउपवासकरेहैं ॥ उपवासकरणेका तात्पर्ययह जोमेरेकूं धर्मराजाग्रहणकरिलेवें अन्यथामेरेपिताकावचन मिथ्याहोगा ॥ और यमरा जासर्वज्ञ सर्वजानतेहूए नचिकेताकीपरीक्षाअर्थ आपनेकिंकरोंकूंजातेहूए यहकहगयेथे ॥ जोतुमारेकूं यमनहींग्रहणकरेगा ऐसे तुम नेनचिकेताकूंकहदेना ॥ यह कहकरि तीनदिन बाहिररहे ॥ पीछेसें आएनचिकेताकूं यमकिंकरोंनेकहा ॥ हेनचिकेता अबीतु माराआयुसमाप्तनहींभया यातें तुमारेकूं यमराजानहींग्रहणकरेगा तुम पृथिवीलोकमै चलेजावो ॥ ऐसे यमकिंकरोंने नानाप्रकार केवचनकहेभी ॥ परंतु नचिकेता आपनेधैर्यसें चलायमानभयानहीं ॥ तापीछे तीसरेदिनमै यमराजा आपनेगृहमैआताभया ॥ तायमराजाकूं किंकरकहेहैं ॥ हेयमराज अग्निकीन्याईजो अतिथिब्राह्मण तुमारेगृहमै आयाहै ॥ ताकीशांतिवासते शीघ्रही जलआ सनभोजनादिकोंसें तुमपूजनकरो ॥ और हेयमराज जिसमूढप्रमादीगृहस्थकेगृहविषे अतिथिमहात्मारूपअग्नि अन्नजलआदिकोंसें ॥ ११ ॥ सत्कारकूंप्राप्तहोवेनहीं तिसमंदबुद्धिवाले गृहस्थके या सर्वपदार्थौंकूं नाशकरेहै ॥ सोपदार्थयहहैं जिसपदार्थकेप्राप्तिका निश्चयनहींहै तापदार्थके प्राप्तिकीइच्छाकानाम आशाहै ॥ जापदार्थकेप्राप्तिकानिश्चयहै तापदार्थकेप्राप्तिकीइच्छाकानामप्रतीक्षाहै ॥ तथासत्संगसें

होनेवालाजोफलहै ताकूंसंगतकहेहैं ॥ तथासुखकेप्राप्तिकरणेहारी वाणीकानाम सूनृताहै ॥ यज्ञकानाम इष्टहै ॥ वापी कूप तडाग आदिकोंकूं पूर्त कहेहैं ॥ इनपदार्थोंका और पुत्र पशु आदिसर्वपदार्थोंका नाशकरणेहाराग्रहविषे सत्कारकूं नप्राप्तहूआ अतिथि है ॥ यातें हेयमराज आप अवश्य नचिकेताका पूजनकरो ॥ ऐसे वाक्यसुनकरि यमराजा अत्यंतभयवान्हूआ ॥ नचिकेताके पास जाइकरि यहकहताभया ॥ हेनचिकेता तुम मेरेग्रहविषे तीनरात्रि भोजनादिकोंकूं नकरतेहूए स्थितभयेहो ॥ अब तुम मेरेप रकृपाकरो तुमारीकृपासें मेरेकूं कल्याणहोवे ॥ तेरेकूं मेरावारंवारनमस्कारहै ॥ और तीनदिन भोजनविनाही तुममेरेग्रहमैरहेहो ॥ या तें तुम तीनवरमांगो जैसेआपकूं अपेक्षितहोवैं ॥ जोमांगोगे मैयमराजा सत्यकहताहूं सर्वदेवोंगा ॥ यामै किंचित्‌भी संशयकरणा नहीं ॥ ऐसे जबी यमराजानेकहा तबी नचिकेता तीनवर मांगताभया ॥ एक आपनेपिताकीप्रसन्नता ॥ द्वितीयअग्निविद्या ॥ ती सराब्रह्मविद्या ॥ अबतीनूंकूं क्रमसें निरूपणकरेहैं ॥ हेयमराज मै जैसे तुमारीकृपासें तुमारेलोकमैस्थितहूं ॥ सर्वदुःखरहित तथा क्रोधादिकोंसेंरहित होइकरि प्रसन्नताकूंप्राप्तहूं ॥ तैसे मेरे पिताभी सर्वदुःखरहित तथाक्रोधरहित तथासंतापरहितहोइकरि स्थितहोवैं ॥ जैसे मेरेकूं पूर्व आपनापुत्रजानकरि संभाषणकरतेथे तैसे अबभीसंभाषणकरें ॥ और हेभगवन् यहलोकमै प्रसिद्धहै जोमृत्युलोकमै जाइकरि आतानहीं ॥ तैसेमेरेपिता मेरेमैअविश्वासनहींकरें ॥ किंतु यहजानेजो सोई मेरापुत्रहै ॥ यहपिताकी प्रसन्नतारूपमै प्रथमवर मांगताहूं ॥ यमराजाकहेहैं हेनचिकेता ॥ जैसेपूर्वतुमारेमै निश्चयवालेपिताहोतेभये ॥ तैसे अबभीमेरीकृपासें तेरेमै तैसाहीनिश्चय करेंगे ॥ दुःख संताप क्रोधरहितहोइकरि सुखपूर्वक दिनरात्रिमै भोजन निद्रादिकोंकूं करतेहूए स्वस्थचित्तहोइकरि स्थितहोवेंगे ॥ अबद्वितीयवर अग्निज्ञानरूपकूंनचिकेता मांगेहै ॥ हेयमराज मैनेवेदवेत्ताब्राह्मणोंसें ऐसेसुनाहै ॥ जोस्वर्गमैस्थितपुरुषकूं भयप्राप्तहो वेनहीं ॥ और हेमृत्यो तुमसें भयकूंप्राप्तहोवेनहीं तथाजराअवस्था व्याधि शत्रु क्षुधा तृषा शोक मोहसें भयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और

क०उ० स्वर्गमै पुरुष महान्आनंदकूं प्राप्तहोवेहै ॥ हेमृत्यो तास्वर्गका साधनरूप अग्निविद्याकूं तुम भलीप्रकारजानतेहो ॥ और जाअग्निवि भा०३
द्याके प्रभावसें कर्मीपुरुष देवभावरूप जोअमृतत्वहै ताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताअग्निविद्याकूं मेरेतांई कथनकरो ॥ श्रद्धावान्अधिकारीकूंतौ
॥ ३ ॥ गुरु गोप्यवस्तुकूंभीकहेहैं ॥ और हेभगवन् मैभी आपसें श्रद्धासहितहोइकरिहीपूछताहूं ॥ मेरेकूं कृपाकरि अवश्यकहो ॥ ऐसे द्विती
यवरकूं मांगनेवाले नचिकेताकूं यमराजाकहेहैं ॥ हेनचिकेता यास्वर्गकोसाधनअग्निविद्याकूं भलीप्रकारसें मै जानताहूं ॥ तुमसाव
धानहोइकरिश्रवणकरो मै तुमारेप्रतिकथनकरताहूं ॥ हेनचिकेता यहअग्निविराट्रूपहै ॥ यहअग्नि स्वर्गादिकलोकोंकी प्राप्तिका तथा
स्थितिका कारणहै ॥ तुमयाविराट्रूपअग्निकूं बुद्धिरूपीगुहामै साक्षीरूपसेंस्थितजानो ॥ ऐसे नचिकेताकेप्रति सर्वलोकोंकाकारण
रूपविराट्अग्निकूं यमराजा कथनकरतेभये ॥ जितनीयां इष्टका जैसेरखीजातीहैं जैसे स्वरूपवालीहैं ॥ औरजेमंत्र तथाक्रिया
दिकहैं ॥ तिनसर्वकूं यमराजा नचिकेताकेतांई कहतेभये ॥ ऐसे नचिकेताभी यमराजाकेमुखसें श्रवणकरिके ताअग्निग्रंथका
अनुवादकरताभया ॥ पुनःयमराजा नचिकेताकी अलौकिक बुद्धिदेखकरि ॥ प्रसन्नहूए यहकहतेभये ॥ हेनचिकेता मैने तीनव
रदेनेकीजाप्रतिज्ञाकरिहै ॥ सा तौ मैने पूर्णकरणीहीहै ॥ प्रथम औरवरकूं तुमारेतांई मै प्रसन्नहूआ देताहूं ॥ जबतकयहसूर्यरहेगा ॥
तथाजबतक यासंसारमैवेदरहेगा ॥ तबतक जोअग्नितुमने मेरेसेंश्रवणकराहै ॥ याअग्निकानाम नाचिकेतहोगा ॥ अर्थयह नचि
केताकाजोहोवे ताकूंनाचिकेतऐसेकहेहैं ॥ दूसरायह ॥ जोदिव्यमालारूपवर मै तुमारेकूंदेताहूं ॥ कैसीमालाहै ॥ जामै अनेक
रत्नजटितहैं ॥ तथा अनेकस्थूल आमलकफलकेसमान जामालामै मोतीजटितहैं ॥ ऐसीस्वर्णजटितमालाकूं कंठमै तुमधारणकरो ॥ ॥ १२ ॥
जैसेमेघोंमै विद्युत्प्रकाशकरेहै तैसे नचिकेताकेकंठमै सामालाप्रकाशकरतीभयी ॥ अब नाचिकेतनामक अग्निका माहात्म्यवर्ण
नकरेहैं ॥ हेनचिकेता जोतुमनेमेरेसें अग्निग्रहणकराहै ताअग्निकाजोपुरुष तीनवारअनुष्ठानकरेगा सोपुरुष माता पिता तथागुरुकी

शिक्षाकूंप्राप्तहूआ ॥ ब्रह्मलोकप्राप्तिद्वारा जन्ममृत्युकूं तरजावेगा ॥ अर्थयह ॥ जोनिवृत्तकरेगा ॥ अथवा यालोकमैंही अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा जन्ममृत्युके अभावरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवेगा ॥ कैसाभीविराट्रूपअग्निहै ॥ जोहिरण्यगर्भसेंउत्पन्नभयाहै ॥ औरजोदेवतावोंकरिके स्तुतिकरणेयोग्यहै ॥ ऐसे विराट् अग्निकूं जानकरि पुरुषशांतिकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे अग्निज्ञान शोकनिवृत्तिका ॥ तथा स्वर्गप्राप्तिका तथामृत्युपाशनिवृत्तिकासाधनमैं यमराजाने तुमारेकूं कहदीया ॥ जाअग्निकूं तुमने दूसरावरमांगा सोअग्नि तेरेनामसेंही नाचिकेतरूपकरिके कथनकराजावेगा ॥ अबतीसरावरमांगो ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् मृत्युसर्वकाहोनाहै मेरेकूंयामैंसंशययहहै ॥ जोकेई चार्वाकादिकतौ मरणअवस्थाकेअनंतर आत्मानहींहै ऐसेकहेहैं ॥ और तामैं यह युक्तिकहेहैं ॥ जोआत्मा देहसेंभिन्नमानेतौ देहसेंजबीमस्तककूंपृथक्करदेवें तब जैसे ग्रीवासें रुधिरनिकसेहै तैसे आत्माभी निकसताप्रतीतहोवे प्रतीततौहोवेनहीं यातेंदेहसें भिन्ननहींहै ॥ और नास्तिकोंकी युक्तिअनंतहैं मुमुक्षुजनोंकूं परमार्थमैं अनुपयोगीजानकरि तिननास्तिकोंकीयुक्तिलिखीनहीं ॥ और दूसरे वेदकूंमाननेवाले जेआस्तिकहैं तेदेहसेंभिन्नआत्माकूंमानेहैं ॥ हमारेकूं दोप्रकारकेमतकूंश्रवणकरि यहसंशय उत्पन्नभयाहै जोदेहसेंभिन्नआत्माहै वानहीं ॥ आपकृपाकरि मेरेकूं ऐसाउपदेशकरो जाउपदेशसें यासंशयकूंनिवृत्तकरि आत्माकूंजानलेवों ॥ यहही मैं तीसरावरमांगताहूं ॥ याप्रकारकेनचिकेताकेवचनकूं श्रवणकरि यमराजा आपनेहस्तकीभ्रमणरूपचेष्टाकूं करताहूआ नचिकेताकी परीक्षावासते ऐसेकहताभया ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता ॥ यहतौ सूक्ष्मआत्माहै ॥ यामैं देवतावोंकूंभीसंदेहहै ॥ ऐसे संशयग्रस्तवरके मांगनेसें क्याहै तुमऔरकोईसुंदरवरमांगो ॥ और यादुर्विज्ञेयवस्तुकेपूछनेसें तुमारेकूं क्यामिलेगा तुम याआग्रहकूंत्यागकरो ॥ मैंतौ वररूपीपाशकरिबांध्याहूं ॥ मेरेकूं क्लेशनहींदेवो ॥ मेरेसें कोईऔरवरमांगकरि सत्यवचनरूपी पाशसेंमुक्तकरो ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् आपकहतेहो जोयामैंदेवतावोंकूंभीसंशयहै ॥ और आपभीदुर्विज्ञेयकहतेहो और तुमारेजैसावक्ता यासंसारमैंदूस

राप्रतीतनहींहोता जासें मै आपनेसंशयकूंनिवृत्तकरूं ॥ और इसवरसें अधिकश्रेष्ठदूसरावरमैमानतानहीं ॥ यमराजा नचिकेताके वै
राग्यकीपरीक्षाकरेहैं ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता तुम याप्रकारकेसुंदरवरमांगो ॥ तेवर यहहैं ॥ शतवर्षकीआयुवालेपुत्र ॥ तथा पौत्र ॥
॥ ४ ॥ बहुतपशु ॥ हस्ती ॥ स्वर्ण ॥ अश्व ॥ मंडलाधिपत्य ॥ चिरजीवन ॥ धन ॥ आपनीस्थिरजीविका ॥ चक्रवर्तीराज्य ॥ दिव्यमानु
ष्यलोकमैं कामप्राप्ति ॥ सत्यकामता ॥ दिव्यस्त्रीयां ॥ तिनस्त्रीयोंकीदासीयां ॥ तिनस्त्रीयोंकीदासीयोंकानृत्यवादित्रादिकोंविषेकुशलप
णा ॥ यहषोडशवर तुमनचिकेताकेतांईमै यमराजादेताहूं ॥ यहतीसरावर तुममांगो ॥ और मैने दिव्यअप्सराआदिकजेभोग्य तुमकूं
देनेवासतेकहेहैं ॥ तिनसेंआनंदकूं प्राप्तहोवो ॥ और हेनचिकेता बुद्धिमान्सोहै जोसुखकरणेवालेवस्तुकूं मांगे ॥ आत्मज्ञानतौ किं
चित्मात्रसुखकरणेवालानहींहै ॥ यातें तुमपूर्वकहे सुखजनकषोडशवरकूंमांगो ॥ और आत्मा मरग्या वा नहींमरा तामै प्रश्नमतक
रो ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् जिनस्त्रीआदिकपदार्थोंकूं तुमने सुखकासाधन कथनकराहै ॥ तेसर्वपदार्थ दूसरेदिनपर्यंत रहेंगे
वानहींरहेंगे ॥ ऐसे निश्चयनहींकराजाता ॥ और दुःखरूपइनविषयोंमैं सुखभ्रांति मूढोंकूंहोरहीहै ॥ जैसे पित्तदोषकरि दुष्टनेत्रवाले
पुरुषकूं श्वेतशंखभी पीतरूपहोइकरि प्रतीतहोवेहै ॥ तैसे दुःखरूपविषयसुखभी कामरूपीज्वरसें उत्पन्नभयाजोव्यामोहहै ताव्यामोहरूपी
दोषकरि दुष्टचित्तपुरुषकूं सुखरूपप्रतीतहोवेहै ॥ और हेयमराज यहस्त्रीआदिकभोगतौ कूकर शूकरआदिदेहमैभी प्राप्तहोवेहैं ॥ और
पुरुषके इंद्रियोंकाजोतेजहै ताकेनाशकरणेहारेहैं ॥ धर्मके तथामोक्षके महान्विरोधीहैं ॥ और हेभगवन् जीवनभी मै नहीं मांगता ॥
काहेते जोअतिदीर्घ आयुवालाब्रह्माहै ॥ तानेभी अंतमै मृत्युकूंप्राप्तहोनाहै ॥ यातें गाने बजानेवालीस्त्रीयोंकी दासीगण तथा ॥ १३ ॥
अप्सरा पुत्र पौत्र हस्ती चिरजीवन चक्रवर्तिराज्य धन स्थिरजीविका औरजे आपनेकहे तेसर्व आपनेपासराखो ॥ मेरेकूं इनकी किं
चितभी इच्छानहीं ॥ और हेभगवन् जोतुमने मेरेतांईधनदेनेकूं कहा ॥ सोताधनकरि पुरुष कदाचित्तृप्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ जैसे

घृतकरिअग्नि और जैसे समुद्र जलोंकरि तृप्तहोवेनहीं ॥ तैसे तृष्णावालेकी धनकरि तृष्णानिवृत्तहोवेनहीं ॥ और जबीव्यवहारमै मेरे कूंधनअपेक्षितहोवेगा तौ आपकेशरणमै प्राप्तजोहमहैं तिनहमकूं धनतौ आपहीप्राप्तहोवेगा ताधनकीप्रार्थनाकरणीनिष्फलहै ॥ तथा जीवनभी मेरेकूंमांगनेयोग्यनहींहै ॥ काहेतै जोजीवनआगेहीप्राप्तहै ॥ जबी आपही स्थावरजंगमरूपजगत्केमारणेवालेमृत्युहैं ॥ और हमआपकेशिष्यहैं तथातुमारेशरणमैं स्थितहैं ॥ तौहमकूं मरणेकाक्याभयहै ॥ तातेंतीसरावरमेरेकूं आत्मविद्याहीदेवो ॥ और हे यमराज जबीतुमारेजैसे जरामरणसेंरहितदेवतावोंकोसमीपताकूं यापृथिवीमै रहनेवाला जरामरणकरिग्रस्तयहपुरुष प्राप्तहोवेतौ तुच्छ पदार्थोंकी इच्छाकरनीयोग्यनहीं ॥ प्रथमतौ तुमारीप्राप्तिदुर्लभहै ॥ कदाचित्‌देवयोगसें तुमारीप्राप्तिभीहोजावेतौ बुद्धिमान्‌कूं चाहिये जरामरणादिकोंसेंरहित वस्तुकूंहीप्राप्तहोवे ॥ और यहतुच्छजोस्त्रीसुख तथाजीवन धन इत्यादिकहैं तिनकूंमांगेनहीं ॥ इसरीतिसें यमराजाने नचिकेताकूं चलायमानकराभी ॥ परंतु सोनचिकेता चलायमाननहींभया ॥ और यहकहताभया ॥ हेभगवन् जामैंदेव तावोंकूंभीसंशयहै ॥ ऐसादुर्विज्ञेयजोवस्तुहै ताआत्माविषेही मेराप्रश्नहै ताप्रश्नकेउत्तररूपीवरसेंभिन्नतौ मै किंचत्‌भी मांगतानहींहूं ॥ ऐसे योग्यअधिकारीनचिकेताकूंजानकरि यमराजाकहेहैं ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता यासंसारमै दोप्रकारकाफलहै ॥ एकश्रेय है ॥ दूसराप्रेयहै ॥ अर्थयह ॥ ज्ञानकरिप्राप्तहोनेहाराजोनित्यफलहै ॥ ताकूं श्रेयकहेहैं ॥ और मूढपुरुषोंकी इच्छाकाविषय तथाक्षणभंगुर जोविषयानंदहै ताकूंप्रेयकहेहैं ॥ ऐसे दोनोंभिन्नभिन्नहैं ॥ यहदोनोंपुरुषकूंबांधतेहैं ॥ अर्थयह ॥ पुरुषआपकूं अधिकारी मानकरि तिनमैप्रवृत्तहोवेहैं ॥ मुमुक्षुसाधनसंपन्नतौ ज्ञानद्वाराश्रेयरूपमोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और अज्ञानी काम्यकर्मकूंकरिके विषयसुखरूपप्रेयकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ और मुमुक्षुपुरुषतौ नित्यमोक्षकूंप्राप्तहोताहै ॥ परंतुजोविषयोंका अर्थीहूआ विषयसुखरूपप्रेयकी प्राप्तिवासते अनेकप्रकारके कर्मोंकूंकरेहै ॥ सोविषयी यामोक्षरूपपुरुषार्थसें भ्रष्टहोवेहै ॥ यहश्रेय औरप्रेय अविवेकीपुरुषोंकूं वास्तवरूपसेंभिन्नभिन्न प्रतीत

होवेंनहीं ॥ और जैसें हंसपक्षी आपनेमुखसें क्षीरनीरकूं पृथक् करिदेवेहै ॥ तैसे विवेकीपुरुष विवेकसें श्रेयप्रेयकूं भिन्नभिन्नजानेहै ॥
औरजान्नकरि श्रेयरूपमोक्षकीप्राप्तिवासते साधनकूं संपादनकरेहै ॥ और अल्पबुद्धिवाला जोअविवेकीहै सोशरीरादिकोंकीवृद्धिवासते
॥ ५ ॥ तथा भोगोंकीप्राप्तिवासते कर्मोंकूं करेहै ॥ औरतुमारेकूं मै यमराजाने ॥ अनेकदिव्यस्त्री पुत्रआदिकभोगदीयेभी परंतु तुमने
अनित्यजानकरि त्यागकीएहैं ॥ और यालोकमै सर्वपुरुष धनरूपी शृंखलासेंबांधेहूएहैं ॥ ताधनरूपी शृंखलासें आपमुक्तभयेहो ॥ हे
नचिकेता यासंसारमै कर्मतथाज्ञानरूपीदोमार्गहैं ॥ कर्मसें अनित्यस्वर्गादिक लोककूं पुरुष प्राप्तहोवेहैं ॥ ज्ञानसें नित्यमोक्षरूपफलकूं
प्राप्तहोवेहैं ॥ और तुमतो केवलज्ञानकूं चाहतेहैं ॥ और भोगोंमै लोलुपनहींभये ॥ यातें आपधन्यहैं ॥ मै आपकीस्तुतिकरिनहींसक
ता ॥ हेनचिकेता कर्मभीदोप्रकारकाहै एकविहितहै जाकूंशास्त्र सुखप्राप्तिवासतेकहेहै ॥ दूसरानिषिद्ध नरकादिकोंकूंदेनेहाराहै ॥ वि
हितकर्मभीदोप्रकारकाहै एकतोनिष्कामहै ॥ दूसरा सकामहै ॥ निष्कामयहहै अनित्यफलजे स्वर्गस्त्रीपुत्रादिकहैं तिनकीइच्छाविना
कर्मकरणा तिनसेंतो चित्तशुद्धिद्वारा मोक्षकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ सकामसें जन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ सकामकर्मकरणेवालेपुरुषोंका यहनि
श्चयहै जोहमहीपंडितहैं हमहीबुद्धिमान्हैं ऐसे अविद्यामै वर्त्तमानहूए तेमूढ सर्वदा कुटिलगतिकूंही प्राप्तहोवेहैं ॥ जैसे अंधपुरुषकेपी
छे अंधगमनकरेहैं ॥ तैसे सकामकर्मकेकरणेवाले जेअंधगुरुहैं तिनकेपीछेचलनहारे जेअंधशिष्यहैं तेभी सकामकर्मकूंहीकरेहैं ॥ औ
र निषिद्धकर्मके करणेहारेजेपुरुषहैं तिनकूं स्वर्गादिकलोकोंकीप्राप्तिकासाधन कर्मउपासनादिक प्रतीतहोवेनहीं ॥ तेबालक धनकेअ
भिमानकरिमूढहोरहेहैं और स्त्री पुत्र धन आदिकसहित यहलोकहीश्रेष्ठहै ऐसेमाननेवालेहैं ॥ और सकामकर्मकरणेवालेतो स्वर्गादि ॥ १४ ॥
कलोकोंकूं प्राप्तहोवेहैं ताअनंतर मेरेपाशोंमै आवेहैं ॥ अथवाकबी किसीनिष्कामकर्मकेप्रभावसें शुद्धअंतःकरणवालेहूए ज्ञानप्राप्तिद्वा
रा मोक्षकूंभीप्राप्तहोवेहैं ॥ और निषिद्धकर्मकरणेहारेतो साक्षात् मेरेवशहूए अनंतदुःखोंकूंअनुभवकरेहैं ॥ औरहेनचिकेता ऐसेपापीपुरु

षोंकूं आत्माका श्रवणभीदुर्लभहै ॥ औ बहुतपुरुष भूत भावी वर्त्तमान प्रतिबंधसहितहूए आत्माकेश्रवणकूं करतेभी यथार्थब्रह्मबोध कूं प्राप्तहोवेंनहीं ॥ तीनप्रकारके जेप्रतिबंधकहे तिनमै भूतप्रतिबंधतौ यहहै त्यागकरे किसीस्त्रीआदिकविषयका वेदांतश्रवणकालमै वारंवार स्मरणहोना ॥ भावीप्रतिबंधयहहै जो और जन्मकादेनेवाला प्रारब्धकर्म जाकीभोगेविनानिवृत्ति होनीनहीं ॥ जैसे वाम देवके एकजन्मकेदेनेवाला प्रारब्धकर्मथा प्रथमजन्ममै अनेकप्रकारके श्रवणादिक वामदेवमहात्मानेकरेभी ॥ परंतु ताभावीप्रतिबंध सें ज्ञानभयानहीं द्वितीयजन्मकूंप्राप्तहोइकरि ऋषिवामदेव प्रारब्धकर्मकूं भोगकरिक्षयकरताहूआ ज्ञानकीप्राप्तिसें मोक्षकूंप्राप्तभया ॥ यह वामदेवकीकथा अन्य उपनिषत्कीहै यातें ईहां ताकथाका संकोचकराहै आगेलिखेंगे प्रतिबंधप्रसंगसें किंचितदिखाईहै ॥ इस रीतिसें भूतप्रतिबंधकीतौ जिसपदार्थमैप्रीतिहै तापदार्थउपहितआत्माकेध्यानसें निवृत्तिहोवेहै ॥ परंतु भावीप्रतिबंधकीनिवृत्ति विना भोगसें होवेनहीं ॥ और वर्त्तमानप्रतिबंध च्यारिप्रकारकाहै ॥ एकतौ विषयोंमै आसक्तिहै ॥ औरद्वितीयबुद्धिकीमंदताहै ॥ जोवे दांतश्रवणकरतेभी बुद्धिमै अर्थआरूढ नहोना ॥ और तृतीय कुतर्कहै जोश्रुतिसेंविपरीत शुष्कतर्कहै ॥ और चतुर्थविपर्ययदुराग्रह है ॥ अर्थयह ॥ जोआत्माके कर्तृत्वभोक्तृत्वमै युक्ति प्रमाणसेंविना हठकरणा ॥ अब प्रसंगसें तिनवर्तमानप्रतिबंधोंकी निवृत्तिभी कहेहैं ॥ प्रथमविषयआसक्तिरूपप्रतिबंधकी निवृत्तितौ शमसें तथादमसें होवेहै ॥ जब नेत्रादिकोंकूं तथामनकूं आपनेवशकरेहै तथा सत्संगकरेहै तब विषयआसक्तिरूपप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवेहै ॥ वारंवार वेदांतश्रवणसें बुद्धिमंदतारूप जोद्वितीयप्रतिबंधहै ताकीनिवृ त्तिहोवेहै ॥ और युक्तिपूर्वक आत्माकेमननकरणेसें कुतर्करूपतृतीयप्रतिबंधकी निवृत्तिहोवेहै ॥ अनात्मप्रत्ययरहितआत्माकारवृत्ति करणेसें विपर्ययदुराग्रहरूप जोचतुर्थप्रतिबंधहै ताकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ इसरीतिसें भूत भावी वर्त्तमान प्रतिबंध तथातिनकीनिवृत्तिकाप्रका र प्रसंगसेंकिंचितमात्रकह्या ॥ अब उपनिषत्अर्थकूंही कथनकरेहैं ॥ हेनचिकेता ऐसे भूत भावी वर्त्तमान प्रतिबंधसहित केईपुरुष

 आत्मश्रवणकूं करतेहूंएभी आत्माकूं यथार्थजानेनहीं ॥ और मनवाणीके अविषय याआत्माका उपदेश करणेवालावक्ता आश्चर्यहै ॥
अर्थयह ॥ जोदुर्लभहै ॥ और याआत्माके दृढतर अपरोक्षनिश्चयवालादुर्लभहै ॥ तथा ताअपरोक्षज्ञानीसें शिक्षाकूंप्राप्तहूआजोशिष्यहै सोभी
॥ ६ ॥ दुर्लभहै ॥ सोशिष्यभी आत्माकेयथार्थरूपकूं जानेहै ॥ ब्रह्मज्ञानीगुरुविनातौ बहुतवार उपदेशकराहूआभी आत्माजानाजावेनहीं ॥ या
तें अज्ञानीगुरुकूं त्यागकरि ज्ञानीसें उपदेशग्रहणकरि ज्ञानसंपादनकरणा ॥ और यहदुर्विज्ञेयआत्मा आपनीतर्कौंसें स्वतंत्र जानाजावेन
हीं ॥ इसआत्माकेज्ञानसेंही जन्ममरणकी प्राप्तिहोवेनहीं ॥ और हेनचिकेता श्रुतिविरुद्धतर्कतौउलटा ज्ञानमैप्रतिबंधकहै ॥ तातर्ककरि
आत्मा जाननाअतिकठिनहै ॥ अर्थयह ॥ कबीशुष्कतर्कसें जानजावेनहीं ॥ यातें श्रुतिभगवतीवारंवार ब्रह्मवेत्ताआचार्यकी शरणकूंही
ज्ञानकीप्राप्तिमैं साधनकथनकरेहैं ॥ हेनचिकेता जैसेतुम आपनेपुण्योंकेप्रतापसें धैर्यकूंप्राप्तभयेहैं तैसे किसीपुरुषकूं तीनकाल भूत भवि
ष्यत् वर्तमानमैं होनादुर्लभहै ॥ और मैंने अनेकप्रकारकेपदार्थ तुमारेकूंदीयेभी तुमसर्वकात्यागकरतेभये यातें तुमारे जैसाशिष्य अतिदु
र्लभहै ॥ और मै यहइच्छाकरताहूंजोतुमारेजैसा शिष्य वापुत्र प्रश्नकरणेहारा हमारेकुलमै औरहोवे ॥ हेनचिकेता ॥ दूसरेपुरुषोंकीतौ
क्यावार्ताहै मैयमराजा मैभी तेरेजैसाधैर्यनहींहै ॥ काहेते मै यमराजा हृदयमै स्थितब्रह्मानंदकूं नित्यअपरोक्षजानताहूं और कर्मका
फलरूपसर्वअनित्यहै ॥ ऐसेभी जानताहूं ॥ परंतु मेरेमै तेरेजैसीपदार्थोंमै त्यागबुद्धि नहींहै ॥ और यहपुरुष यज्ञआदिककर्मोंकरिके
मोक्षरूपनित्यफलकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसे नजानकरि मैंने अग्निसाध्ययज्ञादिअनेककर्मकरे तिनकर्मोंकरि यालोकपालपदवीकूं प्राप्तभ
याहूं ॥ ऐसेयत्नोंसें सर्वकामकीप्राप्तिकूं मै यमराजा प्राप्तभयाहूं ॥ और सर्वऐश्वर्यकूंप्राप्तभयाहूं सर्वजगत्कानियंताभयाहूं ॥ और अ ॥ १५ ॥
भयकीपरमपदवीकूंप्राप्तभयाहूं तथाअणिमादिऐश्वर्यकूं प्राप्तभयाहूं ॥ तेसर्वपदार्थ तुमारेकूं मै यमराजाने दीयेभी परंतु तुमने सर्वपदा
र्थोंकूं अनित्यजानकरित्यागहीकराहै ॥ यातें तुमारेधैर्यकीमै स्तुतिकरिनहींसकता ॥ हेनचिकेता जिसआत्माकेजाननेवासते तुमने

सर्वपदार्थत्यागकरेहैं ॥ ता आत्माकूं श्रवणकरो ॥ यहआत्मा दुर्दर्शहै ॥ अर्थयह ॥ जोअतिसूक्ष्महोनेसें याकाप्रत्यक्षकरणाकठिनहै ॥ और जीवोंके बाह्यपदार्थोंकेज्ञानकरि आत्मा जानाजावेनहीं ॥ और सर्वकीबुद्धिरूपीगुहामें स्थितहै तथायाशरीरमैंहीस्थितहै ॥ बुद्धिभीतौ शरीरमैंहीहै ॥ यातें बुद्धिमैंस्थितहै यहकहा ऐसे आत्माकेज्ञानसेंही स्वप्रकाशआत्माकूं विवेकीपुरुष जानताहूआ हर्षशोकआदिकअनर्थकूं निवृत्तकरेहै ॥ और याआत्माकूं सत्शास्त्रकेउपदेशसें तथामहात्मावोंकेउपदेशसें श्रवणकरिके शरीरादिकोंसें भिन्नजानकरि तासाक्षीकूंही ब्रह्मरूपसेंजानतेहूए अधिकारीपरमआनंदकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसे ब्रह्मरूपीमंदिरकी प्राप्तिवासते हेनचिकेता तुमारेकूंहम खुलेद्वार मानतेहैं ॥ भावयह ॥ जोतुममोक्षकेयोग्यहैं ॥ इसरीतिसें नचिकेताने देहकेनाशहोनेसेंभी आत्माकानाशनहीं होता यहतौनिश्चयकरा ॥ काहेते जीवकूं श्रेयकीप्राप्ति तथास्वर्गनरकप्राप्ति जा यमराजानेकही तासेंजाना जोदेहसेंभिन्नहै देहतौ ईहांहीनाशकूंप्राप्तहोवेहै यादेहसेंभिन्नजोआत्माहै ताकूंही श्रेय प्रेय आदिकोंकीप्राप्तिसंभवेहै ॥ यातें इसदेहसेंभिन्नतौ नचिकेतानेनिश्चयकरा अब आत्माकेवास्तवरूपके जानेनीकीइच्छावालाहूआ नचिकेताप्रश्नकरेहै ॥ नचिकेताउवाच ॥ हेभगवन् जोआत्मा पुण्यपापसेंभिन्नहै ॥ तथापुण्यपापकाजेफल तथापुण्यपापकेजेकारक तिनसर्वसें आत्माभिन्नहै ॥ तथाकार्यकारणसेंभिन्नहै ॥ तथाभूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनकालसेंरहितहै ॥ ऐसेआत्माकूं आप प्रत्यक्षनिश्चयकरिरहेहैं ॥ ता आत्माके वास्तवस्वरूपकूं मेरेतांईकथनकरो ॥ यमराजोवाच ॥ हेनचिकेता जाआत्माका तैंनेप्रश्नकराहै ॥ ताआत्माकेस्वरूपकूंही च्यारिवेदबोधनकरेहैं ॥ औरजाआत्माकीप्राप्तिवासते अनेकप्रकारके तप शास्त्रनेकहेहैं ॥ और जिस आत्माकीप्राप्तिवासते अधिकारीपुरुष ब्रह्मचर्य आदिकसाधनोंकूंकरेहैं ॥ सो यहआत्मा ॐकाररूप है ॥ हेनचिकेता यह ॐ प्रणवअक्षरही सगुणब्रह्महै ॥ तथा परजोनिर्गुणब्रह्महै ॥ सोभी ॐकाररूपहीजानना ॥ जैसे शालिग्रामका विष्णुरूपसें नर्मदेश्वरकाशिवरूपसें शास्त्रने ध्यानकह्याहै ॥ तैसें ॐअक्षरकाभी परब्रह्म तथाअपरब्रह्मरूपसें ध्यान

श्रुतिभगवती यमराजाद्वारा सर्वमुमुक्षुजनोंकूं बोधनकरेहै ॥ जोअधिकारी ॐकारकासगुणरूपसें ध्यानकरेहै सोसगुणरूपकूंप्राप्तहो
वेहै ॥ जोनिर्गुणरूपसें प्रणवकाध्यानकरेहै सोध्याता निर्गुणरूपकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ या ॐअक्षरके सगुणरूपकरि ध्यानकरणेसें तथा
॥ ७ ॥ निर्गुणरूपकरि ध्यानकरणेसें ब्रह्मलोकमे प्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मलोकमै महाआनंदकूंप्राप्तहोइकरि कैवल्यमोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबजोआ
त्माका ॐरूपसेंध्यानकहा ताआत्माकावास्तवरूपकहेहैं ॥ यहस्वप्रकाशआत्माजन्ममरणसें शून्यहै ॥ काहेते अनित्यघट देहादिकहो
उत्पत्तिनाशवालेहोवेहैं ॥ नित्यआत्माका उत्पत्तिनाशादि कोईविकारबनेनहीं ॥ औरयह नित्यआत्मा किसीकारणसें उत्पन्नहोवे
नहीं ॥ और यहआत्मा अद्वितीयहै यातें वास्तवसेंयाआत्मासेंभिन्न कोईकार्यभी उत्पन्नहोवेनहीं ॥ अबषट्भावविकाररहितआत्मा
काउपदेशकरेहैं ॥ जिसहेतुसें यहआत्माअजहै ॥ इसीसें याआत्माकाजन्मनहीं ॥ नित्यहोनेसें नाशरूपमरणभीहोवेनहीं ॥ और शा
श्वतहै ॥ अर्थयह ॥ जो अपक्षयवर्जितहै ॥ औरयह आत्मा पुराणहै ॥ अर्थयह ॥ प्रथमही नवीनहै यातेंहीवृद्धिरहितहै ॥ जन्मरूप
प्रथम विकारके निषेधकरणेसें अस्तिरूपजोद्वितीयविकारहै ताकाभी निषेधजानलेना ॥ जोजन्मकूंप्राप्तहोवेहै सो अस्तित्वरूपद्विती
यविकारकूंप्राप्तहोवेहै ॥ या आत्माका जन्महीनहीं यातें अस्तित्वरूपजो द्वितीयविकार ताकूं कैसेप्राप्तहोवेगा ॥ नाशकेनिषेधसें वि
परिणामकानिषेधहै ॥ ऐसे यहआत्मानित्यहै ॥ यातें यास्थूलशरीरकेनाशहोनेसेंभी यानित्यआत्माका नाशहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता
जोपुरुष याआत्माकूंमारणेवालामानताहै और जोपुरुष आत्माकूं मारागयामानताहै ॥ तेदोनों आत्माकेयथार्थरूपकूं जानतेनहीं ॥
जिसहेतुसें यहआत्मानकिसीकूंमारताहै नकिसीकरिकेमाराजाताहै ॥ औरहेनचिकेता यहआत्मा सूक्ष्मपरमाणु आदिकोंसेंभी अति ॥ १६ ॥
सूक्ष्महै ॥ अर्थयह ॥ जोदुर्विज्ञेयहै ॥ औरबडे आकाशादिकोंसेंभीबडाहै ॥ और याजीवकी बुद्धिरूपीगुहामैहीस्थितहै ॥ ऐसे आत्मा
कूं जोनिष्कामपुरुषहै सोईमनकीशुद्धिकरिके प्रत्यक्षकरेहै ॥ ताआत्माकेज्ञानकरि सर्वकर्मकेकरणेसें वृद्धिक्षयरहितरूप जोआत्माकाम

हिमाहै ताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ इससें अनंतर शोक मोहसें रहितहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा अचलहूआभी दूरदेशमैं गमनकरेहै ॥ तथा शयनकरताहूआभी सर्वदेशमैंप्राप्तहोवेहै ॥ और विद्या धन आदिकोंके अभिमानसहितहूआभी यहआत्मा सर्वमदसेंरहितहै ॥ भावयह ॥ आत्माबुद्धिसाथमिलकरि बुद्धिकेधर्म मदादिकोंकूं धारणकरेहै ॥ और वास्तवसेंतो बुद्धिसंबंधसेंरहितहै ताकेधर्ममदादिकोंसेंरहित स्पष्टहीहै ॥ ऐसे आत्माकूं सूक्ष्मबुद्धिमान् जेमेरेजैसें पंडितहैं तेपंडितही प्रत्यक्षरूपकरिजानेहैं ॥ औरजेपुरुष अनात्मपदार्थोंमैआसक्तहैं तथाअतिबहिर्मुखहैं ॥ तेपुरुष आत्माकेस्वरूपकूं कैसेजानेंगे तिनकूं आत्माजाननादुर्घटहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा वास्तवसेंस्थूलसूक्ष्म कारण यातीनशरीरोंसेंरहितहै ॥ तथायातीनअनित्यशरीरोंमैंस्थितहै ॥ औरयहआत्मा आकाशादिकजेव्यापकहैं तिन सर्वसें अधिकव्यापकहै ॥ ऐसे आत्मदेवकूं अपरोक्षजानकरि अधिकारी सर्वशोककूंनिवृत्तकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ कर्तृत्व भोक्तृत्वरूपबंधका नामशोकहै ॥ सोबंध अज्ञानकाकार्यहै ॥ अधिकारीपुरुषके अज्ञानकीनिवृत्ति ब्रह्मज्ञानसेंहोवेहै ॥ अज्ञानकीनिवृत्तिहोनेसें बंधरूप शोककीनिवृत्तिहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा बहुत वेदके पठनकरिप्राप्तहोवेनहीं ॥ और ग्रंथकेअर्थधारणकीजोसामर्थ्यहै ताकूंमेधाकहेहैं ॥ तामेधाकरिभी आत्माप्राप्तहोवेनहीं ॥ और बहुतश्रवणकरणेसेंभी प्राप्तहोवेनहीं जोअधिकारी याआत्माका अभेदरूपसें नित्यचिंतनरूप भजनकरेहै ॥ सोअधिकारी आत्माकेस्वरूपकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तिस अधिकारीकेतांई आत्माआपने परमार्थरूपकूं प्रकटकरेहै ॥ अर्थयह ॥ जोयथार्थरूपकूं सोअधिकारीहीध्यानकर्त्ताजानेहै ॥ हेनचिकेता जोपुरुष पापकर्मसेंनिवृत्तनहींभया तथाजोपुरुष शम दमसेंरहितहै ॥ तथा समाधिसेंरहितहै ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषकूं आत्मसाक्षात्कारहोवेनहीं ॥ और जामायाविशिष्टब्रह्मात्माका यहब्राह्मण क्षत्रियादिक सर्वजगत्ओदनहै ॥ तथासर्वकेमारणेवालामृत्यु जाका शाकादिरूपहै ॥ तामृत्युरूपशाककूं मेलकरि सर्वजगत्रूप ओदनके भक्षणकरणेहारा जोस्वरूपमैंस्थितहै ऐसे आत्माके परमार्थरूपकूं विचाररहित कैसे जानसकेहै विचाररहित आ

त्माकेस्वरूपकूं सर्वथाजानेनहीं ॥ हेनचिकेता जिसध्यानरूपउपायकरि यहआत्माजानाजावेहै ॥ ताउपायकूंश्रवणकरो जैसे लोक प्रसिद्धपिप्पलआदिक वृक्षोंविषे पक्षीरहेहैं ॥ तैसे बुद्धिरूपीवृक्षमै जीवईश्वरदोनूंरहेहैं ॥ कैसीबुद्धिहै देहकीअपेक्षासें जाउत्कृष्टहै ॥ तथा परब्रह्मकी स्थितियोग्यहै ॥ तामै जीवतौ कर्मकेफलकूंभोगेहै ॥ औरईश्वर कर्मफलकूं भोगावैहै ॥ आप ईश्वर कर्मफलकूंभोगेनहीं ॥ और तेईश्वरजीव सर्वज्ञता अल्पज्ञतारूप विरुद्धधर्मवालेहैं ॥ ऐसे ब्रह्मवेत्ता तथा स्वर्गमेघादिपंचपदार्थोंमै अग्निबुद्धिकरनेवालेगृहस्थ कर्मी कथनकरेहैं ॥ और तीनवार नाचिकेतअग्निकूंजिनोंने चयनचराहै ॥ तेभी ईश्वरजीवस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥ ओरजे अग्निहोत्रादिक कर्मोंकूं निष्कामहोइकरि करतेहैं ॥ तिनकूं संसारसमुद्रसें पारकरणेहारा जो परमेश्वरहै सोईसेतुहै ॥ और संसारसमुद्रसें तरणेकी इच्छावाले हूए मुमुक्षुजनोंका यहआत्माही अभयरूप परतीरहै ॥ हेनचिकेता यहजीव पुण्यपापरूपकर्मके फलका भोक्ताहै ॥ सो रथीहै ॥ अर्थयह ॥ जोरथकास्वामीहै ॥ और शरीररूपीरथहै ॥ बुद्धिसारथी शरीररूपीरथकूं चलानेवालाहै ॥ मनरूपी रज्जुहै ॥ इंद्रियरूपीअश्वहैं ॥ शब्दस्पर्शादिरूपभूमिविषेचलेहैं ॥ और आत्मा देह इंद्रिय मन इनसेंमिलकरिकर्त्ताभोक्ताहोरहाहै ॥ वास्तवसें उपाधिविना यहआत्माशुद्धहै ॥ कदाचितभी कर्तृत्व भोक्तृत्वकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरजैसे अश्वादिकोंकेचलावनेका तथानिग्रहकरणेका जाकूंज्ञानहै ॥ ऐसा सारथी रथवालेस्वामीकूं आपने अभिलषित देशमै प्राप्तकरेहै ॥ तैसे जाकेबुद्धिरूपी सारथीमै यहदोनूंप्रकारका सामर्थ्यहै इंद्रियोंकूं शुभमार्गमैचलाना तथास्वाधीनराखणा ॥ सोबुद्धिरूपीसारथी ब्रह्मभावकीप्राप्तिकरेहै ॥ याअर्थकूंहीस्पष्टकरेहैं ॥ हेनचिकेता जिसपुरुषका बुद्धिरूपीसारथी अविवेकीहै ॥ तथामनरूपीरज्जुकूं जाकेबुद्धिरूपीसारथीने वश करानहीं ॥ ताकेइंद्रियरूपीअश्वभी दुष्टअश्वकीन्यांई वशहोवेंनहीं ॥ और जापुरुषका बुद्धिरूपीसारथी विवेकीहै ॥ तथामनरूपीरज्जु जाकेवशहै ताकेइंद्रियरूपीअश्व सर्वदावशवर्त्तीहैं ॥ जैसेश्रेष्ठअश्व सदासारथीके वशवर्तीहोवेहैं तैसेप्रमादरहित बुद्धिसारथीके वश

इंद्रियहोवेहैं ॥ और जाका बुद्धिरूपीसारथी विज्ञानसहितनहींहै ॥ तथामनरूपीरज्जु जासारथीकेवशनहींहै ॥ और सर्वदाअंतरबाह्यसें अशुचिरहेहैं ॥ सोविवेकहीनमूढपुरुष ताब्रह्मरूपदेशकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ उलटाजन्ममरणरूपसंसारकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ औरजाका बुद्धिरूपीसारथी विवेकसहितहै तथामनरूपरज्जुअंतर्मुखहै ॥ औरजो अधिकारी सर्वदाशुचिरहेहै सोअधिकारी ताब्रह्मकेस्वरूपकूं प्राप्त होवेहै ॥ जासें पुनःजन्ममरणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता इसप्रकार जिसकेबुद्धिरूपीसारथीने मनरूपीरज्जुकरिके इंद्रियरूपी अश्वोंकूं वशकराहै ॥ सोअधिकारी यासंसाररूपसमुद्रके पाररूप परमात्माकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अब आत्माहीसर्वकेअंतरहै ताकीप्राप्ति वासते विवेकादिक संपादनकरणेचाहिये याअर्थके प्रतिपादनकरणेवासते अंतरकीपरंपराकूं दिखावेहैं ॥ हेनचिकेता शब्द स्पर्श रूप रस गंध यहपंचभूतआकाशादिकोंकासाररूपहैं ॥ यातें यहशब्दादि सूक्ष्मरूपसें इंद्रियोंकेकारणहैं ॥ यातें इंद्रियोंसें शब्दस्पर्शआदिकपरहै ॥ इंद्रियोंकूं मनहीप्रवृत्तकरेहै ॥ यातें मनइंद्रियोंसेंपरहै ॥ और निश्चयविना संकल्पविकल्पकरणेहाराजोमनहै ॥ तासें किंचित्भी प्रयोजनसिद्धहोवेनहीं ॥ यातें मनसें निश्चयरूप बुद्धिपरहै ॥ समष्टिरूपहिरण्यगर्भकीबुद्धि व्यष्टिबुद्धिकाकारणहै ॥ यातें व्यष्टिबुद्धिसें समष्टिबुद्धिपरहै ॥ तासमष्टिबुद्धिकूंही श्रुतिभगवतीने महत्तत्त्वरूपकरि कथनकराहै ॥ तामहत्तत्त्वसें अव्यक्तजोमहत्तत्त्वका कारण मायाहै ॥ सामाया महत्तत्त्वसेंपरहै ॥ अव्यक्तरूपमायाभी आपनेआश्रयविषयकी प्राप्तिवासते चैतन्यकीअपेक्षा करेहै ॥ यातें तामायासेंभी पुरुषपरहै ॥ और पुरुषजोव्यापकआत्माहै ॥ आपनीउत्पत्तिवासते तथाआपनेप्रकाशवासते किसीपदार्थकी अपेक्षाकरेनहीं ॥ यातें यहचेतनपुरुषही सर्वसेंपरहै ॥ तथासर्वकीपर्यवसानभूमिहै ॥ और सर्वमुमुक्षुजनोंकूंफलरूपहै ॥ पूर्व सर्वप्रसंगमै परशब्दकाअर्थ सूक्ष्म तथाव्यापक यहजानना ॥ और यहआत्मा सर्वभूतोंमैस्थितहैभी परंतु अज्ञानकरिआच्छादित होनेसें अज्ञानीपुरुषोंकूं सर्वत्रप्रतीतहोवेनहीं ॥ औरजेविवेकीहैं तेसूक्ष्म तथाएकाग्र बुद्धिसे आत्माकूंप्रत्यक्षकरेहैं ॥ हेनचिकेता या आत्माकीप्राप्ति

वासते मैं योगकाउपदेशकरताहूं तुमश्रवणकरो ॥ प्राज्ञ जोबुद्धिमान्है सो आपनेकर्मइंद्रिय तथा ज्ञानइंद्रिय तिनसर्वकूं मनमै

लयकरे ॥ तात्पर्ययह ॥ जोसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंकूं त्यागकरिके केवलमनकाजोव्यापारहै यहहीमनमैंइंद्रियोंकालयहै ॥ तथाइच्छारू
॥ १ ॥ पजोमनहै तामनका निश्चयरूपबुद्धिमैलयकरे इच्छावृत्तिकूंत्यागकरी निश्चयरूपसेंस्थितहोवे ॥ तानिश्चयरूपव्यष्टिबुद्धिका समष्टिबु
द्धिमैलयकरे ॥ तात्पर्ययह ॥ जोसामान्याहंकारजो अहंअस्मियहहै ॥ तारूपसेंस्थितहोवे ॥ तामहत्तत्त्वरूपसमष्टिबुद्धिकूं शांतात्माजो
शुद्धब्रह्महै तामैलयकरे ॥ अबश्रुतिभगवती स्वतंत्रही आपनेप्रियमुमुक्षुजनोंकूं उपदेशकरेहै ॥ भोमुमुक्षवः तुमआत्मज्ञानकेसन्मुखहो
वो ॥ अज्ञानरूपीनिद्राकी ब्रह्मज्ञानरूपजागरणसें निवृत्तिकरो ॥ जबपर्यंत तुम अज्ञानरूपीनिद्राकरि शयनकरतेहो ॥ अर्थयह ॥
जोआत्माकेयथार्थस्वरूपकूं नहींजानते ॥ तबपर्यंत जन्ममरणरूप संसारस्वप्न महाभयंकर निवृत्तहोवेनहीं ॥ यातें ब्रह्मज्ञानरूप जागर
णसें अज्ञानरूपीनिद्राकी निवृत्तिकरो ॥ ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति साधनसंपन्नहोइकरि गुरुउपसत्तिसेंहोवेहै ॥ यातें श्रेष्ठजेआचार्यहैं ति
नकूंब्रह्मरूपजानकरि तिनसेंउपदेशकूंग्रहणकरो ॥ और जैसें क्षुरकीधारा अतितीक्ष्णहै ताकेउपरि गमनकराजावेनहीं ॥ तैसे दुःसंपा
द्य जोज्ञानमार्गमहात्माकथनकरेहैं ताकीप्राप्तिवासते यत्नअतिअवश्यकरणा ॥ हेनचिकेता यहआत्मा शब्द स्पर्श रूप रस गंध इन
सर्वसेंरहितहै ॥ नाशरहितहै ॥ आदिअंतसेंशून्यहै ॥ महत्तत्त्वसेंपरहै ॥ तथा निश्चलहै ॥ ताआत्माकूं गुरुमुखसेंश्रवणकरिके ॥ तथाश्रु
तिअनुकूलतर्कोंसें मननकरिके तथाताआत्माविषे अनात्मप्रत्ययरहित सजातीयप्रत्ययकरेहैं ॥ ऐसे अधिकारीआत्माकेश्रवणादिकों
कूं करतेहूए ताआत्माकूं साक्षात्करेहैं ॥ तिस साक्षात्कारसेंही यासंसाररूपमृत्युकेमुखसें मुक्तहोवेहैं ॥ अब इसकठवल्लीग्रंथका महा ॥ १८ ॥
त्माकहेहैं ॥ यहयमराजाने जोनचिकेताकेताांई ग्रंथउपदेशकराहै सोसनातनहै ॥ अर्थयह ॥ वैदिकहोनेसेंचिरकालकाहै ॥ ताग्रंथकूं क
थनकर्त्ता तथाश्रवणकर्त्ता बुद्धिमान्पुरुष ब्रह्मलोकमैप्राप्तहोवेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ज्ञानजाकूंभयानहीं सोतो याग्रंथकाकथनकर्त्ता तथा

38

श्रवणकर्त्ता ब्रह्मलोकमैंप्राप्तिद्वाराही मुक्तिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुष प्रतिबंधरहितहै सोपुरुष इसजन्ममैंहीज्ञानद्वारा परममोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जोपुरुष यापरमगोप्यग्रंथकूं ब्राह्मणोंकीसभामै श्रवणकरावेहै ॥ सोपुरुष महान्‌फलकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथा जो पुरुष पवित्रहोइकरि श्राद्धकालमै श्रवणकरेहै ॥ सोश्राद्ध तापुरुषकूं अनंतफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोआत्माका प्रतिपादक यहग्रंथहै ताग्रंथकेकथनका तथाश्रवणकाभी जबीयह पूर्वउक्तफलहै तौज्ञानप्राप्तहोनेकरि मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै यामैंक्या आश्चर्यहै ॥ पूर्वयहकहा आत्मासर्वत्रव्यापकभीहै परंतु आवरणसहितहोनेसें सर्वत्रप्रतीतहोवेनहीं ॥ यातें हेनचिकेता श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरि आत्माकाप्रत्यक्षहोवेनहीं ॥ यामैंहेतुयहहै ॥ जोजगतकाकर्त्ता स्वतंत्रपरमेश्वरहै सोपरमेश्वर श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं अंतरआत्मासें बहिर्मुखहीरचताभया ॥ इसीसें तापरमात्माने इन श्रोत्रादिकोंका हिंसनकराहै ॥ जैसेराजा आपनेकिसीमंत्रीकूं आपनेपुरका अधिकारछुडाइकरि किसीदूरदेशमैं अधिकारदेवे ॥ यह तामंत्रीकीहिंसाकहीजावेहै ॥ तैसें आत्माकूं इनइंद्रियोंने विषय न करणा यहही इनइंद्रियोंकीहिंसाहै ॥ जिसहेतुसें ईश्वरने इंद्रियबहिर्मुखहीरचेहैं ॥ इसीसें यहपुरुष बाह्यनामरूपप्रपंचकूंहीदेखेहै ॥ अंतरआत्माकूं प्रत्यक्षकरेनहीं ॥ कोईबुद्धिमान् जितइंद्रिय तथाउत्कटमोक्षकी इच्छावालाहूआ याआत्माकूं अपरोक्षरूपसें प्रत्यक्षकरेहै ॥ हेनचिकेता यालोकके तथापरलोकके जेविषयहैं ॥ तिनबाह्यविषयोंकूं अतियत्नोंकरि बाल ग्रहणकरेहैं ॥ बालपदकाअर्थ आत्मविचाररहितहै ॥ तेअविवेकी वारंवार मृत्युजोमैंहूं तिसमेरी पाशकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ औरकैसाहूंमैं जोसर्वलोकमैं व्यापकहूं ॥ और विवेकीपुरुषतौ ब्रह्मासेंलेकरि स्तंबपर्यंत स्थावरजंगमसर्वप्राणीयोंकूं मृत्युग्रस्तजानकरि कर्मउपासनाकेफलकूं अनित्यहीजानेहैं ॥ आत्मज्ञानकेफलमोक्षकूं नित्यजानेहैं ॥ इसप्रकार कर्मफलकूं अनित्यजानकरि तेविवेकी तेरीन्यांई स्वर्गादिकोंकी इच्छाकूंकरेंनहीं ॥ हेनचिकेता जिसआत्माकेज्ञानकरि ताआत्माकूंही विवेकीप्राप्तहोवेहैं तथासर्वइच्छासें निवृत्तहोवेहैं ॥ ताआत्माकेस्वरूपकूं श्रवणकरो ॥ जिसआ

त्माकरि यहपुरुष नेत्रजन्यअंतःकरणकीवृत्तिद्वारा रूपकूंजानेहै ॥ तथा रसनाइंद्रियजन्यअंतःकरणकीवृत्तिद्वारा यहपुरुष मधुरादिर
सकूंजानेहै ॥ तथाजाआत्माकरिही यहपुरुष गंध तथाशब्द तथास्पर्शकूं जानेहै ॥ तथाजाआत्माकरि मैथुननिमित्तसें उत्पन्नभये
॥१०॥ सुखकूंजानेहै ॥ हेनचिकेता जोआत्मा तुमनेपूछाथा ताआत्माकरिही सर्वसंघातकी चेष्टासिद्धहोवेहै ॥ जोआत्मा तुमनेपूछाथा सो
यहहै यातें भिन्न औरआत्मानहीं ॥ और याआत्माकेज्ञानकरिकेही विवेकी कृतकृत्यभावकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता जाआत्मा
करि यहपुरुष स्वप्नअवस्थाकूंजानेहै ॥ तथाजागरितकूं जाआत्माकरिजानेहै ॥ ऐसे आकाशादिकोंसेंभी व्यापकआत्माकूं यहवि
वेकी प्रत्यक्षकरताहूआ शोककूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता यहआत्मा बुद्धिआदिकोंकासाक्षीहोनेसें अत्यंतसमीपहै ॥ और कर्म
के फलसुखदुःखकूं अनुभवकरेहै ॥ तथाप्राणादिकोंकूं धारणकरणेहाराहै ॥ प्राणबुद्धिआदिकोंसेंभिन्नहै ॥ ऐसेसर्वजगत्केनियं
ताआत्माकूं अधिकारीपुरुष जानकरि किसीसंशयकूं तथानिंदाकूंकरेंनहीं ॥ इसप्रकार त्वंपदार्थकाशोधनकरा अब तत्पदा
र्थकेशोधनका प्रकारकहेहैं ॥ हेनचिकेता जिसचेतनपरमात्मासें हिरण्यगर्भउत्पन्नहोवेहै ॥ कैसाहैहिरण्यगर्भ जोपंचभूतोंसें उ
त्पन्नभयाहै ॥ आपनेहिरण्यगर्भसेंपूर्वजन्ममैं अनुष्ठानकरेजेकर्म तथाउपासना तिनसेंउत्पन्नहोवेहै ॥ जोहिरण्यगर्भ सर्वकीबुद्धि
रूपीगुहामैं कार्यकारणरूपभूतोंसहित स्थितहै ॥ ऐसे हिरण्यगर्भकूं अधिकारीपुरुष आत्मरूपजानेहैं ॥ सोईयहआत्माहै जो
तुमने धर्माधर्म तथाकार्यकारणसेंरहित पूछाथा ॥ और सर्वदेवतारूपजोहिरण्यगर्भहै सोईप्राणस्वरूपहै ॥ औरताहिरण्यगर्भ
कानाम अदितिहै ॥ अर्थयह ॥ जोसर्वस्थूलप्रपंचकूं भक्षणकरेहै ॥ याहिरण्यगर्भकीही सर्वदेवता विभूतीयांहैं ॥ यातेंहिरण्यगर्भ ॥१९॥
सर्वदेवमयहै ॥ सर्वव्यष्टिभूतप्राणीयोंविषे तादात्म्यसंबंधकरिकेरहेहै ॥ यातेंसर्वभूतमयहै ॥ जैसे सुवर्णकाकार्य सुवर्णसें भिन्ननहीं तैसे
परमात्माकाकार्यहिरण्यगर्भ परमात्मासेंभिन्ननहीं ॥ ऐसाहिरण्यगर्भ सर्वभूतोंसहित जापरमात्मासें उत्पन्नहोवेहै तापरमात्माकूं तुम

40

अद्वितीयजानो ॥ और हेनचिकेता दोनूंकाष्ठोंसें उत्पन्नभया विराट्रूपजोअग्निहै ताविराट्रूपअग्निकूं श्रद्धापूर्वक याज्ञिकधारण करेहैं ॥ जैसे गर्भिणीयांस्त्रीयां स्नेहपूर्वकआपनेगर्भकूंधारणकरेहैं ॥ तैसेयज्ञकरणेवाले जाविराट्रूपअग्निकूं श्रद्धापूर्वकधारणकरेहैं ॥ और निद्रारहित जे योगीपुरुषहैं तेभीआपनेचित्तमै ताविराट्रूपअग्निकूं धारणकरेहैं ॥ और सर्वभूतोंमै सोविराट्स्थितहै ॥ और ता विराट्कूंही योगीपुरुषहृदयमै जानकरि दिनदिनमै ताकीस्तुतिकरेहैं ॥ और यज्ञमैस्थित ताविराट्रूपअग्निकूं कर्मीपुरुष दिनदिनमै स्तु ति करतेहैं ॥ सोयहविराट्भी परमात्मरूपहै ऐसेजानो ॥ हेनचिकेता जाप्राणसें सूर्यउदयहोवेहै और जाप्राणमैही दिनदिनमै अस्तहो वेहै ॥ और अग्निआदिकजेअधिदैवहैं तथा अध्यात्मजेवाक्आदिकहैं ॥ तेसर्व जाप्राणकेस्वरूपमै स्थितिकालमैरहेहैं ॥ औरजाप्राणके उलंघनकरणेविषे कोईसमर्थनहींहै ऐसेप्राणकूं अद्वितीयपरमात्मरूपजानो ॥ ऐसेतत्त्वंपदार्थोंकूं कथनकरि अबदोनूंकाअभेदनिरूपण करेहैं ॥ हेनचिकेता जोपरमात्मा तुमारेशरीरविषे तथाहमारेशरीरविषे तथाअन्यसर्वजीवोंकेशरीरोंविषे साक्षीरूपसें स्थितहै ॥ सोईपर मात्मा परोक्षईश्वरशरीरविषे तथाहिरण्यगर्भशरीरविषेस्थितहै ॥ तथाजो चेतनईश्वरहिरण्यगर्भादिरूपशरीरोंविषेस्थितहै ॥ सोईसाक्षी रूपसें अस्मदादि शरीरोंमैस्थितहै ॥ औरजोपुरुष यापरमात्मामै किंचित्मात्रभी भेददेखताहै ॥ सोपुरुष वारंवार जन्ममरणकूं प्राप्त होवेहै ॥ औरयहआत्मा शुद्धमनकरिप्राप्तहोवेहै ॥ नेहनानाऽस्तिकिंचन ॥ अर्थयह ॥ जोयाब्रह्ममै ॥ किंचित्मात्रभीभेदनहींहै ॥ मृत्योः समृत्युंगच्छतियइहनानेवपश्यति ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष याआत्मामै नानाकीन्यांईदेखेहै सोभेदद्रष्टा मृत्युसें मृत्युकूं प्राप्तहोवे है ॥ अर्थयह ॥ जोवारंवार मृत्युकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ और यहआत्मा अंगुष्ठपरिमाणहृदयमैस्थितहै यातेंहो श्रुतिभगवतीने अंगुष्ठपरि माणकलाआत्माहै यहकहा ॥ ऐसेआत्माकूं जेअधिकारी भूतभविष्यत्पदार्थोंका ईशानरूपजानेहैं ॥ तिनकूं संशयादिकप्राप्तहोवें नहीं ॥ हेनचिकेता यहअंगुष्ठमात्रआत्माही प्रकाशरूप जोधूमरहितअग्निहै ताकीन्यांई स्वयंज्योतिरूपहै ॥ और यह तीनकालोंविषे

विपरीतभावकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ औरजैसे उच्चेपर्वतोंमें मेघोंसें पतनभयाजोजलहै सोनीचेदेशविषे विकीर्णभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे
आत्माकूं भिन्नदेखणेहारा नानाप्रकारकी उच्चनीचयोनियोंकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ हेनचिकेता स्वभावसें शुद्धजोजलहै सोजबीकिसी
॥ ११ ॥ शुद्धदेशमें मेघोंसेंगिरेहै सोजलपूर्वजैसा शुद्धहीरहेहै ॥ तैसे आत्माभी वास्तवसेंशुद्ध तथाभेदरहितहै ॥ ऐसेजाननेवाला अधिकारी
काआत्माभी जन्ममरणसें रहितहोईकरिस्थितहोवेहै ॥ पूर्वअनेकप्रकारकेभेददर्शनसें अनंतयोनियोंकूं प्राप्तहोइकरि सर्वअनर्थकूंप्राप्त
भया ॥ अबसत्शास्त्रके तथासंतजनोंकेउपदेशसें अभेदरूपसें सर्वकूंदेखताहूवा स्वस्वरूपमें स्थितिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबप्रकारांतरसें
आत्माकाउपदेशकरेहैं ॥ हेनचिकेता याआत्मारूपराजाका यहशरीररूपीपुरहै ॥ यापुरकेएकादशद्वारहैं ॥ नाभिसहित तीन नीचे
के तथासप्तशिरमें औरएकमस्तकमेंहै ॥ पुरकास्वामीजोराजाहै सो जन्ममरणादिकविकारोंसें रहितहै ॥ तथा स्वयंज्योतिरूपहै मनसें
तथावाक्आदिकइंद्रियोंसेंरहितहै ॥ ऐसेआत्माकूं ध्यानकरताहूआ विवेकीपुरुष ज्ञानप्राप्तिसें सर्वबंधरूपजोशोकहै ताकूंनिवृत्तकरेहै ॥
मुक्तहूआहीमुक्तहोवेहै ॥ काहेते आत्मातौ नित्यमुक्तहै ॥ कदाचित्भी वास्तवआत्मामेंबंधभयानहीं ॥ परंतु अज्ञानकरि आपनेमें
कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपबंध प्रथममानताथा ॥ अबब्रह्मज्ञानप्राप्तिसें अज्ञानकूंनिवृत्तकरि सर्वबंधसेंमुक्तहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहआत्मा केव
ल एकशरीरमेंनहींरहता किंतु सर्वदेहमेंरहेहै ॥ यहप्रतिपादनकरेहैं ॥ यहआत्माहंसहै ॥ आत्माकारवृत्तिमेंस्थितहोइकरि जोअज्ञानतत्
कार्यका नाशकरे ताकूंहंसकहेहैं ॥ औरयहआत्मा आदित्यरूपहै ॥ औरयहआत्माजीवोंकूं धनकीन्यांईप्रियहै यातेंवसुकहाहै ॥ यह ॥ २० ॥
आत्मा अंतरिक्षमेंगमनकरणेहारा वायुरूपहै ॥ औरयहआत्मा अग्निरूपहै ॥ और भोक्तारूपहै ॥ औरयहपृथिवीमेंस्थितहै ॥ तथा
सूर्यमंडलमेंस्थितहै ॥ हृदयदेशमेंस्थितहै ॥ औरजापुरुषके कुलगोत्रकाज्ञाननहीं तथामध्यान्हादिकालमें गृहस्थकेगृहमें अन्नआदिअर्थ
प्राप्तभयाहै ताकूंअतिथिकहेहैं ॥ सोअतिथिभी आत्मरूपहै ॥ औरयहआत्मा सोमरूपसें कलशमेंस्थितहोवेहै ॥ औरमनुष्योंमेंस्थितहै ॥

तथादेवतावोंमैस्थितहै ॥ औरयहआत्मा सत्यमैस्थितहै ॥ औरयहसमष्टिबुद्धिमै तथाव्यष्टिबुद्धिमै साक्षीरूपसेंस्थितहै ॥ औरयहआत्मा शंखशुक्त्यादिरूपसें जलसेंउत्पन्नहोवेहै ॥ औरपृथिवीमै यवव्रीहिआदिरूपसेंउत्पन्नहोवेहै ॥ और इंद्रियरूपकरिउत्पन्नहोवेहै ॥ औरपर्वतोंसें नद्यादिरूपसेंउत्पन्नहोवेहै ॥ औरयहआत्मा हिमाद्रिपर्वतसें गिरिजारूपकरिउत्पन्नहोवेहै ॥ हेनचिकेता बहुतक्याकहें ॥ जोयहआत्मा सत्यरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ औरसर्वकाकारणहोनेसें सर्वप्रपंचमैव्यापकहै ॥ ऐसेआत्माकेजाननेमैलिंगकहेहैं ॥ हेनचिकेता यहआत्मा सर्वकेहृदयमैस्थितहूआ प्राणरूपवायुकूं ऊर्ध्वलेजावेहै ॥ और अपानवायुकूं नीचेलेजावेहै ॥ अंगुष्ठपरिमाणहृदयदेशमैस्थितहोनेसें परिच्छिन्नपरिमाणवालाप्रतीतहोवेहै ॥ औरयाआत्माकूं नेत्रआदिकइंद्रिय रूपादिकोंकेज्ञानरूपीबलीयांकूं प्राप्तकरेहैं ॥ जैसेवैश्यलोकभेटालेकरि राजाकूंमिलेहैं ॥ तैसेयाआत्माकूं नेत्रादिक आपनेआपनेविषयोंके ज्ञानोंकूं लेकरिशरणमैप्राप्तहोवेहैं ॥ जबीराजाआपनेपुरसेंगमन करे तबीमंत्रीभृत्य राजाकेसाथहीगमनकरेहैं ॥ तैसे याआत्माके याशरीररूपपुरसें गमनकरणेसें इंद्रिय प्राण मन सर्वसाथहीगमन करेहैं ॥ औरपुनःयाशरीररूपीपुरकी शोभारहेनहीं तथादाहकरणेयोग्यहोवेहै ॥ यहही आत्मा तुमारेप्रश्नकाविषयहै ॥ हेनचिकेता यहशरीरभी प्राण अपान तथानेत्रादिकोंकरिजीवेनहीं ॥ काहेते यहसर्वजडहैं इनसर्वकीस्थिति तथास्वस्वव्यापारोंमैप्रवृत्ति रथकीन्यांई बिनाचेतनदेवसें होवेनहीं ॥ यातेंइनसर्वकाप्रेरकइनसर्वसेंभिन्नहै ॥ हेनचिकेता यहधर्मादिकोंसेंरहित आत्माकाउपदेशकरा ॥ औरजोतुमने मरणसेंअनंतर आत्माकासत्त्वपूछाथा सोअबकहेहैं ॥ हेनचिकेता ब्रह्मजोगोप्यहै तथाअनादिहै यातेंभिन्न वास्तवसें जीवनहींहै ॥ औरयहजीव आपनेपरमार्थरूपकूं नजानकरि जन्ममरणकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेनचिकेता जैसेयहजीव शरीरकूंत्यागकरि आपनेअज्ञानसें क्लेशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोश्रवणकरो जिनकेपुण्यविशेषहैं और पापन्यूनहैं ते मानुष्यादिजंगमदेहकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ और जिनपुरुषोंके पापअधिकहैं पुण्यन्यूनहैं तेपशुआदिशरीरकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और पापकर्मकी अतिअधिकतासें वृक्षादिदेहकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेन

चिकेता यामानुष्यदेहमै जैसेपुरुषने कर्मकरेहैं तथाजैसीयापुरुषके मनमै वासना उत्पन्नभयीहैं ॥ तिनकर्मवासनाके अनुसार याजीवका
वारंवार घटीयंत्रकीन्यांई यासंसारमै नीचे उपरी गमन आगमनहोवेहै ॥ विनाब्रह्मबोधसें याजन्ममरणरूपसंसारसें कदाचित् मुक्ति
॥१२॥ होवेनहीं ॥ औरजीवब्रह्मके एकत्वज्ञानसें यासंसारकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ यातेंजीवब्रह्मके अभेदज्ञानवासते अबपुनःउपदेशकरेहैं ॥
हेनचिकेता स्वप्नमै देहइंद्रियआदिकं शयनकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरयहस्वयंज्योतिआत्मा शयनकूंप्राप्तहोवेनहीं सर्वकूंप्रकाशकरेहै ॥
औरस्वप्नअवस्थामै अनेकपदार्थोंकूं यहआत्माही अविद्यासाथमिलकरि उत्पन्नकरेहै ॥ और यहसाक्षीही शुद्धरूपहै स्वप्नमै जे अनेक
पदार्थ स्त्री गृह क्षेत्रादिक उत्पन्नभयेहैं तिनका आत्मामै किंचित्भीसंबंधनहींहै ॥ और साक्षी अद्वितीयब्रह्मरूपहै और मोक्षरूपहै ॥
हेनचिकेता भूरादिचतुर्दशलोक तथातिनलोकोंमै स्थितजे जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज यहच्यारिप्रकारकेप्राणीहैं ॥ तेसंपूर्णही
याब्रह्मात्माके आश्रितहोइकरिरहेहैं ॥ ताआत्माकूं कोई उल्लंघनकरिसकतानहीं ॥ ताब्रह्मात्माकूंही श्रुतिभगवती अनेकदृष्टांतोंसें
कथनकरेहै ॥ हेनचिकेता जैसेवास्तवसें अग्निएकहीहै औरकाष्ठादिउपाधिकरि अनेक रूपसेंप्रतीतहोवेहै तैसेएकहीआत्मासर्व
भूतोंमैस्थितहै औरहस्तीपिपीलिकादिकोंमै अनेकरूपसें प्रतीतहोवेहै ॥ औरजैसेवायुएकहूआभी अनेक प्राणीयोंमै स्थितहोइकरि
अनेकरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ तैसेएकहीआत्मा ब्रह्मासेंआदिस्तंबपर्यंत सर्वभूतोंमै व्यापकहै ॥ हेनचिकेता जैसेयहसूर्यभगवान् सर्व
भूतोंकेनेत्रोंकादेवताहोइकरि सर्वकेनेत्रोंमैस्थितहोवेहै ॥ और नेत्रोंके अंधत्वादिकदोषोंसें तथास्वच्छतादिगुणोंकरि लिपायमानहोवे
नहीं ॥ तैसेयह आत्मा साक्षीरूपसें स्थूलसूक्ष्मशरीरोंविषे स्थितहूआभी तिनशरीरोंके गुणदोषोंकरि लिपायमानहोवेनहीं ॥ और ॥२१॥
यहआत्मा असंगहै यातें अध्यासिकलोकोंकेदुःखोंसें कदाचित् लिपायमानहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता यहएकहीआत्मा सर्वभूतोंके
अंतरहै तथा सर्वजगत्कानियंताहै ॥ और वास्तवसें एकहीहूआभी अनेकरूपोंकूं उपाधिकरिधारणकरेहै ॥ ताआत्माकूं जेअधि

कारी आपनेअंतःकरणमै साक्षीरूपसेंप्रत्यक्षजानेंहैं ॥ तिनविवेकीपुरुषोंकूंही नित्यब्रह्मानंदकीप्राप्तिहोवेहै ॥ और जेविषयआसक्त चित्तहैं तेकदाचित् तानित्यआत्मानंदकूं प्राप्तहोवेंनहीं ॥ उलटासंसारचक्रमैही क्लेशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता यहआत्मा नित्योंका नित्यहै नित्यजेअन्यशास्त्रमै कालआकाशादिकहैं तिनसर्वकूं सत्तास्फूर्त्तिदेनेहाराहै यातेंहीश्रुतिभगवतीने नित्यकानित्यकहाहै ॥ औरयहआत्माचेतनजेब्रह्मादिकहैं तिनसर्वकूंचेतनकरणेहाराहै ॥ यातें श्रुतियाआत्माकूंचेतनोंकाचेतनकहेहै ॥ यहआत्मासर्वज्ञपरमेश्वरही सर्वप्राणीयोंकेकर्मअनुसार फलदेनेहाराहै ॥ ताआत्माकूं जेधीर अंतःकरणमै साक्षीरूपसेंजानेंहैं तेअधिकारी नित्य शांतिकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ इतरबहिर्मुखोंकूं शांतिप्राप्तहोनीदुर्लभहै ॥ वाणीकाअविषय परमसुखरूपजोब्रह्महै ताकूं संन्यासी अपरोक्षरूपसेंजानेंहैं ॥ ऐसेसुखकूं मै अधिकारी कैसे निश्चयकरूं सोसुखरूपब्रह्मप्रकाशताहै वानहीं ॥ तहांयहउत्तरहै यहब्रह्मात्माप्रकाशताहै ॥ औरस्वयंज्योतिरूपहै ॥ याआत्माकेप्रकाशकरणेमै सूर्य तथाचंद्र तथातारे तथाविद्युत् यहसर्वसमर्थनहींहैं ॥ औरजबीसूर्यादिकभी याआत्माके प्रकाशकरणेमै समर्थनहींतौ यह अग्नि आत्माकूंप्रकाशकरेगा यामैंक्याकहनाहै ॥ यातेंआत्माकेप्रकाशकेपश्चात्‌ही तेसूर्यचंद्रादिप्रकाशकरेहैं ॥ स्वतंत्रप्रकाशसूर्यादिकोंकानहींहै ॥ किंतु आत्माकेप्रकाशकरिकेही यहसूर्यादिसर्वजगतप्रतीतहोवेहै ॥ अबकारणब्रह्मका निरूपणकरेहैं जैसेवृक्षादिकार्यद्वारा कारणबीजका अनुमानहोवेहै ॥ तैसे याजगत्‌रूपकार्यद्वारा ताकारणब्रह्मकाअनुमानहोवेहै ॥ हेनचिकेता यहसंसाररूपी अश्वत्थकावृक्षहै ॥ जोवस्तुदूसरेदिनपर्यंतनरहे ताकूंअश्वत्थकहेहैं ॥ यहशरीरादिरूपसंसार क्षणभंगुरहै यातें यासंसारकूंभी अश्वत्थरूपसें श्रुतिभगवतीनेकथनकराहै ॥ औरयहसंसार कदलीके स्तंभकीन्यांई साररहितहै ॥ यासंसाररूपवृक्षका मूलकारणसर्वसेंऊर्ध्वब्रह्महै ॥ तथा चतुर्दशभुवनमैहोनेवाले जेअंडजादिचतुर्विधजीवहैं तेसर्वब्रह्ममूलकीअपेक्षासें नीचेकीशाखाहैं ॥ और जैसें बीजसेंअंकुरअंकुरसेंबीजहोवेहै ॥ तैसेयहजगतस्वरूपसेंतौ अनित्यहै परंतुप्रवाहरूपसें अनादिहै ॥ पुण्यपापरूपकर्मसें शरी

45

क० उ० रादिउत्पन्नहोवेहैं ॥ औरशरीरसें कर्मउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेश्रुतिमाताने प्रवाहरूपसें यासंसारकूं अनादिकहाहैं ॥ जोयासंसारवृक्षका भा० ३
मूलकारणब्रह्महै सोब्रह्मशुद्धहै तथास्वप्रकाशहै औरसोईब्रह्मअविनाशीहै ॥ ताब्रह्ममैही सर्वलोकस्थितहैं ॥ औरताब्रह्मकूं कोईपुरुष उ
॥ १३ ॥ ल्लंघनकरिसकेनहीं ॥ हेनचिकेता जोतुमनेधर्मादिकोंसेंरहितपूछाथा सोयहहीआत्माहै ॥ हेनचिकेता यहसंपूर्णजगत् जापरमात्मासें
उत्पन्नभयाहै ॥ तथाजापरमात्मामै स्थितहोइकरि आपने आपनेव्यापारोंमैप्रवृत्तहोवेहै ॥ सोयहआत्माहीमृत्युरूपहोइकरि सर्वकासं
हारकरेहै ॥ और इंद्रकेउद्यतवज्रकीन्यांई यहआत्माही संपूर्ण इंद्र चंद्र सूर्यादि जगत्कूंमहान् भयकाहेतुहै ॥ याआत्माकूंही विवेकीजा
नतेहूए अमृतरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता जैसेलोकपालभीपरमात्मासें भयभीतहैं सोश्रवणकरो ॥ यापरमात्माकेभयकरिकेही
अग्निसर्वत्रव्यापकहूआभी आपनेकार्य प्रकाश पाकादिकोंकूंकरेहै ॥ सर्वजगत्केभस्मकरणेमै समर्थहैभी परंतु तापरमात्माकीआज्ञासें
सर्वजगत्कादाहकरेनहीं ॥ औरतापरमात्माकेभयसेंही सूर्य जगत्कूं तपावेहै ॥ औरतापरमेश्वरकेभयसेंही इंद्र वर्षाकरेहै ॥ तापरत्मा
केभयसेंही वायुचलेहै ॥ तापरमात्माकेभयसेंही मृत्युसर्वजीवोंकेप्राणोंकूं निकासेहै ॥ पूर्वच्यारिदेवतावोंकीअपेक्षासें मृत्युकूं पंचमवे
दनेकहाहै ॥ जबीऐसेमहान्प्रभाववालेदेवताभी यापरमात्मासें भयकूंप्राप्तहोवेहैं तौअन्यजीवकीक्याकथाहै ॥ भयकीनिवृत्तिका उपा
यब्रह्मज्ञानहै ॥ हेनचिकेता जबीयहपुरुष याशरीरकेहोतेही आत्माकूंनजाने तौअनंतयोनियोंमै वारंवारजन्ममरणकूंही प्राप्तहोवेहै ॥
औरपुण्यकर्मकेअनुसार जबीस्वर्गादिकफलोंकूंभी प्राप्तहोवेहै तहांभी मरणादिकोंका क्लेशतौनिवृत्तहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता जैसेशुद्धदर्प
णविषे मुखस्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे याअधिकारी देहमैजाशुद्धबुद्धिहै तामै यहआत्मास्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ औरजैसेस्वप्नअवस्थामै ॥ २२ ॥
आपनास्वरूप जीवोकूंस्पष्टप्रतीतहोवेनहीं ॥ तैसे स्वर्गलोकमै भोगोंकीअधिकतासें यहआत्मा स्पष्टप्रतीतहोवेनहीं जैसे सकंपज
लमै कंपादि विपरीतधर्मवाला आपनामुखप्रतीतहोवेहै ॥ तैसे गंधर्वलोकमै विषयोंकीआसक्तिसें विपरीतधर्मसहित आत्माप्रतीतहो

वेहै ॥ इसरीतिसें औरलोकोंमै यथार्थबोधहोनादुर्घटहै ॥ और छाया आतप जैसेभिन्नभिन्नप्रतीतहोवेहैं तैसे ब्रह्मलोकमै आत्मापंच
कोशसें भिन्नरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ परंतुसोब्रह्मलोक उपासनाकरिकेप्राप्तहोवेहै ॥ औरताब्रह्मलोककीप्राप्तिमै विघ्नअनंतहैं यातेंताब्रह्म
लोककी आशाकरि याअधिकारिदेहमै वेदांतश्रवणादिकोंसें विमुखहोनानहीं ॥ हेनचिकेता आकाशादिकपंचभूतोंसें भिन्नभिन्नउ
त्पन्नभयेजेइंद्रियहैं तिनसर्वइंद्रियोंसें आत्माभिन्नहै ॥ और यहइंद्रियादिक सुषुप्तिआदिअवस्थामै लयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरजागरि
तअवस्थामै उदयहोवेहैं ॥ और आत्माकदाचितभी उदय अस्तकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसेविवेकी जानताहूआ जन्ममरणकेहेतु कर्तृत्व
भोक्तृत्वरूपबंधकूं निवृत्तकरेहै ॥ हेनचिकेता इंद्रियोंसेंमनपरहै ॥ मनसेंनिश्चयरूपबुद्धिपरहै ॥ ताव्यष्टिबुद्धिसें समष्टिबुद्धिरूपमहत्तत्त्वपरहै ॥
तामहत्तत्त्वसें अव्यक्त जोमायाहै सामायापरहै ॥ तामायाकूं प्रकाशकरनेहारा जोपुरुषआत्माहै सोपरहै ॥ सोआत्माव्यापकहै औरबुद्धि
आदिकोंसेंरहित है ॥ याआत्माकूंही जानकरि विवेकीजन्ममरणसेंरहितहूआ परममोक्षकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरयहआत्मा नेत्रादिकोंकावि
षयनहीं इसीसें याआत्मामै नेत्रादिप्रवृत्तहोवेंनहीं ॥ यातेंइननेत्रोंकरि कोईपुरुषभी याआत्माकूं देखसकेनहीं ॥ यातें संकल्पसहितमनकूं
वशकरणेहारी जाअंतर्मुखशुद्धबुद्धिहै ताबुद्धिसेंही विवेकीपुरुष आत्माकूंजानेहैं ताआत्मज्ञानसेंही परममोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ हेनचिकेता
जाकालमै यापुरुषके ज्ञानइंद्रिय तथामन आपनीचंचलताकूं त्यागकरि निश्चलताकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ताकालमै तानिश्चलताकूं परमगति
यानामकरि महात्माकहेहैं ॥ ताएकाग्रताकूंही महात्मा योगमानतेहैं ॥ यहइंद्रियोंकी निश्चलधारणाही परमयोगहै ॥ यहइंद्रियोंकी
धारणारूपयोगही ब्रह्मप्राप्तिद्वारा याजगत्केउत्पत्ति तथासंहारकी सामर्थ्यरूपऐश्वर्यकी प्राप्तिकाकारणहै ॥ यातें तायोगकीप्राप्ति
वासते प्रमादकूंत्यागकरे ॥ हेनचिकेता तायोगकेविनातौ यहआत्मावाणीकरि प्राप्तहोवेनहीं तथाश्रोत्रनेत्रादिकोंकरि यहआत्माप्रा
प्तहोवेनहीं ऐसाशुद्धचेतनही सत्यरूपहै याप्रकारकेवचनोंकूं कथनकरणेहारे जेआस्तिकपुरुषहैं तिनआस्तिकपुरुषोंकेमतकूं त्यागक

रिके जेबहिर्मुख नास्तिकोंकेमतमै श्रद्धाकरेहैं तिनबहिर्मुखोंकूं आत्मबोध कदाचितहोवेनहीं ॥ हेनचिकेता यहअधिकारी प्रथम आ
त्माकूं बुद्धिआदिउपाधिवालानिश्चयकरे ॥ तथाजगत्काकारण अस्तिरूपसें निश्चयकरे ॥ ताअनंतर वास्तव अविक्रिय शुद्धरूपसें नि
 श्चयकरे ॥ ऐसेजाअधिकारीने प्रथम अस्तिरूपसें आत्माकूंनिश्चयकराहै ॥ ताअधिकारीकूंही आत्माप्रसन्नहोइकरि आपनेयथार्थरूप
कूंदिखावेहै ॥ हेनचिकेता यापुरुषकींबुद्धिमै स्थितजेविषयोंकीइच्छाहैं तेसंपूर्ण जिसकालमै निवृत्तहोवेहैं ॥ तिसकालमै अमृतभाव
कूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरअज्ञानकालमै मर्त्यनाममरनेवाला मानताथा अबब्रह्मबोधकेप्रतापसें मरणादिकोंकूंत्यागकरेहै ॥ और याशरीरमै
ही ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेनचिकेता जिसकालविषे यापुरुषकेग्रंथिकोन्यांई हृदयमैस्थितबंधनरूप देहादिकोंमैंअहंता औरपुत्रादि
कोंमै ममता निवृत्तहोवेहैं ॥ ताकालमैहीपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरजन्ममरणकूं त्यागकरि यहांहीब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥
जाकीअविद्यादिग्रंथिनिवृत्तिकूंप्राप्तहोवेहै ताकीतौयाशरीरमैही मुक्तिहोवेहै ॥ ताकास्वर्गनरकादिकोंमै गमनहोवेनहीं ॥ औरजेउपा
सकहैं तथा अन्यशुभअशुभ करणेहारेहैं तिनकीगतिकाप्रकारकहेहैं ॥ हेनचिकेता हृदयरूपमूलसें प्रधाननाडीयां एकउपरिशत १०१
निकसेहैं ॥ तिनसर्वनाडीयोंसेंविलक्षण जाकूं सुषुम्नाकहेहैं ॥ सासुषुम्नानाडी ब्रह्मलोककोप्राप्तिमैद्वारहै औरसूर्यमंडलपर्यंत प्राप्तभयी
है ॥ तासुषुम्नानाडीकरि यहजीव ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवेहै ॥ अन्यनाडीयोंकरि यहजीव उच्च नीच शरीरकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ अबसर्वकठ
उपनिषत्केअर्थकूं संक्षेपसेंप्रतिपादनकरेहैं ॥ हेनचिकेता यहसर्वकेअंतरआत्मा अंतःकरणके अंगुष्ठपरिमाणहोनेसें अंगुष्ठपरिमाणवाला
है ॥ औरयहआत्मा सर्वकेहृदयमैस्थितहै ॥ ताआत्माकूं तीनशरीरसेंभिन्नजाने ॥ जैसेमुंजरूपबाह्यत्वचासें इषीकारूपमध्यकेतृणकूं ॥ २३ ॥
भिन्नकरेहैं ॥ तैसे अन्वयव्यतिरेककरि स्थूलसूक्ष्मकारणयातीनशरीरसें आत्माकूंभिन्नकरे ॥ संक्षेपसें अन्वयव्यतिरेककूंप्रसंगसेंकहेहैं ॥
स्वप्नअवस्थामै यहस्थूलशरीर प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातेंयास्थूलशरीरकाव्यतिरेकहै ॥ आत्मास्वप्नमैभी प्रकाशकरेहै ॥ यहआत्माका

स्वप्नमैंअन्वयहै ॥ सुषुप्तिमैंसूक्ष्मशरीरकाअभावहै यहसूक्ष्मशरीरकासुषुप्तिमैंव्यतिरेकहै ॥ आत्मासुषुप्तिमैंभी अज्ञानकूंप्रकाशकरेहै यह आत्माकासुषुप्तिमैं अन्वयहै ॥ और अज्ञानरूपकारणशरीर समाधिअवस्थामैंरहेनहीं यहकारणशरीरकाव्यतिरेकहै ॥ और आत्मा समाधिअवस्थामैंभी प्रतीतहोवेहै ॥ यहआत्माकासमाधिअवस्थामैंअन्वयहै ॥ ऐसेधैर्यसें अन्वयव्यतिरेकरूपयुक्तिकरिके तीनशरी रोंसें आपनेसाक्षीरूपकूंपृथक्करे ॥ तासाक्षीकूं ब्रह्मरूपनिश्चयकरे कैसाब्रह्महै ॥ स्वयंप्रकाशहै तथाशुद्धहै जरामरणशून्यहै ॥ ताशुद्ध ब्रह्मकूं जाननेवालाविवेकीभी शुद्धब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ कथाकूंसमाप्तकरेहैं ॥ ऐसेयमराजासेंउपदेशकूंग्रहणकरि तथासंपूर्णसमाधिके प्रकारकूं ग्रहणकरि नचिकेताब्रह्मकूं प्राप्तहोताभया ॥ और पुण्यपापसेंरहितहूआ अमृतभावकूं प्राप्तभया ॥ ऐसेनचिकेताकीन्यांई कोईअन्यभी याब्रह्मकूंजाननेवाला अमृतभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अबशांतिमंत्रकेअर्थकूं कहेहैं ॥ सोपरमात्मा हमगुरुशिष्यदोनूंकूं ज्ञानप्रकाशकरनेसेंरक्षाकरे ॥ तथा ज्ञानके फलप्रगटकरनेकरि हमारापालनकरे ॥ औरहमगुरुशिष्यका पठनबलवालाहोवे सर्वविघ्नोंके नाशकरणेवालाहोवे ॥ और हमारेप्रमादकरिपठनेपठानेसें भयाजोदोष तादोषसेंउत्पन्नभया जोहमगुरुशिष्यमैंद्वेष सोद्वेष हमकूं मतिप्राप्त होवे अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यातीनप्रकारकेविघ्नोंकी निवृत्तिवासते अंतमैं तीनवारशांतिपाठहै ॥ सोयहहै ॥ ॥ ॐ शांतिःशां तिःशांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपाद शिष्यसंप्रदायप्रविष्ट परमहंसपरिव्राजकस्वामि अच्युता नन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे. यजुर्वेदीयकठोपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ कठोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥

॥ अथ प्रश्नोपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

 ॐ नमोवेदपुरुषाय ॥ अब अथर्ववेदीय प्रश्न उपनिषत्प्रारंभः ॥ किसीदेशमै षट्ऋषि परस्परस्नेहवालेहूए एकठेहोतेभये ॥ तिनषट्ऋषी
योंकेनाम वर्णनकरेहैं ॥ भरद्वाजऋषिकापुत्रहोनेसें भारद्वाजनामकूंप्राप्तभया सुकेशानामवालाएकहोताभया ॥ द्वितीय शिविऋषि
 कापुत्रहोनेसें शैव्यनामकूंप्राप्तहूआ सत्यकामनामाऋषिहोताभया ॥ औरतीसरागोत्रकरि गार्ग्यसंज्ञाकूंप्राप्तभया ॥ सौर्यायणिनामा
ऋषिथा ॥ औरचतुर्थ अश्वलऋषिकापुत्रहोनेसें आश्वलनामवालाहूआ कौशल्यनामकऋषि होताभया ॥ औरपंचम विदर्भऋषिके
कुलविषे उत्पन्नहोनेसें वैदर्भियानामकूं प्राप्तहूआ भार्गवनामाऋषिहोताभया ॥ षष्ठ कत ऋषिकेकुलविषे उत्पन्नहोनेसें कात्यायन
नामकूं प्राप्तहूआ कबंधीनामाऋषिथा ॥ यहषट्ऋषि च्यारिवेदोंकूंपठकरि वेदउक्तकर्मउपासनाकूं करतेभये ॥ ताकर्म उपासनाके
करणेसें शुद्धअंतःकरणवालेहूए निर्गुणब्रह्मकेजाननेकीइच्छाकूं करतेभये ॥ और आपसमै मिलिकरि याप्रकारका विचारकरतेभये ॥
जोगुरु ब्रह्मश्रोत्रिय तथाब्रह्मनिष्ठहोवे सोहमकूं निर्गुणब्रह्मका उपदेशकरे ॥ ऐसेविचारकरतेहूए तेऋषि ब्रह्मश्रोत्रियतथाब्रह्मनिष्ठ
पिप्पलादगुरुकी शरणकूंप्राप्तहोतेभये ॥ औरकहतेभये हमकूंनिर्गुणब्रह्मका उपदेशकरो ॥ दंतधावन काष्ठरूपभेटाकूं ग्रहणकरि शरण
कूंप्राप्तभयेजेषट्ऋषिहैं तिनकूं पिप्पलादऋषियहकहताभया ॥ हेऋषयः यद्यपितुमआगेही तपस्वीहो तथापि तुममेरेसमीप ब्रह्मचर्यसें
तथाश्रद्धासें इंद्रियसंयमरूपतपकूंधारकरि एकवर्षपर्यंतरहो ॥ एकवर्षकेपश्चात् जैसीतुमारीइच्छाहो तैसेतुमनेप्रश्नकरने औरयदिहम
तुमारेप्रश्नोंके उत्तरदेनेमै समर्थभये तबतुमारेप्रति सर्वउत्तरदेवेंगे ॥ ऋषिपिप्पलादने जोकहा हमजानेंगे तबहमउत्तरदेवेंगे ॥ याकह
नेसें अभिमानराहित्य यहब्रह्मवेत्ताकाचिन्हहैयहजनाया ॥ तामैहेतुयहहै जोआगेपिप्पलादनामाऋषिने षट्ऋषीयोंके प्रश्नोंके
उत्तरदीयेहैं ॥ ऐसेजबी पिप्पलादऋषिनेनम्रतापूर्वककह्या तबीतेऋषि श्रद्धापूर्वक तापिप्पलादऋषिकेसमीप ब्रह्मचर्यसहित तपकूं
करतेभये ॥ वर्षकेव्यतीतभयेसेंअनंतर कबंधीनामा कतऋषिकापुत्रहोनेसें कात्यायननामकूं जोप्राप्तभयाथा ॥ सोपिप्पलादमुनिकूं

दंडवत् प्रणामकरि यहप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन् यहसंपूर्णप्रजा किसकारणसेंउत्पन्नहोवेहैं ॥ यहकृपाकरिहमारेकूंकहो ॥ ऐसेकबंधीऋ
षिकेप्रश्नकूं श्रवणकरि पिप्पलादगुरुउपदेशकरेहैं ॥ हेकबंधीकात्यायन प्रजापतिजोविराट्है सोविराट्विचारकरिके भोक्तारूपअग्निकूं
औरभोग्यरूपचंद्रमाकूं रचताभया ॥ यद्यपि मायाविशिष्टपरमेश्वरसें जगत्उत्पत्तिकथनकरणेयोग्यथी ॥ तथापि ॥ कात्यायन महासृष्टि
परमेश्वरसेंउत्पन्नभयीहै ऐसेपूर्वहीभलीप्रकारसेंजानताहै ॥ ऐसेजानकरि तामहासृष्टिकीउपेक्षाकरिके विराट्सेंउत्पन्नभयीसृष्टिकूं पिप्पला
दगुरु निरूपणकरेहैं ॥ ऐसे उत्पन्नकरेजेअग्निचंद्रमाहैं यहदोनूं अग्नि चंद्रमा मेरीबहुतप्रजाकूं उत्पन्नकरेंगे ऐसेविचारकरि ताविराट्ने अग्नि
चंद्रमा यहदोनूंउत्पन्नकरे ॥ सोभोक्तारूपअग्नि दोप्रकारकाहै ॥ एकअध्यात्मप्राणहैसोभोक्ताहै ॥ दूसराअधिदैवअग्निहै सोसूर्यरूपहै ॥
औरचंद्रमा अन्नरूपहै ॥ अर्थयहभोग्यरूपहै ॥ जोमूर्त्तरूपस्थूलहै तथाअमूर्त्तरूपसूक्ष्महै सोसर्वअन्नरूपहै ॥ औरवास्तवसेंतो अमूर्त्तप्रा
णअत्ताहै ॥ अर्थयहभोक्ताहै ॥ गौणसें अमूर्त्तकूंभी श्रुतिनेपूर्वअन्नरूपताकही अन्नतोकेवलमूर्त्तजोस्थूलहै सोईभोग्यहै ॥ अबभो
क्ताजो अधिदैवरूपकरि आदित्यहै ताकूंकहेहैं ॥ सूर्यभगवान् पूर्वदिशासेंउदयहूआ पूर्वदिशामैजेप्राणहैं तिनकूं आपनीकिरणोंमै
धारणकरेहै ॥ अर्थयह ॥ जोआपनेप्रकाशसें पूर्वदिशाकेनेत्ररूपप्राणोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ तैसेदक्षिणदिशामै स्थितप्राणोंकूं तथातादिशा
कूंप्रकाशकरेहै ॥ तथापश्चिम उत्तरदिशाकूं प्रकाशकरेहै ॥ तथातिनदिशामैस्थितनेत्ररूपगौण प्राणोंकूं प्रकाशकरेहै तथाच्यारिकोंणों
कूं औरतिनकोंणोंमैस्थितनेत्ररूपप्राणोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ तैसेऊर्ध्वदिशा तथानीचेकीदिशाकूं प्रकाशकरेहै औरउपरिनीचेस्थितजेनेत्रहैं
तिनकूंप्रकाशकरेहै ॥ हेकात्यायन यहसूर्यभगवान् सर्वदिशावोंमै प्रकाशताहूआ सर्वनेत्ररूपप्राणोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ औरसर्वप्रकाश्यव
स्तुका भोक्तापुरुषहै तथासर्वविश्वकाआत्माहै ॥ हेकात्यायन यहसर्वरूपतथा किरणवाला तथाज्ञानरूपसर्वप्राणोंका आश्रयसू
र्यहै ॥ सर्वप्राणीयोंकानेत्ररूप औरअद्वितीय तथातपावनेहारा तथाप्राणीयोंकेप्राणोंकरि सहस्ररूपोंसेंवर्त्तमान् जोसूर्यउदयहोताहै

प्र० उ० ताकूंपंडितपुरुषजानतेहैं ॥ हेकात्यायन यहप्रजापतिविराट्वर्षरूपहै ॥ तावर्षरूपप्रजापतिके दक्षिणायन तथाउत्तरायणरूप दोमार्गहैं ॥
जेपुरुषअग्निहोत्रादिरूप इष्टकर्मकूंकरेहैं तथावापी कूप तडाग देवतामंदिर अन्नदान आदिरूपपूर्त्तकर्मकूंकरेहैं ॥ तैसेनित्यकर्म करणे भा० ४
॥ २ ॥ हारे चंद्रलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ताचंद्रलोकसें यालोककूं प्राप्तहोवेहैं कर्मफलभोगकेअनंतर चंद्रलोकमै तिनकारहनाहोवेनहीं ॥ ऐसेस्वर्गलो
कार्थी तथाप्रजाकीकामनावालेहूए दक्षिणायनमार्गकूंही प्राप्तहोवेहैं ॥ तामार्गकरि भोग्यरूपचंद्रमाकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेकात्यायन उत्तरा
यणमार्गकरि भोक्तारूपसूर्यकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अबउत्तरायणमार्गकीप्राप्तिमै साधनोंकूं श्रवणकरो ॥ तपजोइंद्रियोंकाजयहै ॥ तथाब्रह्म
चर्य श्रद्धा सगुणउपासनादिक ताउत्तरायणमार्गकीप्राप्तिमै साधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरि जेपुरुष यहमानतेहैं ॥ स्थावरजंगमजगत्का
पालकजोआदित्यहै सोईहमहैं ऐसेमाननेवालेपुरुष उत्तरायणमार्गद्वारा आदित्यकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यहआदित्यसर्वप्राणोंकाआश्रयहै ॥
तथाअभयहै ॥ तथाअमृतहै ॥ उपासकपुरुषोंकीपरमगतियहहै ॥ यासूर्यमंडलद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तभयाजोउपासकहै सोयासंसारमै
पुनःप्राप्तहोवेनहीं ॥ औरकेवलकर्मी उपासनाविना याआदित्यमंडलकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ यद्यपि गीतामै भगवान्ने यहकहाहै हेअ
र्जुन ब्रह्मलोकपर्यंत जेलोकहैं तिनसर्वसेंयासंसारमै अवश्यआगमनहोवेहै ॥ यास्थानमैश्रुतिने तिनउपासकपुरुषोंका आगमनकाअ
भावप्रतिपादनकराहै ॥ यातें गीतावचनसें यहश्रुतिवचन विरुद्धप्रतीतहोवेहै ॥ जैसेवेदईश्वररचितहै तैसेगीताभीश्रीकृष्णभगवान्र
चितहै यातेंगीताकूं अप्रमाणताकहनाभीबनेनहीं ॥ तथापि जेपुरुषईश्वरउपासनाविना पंचाग्निविद्या अश्वमेधदृढब्रह्मचर्य इत्यादिसा
धनोंकरि उत्तरायणमार्गद्वारा ब्रह्मलोकमैप्राप्तभयेहैं तिनकाआगमनहोवेहै ॥ और जेईश्वरउपासनाकरि तथाअहंग्रहउपासना ॥ २६ ॥
करि ब्रह्मलोकमै प्राप्तभयेहैं तिनकायासंसारमै आगमनहोवेनहीं ब्रह्मलोकमै ईश्वरकृपाकरि ज्ञानकूंप्राप्तहूए परममोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥
यातें गीतामै ईश्वरउपासकसेंविना जेपुरुषपंचाग्निविद्याअश्वमेधादिउपायसें ब्रह्मलोकमै प्राप्तभयेहैं तिनकाआगमनकहाहै ॥ औरया

उपनिषत्मै आदित्यभगवान्की अहंग्रहउपासनासें आगमनकाअभावप्रतिपादनकराहै ॥ यातैंगीतावचनसें विरोधनहीं ॥ हेकात्याय न यासूर्यभगवान्काषट्ऋतुरूप पादहैं ॥ मूलश्रुतिमें हेमंतशिशिरकीएकताकेअभिप्रायसेंसूर्यकेपंचऋतुपादकहेहैं ॥ द्वादशमासरूप अन्यअवयवहैं ॥ औरयहसूर्य तीसरेआकाशमैंहै ॥ जलवान्है ॥ सूर्यसेंहीं वर्षाहोवेहै ॥ दूसरेवेदकेआचार्यतौ ऐसेकहेहैं ॥ सप्तअश्वोंवालाजोरथहै तामैंस्थितजोसूर्यहै सोईवर्षरूपचक्रहै तावर्षरूपचक्रकी षट्ऋतुरूपअराहैं ॥ तासूर्यमैजगत्स्थितहै ॥ मासरूपप्रजापतिहै मासरूपप्रजापतिका कृष्णपक्षअन्नहै शुक्लपक्ष भोक्ताप्राणहै ॥ ऐसेप्राणआदित्यरूपअग्नि भोक्ताकूं जेजानतेहैं तेकृष्णपक्षमैंभी यज्ञकरतेहूए शुक्लपक्षमैंहीकरतेहैं ॥ ऐसेनजाननेवाले शुक्लपक्षमैंभी यज्ञकरतेहैं तौभी कृष्णपक्षमैंहीकरतेहैं ऐसेजानना ॥ दिनरात्रिरूपप्रजापतिहै तिसप्रजापतिका दिनप्राणहै रात्रिअन्नहै ॥ जेपुरुष दिनमैंस्त्रीकेसाथमैथुनकरतेहैं ते आपनेप्राणोंका नाशकरतेहैं ॥ जेगृहस्थ विधिपूर्वक रात्रिमै आपनीस्त्रीकेसाथमैथुनकरतेहैं तेब्रह्मचारीहीहैं ॥ हेकात्यायन अन्नरूपभीप्रजापतिहै मातापिताने भक्षणकीयाजोअन्नहै ताअन्नसें वीर्यऔररक्तउत्पन्नहोवेहैं ॥ तावीर्यऔररक्तसें यहसर्वजीवउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेरात्रिमैंआपनीस्त्रीकेसाथगमनकरणा यहप्रजापतिकाव्रतकहावेहै याव्रतकूंजेगृहस्थविधिपूर्वककरतेहैं ॥ तिनकूं प्रत्यक्षफलतौ पुत्र कन्याकीप्राप्तिहोवेहै ॥ द्वितीय अदृष्टफलस्वर्गप्राप्तहोवेहै ॥ हेकात्यायन निर्मलब्रह्मलोकतौ तिनकूंप्राप्तहोवेहै जिनकेसर्वदासत्यसंभाषणहै तथाजिनका किसीव्यवहारमैं कौटिल्यनहींहै और जिनकेमायानहीं ॥ मायानामबाह्यसेंऔरप्रकारकाप्रतीतहोना अंतरसेंऔरप्रकारकाहोना ॥ सत्यसंभाषण तथा कौटिल्यराहित्य तथामायाराहित्य तथाईश्वरउपासना इनसाधनोंकेविना ब्रह्मलोकप्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसे पिप्पलादऋषिने अग्नि चंद्रमाद्वाराप्रजापतिही सर्वजगत्काकर्त्ताहैयहकहा ॥ ऐसेप्रजापतिविराट्कूं जगत्काकारणनिश्चयकरि कात्यायनतौतूष्णींहोताभया ॥ १ ॥ अधिदैवसूर्य अग्निआदिरूपसें प्राणकीउपासनामै उपयोगीअर्थका प्रथमप्रश्नमै कथनकरा अबअध्यात्मरूप

 सें प्राणकेप्रभाववके निरूपणवासतें द्वितीयप्रश्नकाआरंभहै ॥ अबवैदर्भिनामा भार्गवऋषिप्रश्नकरेहै ॥ भार्गवउवाच ॥ हेभगवन् यासं
घातकूं कितनेदेवताधारणकरेहैं ॥ और तिनदेवतावोंमैभी कितनेदेवता प्रकाशकरणेहारेहैं तिनसर्वदेवतावोंविषेभी श्रेष्ठकीर्त्तिअधिक
॥ ३ ॥ तादिगुणोंवालाकौनहै यातीनप्रश्नोंकाउत्तरकहो ॥ अबपिप्पलादगुरुउत्तरकहेहैं ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेभार्गव आकाशादिपंचभूत
श्रोत्रादिपंचज्ञानइंद्रिय वागादिपंचकर्मइंद्रिय एकमनएकप्राण इनकेअभिमानीसप्तदशदेवता यासर्वशरीरोंकूं धारणकरेहैं ॥ तिनसर्वमैं 56
पंचज्ञानइंद्रिय एकमन यहषट् प्रकाशकरेहैं ॥ तिनषट्मैभीप्राणश्रेष्ठहै ॥ काहेते अंधबधिर आदि नेत्रश्रोत्रादिकोंसेंरहितहूएभी जी
वतेदेखनेमै आवेहैं ॥ जबीप्राणनिकसनेलगें तबीसर्वविवरणहोइजावेहैं ॥ यातें प्राणहीयासंघातमैश्रेष्ठहै ॥ याप्राणकीश्रेष्ठताअब
कथनकरेहैं ॥ यहश्रोत्रादिइंद्रिय यासंघातकूं प्रकाशतेहूए अभिमानकरतेभये औरयहकहतेभये हमहीयाशरीरकूं धारणकरतेहैं ॥
ऐसेअभिमानवालेश्रोत्रादिकोंकूं श्रेष्ठप्राणकहताभया ॥ तुमअविवेककरि अभिमानकूंमतिकरो याशरीरकूं प्राण अपान व्यान
उदान समान यापंचरूपसें मैरक्षाकरताहूं ॥ तुमकिसवासते व्यर्थअभिमानकरतेहो ॥ ऐसेप्राणकेवचनकूं श्रवणकरिकेभी ते नेत्रादि
श्रद्धानकरतेभये ॥ प्राणने तिनश्रोत्रादिकोंकी अश्रद्धानिश्चयकरी तबप्राणमहान्क्रोधकूं प्राप्तभया और याशरीरसेंबाह्यनिकसजा
ताभया ॥ तबीश्रोत्रादिकभी दुःखीहूए निकसजातेभये ॥ जैसेमधुकरराजानामा प्रधानमक्षिका जबीमधुदेशसेंचलीजावे तबीदूसरी
मक्षिका तामधुदेशमैस्थितहोवेनहीं किंतु तिसराजाकेसाथही गमनकरेहैं ॥ जबीराजास्थितहोवेहै तबीदूसरीमक्षिकास्थितहोवेहैं ॥
तैसे जबीप्राणगमनकरें तबीश्रोत्रादिकभीगमनकरें जबीप्राणस्थितहोवें तबीश्रोत्रादिकभीस्थितहोतेभये ॥ ऐसेश्रोत्रादिक सर्व ॥ २७ ॥
आपनीस्थिति प्राणकेआश्रयहीनिश्चयकरि प्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥ हेप्राण तुमहीसूर्यहो तुमहीअग्निहो मेघ इंद्र वायु पृथिवी अन्न
देवता स्थूल सूक्ष्म और देवतावोंकाभोग्यरूपअमृत यहसर्वपदार्थतुमहीहो ॥ जैसेरथकीनाभिमैं अरास्थितहोतीहैं तैसेतुमप्राणमैं

के०उ० की पुरुष उपासनाकरेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ६ ॥ जिसआत्मादेवकूं श्रोत्रसेंपुरुष नहींसुनसकते तथाजिससाक्षीकरि यहश्रोत्र प्रकाशित भा०२
होवेहै ॥ सोसाक्षीब्रह्महै ऐसेजानो जिसकूंविषयमानकरि पुरुष उपासनाकरेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ७ ॥ और प्राणकीजाक्रियावृत्तिहै
॥ २ ॥ तथा अंतःकरणकीजा ज्ञानवृत्तिहै तिस क्रियावृत्ति तथाज्ञानवृत्ति सहितहूआ घ्राणइंद्रिय जाआत्माकूं विषयकरेनहीं ॥ और जिस
आत्माकरिप्रेरा घ्राणइंद्रिय आपने व्यापारकूंकरेहै ॥ ऐसे आत्माकूं तुमब्रह्मजानो ॥ जाकूं विषयरूप जानकरि पुरुष उपासनाकरेहैं
सोविषयरूपब्रह्मनहींहै ॥ ८ ॥ ऐसे हेय उपादेयसें शून्यब्रह्मात्माका गुरुने शिष्यकेप्रति उपदेशकरा ॥ शिष्यआत्माकूं मनवाणीका
विषयरूपसेंनहींजानलेवे याअभिप्रायसें गुरु शिष्यकी परीक्षाकरेहैं ॥ हेशिष्य यदि तूंमाने ब्रह्मकेस्वरूपकूं मैं सुखेनही जानताहूं तबतुम
ने अल्पहो ब्रह्मकेस्वरूपकूं जाना ॥ यथार्थ ब्रह्मकास्वरूप नहींजाना ॥ और अधिदैव उपाधिकरिविशिष्टब्रह्मकूंजानो तौभीतुमने
यथार्थ ब्रह्मकेस्वरूपकूं जानानहीं ॥ हेशिष्य मैं यह मानताहूं जोअबभी तुमको ब्रह्मका विचारकरना चाहिये ॥ विचारविना यथार्थ
ब्रह्मकाबोधहोनादुर्घटहै ॥ ऐसे गुरुने परीक्षाकेलेनेवास्तेकहा ॥ तब शिष्य एकांतदेशमैंस्थितहूआ जाआत्माकेयथार्थरूपका गुरुनेउप
देशकराथा ताआत्माकेयथार्थरूपकूं आपनीबुद्धिमै आरूढकरताहुआ गुरुकेसमीप प्राप्तभया याप्रकारकेवचनकूं कहताभया ॥ हे गुरो
मैंब्रह्मकूं जानताहूं ऐसे मैं मानताहूं ॥ ९ ॥ गुरुरुवाच ॥ हेशिष्य तूं ब्रह्मकेस्वरूपकूं कैसेजानताहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेगुरो मैंब्रह्मकूं जा
नताहूं ऐसे विषयरूपसें ब्रह्मकूं मैंनहींमानता ॥ और मैं ब्रह्मकूं जानताहूं वानहींजानता ऐसे मैं नहींमानता ॥ गुरुरुवाच ॥ हेशिष्य
यहतुमने विरुद्धकह्या जो मैं ब्रह्मकूं जानताभीहूं और नहींभीजानता ॥ जबीतूं मानताहै मैं ब्रह्मकूंनहींजानता तब मैं ब्रह्मकूंजानता
हूं यहकैसेकहताहै ॥ जबी मैं ब्रह्मकूं जानताहूं ऐसेतूंमानताहै तब मैं ब्रह्मकूं नहींजानता यहकैसे कहताहै ॥ ऐसे गुरुने परीक्षार्थ क ॥ ५ ॥
हाभी परंतु शिष्यचलायमाननहींभया और गर्जन करताहुआ आपने अनुभवकूंकहेहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेगुरो जोकोई अधिकारी

सें प्राणकेप्रभावके निरूपणवासतें द्वितीयप्रश्नकाआरंभहै ॥ अबवैदर्भिनामा भार्गवऋषिप्रश्नकरैहै ॥ भार्गवउवाच ॥ हेभगवन् यासंघातकूं कितनेदेवताधारणकरेहैं ॥ और तिनदेवतावोंमैंभी कितनेदेवता प्रकाशकरणेहारेहैं तिनसर्वदेवतावोंविषेभी श्रेष्ठकीर्त्तिअधिकतादिगुणोंवालाकौनहै यातीनप्रश्नोंकाउत्तरकहो ॥ अबपिप्पलादगुरुउत्तरकहेहैं ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेभार्गव आकाशादिपंचभूत श्रोत्रादिपंचज्ञानइंद्रिय वागादिपंचकर्मइंद्रिय एकमनएकप्राण इनकेंअभिमानीसप्तदशदेवता यासर्वशरीरोंकूं धारणकरेहैं ॥ तिनसर्वमैं पंचज्ञानइंद्रिय एकमन यहषट् प्रकाशकरेहैं ॥ तिनषट्‌मैंभीप्राणश्रेष्ठहै ॥ काहेते अंधबधिर आदि नेत्रश्रोत्रादिकोंसेंरहितहूएभी जीवतेंदेखनेमैं आवेहैं ॥ जबीप्राणनिकसनेलगें तबीसर्वविवरणहोइजावेहैं ॥ यातें प्राणहीयासंघातमैंश्रेष्ठहै ॥ याप्राणकीश्रेष्ठताअब कथनकरेहैं ॥ यहश्रोत्रादिइंद्रिय यासंघातकूं प्रकाशतेहूए अभिमानकरतेभये औरयहकहतेभये हमहीयाशरीरकूं धारणकरतेहैं ॥ ऐसेअभिमानवालेश्रोत्रादिकोंकूं श्रेष्ठप्राणकहताभया ॥ तुमअविवेककरि अभिमानकूंमतिकरो याशरीरकूं प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचरूपसें मैंरक्षाकरताहूं ॥ तुमकिसवासते व्यर्थअभिमानकरतेहो ॥ ऐसेप्राणकेवचनकूं श्रवणकरिकेभी ते नेत्रादि श्रद्धानकरतेभये ॥ प्राणने तिनश्रोत्रादिकोंकी अश्रद्धानिश्चयकरी तबप्राणमहान्क्रोधकूं प्राप्तभया और याशरीरसेंबाह्यनिकसजाताभया ॥ तबीश्रोत्रादिकभी दुःखीहूए निकसजातेभये ॥ जैसेमधुकरराजानामा प्रधानमक्षिका जबीमधुदेशसेंचलीजावे तबीदूसरी मक्षिका तामधुदेशमैंस्थितहोवेनहीं किंतु तिसराजाकेसाथही गमनकरेहैं ॥ जबीराजास्थितहोवेहै तबीदूसरीमक्षिकास्थितहोवेहैं ॥ तैसे जबीप्राणगमनकरें तबीश्रोत्रादिकभीगमनकरें जबीप्राणस्थितहोवें तबीश्रोत्रादिकभीस्थितहोतेभये ॥ ऐसेश्रोत्रादिक सर्व आपनीस्थिति प्राणकेआश्रयहीनिश्चयकरि प्राणकीस्तुतिकरतेभये ॥ हेप्राण तुमहीसूर्यहो तुमहीअग्निहो मेघ इंद्र वायु पृथिवी अन्न देवता स्थूल सूक्ष्म और देवतावोंकाभोग्यरूपअमृत यहसर्वपदार्थतुमहीहो ॥ जैसेरथकीनाभिमैं अरास्थितहोतीहैं तैसेतुमप्राणमैं

 की पुरुष उपासनाकरेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ६ ॥ जिसआत्मादेवकूं श्रोत्रसेंपुरुष नहींसुनसकते तथाजिससाक्षीकरि यहश्रोत्र प्रकाशित
होवेहै ॥ सोसाक्षीब्रह्महै ऐसेजानो जिसकूंविषयमानकरि पुरुष उपासनाकरेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ७ ॥ और प्राणकीजाक्रियावृत्तिहै
॥ २ ॥ तथा अंतःकरणकीजा ज्ञानवृत्तिहै तिस क्रियावृत्ति तथाज्ञानवृत्ति सहितहूआ घ्राणइंद्रिय जाआत्माकूं विषयकरेनहीं ॥ और जिस
आत्माकरिप्रेरा घ्राणइंद्रिय आपने व्यापारकूंकरेहै ॥ ऐसे आत्माकूं तुमब्रह्मजानो ॥ जाकूं विषयरूप जानकरि पुरुष उपासनाकरेहैं
सोविषयरूपब्रह्मनहींहै ॥ ८ ॥ ऐसे हेय उपादेयसें शून्यब्रह्मात्माका गुरुने शिष्यकेप्रति उपदेशकरा ॥ शिष्यआत्माकूं मनवाणीका
विषयरूपसेंनहींजानलेवे याअभिप्रायसें गुरु शिष्यकी परीक्षाकरेहैं ॥ हेशिष्य यदि तूंमाने ब्रह्मकेस्वरूपकूं मैं सुखेनही जानताहूं तबतुम
ने अल्पही ब्रह्मकेस्वरूपकूं जाना ॥ यथार्थ ब्रह्मकास्वरूप नहींजाना ॥ और अधिदैव उपाधिकरिविशिष्टब्रह्मकूंजानो तौभीतुमने
यथार्थ ब्रह्मकेस्वरूपकूं जानानहीं ॥ हेशिष्य मैं यह मानताहूं जोअबभी तुमको ब्रह्मका विचारकरना चाहिये ॥ विचारविना यथार्थ
ब्रह्मकाबोधहोनादुर्घटहै ॥ ऐसे गुरुने परीक्षाकेलेनेवासतेकहा ॥ तब शिष्य एकांतदेशमैंस्थितहूआ जाआत्माकेयथार्थरूपका गुरुनेउप
देशकराथा ताआत्माकेयथार्थरूपकूं आपनीबुद्धिमैं आरूढकरताहुआ गुरुकेसमीप प्राप्तभया याप्रकारकेवचनकूं कहताभया ॥ हे गुरो
मैंब्रह्मकूं जानताहूं ऐसे मैं मानताहूं ॥ ९ ॥ गुरुरुवाच ॥ हेशिष्य तूं ब्रह्मकेस्वरूपकूं कैसेजानताहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेगुरो मैंब्रह्मकूं जा
नताहूं ऐसे विषयरूपसें ब्रह्मकूं मैंनहींमानता ॥ और मैं ब्रह्मकूं जानताहूं वानहींजानता ऐसे मैं नहींमानता ॥ गुरुरुवाच ॥ हेशिष्य
यहतुमने विरुद्धकह्या जो मैं ब्रह्मकूं जानताभीहूं और नहींभीजानता ॥ जबीतूं मानताहै मैं ब्रह्मकूंनहींजानता तब मैं ब्रह्मकूंजानता
हूं यहकैसेकहताहै ॥ जबी मैं ब्रह्मकूं जानताहूं ऐसेतूंमानताहै तब मैं ब्रह्मकूं नहींजानता यहकैसे कहताहै ॥ ऐसे गुरुने परीक्षार्थ क ॥ ५ ॥
हाभी परंतु शिष्यचलायमाननहींभया और गर्जन करताहूआ आपने अनुभवकूंकहेहै ॥ शिष्यउवाच ॥ हेगुरो जोकोई अधिकारी

योंकाइंद्रिय मनकामन प्राणकाप्राणकह्याहै ॥ ऐसेदेहइंद्रियोंकेप्रेरक देहइंद्रियादिकोंसेंभिन्नआत्माकूं जानकरि औरदेहइंद्रियादिकोंमे आत्मभावकूंत्यागकरि अधिकारीपुरुष अमृतरूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ताअमृतरूपब्रह्मकूं प्राप्तभये जन्ममरणरूपअनर्थकूं प्राप्तहोवेंनहीं ॥ २ ॥ यहआत्माश्रोत्रकाश्रोत्रहै यातें ताआत्मामैंश्रोत्रप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तथावाक्काकावाक्है यातें वाक्इंद्रियआत्मामें प्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तथा मनकामनहोनेसें मनभीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ जैसे अग्निआपनेसेंभिन्न काष्ठादिकोंकादाहकरेहै आपनेदाहकरनेमैसमर्थनहीं ॥ तैसे जेघटादिकजडपदार्थहैं तथा आपनेसेंभिन्नहैं तिनमैं इंद्रियप्रवृत्तहोवेहैं ॥ आपनेअधिष्ठानआत्माके प्रकाशकरणेमैं श्रोत्रनेत्रादिअसमर्थ हैं ॥ हेशिष्य मनइंद्रियादिकोंसेंहीज्ञानहोवेहै आत्मामनआदिकोंका अविषयहै ॥ यातें ताअविषयआत्माकूं हममनआदिकोंसेंनहींजान सकते ॥ और यहभी हमनहींजानते जोअधिकारीपुरुषोंकूं आचार्यकैसे उपदेशकरेहैं ॥ हेशिष्य यद्यपि यहआत्मा मनवाणीआदिकों काअविषयहै ॥ तथापि ताआत्माकानिषेधरूपसें श्रुतिभगवती उपदेशकरेहै ॥ सोब्रह्मात्मा कार्यसेंभिन्नहै तथाकारणसेंभीभिन्नहै ॥ कार्यकारणकाप्रकाशकहै ॥ ऐसे कार्यकारणसेंभिन्न आत्माकेस्वरूपकूं हमने आचार्योंके मुखसें श्रवणकराहै ॥ जेआचार्यहमारेकूं तिसअविषयस्वभावआत्माका उपदेशकरतेभये ॥ ३ ॥ हेशिष्य आत्माकेस्वरूपकूं पुनःश्रवणकरो ॥ जोआत्मावाणीकरि नहींकह्याजाता ॥ और जिसआत्माकी प्रेरणासें वाणी नानाप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरेहै ॥ तिस प्रत्यग् देवकूं तुम ब्रह्मरूपजानो ॥ और जिसका विषयरूपसें पुरुष उपासनाकरतेहैं सो विषयजडपरिच्छिन्नपदार्थब्रह्मनहींहै ॥ ४ ॥ जा आत्माकूं मनकरि पुरुषनहींजान सकता ॥ और जिसआत्माकरिप्रकाशितहूआमन नानाप्रकारके संकल्पविकल्पकूं करेहै ॥ ऐसे महात्माकहतेहैं ॥ तासाक्षीकूं ब्रह्मरूपजानो ॥ और जिसपरिच्छिन्नजडपदार्थकी ब्रह्मरूपजानकरि पुरुष उपासनाकरतेहैं सोब्रह्मनहींहै ॥ ५ ॥ जिसआत्माकूं नेत्रकरि पुरुषनहींदेख सकता ॥ और जिसस्वप्रकाशआत्माकरि नेत्रकूं विषयकरेहै मेरेनेत्रहैं ऐसे पुरुषजानेहैं ॥ तिसप्रत्यगात्माकूं ब्रह्मरूपजानो । जिसपरिच्छिन्नअनात्मा

है ॥ जिसहानिकरि यहपुरुषवारंवार जन्ममरणादिकदुःखोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथाकामक्रोधआदिकजेचोरहैं तिनकेंआधीनहूआ सोअज्ञा
॥ ३ ॥ नीपुरुष स्वकर्मकेअनुसार अनेकप्रकारके उच्चनीचशरीरग्रहणसें मुक्तहोवेनहीं इसीसें सोअज्ञानीपुरुष नष्टहूएजैसाहोवेहै यातें धैर्यवान्
पुरुषप्रमादरहितहूआआत्माकूं याअधिकारीशरीरमैही अवश्यनिश्चयकरे ॥ और यहएकहीआत्मा अनेक स्थावरजंगमभूतोंमै प्रतीतहोवे
है ॥ जैसे वास्तवसेंएकहीचंद्रमा जलपात्रोंकेभेदकरि अनेकरूपसें प्रतीतहोवेहै ॥ तैसें एकआत्मादेव उपाधिभेदसें अनेकरूपसें प्रती
तहोवेहै ॥ वास्तवसेंएकहीहै ॥ ऐसे सर्वभूतोंमै परमार्थसें एकहीपरमात्मा अनेकरूपसें स्थितहै इसरीतिके आत्मज्ञानसेंही अधिकारी
पुरुष देहइंद्रियादिकोंमै अहंताममताकूं त्यागकरि अमृतभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अर्थयह ॥ जोजरामरणादिक संसारधर्मसेंरहितजो आनंदरूप
आत्माहै ताकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ यामै किंचित्भी संशयकरणानहीं ॥ १३ ॥ अबब्रह्मविद्याकीस्तुतिअर्थ यक्षभगवान्की आख्यायिका
लिखेहैं अथवा सर्वसंसारधर्मरहित रूपसें उपदेशकराजोब्रह्महै तामै शून्यताकीशंका अज्ञानीपुरुषोंकूं होवेहै ताशंकाकीनिवृत्तिवासते
यक्षभगवान्कीकथाहै ॥ अथवा अतिबुद्धिमान् अग्निवायु इंद्रादिदेवताभी यत्नसें उमादेवीके संवादद्वाराही जानतेभये यातें बुद्धिमा
न्पुरुषकोंभी ब्रह्मविद्याकी प्राप्तिवासते यत्नबहुतकरणा ॥ यातात्पर्यकेबोधनवासते यक्षभगवान्कीकथाहै ॥ अबताकथाकूंकहेहैं ॥ एक
कालमैदेवता स्वर्गमैस्थितहूए ब्रह्मविद्याकेप्रतापसें सर्वअसुरोंसें जयकूं प्राप्तभये ॥ जैसे अग्नीकीसमीपतासें पतंग नाशकूं प्राप्तहोवेहैं ॥
तैसेब्रह्मवेत्ता देवतावोंकीसमीपतासें सर्वअसुरक्षयकूं प्राप्तहोतेभये ॥ परंतु ॥ जैसे अग्निकरितप्तलोहकापिंड तृणवस्त्रादिकोंकादाहकरेहै ॥
तैसे ब्रह्मरूपअग्निकरि प्रकाशमानहूएदेवता असुरोंकानाशकरतेभये ॥ जैसे अग्निसंबंधविना लोहपिंड किसीपदार्थकादाहकरिसकेन ॥ ६ ॥
हीं ॥ तैसे ब्रह्मरूप अग्निके सामर्थ्यविना देवतारूपीलोह असुररूपीतृणादिकोंका नाशकरसकेनहीं ॥ यातें ब्रह्मतेजसेंही तिनदे
वतावोंकूं असुरोंकेनाशकासामर्थ्यप्राप्तभया ॥ शंका ॥ जोकदाचित्ब्रह्मरूप बलसेंभी देवताजयकूंप्राप्तभये असुरनाशकूंप्राप्तभये ऐसे

हमारेब्रह्मचारीयोंकेमध्यमें ताआत्माकेस्वरूपकूं जानेहै सोमेरीकहीरीतिसेंहीजानेहै ॥ सारीतियहहै ॥ ब्रह्मात्माज्ञातहै तथा अज्ञातहै ॥ इनदोनोंव्यवहारोंसें विलक्षणहै जोज्ञात अज्ञातसें भिन्नस्वप्रकाशआत्माका गुरुनेशिष्यकेप्रति उपदेशकराथा ॥ तिसस्वप्रकाश आत्माके स्वरूपकूं शिष्यने निश्चयकरिकेही ज्ञात अज्ञातसेंभिन्नकहा ॥ यहगुरुशिष्यका संवादतौ समाप्तभया ॥ अब श्रुतिभगवती गुरुशिष्यकेसंवादसें विनाही अधिकारीजनोंकूंउपदेशकरेहै ॥ १० ॥ जोविद्वान् मनवाणीका अविषय ब्रह्मकूंमानताहै सो विद्वान् ब्रह्मकेस्वरूपकूंयथार्थजानताहै ॥ जोपुरुष मनवाणीका विषयब्रह्मकूं मानताहै सोपुरुष ब्रह्मके यथार्थस्वरूपकूंनहींजानता ॥ विद्वानोंके ब्रह्म अविज्ञातहै ॥ अज्ञानी पुरुषोंके ब्रह्मविज्ञातहै ॥ अर्थयह ॥ मनवाणीकाअविषयस्वप्रकाशब्रह्महै ऐसेस्वप्रकाशब्रह्मकूं अविषयरूपसें जाननेवालाविद्वान् यथार्थजानेहै ॥ और अज्ञानीपुरुषोंके तौ देहइंद्रियादिकोंमें आत्मत्वबुद्धिहोनेसें विषयरूपसें जानतेहूएभी तेअज्ञानीपुरुष यथार्थरूपसें ब्रह्मकूंजानेनहीं ॥ ११ ॥ और जितनीअंतःकरणकीवृत्तियां उत्पन्नहोवेहैं तेसर्वही आत्माके प्रकाशकरि प्रकाशितहूई उत्पन्नहोवेहैं ॥ आत्माकेप्रकाशविना कोईवृत्तिभी उत्पन्नहोवेनहीं ॥ यातें सर्व वृत्तियोंका विषयरूपसें प्रकाशकरनेहारा आत्मा तिनवृत्तियोंसें भिन्नही स्वप्रकाशहै ॥ याआत्माकेज्ञानकरिकेही पुरुष अमृतत्वकूं प्राप्तहोवेहै ॥ अर्थयह ॥ जरामरणादिकोंसेंरहित तथा आनंदरूपजोब्रह्मात्माहै ताकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और आत्माकेजाननेसें बलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जाविद्यारूपबलसें जन्ममरणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ और धन सहाय मंत्र औषधि तप योग इनोंकरि होनेहारा जोसामर्थ्यहै ॥ तासामर्थ्यकरि मृत्युका तरण होवेनहीं ॥ और ब्रह्मविद्यारूप सामर्थ्यकूंतौ आपने स्वरूपसेंही प्राप्तहोवेहै ॥ यातें पुनःजन्ममरणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ १२ ॥ यह पुरुष यदिइसजन्ममेंही आपनेशुद्धरूपकूं जानलेवेतौ सत्यरूप तथा आनंदरूप जोब्रह्महै ताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ और जबीयहपुरुषभारतखंडमें याअधिकारी शरीरकूं पाइकरि परमेश्वरकीमायाकरिमोहितहूआ तथातुच्छविषयसुखमें आसक्तहूआ आनंदरूपआत्माकूं नहींजानेहै तुबीइसकीबडीहानिहोवे

प्र०उ० जेपदार्थ याजन्ममैंदेखे तथाश्रवणकरेहैं तिनपदार्थोंकूं स्वप्नअवस्थामै देखे श्रवणकरे अविद्याकरिमानेहैं ॥ तैसे
मनकरिके याजाग्रतमै वापूर्वजन्मकीजाग्रतअवस्थामै अनुभवकरेहैं तिनकूंभी स्वप्नअवस्थामै अनुभवकरेहै ॥ ऐसे
६ ॥ विशिष्ट पुरुषसर्वरूपहूआ सर्वकूंदेखेहै ॥ यातें चेतनकेप्रतिबिंबसहितहूआ यहमनही स्वप्नअवस्थाकाआश्रयहै ॥
मनहो सुषुप्तिकूं प्राप्तहोवेहै ॥ और जबीयामनकी पित्तरूपतेजकरि [illegible]
ताकालमै सुखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यद्यपि स्पष्टरूपसें मन सुषुप्तिमैरहेनहीं ॥ तथापि ॥ सूक्ष्मरूपकरि यहमनरहे
आश्रय सुषुप्तिअवस्थाहै ॥ ४ ॥ हेगार्ग्य जाआत्माकाप्रतिबिंब मनमैस्थितहै ताआत्मामैही यहप्राणादिस
यालोकमै सायंकालविषे अनेकदिशावोंसेंआइकरिअनेकपक्षी किसीवृक्षमै आपनेवासअर्थस्थितहोवेहैं ॥
तथातिनपृथिवीआदिकोंके गंधादिकपंचगुण तथानेत्रादिदशइंद्रिय तथाचतुष्टयअंतःकरण तथापंचप्रकारकाप्रा
मैहीस्थितहैं ॥ हेगार्ग्य सोअधिष्ठानआत्माही नेत्रादिकोंसेंमिलकरि द्रष्टा श्रोता स्प्रष्टा घ्राता रसयिता मंता बो
त्मापुरुषहै ॥ याआत्माकीउपाधिका अक्षर आत्मामै लयहोवेहै यातेंताउपाधि उपहित आत्माकाभी अक्षरमै
थनकरेनिर्गुणआत्माकेज्ञानकाफलकहेहैं ॥ यहआत्मा अज्ञानरहितहै तथासूक्ष्मशरीररहितहै तथालोहितादिगुणर
ही स्थूलशरीरकानिषेधकरा ॥ यातेंहीशुद्धहै ॥ ऐसेशुद्धअक्षरआत्माकूंजोअधिकारी आपनेअंतःकरणमै आ
रेहै ॥ सोअधिकारी ताअक्षरआत्माकूं प्राप्तहोवेहै ॥ याफलकूंही यहमंत्रकथनकरेहै ॥ जाअक्षरआत्मामै इंद्रियों
प्राण तथापृथिवीआदि आपनेगंधादिगुणोंसहितलयहोवेहैं ॥ ताअक्षरआत्माकूं जोअधिकारीप्रत्यक्षकरताहै सोअ
तथासर्वभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वअज्ञानकालमैभीसर्वरूपहीहै परंतु ताआपनीसर्वरूपताकूं अज्ञानकरिविस्मरणक

लयहोइजावेहै तथामनकेलयहोनेसें नेत्रादिकइंद्रियभी लयहोवेहैं ॥ इंद्रियोंकेलयहोनेसें यहपुरुषदेखतानहीं ॥ तैसेही
त्वचा वाक् शिश्न गुदा पाद इनसर्वइंद्रियोंकेव्यापारोंसें रहितहोवेहै ॥ ताकूंलोककहेहैं जोयहशयनकरेहै ॥ यातेंनेत्रा
काहीजाग्रतअवस्थाधर्महै ॥ १ ॥ हेगार्ग्य सुषुप्तिअवस्थाविषे मनसहितइंद्रियोंके लयहूएभी प्राण अपान व्यान समान
काही अग्निकीन्यांई स्थितिरूपजाग्रतकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यातेंप्राणहीयाशरीरकीरक्षाकरेहै ॥ २ ॥ इहांसुषुप्तिमेंविद्वा
होत्रकीप्राप्तिकहीहै सोदिखावेहैं ॥ जैसेप्रसिद्धअग्निहोत्रीपुरुषोंका गार्हपत्यनामाअग्नि सर्वदास्थिररहेहै ॥ औरआह
होमकरणेवासते गार्हपत्यअग्निसें उठाइके प्रज्वलितकराजावेहै ॥ तैसेईहां अंतरप्रवेशकरणेहारे अपानवायुसें बा
णवायु उठायाजावेहै यातेंप्राण आहवनीयरूपहै औरअपान गार्हपत्यरूपहै ॥ व्यानवायु दक्षिणअग्निरूपहै ॥ काहे
त्रकीशालामें दक्षिणदेशमें सोदक्षिण अग्नि स्थितहोवेहै ॥ तैसे यहव्यानवायु हृदयकेपंचछिद्रोंमें दक्षिणछिद्रमेंरहे
णअग्निरूपकह्या ॥ यहसमानवायुहोतारूपहै ॥ काहेते यह समानवायु ऊर्ध्वश्वास निःश्वासरूपदोनों आहुतिय
है ॥ मनरूपयजमानहै ॥ स्वर्गादिफलहीउदानहै ॥ काहेतेउदानकरिकेही स्वर्गादिकफलकूं यहपुरुषप्राप्तहोवेहै ॥
नविषे सुषुप्तिअवस्थामें उदानवायु ब्रह्मानंदकूं प्राप्तकरेहै ॥ ऐसेविद्वान्का सदाअग्निहोत्रहोवेहै ॥ अबतृतीयप्रश्नका
नही चेतनप्रतिबिंबकेसहितहूआ नानाप्रकारकेस्वप्नोंकूंदेखेहै ॥ औरस्व[illegible] जोपदार्थकूंदेखेहै बाहुल[illegible]
में देखेहीपदार्थ स्वप्नअवस्थामेंप्रतीतहोवेहैं याकूंहीप्रतिपादनकरेहैं ॥ जेपुत्रादिजाग्रतमेंदेखेहैं तिनकेसंस्कारसहित
विद्याकरिके देखेकीन्यांईदेखेहै ॥ ऐसेही जोपदार्थ जाग्रतमेंश्रवणकराहै ताकेसंस्कारसहितहूआ यहमनउपाधिक
रिके श्रवणकरतेकीन्यांईश्रवणकरेहै ॥ तथाअनेकदेशोंमें जेअनेकपदार्थवारंवारअनुभवकरेहैं तिनकूं स्वप्नमेंअनुभवकी

है तथा अज्ञातहै ॥
सस्वप्रकाश आत्मा
श्रुतिभगवती गुरु
है सो विद्वान् ब्रह्म
ानता ॥ विद्वानोंके
ब्रह्मकूं अविषयरूपसें
जानतेहूएभी तेअ
त्माके प्रकाशकरि प्र
प्रकाशकरनेहारा आ
रणादिकोंसेंरहित तथा
मरणकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥
वेनहीं ॥ और ब्रह्मवि
दिइसजन्ममैंही आ
अधिकारी शरीरकूं
बडीहानिहोवे

ताविनयसहित राजपुत्रकूं मैकहताभया ॥ हेराजन् जोतुमने षोडशकलपुरुषपूछाहै ताषोडशकलपुरुषकूं मै न ॥ याशब्दब्रह्मकाज्ञान
ताराजपुत्रकूंकहाभी परंतु सोराजपुत्र विश्वासनकरताभया जोयहभारद्वाजऋषि षोडशकलपुरुषकूं जानतेतौंहैं परब्रह्मज्ञातव्यहै ॥ ऐ
त्तसेंनहींकहते ऐसेमाननेवालेराजपुत्रकूं पुनःमैयहकहताभया ॥ हेराजन् यदिमै षोडशकलपुरुषकूं जानतातौमै दोप्रकारकी विद्याकूं
नकहता ॥ जोपुरुषयालोकविषे मोहकेवशसें मिथ्यावचनकूंकहेहै ॥ सोमिथ्यावादीपुरुषरूपवृक्ष मूलसहितनाशजुर्वेद सामवेद अथर्व
यह जोयालोककासुख तथास्वर्गादि परलोककासुखरूपफल ताकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ और भाग्यरूपमूलसहितनातिपादनकरेहैं ॥ शिक्षा
मिथ्यासंभाषणकेदोषकूं जानताहूआ मैभारद्वाज स्वप्नमैभी मिथ्यावचनकूं कहतानहीं ॥ जाग्रतअवस्थाविषे हैं ॥ १ ॥ कात्यायनऋ
मिथ्यासंभाषणकरूंगा ॥ यातेंहेराजन् तुममेरेवचनमैविश्वासकरो मै षोडशकलपुरुषकूं जानतानहींहूं यदि जा ॥ पाणिनिऋषिने व्या
के तांईअवश्यमै कहता ॥ हेभगवन् पिप्पलादमुने ॥ सोहिरण्यनाभनामराजपुत्र मेरेवचनकूंश्रवणकरि तूष्णींमै वेदमैजेअप्रसिद्धपदहैं
आरूढहूआ शीघ्रहीआपनेदेशमै गमनकरताभया ॥ यावत्काल जिज्ञासितवस्तु जानीनजावे तावत्कालपकछंदहै तिनकाज्ञानहोवे
दयमैबाणकीन्यांईक्षोभजनकहोवेहै ॥ यातेंभगवन् मेरेहृदयमै तापुरुषकेअज्ञानरूपबाणके विक्षेपकीनिवृत्तिज्ञानअर्थ कालकाज्ञानअपे
षोडशकलपुरुषकूं मेरेतांई प्रतिपादनकरो ॥ और सो षोडशकलपुरुष कहांरहेहै यहभीकहो ॥ ऐसेप्रश्नकूं श्रहै ॥ यद्यपि च्यारिवेदत्रि
केतांई पिप्पलादमुनि उत्तरकहताभया ॥ पिप्पलादउवाच ॥ हेसोम्य सो षोडशकलवालापुरुष शरीरकोकावेदमै बाहुल्यहै यातें
है ॥ यहषोडशकलायासाक्षीपुरुषमैहीस्थितहैं ॥ सोसाक्षीआत्माही सर्वजगत्काअधिष्ठानहूआ सर्वकानियंतारीपुरुषने श्रवणकरीजा
द्वितीयत्ताबोधनअर्थ सर्वजगत्रूपषोडशकलावोंकी याआत्मासेंही उत्पत्तिश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ हेभारद्वाज यहहारी जाविद्याहै ता
वासते षोडशकलारूपउपाधिकेउत्पत्तिअर्थ याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ मैं आत्मासाक्षीरूपसें याशरीरमै स्थितअक्षरब्रह्मकाहीनि

प्र० उ० कहूं तथाक्रियारहितहूं ऐसेमै व्यापकपरमात्मा लोकपरलोकमै गमनआगमनरूपसंसारकूं कैसेप्राप्तहोवोंगा ॥ याप्रक
के सोपरमात्माँही पंचवृत्तिवालेप्राणकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ताप्राणकरिके आत्माकाशरीरसें बाह्यनिकसना तथालो
॥ ८ ॥ गमनादिसिद्धहोवेहैं ॥ १ ॥ ताप्राणरूपप्रथमकलाकूं उत्पन्नकरिके सोआत्माहीशुभकर्मोंमै प्रवृत्तिकरणेहारी आ
उत्पन्नकरताभया ॥ २ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मा कर्मोंकेकरणेका [illegible]
जल पृथिवी यहपंचभूतरूप पंचकलाहैं तिनकूंउत्पन्नकरताभया ॥ ७ ॥ तिसतैंअनंतर सोपरमात्मापंचज्ञानइंद्रिय
यरूपअष्टमीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ८ ॥ तिसतैं अनंतर मनकीस्थितिकरणेहाराजोअन्नहै ताकूंउत्पन्नकरत
तर अन्नकरि उत्पन्नभयाजोसामर्थ्यहै तासामर्थ्यरूपवीर्यकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ११ ॥ ताअनंतरवीर्यसें उत्पन्न
द्धिकेकरणेहाराजोतपहै तातपकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १२ ॥ ताअनंतर कर्मकेउपयोगी ऋग् यजुर् साम अथर्व
उत्पन्नकरताभया ॥ तिसतैंअनंतर वैदिककर्मरूपचतुर्दशीकलाकूं उत्पन्नकरताभया ॥ १४ ॥ तिनकर्मोंसेंअनंतर
लोकउत्पन्नभये ॥ सोलोकही पंचदशीकलाहै ॥ १५ ॥ तिसके अनंतर तिनलोकोंमै उत्पन्नभयेप्राणियोंकेदेवदत्त
न्नभये ॥ सोनाममुक्तपुरुषकाभीरहेहै यातेंप्रलयपर्यंतरहनेवालाजोनामहै सोईषोडशीकलाहै ॥ ताकूंपरमात्म
॥ १६ ॥ हेसुकेशा जापुरुषकूं कलाकेअधिष्ठानआत्माका यथार्थप्रत्यक्षभयाहै ताकीउपाधिरूपकला सर्वलयहोइजा
नादि नदीयां समुद्रकूं प्राप्तहोइकरिभिन्ननामरूपसेंरहितहोवेहैं ॥ तैसेयाज्ञातापुरुषकी षोडशकलानिवृत्तहोवेहैं ॥
रूपरहेनहीं ॥ ताअनंतरकेवलशुद्धपुरुषहीशेषरहेहै ॥ यहपुरुषअकलहै ॥ अर्थयह ॥ कलारहितहै तथाअमृतरूपहै ।
हेहै ॥ जैसे अरानाभिमैस्थितहोवेहैं ॥ तैसेजाआत्मामै यहषोडशकलास्थितहैं ॥ हेऋषयः ताअधिष्ठानरूपअकल

यकरो ॥ औरताआत्माकेज्ञानविनातौ तुमारेकूंमृत्युत्यागकरेगानहीं ॥ यातें ताआत्माकेज्ञानसें मृत्युकीनिवृत्तिक ॥ याशब्दब्रह्मकाज्ञान
द्राकरि उत्पन्नभयाजोस्वप्नकासिंहहै ताकीजाग्रतसेंविना निवृत्तिहोवेनहीं ॥ तैसेअज्ञानसेंउत्पन्नभयाजो मृत्युरूप र्थपरब्रह्मज्ञातव्यहै ॥ ऐ
रूपजागरणविना निवृत्तिहोवेनहीं ॥ यातेंमृत्युकीनिवृत्तिवासते आत्माकानिश्चयकरो ॥ अबपिप्पलादमुनि तिन तादोप्रकारकी विद्याकूं
हेहैं ॥ हेऋषयः ऐसे मै इतनाहीब्रह्मजानताहूं अधिकनहींजानता औरयातेंभिन्नअधिककिंचित्मात्रतुमारेकूंज्ञातव यजुर्वेद सामवेद अथर्व
पदेशकूंग्रहणकरि तेषट्ऋषि पिप्पलादमुनिकेपादोंमै दंडवत्करतेहूए तथापुष्पादिकोंसें अनेकप्रकारकीपूजाकूंकरते तिपादनकरेहैं ॥ शिक्षा
दगुरुकेतांई याप्रकारकेवचनकहतेभये ॥ हेभगवन् आपनेहमारेसर्वसंशयनिवृत्तकरेहैं ॥ तथाआपनेहमारेकूंकृतार्थक है ॥ १ ॥ कात्यायनऋ
आपहमारेपिताहैं ॥ औरयहमातापितातौ स्थूलशरीरजोबंधनकाहेतुहै ताकूंउत्पन्नकरेहै ॥ जाशरीरमै रागकरणे ॥ पाणिनिऋषिने व्या
होवेहै ॥ ऐसेशरीरकूंउत्पन्नकरणेहारापितातौ गौणपिताहै यथार्थपितातौ तुमहीहो ॥ अविद्याकरिआच्छादित मै वेदमैजेअप्रसिद्धपदहैं
रूपशरीरहै ताब्रह्ममैअविद्याकी आपनेउपदेशसेंनिवृत्तिकरतेभयेहो ॥ यातें तुमहमारेब्रह्मरूपवास्तवशरीरकेजन दकछंदहैं तिनकाज्ञानहोवे
वृत्तिपूर्वक निरावरणब्रह्मकूंनिश्चयकरना यहहीब्रह्मशरीरकीउत्पत्तिजाननी घटादिकोंकीउत्पत्ति जैसीउत्पत्तिई ष्ठानअर्थ कालकाज्ञानअपे
द्यारूपसमुद्रसें ज्ञानरूपदृढनौकाकरिके आपनेपारकराहै ॥ अर्थयह ॥ हमाराअज्ञाननिवृत्तकराहै ॥ यातें ता वेहै ॥ यद्यपि च्यारिवेदत्रि
वासते कोईपदार्थभी यासंसारमैं हमदेखतेनहीं यातेंहमाराआपकूं वारंवारनमस्काररहै हमाराब्रह्मविद्याकेसंप्रदाय नाकावेदमै बाहुल्यहै यातें
केतांईवारंवारनमस्काररहै ॥ ॥ ॐशांतिः शांतिः शांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पू रीपुरुषने श्रवणकरीजा
यप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजक स्वामि अच्युतानंदगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारेषट्ऋषिसंवादपूर्वक प्रश्नोपनिषदर्थनिण णेहारी जाविद्याहै ता
जाअक्षरब्रह्मकाहोनि

॥ इति प्रश्नोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥

॥ अथ मुंडकोपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

रहै ॥ यातैं औ ... काआधार

॥ याशब्दब्रह्मकाज्ञान
र्थपरब्रह्मज्ञातव्यहै ॥ ऐ
तादोप्रकारकी विद्याकूं
यजुर्वेद सामवेद अथर्व
तिपादनकरैहैं ॥ शिक्षा
है ॥ १ ॥ कात्यायनऋ
॥ पाणिनिऋषिने व्या
मै वेदमैजेअप्रसिद्धपदहैं
दकछंदहैं तिनकाज्ञानहोवे
ष्ठानअर्थ कालकाज्ञानअपे
वेहै ॥ यद्यपि च्यारिवेदत्रि
कम ... नाकावेदमै बाहुल्यहै यातैं
दितअधिकारीपुरुषने श्रवणकरीजा
णेहारी जाविद्याहै ता
जाअक्षरब्रह्मकाहोनि

मुं॰उ॰ ॐ नमःश्रीगुरुभ्यः ॥ अथअथर्ववेदीयमुंडकोपनिषत्प्रारंभः ॥ उपनिषत्केआदिमै ब्रह्मविद्याकासंप्रदायकहेहै ॥ ब्र
कोंमै प्रधानहोताभया ॥ कैसाहै सोब्रह्माजोसर्वविश्वकाकर्त्ताहै तथासर्वप्रपंचकारक्षकहै सोब्रह्मा आपनेवृद्धपुत्र
॥ १ ॥ ह्मविद्याकूं कथनकरताभया ॥ कैसीहैसाब्रह्मविद्या जामूलअज्ञानकानाशकरणेहारीहै यातेंसर्वविद्या
न्न औरसर्वविद्यातो किंचित्किंचित्अर्थकाप्रकाशकरेहैं ॥ यहब्रह्मविद्या सर्वअर्थकाप्रकाशक
भूतहैं ॥ जैसेहस्तिरूपफलविषे सर्वग्रासोंकारस अंतर्भूतहै तैसेयाब्रह्मविद्यामै सर्वविद्याअंतर्गतहैं ॥ ब्रह्मा उ
स्वपुत्रकूं कथनकरताभया ताब्रह्मविद्याकूंही अथर्वानामाऋषि आपनेशिष्यअंगीनामऋषिकूं कथनकरता
का सत्यवहनामवालाजोभारद्वाजऋषिहै सो शिष्यहोताभया ॥ ताशिष्य भारद्वाजकेप्रति अंगीनामागुरु
भया ॥ सोभारद्वाज आपनेशिष्यअंगिरा नामाऋषिकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ ताअंगिरा ऋषि
स्तहोताभया ॥ सोशौनकऋषि बहुतअन्नदानादिकोंकरिकै महान्गृहस्थभावकूं प्राप्तहोताभया ॥ सोशौनकऋ
रानामास्वगुरुसेंब्रह्मविद्याकूंप्राप्तभया ॥ ताशौनकऋषिके सर्वद्विजशिष्यहोतेभये ॥ जैसे शौनकऋषि अंगि
ग्रहणकरताभया सोप्रकारकहेहैं ॥ एककालमै अंगिरानामाऋषि प्रातःकालविषे स्नानादिकोंकूंकरिकै किर
तहोताभया ॥ सोअंगिरानामाऋषि सर्ववेदोंकावेत्ता ॥ तथातिनवेदोंकरिप्रतिपादितब्रह्ममैनिष्ठावालाथा ॥
ष्कामथा ॥ ऐसेब्रह्मश्रोत्रिय तथाब्रह्मनिष्ठ गुरुअंगिरानामाऋषिकूंदेखकै सोशौनकऋषि समित्रूपजोदंतधाव
स्तमैग्रहणकरि विधिपूर्वकशरणकूंप्राप्तहूआ याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन् किसएककेजाननेसें सर्वज
सएककेज्ञानसें सर्वकाज्ञानहोवेहै ताएकवस्तुकूं आपकृपाकरिकहो ॥ ऐसेप्रश्नकूंश्रवणकरि अंगिरानामागुरु

पुरुषकूं शब्दरूपब्रह्म तथापरब्रह्म यहदोप्रकारकाब्रह्मजाननेयोग्यहै ॥ षट्अंगोंसहितच्यारिवेद यहशब्दब्रह्महै ॥ याशब्दब्रह्मकाज्ञान परब्रह्मप्राप्तिमैद्वारहै ॥ यातें शब्दब्रह्मभीजाननेयोग्यहै ॥ परब्रह्मकेज्ञानविनामोक्षहोवेनहीं ॥ यातें मोक्षकेअर्थपरब्रह्मज्ञातव्यहै ॥ ऐसेदोप्रकारकीपुरुषकीविद्याहै एकतौ अपराविद्याषट्अंगोंसहित च्यारिवेदरूपहै ॥ दूसरीपराविद्याहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तादोप्रकारकी विद्याकूं कथनकरेहैं ॥ तिनदोनूंविद्याकेस्वरूपकूं विस्तारसेंकहनेवासते प्रथमअपरा विद्याकूंकहैहैं ॥ हेशौनक ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद यहच्यारिवेद तथाशिक्षा कल्प व्याकरण निरुक्त छंद ज्योतिष् यहषट्अंगहैं ॥ षट्अंगोंकेअर्थकूं किंचित्प्रतिपादनकरेहैं ॥ शिक्षाकाकर्त्तापाणिनिऋषिहै ॥ वेदकेशब्दोंके कंठ तालुआदिस्थानकाज्ञान तथाशब्दोंकेस्वरकाज्ञान शिक्षासेंहोवेहै ॥ १ ॥ कात्यायनऋषि तथाआश्वलायनआदिऋषियोंने कल्पनामसूत्रकरेहैं तिनसें वेदउक्तकर्मकेअनुष्ठानकीरीतिजानीजावेहै ॥ २ ॥ पाणिनिऋषिने व्याकरणकराहै व्याकरणरूप अंगसेंशब्दशुद्धिकाज्ञानहोवेहै ॥ ३ ॥ यास्कमुनिने निरुक्तअंगकराहै तानिरुक्तमै वेदमैजेअप्रसिद्धपदहैं तिनकेबोधअर्थनामनिरूपणकरेहैं ॥ ४ ॥ पिंगलमुनिने छंदअंगकराहै ताअंगसेंवेदमैजेगायत्री जगतीआदिकछंदहैं तिनकाज्ञानहोवेहै ॥ ५ ॥ आदित्य गर्गादिकोंने ज्योतिष्अंगकराहै ताज्योतिष् अंगसें कालकाज्ञानहोवेहै वैदिककर्मकेअनुष्ठानअर्थ कालकाज्ञानअपेक्षितहै ॥ ६ ॥ ऐसेंयहषट्हीवेदके उपयोगीहोनेसें वेदकेअंगकहेजावेहैं ॥ यहसर्वमिलकेअपराविद्याकहावेहै ॥ यद्यपि च्यारिवेदत्रिकांडरूपहैं यातेंब्रह्मविद्यारूप उपनिषत्कूं अपराविद्यासेंभिन्न पराविद्यारूपकथनेनहीं ॥ तथापि कर्मउपासनाकावेदमै बाहुल्यहै यातें ताकर्मऔर उपासनाकाप्रतिपादकवेदही ईहांअपराविद्यारूपसें विवक्षितहै ॥ वैराग्यआदिसाधनसहितअधिकारीपुरुषने श्रवणकरीजा ब्रह्मप्रतिपादकउपनिषत्है साउपनिषत् अपराविद्याअंतर्गतनहीं किंतुपराविद्याहै ॥ अनात्मसंसारकूं कथनकरणेहारी जाविद्याहै ता विद्याकानामहीअपराविद्याहै ॥ जाविद्याकरिके शुद्ध अक्षर वस्तुकानिश्चयहोवे ताविद्याकानामपराविद्याहै ॥ ताअक्षरब्रह्मकाहोनि

रूपणकरेहैं ॥ कैसाहैसोअक्षर पंचज्ञानइंद्रियोंकाअविषयहै तथाकर्मइंद्रियोंका अविषयहै वंशरूपगोत्रसेंरहितहै ॥ तथाब्राह्मणत्वक्षत्रियत्वादिजातिसेंरहितहै ॥ तथानेत्र श्रोत्रादि ज्ञानइंद्रिय जाअक्षरआत्माकेनहींहैं ॥ तथाजोअक्षरआत्मा हस्तपादादिककर्मइंद्रियोंसें रहितहै ॥ नित्यहै तथाव्यापकहै तथा आकाशादिकपंचभूतोंका कारणहै ॥ सोअक्षरही साधनहीनपुरुषोंकूं दुर्विज्ञेयहै यातेंसूक्ष्महै ॥ सोईअक्षर अव्ययनामनाशरहितहै जाअक्षरकूं विवेकीपुरुष आपनेआत्मरूपकरिकैनिश्चयकरेहैं ॥ ताअक्षरकीविद्या नामब्रह्मज्ञान वा ताब्रह्मकीप्रतिपादकउपनिषत् ताकानामपराविद्याहै ॥ अबताअक्षरआत्माकेज्ञानसें सर्वप्रपंचकेज्ञानकीसिद्धिवास्ते ताअक्षरआत्माकूं सर्वजगत्कीकारणता दृष्टांतोंसेंप्रतिपादनकरेहैं ॥ हेशौनक जैसेऊर्णनाभिजंतु आपहीतंतुवोंकाउपादानकारणहे तथाआपहीनिमित्तकारणहै ॥ जाकारणमै स्थितहूआ कार्यउत्पन्नहोवे ताकारणकूंउपादानकारणकहेहैं जैसेघटादि मृत्तिकामैउत्पन्नहूए मृत्तिकामैस्थितहोवेहैं ॥ यातें तिनघटादिकोंका मृत्तिका उपादानकारणहै ॥ जो कारणतटस्थहूआ कार्यकूंउत्पन्नकरे ताकारणकूं निमित्तकारणकहेहैं ॥ ऐसेदंडचक्रकुलालादि घटादिकोंके निमित्तकारणकहेजावेहैं ॥ औरजो आपही निमित्तकारणहोवे तथाआपही उपादानकारणहोवे ताकूंअभिन्ननिमित्तउपादानकारणकहेहैं ॥ ऐसे तंतुवोंका ऊर्णनाभिजीव आपहीउपादानकारणहे तथाआपहीनिमित्तकारणहै यातें सोऊर्णनाभिकीट तंतुवोंका अभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ जैसेऊर्णनाभिकीटतंतुवोंकूं आपनेसेंउत्पन्नकरेहै औरआपनेमैलयकरेहै ॥ तैसेयहपरमात्मा नामरूपजगत्का आपहीनिमित्तकारणहै और आपहीउपादानकारणहै यातेंयहअक्षरआत्मा याजगत्काअभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ जैसेएकहीपृथिवीसें बीजभेदकरि नानाप्रकारकी व्रीहियवादिऔषधीयांउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसेएकहीआत्मासें आपनेकर्मोंकेअनुसार सुखीदुःखीप्रजा उत्पन्नहोवेहैं कोईआत्मामैविषमता तथानिर्दयतादोषनहीं ॥ यदिकर्मोंविना परमात्मा सुखीदुःखीरूपसंसारकूं उत्पन्नकरता तबतौईश्वरमै विषमतानिर्दयता यहदोनोदोषप्राप्तहोते ॥ काहेते किसीकूंसुखीउत्पन्नकरणा तथाकिसी

64

कूं दुःखीउत्पन्नकरणा यहतौसमताका अभावरूपविषमताहै ॥ और जाकूंदुःखीउत्पन्नकरेहै तामैनिर्दयत है ॥ याकूंनिर्घृणताभीक हेहैं ईश्वरकूंकर्मसापेक्षहोनेसें दोनोंदोष ईश्वरमैप्राप्तहोवेंनहीं ॥ यातेंईश्वरकर्मसापेक्षहूआ जगत्कूंउत्पन्नकरेहै । चेतनआत्मासें यहजड जगत्कैसेउत्पन्नहोवेगा याशंकाकीनिवृत्तिवासते औरदृष्टांतकूं श्रुतिभगवतीप्रतिपादनकरेहै ॥ जैसेजीवनअवस्थाविषे चेतनरूपकरिके प्रसिद्धजोयहपुरुषहै ताचेतनपुरुषसें जडनख केश लोमादिकउत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसै याचेतनरूप अक्षरसें जडजगतउत्पन्न होवेहै ॥ अब जगतउत्पत्तिकेप्रकारकूंकहेहैं ॥ जगत्कीउत्पत्तिसेंप्रथम आत्मा जगत्कूंविषयकरणेवालेज्ञानकरि स्थूलताकूंप्राप्तहोताभया ॥ जैसे पृथिवीमैस्थितबीजजलकेसंबंधकरिके स्थूलताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ब्रह्ममैस्थूलताभी जगत्कीउत्पत्तिकीअनुकूलतारूपजाननी ॥ तास्थू लताकूंप्राप्तहूए ब्रह्मसेंअव्याकृतजोअज्ञानहै सोउत्पन्नहोताभया ॥ यद्यपि अज्ञानसिद्धांतमैं अनादिहै यातेंताकीउत्पत्तिकहनीविरु द्धहै ॥ तथापिजगत् उत्पत्तिकालमै जगत्उत्पन्नकरणेकेसन्मुख अवस्थाकीप्राप्तिरूपजन्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताचिदाभाससहितअज्ञान सें ज्ञानशक्तितथाक्रियाशक्तिविशिष्टहिरण्यगर्भउत्पन्नहोताभया ताहिरण्यगर्भसें विराट्उत्पन्नहोताभया ॥ ताविराट्उत्पत्तिसेंअनंतर भूरादिसप्तलोकउत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतेंअनंतर तिनसप्तलोकमै रहनेवालेप्राणीयोंकेकर्म उत्पन्नहोतेभये ॥ तिसतें अनंतर अवश्यप्रा प्तहोनेवालाजोकर्मकाफलहै सोस्वर्गादिरूपफल उत्पन्नहोताभया ॥ हेशौनक यासर्वजगत्काकर्त्तापरमात्मा सामान्यज्ञानवालाहै औ रविशेषज्ञानवालाहै या अर्थकूं यहश्रुतिकहेहै ॥ यःसर्वज्ञःसर्वविद्यस्यज्ञानमयंतपः ॥ याश्रुतिकाअर्थयहहै ॥ जोपरमात्मासर्वकूं सामा न्यरूपसेंजानेहै ॥ तथाजोसर्वकूंविशेषरूपकरिजानेहै औरजापरमात्माकाज्ञानरूपहीतपहै ॥ सामान्यरूपसेंज्ञानतोयहहै जैसेएकशतब्राह्म णमैं यहब्राह्मणहैंऐसेज्ञानहोना ॥ तिनब्राह्मणोंमैंही एकएकके यज्ञदत्तदेवदत्तादिनामकाज्ञान तथातिनके शुभाशुभकर्मोकाज्ञान ऐसेज्ञान कूंविशेषज्ञानकहेहैं ॥ ऐसादोनूंप्रकारकाज्ञानईश्वरमैहै ॥ ताउक्तअर्थकूंही यहमंत्रकहेहै ॥ तापरमात्मासेंहिरण्यगर्भकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ तापर

मेश्वरसेंही देवदत्तादिनामउत्पन्नहोवेहैं ॥ नीलपीतादिरूप तथाव्रीहियवादिरूपअन्न तापरमात्मासेंउत्पन्नहोवेहै ॥ अबवैराग्यकी प्राप्तिवा
सते अपराविद्याकेविषयकूंदिखावेहैं ॥ हेशौनक यहवेदउक्तकर्मकाफल अवश्यप्राप्तहोवेहै यातेंकर्मोंकूंश्रुतिमैंसत्यरूपकहाहै तिनकर्मोंकूं
॥ ३ ॥ वसिष्ठआदिकऋषि वेदकेमंत्रोंमैदेखतेभये ॥ तेकर्म पुनःत्रेतायुगमै विस्तारकूंप्राप्तभये ॥ तिनकर्मोंकूं आपनेअभिलषितफलकीप्राप्तिवास
तेकरो ॥ यहकर्महीइष्टफलकीप्राप्तिवासते मार्गहै ॥ विनाकर्मसें किंचित्मात्रभीफलप्राप्तहोवेनहीं ॥ स्वर्गादिफलतौ सकामकर्मविना
प्राप्तहोवेनहीं ॥ निष्कामकर्मविनाचित्तशुद्धिहोवेनहीं चित्तशुद्धिविना ज्ञानभीप्राप्तहोवेनहीं ॥ ज्ञानविनामोक्षहोवेनहीं ॥ ऐसे कर्मवि
ना किंचित्फलकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यातेंफलकीप्राप्तिवासतेकर्मकूंकरो ॥ प्रथमअग्निहोत्रकर्मकूंदिखावेहैं ॥ जाकालमै काष्ठघृतादिकों
सें अग्निप्रज्वलितहोवे ताकालमै आज्यभाग नामहोमकूंकरे ताअनंतरदेवतावोंकूं अनेकआहुतिसेंप्रसन्नकरे ॥ श्रद्धापूर्वककर्मकीसि
द्धितौ अतिकठिनहै विपत्तिमध्यमेअनंतहोवेहैं ॥ सोईदिखावेहैं ॥ जापुरुषकाअग्निहोत्र अमावास्यामैजोयज्ञहोवेहै ताकूंदर्शकहेहैं तादर्श
यज्ञसेंरहितहै ॥ तथाजापुरुषका अग्निहोत्र पौर्णमास्ययज्ञसेंरहितहै ॥ तथाचातुर्मास्य कर्मसेंरहितहै ॥ शरदऋतुकेआदिमैजोनूतनअन्न
करिके कर्मकराजावे ताकूंआग्रयणकहेहैं ॥ तथाताआग्रयणकर्मसेंरहितहै ॥ तथाजाकेअग्निहोत्रमै अतिथिकापूजननहींकरा ॥ तथाजा
काअग्निहोत्र अग्निकालमैंनहींभया ॥ तथाजाअग्निहोत्रमै वैश्वदेवनामककर्मनहींभया ॥ तथाजापुरुषका अग्निहोत्रभयाभी विधिपूर्व
कनहींभया ॥ ऐसेपुरुषकासोअग्निहोत्रही सप्तलोकोंका नाशकरेहै ॥ तात्पर्ययहजो विधिपूर्वक तथाआपनेअंगसहितकरेकर्मका स्व
र्गादिफलहोवेहै ॥ उक्तपुरुषके विधिसहितकर्मकेअभावहोनेसें स्वर्गादिलोकरूपफल प्राप्तहोवेनहीं ॥ यातें वापुरुषके तेसप्तलोकनाश ॥ ३६ ॥
हूए जैसेजानने ॥ हविकेभक्षणवासतें ताअग्निकीयहसप्तजिव्हाहैं ॥ काली १ कराली २ मनोजवा ३ सुलोहिता ४ सुधूम्रवर्णा
५ स्फुलिंगिनी ६ विश्वरूपी ७ यहदेवीरूपजिव्हाहैं तिनसेंभक्षणकरेहै ॥ इनप्रज्वलितसप्तजिव्हामै जोपुरुष यथाकालसें आहुतिका

प्रक्षेपकरेहै ॥ तापुरुषकूं तेआहुतियां रश्मिरूपहोइकरि स्वर्गमैलेजावेहैं ॥ जास्वर्गमैंदेवतावोंकापतिइंद्ररहेहै ॥ जैसेस्वर्गमै यापुरुषकूं आहुतियांलेजावेहैं ताप्रकारकूंकहेहैं ॥ जोअग्निहोत्रादिकर्मकूंकरेहै तामैजेआहुतिहैं तेआहुति प्रकाशकूंप्राप्तहूई तथाआवोआवो ऐसे यजमानकूं बुलातीहूई तायजमानकूंब्रह्मलोकमै लेजावेहैं ॥ ब्रह्मलोकपदसेंईहांस्वर्गलोकविवक्षितहै केवलकर्मसेंतौ स्वर्गहीप्राप्तहोवेहै ॥ औरतेआहुतियां यजमानकी पूजाकूंकरेहैं औरयहकहेहैं यहतुमारेकर्मकाफलस्वर्गहै याकूंभोगो ॥ अबज्ञानप्राप्तिसेंविना अन्यकिसी फलवासतेकरेजेकर्महैं तिनकीनिंदाकरेहैं ॥ हेशौनक यहयज्ञरूपनौका संसारसमुद्रसें पारकरणेवासतेसमर्थनहींहै ॥ जैसे तृणादिकों कररिचित अतिअल्पनौकासें समुद्रकेपारउतरणाहोवेनहीं किंतु मत्स्यआदिकजलचारी जीव तानौकासेंमारेजावेहैं ॥ तैसे तिनक र्मोंसें संसारसमुद्रसें पारउतरणाहोवेनहीं ॥ स्वर्गादिफलरूपमत्स्यकीप्राप्तिकर्मसेंहोवेहै ॥ संसाररूपसमुद्रकेपारउतरणेवासते तौ ज्ञान रूपीजहाजहीअपेक्षितहै ॥ कर्मतौ ज्ञानसेंअत्यंतन्यूनहै ॥ औरयहकर्म षोडशऋत्विज्जेयज्ञकरानेहारेब्राह्मणहैं तथायजमान औरयज मानकी स्त्री याअष्टादशोंसेंसिद्धहोवेहै ॥ याकर्मकूंहीजेमूढ मोक्षकासाक्षात् साधनमानतेहैं ॥ तेमूढ वारंवार जन्म जरा मृत्युकूंही प्राप्तहोवेहैं ॥ किंचित्कालपर्यंतस्वर्गमैस्थितहोतेहैं ॥ परंतुतास्वर्गसेंभीगिरेहूए यासंसारमैघटीयंत्रकीन्यांईघूमतेहैं ॥ तेकर्मी सदा अवि द्यामैहोवर्तेहैं औरहैंतौअत्यंत मूढ परंतु आपकूंबुद्धिमान्पंडितमानतेहैं ॥ जैसेएकअंधकेपीछेचले औरअंधेक्लेशकूंहीअनुभवकरेहैं ॥ तैसे कर्मीअंधगुरुकेपीछेशिष्यभी वारंवारसंसारदुःखकूंही अनुभवकरेहैं ॥ औरतेमूढअविद्यामैरहतेहूएभी आपकूंकृतार्थमानतेहैं ॥ आपनेस्वरूपकूंनजानतेहूए तेकर्मी स्वर्गसेंभीगिरकरि यासंसारमैंआवेहैं ॥ और यज्ञ वापी कूप तडागादि कर्मकूंही मोक्षकासा धनमूढमानेहैं ॥ औरकहेहैं जोआत्मज्ञानमोक्षका साधननहींहै ॥ यहकर्मही बहुतसुंदरमोक्षकाउपायहै ॥ ऐसेमाननेवालेकर्मी आ पनेकरेकर्मकेफलकूं भोगकरि यामानुष्यलोककूं वानरककूं वासर्पादि तिर्यग्योनिकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ हेशौनक जेपुरुषतपकूंकरेहैं

तपनाम आपने वर्णआश्रमकेकर्मकाहै तिनकर्मोंकूं तथासगुणउपासनाकूंकरेहैं ॥ तेगृहस्थ वासंन्यासीवनमैरहनेहारे तथाजित
इंद्रिय तथानिवृत्तपाप उपासक भिक्षाकरिकेशरीरकीरक्षाकरणेहारे तेउत्तरायणमार्गकरि ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ जाब्रह्मलोकमै
॥ ४ ॥ ब्रह्मारहेहै ॥ कैसाहै सोब्रह्मा हिंरण्यगर्भ जबीतकसंसारहै तबपर्यंतजोस्थायीहै ॥ हेशौनक मुमुक्षुने ब्रह्मलोककीप्राप्तिकीइच्छाकरिके
श्रवणादिकोंकात्यागनहींकरणा ॥ काहेते ब्रह्मलोकप्राप्तिमैअनंतविघ्नहैं ॥ यातेंमुमुक्षु सर्वलोकोंसेंवैराग्यकूंप्राप्तहोवे औरयहविचारकरे
जोकर्मकरिप्राप्तहोवेहै ताकीअवश्यनिवृत्तिहोवेहै ॥ जैसेपुरुष क्षेत्रमैअन्नादिकोंकूं कर्मकरिउत्पन्नकरेहैं औरतिनकीभोगकरिनिवृत्ति
होवेहै ॥ तैसेयहलोक तथापरलोक कर्मकरिरचितहोनेसें सर्वहीविनाशीहैं ॥ ऐसेअनेकदृष्टांतोंकरि सर्वलोककूं अनित्यजानकरि
वैराग्यकूंप्राप्तहोवे ॥ औरयहविचारे जोकर्मोंकरि नित्यमोक्षकीप्राप्तिहोवेनहीं जेसंसारमैपदार्थकर्मजन्यहैं तेसर्वअनित्यहीहैं ॥ ऐसे
विचारकरि समित्पाणिहूआ ब्रह्मश्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकी शरणकूंप्राप्तहोवे ॥ जोवेदकेअर्थकूंजाने ताकूंब्रह्मश्रोत्रियकहेहैं ॥ जाकी
ब्रह्ममैनिष्ठानामस्थितिहोवे ॥ अर्थयह ॥ करमैबिल्ववत्जाकूं ब्रह्मकाअपरोक्षज्ञानहै ताकूंब्रह्मनिष्ठकहेहैं ॥ ऐसेगुरुकीशरणकूंप्राप्तहोवे ॥
केवलकाषायमात्रकरानेवालेसें वाशिरमुंडन तिलक जटा कंठी धारण आदिकचिन्होंकूंकरानेवालेसें यामुमुक्षुकाकल्याणहोवेनहीं ॥
यातेंमुमुक्षुआपनेमोक्षवासते ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठगुरुकीशरणकूंआवे ॥ हेशौनक जबीसोमुमुक्षु चित्तशांतहूआ तथाविरक्तहूआ
तागुरुकीशरणकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तबीजाब्रह्मविद्याकरि यहमुमुक्षु ब्रह्मअक्षर तथासत्यरूपपूर्णआत्माकूं निश्चयकरे ताब्रह्मविद्याकूंही तेगुरु
अधिकारीकेतांईकहेहैं ॥ अबपराविद्याकेविषयकूं विस्तारसेंकथनकरेहैं ॥ हेशौनक कर्मकाफलतौ किंचित्कालसत्यहै सर्वकालमैसत्य ॥ १७ ॥
नहींहै ॥ यह अक्षरसर्वकालमैसत्यहै ॥ तासत्यआत्मासेंही यहचराचरजगत्उत्पन्नहोवेहै ॥ जैसेप्रज्वलितअग्निसें विस्फुलिंग प्रकाश
रूपही अनंतउत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसेयाअक्षरसें जड चेतन सर्वजगत्उत्पन्नहोवेहै ॥ तासेंउत्पन्नहोइकरि ताअक्षरमैंही लयभावकूंप्राप्तहो

वेहै ॥ यातेंताअक्षरआत्मासें किंचित्भीभिन्ननहीं ॥ ऐसेएक अक्षर आत्मासें किंचित्मात्रभिन्नसत्यनहीं यहहीएककेज्ञानसेंसर्वका ज्ञानश्रुतिमै अपेक्षितहै ॥ जगत्केनामरूपकाज्ञानहोवेहै याअभिप्रायसें एककेज्ञानसेंसर्वकाज्ञान श्रुतिमैंअपेक्षितनहीं ॥ जैसेएकमृत्तिकाकेज्ञानसें सर्वदेशोंमैंस्थित जेघटादिहैं तेसर्वमृत्तिकामात्रहै ऐसेसर्वघटादिकोंकाज्ञानहोवेहै ॥ तैसेआत्माकेनिश्चयकरणेसें कार्यप्रपंच आत्मसत्तासें भिन्नसत्तावालानहीं यहहीज्ञानहोवेहै ॥ ऐसेशौनकऋषिकेप्रश्नके समाधानवासते वारंवारप्रपंचकीउत्पत्ति अंगिरानामागुरुनेकथनकरी ॥ औरएकज्ञानसें सर्वकाज्ञानकैसेहोवेहै याप्रश्नकासमाधानभी अनेकवारदृढता अर्थजानना ॥ हेशौनक ॥ याजगत्का जनकअक्षर आत्मास्वप्रकाशहै ॥ तथाअमूर्त्तहै ॥ अर्थयह ॥ जोस्थूलतादिरहितहूआ सर्वत्रव्यापकहै ॥ औरयाआत्मासें भिन्नकार्यकारणनहींहै औरअजन्माहै ॥ तथाप्राणसें औरमनसेंरहितहै तथाशुद्धहै ॥ कार्यकीदृष्टिसेंपरजोअज्ञान तासेंभी यहआत्माअज्ञानकाअधिष्ठान परहै ॥ औरयहप्राणादिक सर्वआत्मासेंही उत्पन्नहोवेहैं यातेंब्रह्मअद्वितीयहै ॥ स्वाभाविकभेदतौब्रह्ममैहैनहीं ॥ भेदकेसिद्धकरणेहारे उपाधिरूप मन औरप्राणादिकहीहैं औरतेमनप्राणादिकउपाधिरूप याब्रह्मात्मासेंउत्पन्नहोवेहैं ॥ यातेंवास्तवसें ब्रह्ममै औपाधिकभेदभीनहींहै ॥ याअर्थकीसिद्धिवासते ब्रह्मसें प्राणादिकोंकीउत्पत्ति अबकहेहैं ॥ याब्रह्मात्मासें प्राणउत्पन्नहोवेहै तथामनसहितसर्वइंद्रिय उत्पन्नहोवेहैं ॥ तथा आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी यहपंचभूत आपनेगुणोंसहित उत्पन्नहोवेहैं ॥ शब्द याएकगुणसहितआकाश तथाशब्द स्पर्शइनदोगुणोंसहित वायु तथा शब्द स्पर्श रूप इनतीनगुणोंसहितअग्नि तथाशब्दस्पर्शरूपरस इनच्यारिगुणोंसहितजल तथाशब्द स्पर्श रूप रस गंध इनपंचगुणोंसहितपृथिवी ताब्रह्मसेंहीउत्पन्नहोवेहै ॥ इनभूतोंमैएकएकगुण आपनाहै औरदूसरेकारणकेजानने ॥ प्रपंचकीउत्पत्तिमै वेदकातात्पर्यनहीं यातेंआकाशादिकोंकीउत्पत्ति प्राणादिकोंसेंपश्चात्कहनेसेंविरोधनहीं ॥ औरताब्रह्मात्मासेंही विराट्उत्पन्नहोवेहै ॥ ताविराट्कूंही अवयवसहितनिरूपणकरेहैं ॥ जाविराट्का अग्निमस्तक

69

है तथाजाकेसूर्यचंद्रमानेत्रहैं ॥ तथाजाविराट्केदिशाहीश्रोत्रहैं ॥ औरजाविराट् भगवान्का च्यारिवेदवाक्इंद्रियहै ॥ तथावायु
जाविराट्काप्राणहै ॥ यहसंपूर्णजगतजाविराट्काहृदयहै ॥ औरजाविराट्भगवान्का पृथिवीपादरूपहै ॥ तथाजोसमष्टिरूपविराट्
॥ ५ ॥ व्यष्टिसर्वभूतोंकाआत्माहै ॥ औरजाविराट्भगवान्सें स्वर्गलोकरूपअग्निउत्पन्नहोवेहै जास्वर्गलोकरूपअग्निकासूर्यहीकाष्ठहै ॥ ता
केअनंतर चंद्रनामासोम उत्पन्नहोवेहैं ॥ ताद्रवीभूतसोमसें पर्जन्यरूपमेघउत्पन्नहोताभया सोपर्जन्यहीदूसराअग्निहै ॥ मेघरूपपर्ज
न्यसें वृष्टिद्वारा पृथिवीरूपतीसरेअग्निसें व्रीहियवादिरूप अन्नउत्पन्नहोतेभये ॥ तेअन्न पुरुषरूपीचतुर्थअग्निमैंप्राप्तहूए वीर्यरूपताकूं
प्राप्तहोवेहैं ॥ स्त्रीरूपपंचम अग्निमैं प्राप्तहूए वीर्यसेंगर्भद्वारा पुत्रपौत्रादिकप्रजाउत्पन्नहोतीभयी ॥ ऐसेपरमात्मासें उत्पन्नभया
जोविराट्है ताविराट्भगवान्सें पंचअग्निउत्पत्तिद्वारा ब्राह्मणक्षत्रियादिकसर्वप्रजाउत्पन्नहोतीभयी यहनिरूपणकरा ॥ अबजापरमा
त्मासें विराट्उत्पन्नहोताभया तापरमात्मासेंही औरवेदादिकोंकीउत्पत्तिकहेहैं ॥ हेशौनक ताअक्षरपरमात्मासें ऋग्वेद सामवेद
यजुर्वेद उत्पन्नहोतेभये ॥ तथामुंजबंधनादि कर्मकेनियम उत्पन्नहोतेभये ॥ अग्निहोत्रादियज्ञ तथायूपसहितजे अन्ययज्ञहैं तिनकूं
हीक्रतुकहेहैं यूपरहितयज्ञ तथायूपसहितक्रतु तापरमेश्वरसेंहीउत्पन्नहोतेभये ॥ तथागोस्वर्ण आदिरूप दक्षिणा तथासंवत्सरादि
काल तथायज्ञकराणेवालेयजमान तथातिनकर्मकाफलरूपस्वर्गादिलोक तापरमात्मासेंउत्पन्नहोतेभये ॥ जिनसर्वलोकोंमैं चंद्रमा त
थासूर्यविचरेहैं तिनसर्वलोकोंकी परमात्मासें उत्पत्तिकही अब अन्यपदार्थोंकी उत्पत्तितापरमात्मासेंकहेहैं ॥ हेशौनक ताअक्षरसें
वसुआदिदेवता तथासाध्यनामवालेदेवता तथामनुष्य पशु पक्षी उत्पन्नहोतेभये तथाप्राण अपान समान उदान व्यान यहपंचप्रका
रकेप्राण तथाव्रीहियवादिअन्न तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिरूप तप तथाश्रद्धा तथासत्य संभाषण तथाउपस्थसंयमरूप ब्रह्मचर्य तथावेद ॥ ३८ ॥
विहितकर्मरूपविधि यहसर्वपदार्थब्रह्मात्मासेंउत्पन्नहोतेभये ॥ तापरमात्मासेंही शरीरकेमस्तकमैंरहनेहारे दोश्रोत्र दोनेत्र दोनासिका

सप्त एकवाक् यहइंद्रियरूपसप्तप्राण उत्पन्नहोतेभये ॥ तथातिननेत्रादिकोंसें उत्पन्नभयीजे सप्तप्रकारकीवृत्तियांहैं तिनकेजेरूपादि
विषयहैं तथातिनविषयोंका तिनइंद्रियोंमैजोलय चिंतनरूपउपासनाहै ॥ तथासप्तनेत्रादिकोंके जेसप्तगोलकहैं ॥ जिनविषेने
त्रादिकविचरतेहैं ॥ सर्वप्राणीयोंकेयह सप्तसप्तउत्पन्नहोतेभये ॥ याअक्षरसेंहीसप्तसमुद्र तथाहिमाचलादिपर्वत तथाश्रीगंगादिनदीयां
यहसर्वपदार्थउत्पन्नहोतेभये ॥ तथाव्रीहियवादिऔषधीयां औरतिनकेरस उत्पन्नभये जा रसकरि स्थूलशरीरमै लिंगशरीरविशि
ष्टआत्मास्थितहोवेहै ॥ हेशौनक यहसर्वजगत् जिसहेतुसेंपरमात्मासेंउत्पन्नभयाहै याहेतुसेंही यापुरुषअक्षरसेंकिंचित्भीभिन्ननहीं ॥
यहपुरुषही सर्वविश्वहै तथाकर्मअग्निहोत्रादितथाउपासना तथावेदादिसर्वजगत् परब्रह्मसेंभिन्ननहीं ॥ ताब्रह्मकूं विवेकी आपनीबुद्धि
रूपीगुहामै साक्षीरूपसेंस्थितजानेहै ॥ ऐसेएकज्ञानसेंसर्वकाज्ञानकैसेहोवेहै याप्रश्नकेअनेकरीतिसें समाधानकथनकरिके अबताब्रह्मवि
द्याकीप्राप्तिवासते साधनकूंकहेहैं ॥ हेशौनक यहअक्षरब्रह्म नित्यस्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथाबुद्धिरूपीगुहामैस्थितहै ॥ यातेंअत्यंतसमीप
है तथाव्यापकहै ॥ औरजैसेरथकीनाभिमै अरास्थितहैं तैसेयाअक्षरमै सर्वजगत्स्थितहै ॥ तथाप्राणापानादिवाले मनुष्य पशु आदि
शरीरसैंमिलकरि यहआत्माही प्राणापानादिचेष्टाकूं तथानेत्रादिकोंकीचेष्टाकूंकरेहै ॥ याअक्षरसेंस्थूलसूक्ष्मभिन्ननहींहै ॥ औरसर्वअधि
कारीजनोंकरिकै प्रार्थनीयहै ॥ अर्थयह ॥ जोताअक्षरसें भिन्नकोईपदार्थ नित्यनहीं जापदार्थकी अधिकारीपुरुष यांछाकरे यातेंयह
नित्यआत्माअक्षरही अधिकारीकूंवररूपहै ॥ श्रुतिभगवती स्वतंत्रभीअधिकारीमुमुक्षुजनोंकूं उपदेशकरेहै ॥ भोमुमुक्षवः यहजोअक्षर
आत्मा सर्वप्राणीयोंकेइंद्रियादिजन्यज्ञानोंका अविषयस्वभावहै ताआत्माकूंनिश्चयकरो ॥ औरयहअक्षरही प्रकाशमानसूर्यआदिरूप
है ॥ तथासूक्ष्मजे श्यामाकादिहैं तिनसेंभीयहअक्षरसूक्ष्महै ॥ औरस्थूलपृथिवीआदिकोंसेंभीअतिस्थूलहै ॥ तथाजाअक्षरमै भूरादिस
र्वलोकस्थितहैं ॥ तथातिनलोकोंमै रहनेहारेमनुष्यदेवतादिभी जाअक्षरमैस्थितहैं ॥ तथासोअक्षरही प्राण वाक् मन आदिसर्वकरणरू

पहै ॥ ताअक्षरकेकृपाकटाक्षसेंही प्राणादिजडसंघातचेष्टाकरेहै ॥ यहअक्षरहीसत्यहै ॥ तथायहअक्षरहीअमृतहै ॥ अर्थयह ॥ जोजन्मम
रणरहितहूआ आनंदस्वरूपहै ॥ औरयहअक्षरहीताडनेयोग्यहै ॥ अर्थयह ॥ जोताअक्षरमैहीमनसमाधानकर्त्तव्यहै ॥ यातैं हेशौनक
॥ ६ ॥ ताअक्षरमैमनकूं अर्पणकरो ॥ जैसेमनकरताडनेयोग्यहै सोप्रकारदिखावेहैं ॥ हेशौनक जैसेकोईशूरवीरपुरुष आपनेधनुष्सें बाणकूंचला
इके किसीमृगादिलक्ष्यवस्तुकूं वेधनकरेहै ॥ तैसे यहमुमुक्षु धैर्यकरियुक्तहूआ तथाआपनेवैराग्यके बलसें तथाआत्मविवेककेबलसें का
मक्रोधादिकोंकूंजीतनेहाराहै तामुमुक्षुने अक्षररूपलक्ष्यकूं वेधनकरणा ॥ हेशौनक सर्वउपनिषदोंमै प्रसिद्धजोप्रणवहै सोईमहाअस्त्रहै ॥
औरदेहइंद्रियादिकोंसेंभिन्न शोधित साक्षी बाणरूपहै ॥ औरमैब्रह्मरूपहूं इसरीतिसेंजोमहावाक्यकाचिंतन सोधनुष्काआकर्षणहै ॥
शुद्धब्रह्मअक्षरहीलक्ष्यस्वरूपहै ॥ ऐसेप्रणवधनुष्मै शोधितत्वंपदार्थसाक्षीरूपबाणके अर्पणसें तथा अभेदचिंतनरूपधनुष्केआकर्षणसें ल
क्ष्यरूपब्रह्ममै साक्षीरूपबाणप्राप्तहोवेहै ॥ तालक्ष्यरूपशुद्धब्रह्ममै साक्षीरूपबाणप्राप्तहूआतद्रूपहीहोवेहै ॥ तासें किंचित्मात्रभीभेदरहेन
हीं ॥ हेशौनक याअक्षरमैही स्वर्गलोक तथापृथिवीलोक तथाअंतरिक्षलोक यहतीनोंलोकस्थितहैं ॥ तथामननेत्रादिसर्वइंद्रियस्थितहैं॥
श्रुतिभगवती मुमुक्षुजनोंकूं पुनःआपउपदेशकरेहैं ॥ हेमुमुक्षुजनाः ताएकआत्माअक्षरकूं निश्चयकरो ॥ औरअनात्मपदार्थोंकाचिंतनक
रनानहीं ॥ तथातिनअनात्मपदार्थोंकेकथनकरणेहारेजेअनंतवचनहैं तिनकाभीत्यागकरो ॥ जैसेकाककेदंतोंकापरिगणनकरणानिष्फल
है ॥ तैसे अनात्मशब्दोंकेचिंतनसेंभी किंचित् फलहोवेनहीं ॥ केवलतिनशब्दोंकेउच्चारणसें कंठकाशोषणहोवेहै ॥ तथातिनअनात्मश ॥ ३१ ॥
ब्दोंकेध्यानसें मनकूंविक्षेपरूपफलहोवेहै ॥ यातेंकेवलउपनिषदोंकरिकैजाननेयोग्यजोआत्मवस्तुहै ताप्रत्यग्अभिन्नब्रह्मकूं उपनिषदोंक
रिकेहीनिश्चयकरो ॥ औरवेदांतरूपउपनिषदोंकेविचारसें तथातिनउपनिषदोंकातात्पर्यरूप जोव्यासभगवान्कृतशारीरकहै तथाउपनिष
द्अर्थकेतुल्य अर्थवालीजेगीतादिस्मृतियांहैं तथातिनउपनिषदोंकेउपयोगीजे अन्यप्रकरणहैं तिनवेदांतरूप सर्वग्रंथोंकेविचारणसेंतो

ब्रह्मज्ञानप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंजोपुरुषवेदांतविचारकूंभी न्यायकाव्यादिकोंकेतुल्यमानेहै सोपुरुष वेदांतशास्त्र केतात्पर्यकाअनभिज्ञबालकहै ॥ तथावेदांतशास्त्रकूं निरर्थकमानकरितामैप्रवृत्तिके अभावसें तथानिषिद्धकर्मकेअनुष्ठानसें नरककूंहीप्रा प्तहोवेहै ॥ यातें ब्रह्मज्ञानवासते मुमुक्षु सुषुप्तिपर्यंत तथामरणपर्यंत वेदांतविचारकूंकरे ॥ जैसेसेतुरूपमार्गकरिकै नदीसेंपारतरणहोवेहै ॥ तैसेयाब्रह्मज्ञानकरिकेही संसारसमुद्रसें पाररूपब्रह्मकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंज्ञातहूआब्रह्महीसेतुरूपहै ॥ हेशौनक जैसेरथकेचक्रकीनाभि मै अरास्थितहोवेहैं ॥ तैसेहृदयकमलमै शतसहस्र नाडीयांस्थितहैं ॥ ताहृदयकमलमै यहस्वप्रकाशरूपआत्मासर्वदावर्त्तताहै ॥ औरय हआत्मावास्तवसेंजन्मरहितहूआभी शरीरादिउपाधिकरिकै जन्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुषमैब्रह्महूं ऐसेजाननेकूंसमर्थनहीं सोपुरुषप्रण वरूपसेंब्रह्मकाध्यानकरे सोध्यातापुरुषभीताध्यानकेबलसें प्रतिबंधरूपपापकूंनिवृत्तकरिकै ब्रह्मकूंजानलेवेहै ॥ जैसेप्रणवकाध्यान पाप कानिवर्त्तकहै तैसेब्रह्मवेत्तागुरुकाआशीर्वादभीपापकानिवर्त्तकहै ॥ यातेंगुरुकूं अधिकारीपुरुषने प्रसन्नकरणा ॥ प्रसन्नहूए गुरुआपने शिष्यकूं ऐसेआशीर्वादकरेहैं ॥ हेशिष्य ॥ अज्ञानतथाताकाकार्यरूपसमुद्रकापाररूपजोब्रह्महै ताब्रह्मकीप्राप्तिवासते तुमारेकूंनिर्विघ्नहोवे ॥ याआशीर्वादसेंभीपापनिवृत्तिद्वारा ज्ञानप्राप्तहोवेहै ॥ हेशौनक यहपरमात्मा सर्वपदार्थोंकूं सामान्यरूपसें तथाविशेषरूपसें जानेहै ॥ ताआत्माकाप्रताप सर्वपृथिवीमैव्याप्तहै सोप्रतापरूपमहिमायहहै जाआत्माकरिभयभीतहूए सूर्य चंद्रमा सर्वदा भ्रमणकरेहैं ॥ ताआत्माकेभयकरिहीसमुद्र नदीयां आपनीमर्यादाकूं त्यागकरेंनहीं ॥ जाआत्माकीआज्ञामै स्थावरजंगमस्थितहैं ॥ तथादिन रात्रि मास ऋतु दक्षिणायन उत्तरायण वरस युग इत्यादिकाल जापरमेश्वरकीआज्ञाकूं उलंघनकरेनहीं ऐसाजापरमेश्वरकाम हिमा सर्वलोकमैप्रसिद्धहै ॥ जैसेसर्वदेशके अधिपतिभी श्रीरामचंद्र अयोध्यामै विशेषकरिप्रतीतहोनेसें अयोध्यामैरहेहैं यहकह्या जावेहै ॥ तैसेसर्वजगत्‌मै व्यापकब्रह्मकूं हृदयमै साक्षीरूपकरि प्रतीतहोनेसें हृदयमैब्रह्महै यहकह्याजावेहै ॥ यातेंहीश्रुतिभगव

मनोमय यानामकरिकथनकराजावेहै ॥ औरयह आत्माही मनरूप उपाधिकरिकै मनोमय यानामकरिकथनकराजावेहै ॥ भा० ५
मुं०उ० तीहृदयकूं ब्रह्मपुर यानामसें कथनकरेहै ॥ औरयह आत्माही मनरूप उपाधिकरिकै मनोमय यानामकरिकथनकराजावेहै ॥ औरसर्वसंघातकूंप्रकाशकरता
यहमनोमय आत्माही प्राणादिरूपसूक्ष्मशरीरकूं एकस्थूलशरीरसें द्वितीयस्थूलशरीरमें प्राप्तकरेहै ॥ जालिंगशरीरउपहितआत्मासेंविना यहस्थूलशरीर श्मशानमें भस्मकरणेयोग्यहोवेहै ॥
॥ ७ ॥ हूआ यास्थूलशरीरकेहृदयदेशमैं स्थितहै ॥ जोप्रत्यग्अभिन्नब्रह्मआनंदरूप स्वम
ताआत्माकूं प्रथमसाक्षीरूपसें प्रत्यक्षकरतेहूए विवेकीपुरुष तासाक्षीकूं पुनःपूर्णरूपजानेहैं ॥ भिद्यतेहृदय
हिमामैंस्थितहै सोआनंदरूपब्रह्मात्मा तिनविवेकीपुरुषोंकूं भासताहै ॥ आत्मज्ञानकेफलकूं यहश्रुतिप्रतिपादनकरेहै ॥ भिद्यतेहृदय
ग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः । क्षीयंतेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ याश्रुतिकाअर्थयहहै परावरनाम कार्यकारणरूपजाआत्मासेंभि
न्ननहीं ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानरूपकारणकीनिवृत्तिहोनेसें देहादिकोंमैं आत्मत्व अध्यासरूपहृदयग्रंथिकी निवृत्तिहो
वेहै ॥ तथासर्वसंशयनिवृत्तहोवेहै ॥ और सर्वकर्मक्षीणहोवेहैं ॥ तेसंशययहहैं आत्मादेहरूपहै वादेहसेंभिन्नहै ॥ भिन्नहूएभी इंद्रियवाप्राण
वामनरूपहै वाइनसर्वसेंभिन्नहै ॥ भिन्नहूएभी कर्त्तारूपहैवा अकर्त्तारूपहै ॥ अकर्त्ताहूएभी भोक्ताहै वाअभोक्ताहै अभोक्ताहूएभी ज्ञान
आनंदकाआश्रयहै वाज्ञानआनंदरूपहै इत्यादिसंशयत्वंपदार्थजीवमैंहैं ॥ तैसे तत्पदार्थमैंभी अनेकप्रकारकेसंशयहैं ॥ परिच्छिन्नहस्तपादा
दिकअवयववान् तथावैकुंठआदिलोकवासीईश्वरहै वाहस्तादिकोंसेंरहितविभुहै ॥ व्यापकमानेतौभी परमाणु आदिसापेक्ष जगत्कर्त्ताहै
वातिनसेंनिरपेक्षकर्ताहै ॥ परमाणु आदिनिरपेक्षकर्त्ताकहैं तौभी ईश्वर केवलनिमित्तकारणहै वाअभिन्ननिमित्तउपादानकारणहै ॥ उभ ॥ ४० ॥
यरूपकारणकहैंतौभी कर्मनिरपेक्षहोनेसें विषमतानिर्घृणतारूपदोषवान्है वाकर्मसापेक्षहोनेसें सर्वकलंकरहितहै ॥ ऐसे तत्पदार्थईश्वरमैं
संशयहोवेहैं ॥ तथाएकतामैंसंशयहोवेहैं ॥ जीवईश्वरकीएकतानहींबनेहै वाबनेहै ॥ चेतनमात्रकीएकताहोवेतौभी मोक्षकालमैंएकताहो
वेहै ॥ वासर्वदाएकताहोवेहै ॥ इत्यादिसंशयएकतामैंहै ॥ औरयहमोक्षसाधनमैंसंशयहोवेहैं ॥ कर्महीमोक्षकासाधनहै वाउपासनामोक्षका

साधनहै वाज्ञानहीमोक्षकासाधनहै ॥ ज्ञानमोक्षकासाधनकहेंतौभी कर्मउपासनासहितज्ञान मोक्षकासाधनहै ॥ अथवाकेवलज्ञानमोक्षका साधनहै ॥ मोक्षकेस्वरूपमैंयहसंशयहैं वैकुंठादिलोकप्राप्तिमोक्षहै वाब्रह्मप्राप्तिमोक्षहै ब्रह्मप्राप्तिमोक्षकहेंतौभी सविशेषब्रह्मप्राप्तिमोक्षहै वानि र्विशेषब्रह्मप्राप्तिमोक्षहै ॥ निर्विशेषब्रह्मप्राप्तिरूपमोक्षकहेंतौभी ज्ञानकेप्रथमनप्राप्तहोनेसें तथाज्ञानकेपश्चात्प्राप्तहोनेसें कादाचित्कहै वामो क्षसदाहीहै ज्ञानकरिभीप्राप्तकीहीप्राप्तिहोवेहै ॥ ऐसेयहसर्वसंशयप्रमेयसंशयकहेजावेहैं तिनसर्वसंशयोंकीब्रह्मज्ञानसेंनिवृत्तिहोवेहै ॥ त थाप्रमाणसंशयनिवृत्तहोवेहै ॥ प्रमाणजोवेदतिनमैंजोसंशयहोवे ताकूंप्रमाणसंशयकहेहैं ॥ सोयहहै वेदकर्मकूं तथाउपासनाकूं और क र्मउपासनाकेअंगदेवतादिकोंके स्वरूपकूंकहेहै ॥ वाअद्वितीयब्रह्मकेस्वरूपकूंकहेहै ॥ याप्रकारके संशय ज्ञानकरिविवेकीकेनिवृत्तहोवे हैं कहेसंशयोंमैपूर्वपूर्वकोटीपूर्वपक्षहै उत्तरउत्तरकोटीसिद्धांतजानना ॥ यद्यपि विपर्ययरूपअध्यासकीनिवृत्ति निदिध्यासनसेंहोवेहै ॥ म ननसेंप्रमेयगतअनेकप्रकारकेसंशयोंकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तथाश्रवणसेंप्रमाणगतसंशयनिवृत्तहोवेहैं ॥ ऐसेअद्वैतकौस्तुभादिवेदांतग्रंथोंमैं लिखाहै ॥ केवलज्ञानसें सर्वसंशयविपर्ययकीनिवृत्तिकथन तिनग्रंथोंसेंविरुद्धहै ॥ तथापि श्रवणादिकोंसें संशयादिकोंकीनिवृत्तितौहो वेहै ॥ परंतुसंशयादिकोंके कारणअज्ञानकीनिवृत्ति तिनश्रवणादिकोंसेंहोवेनहीं ॥ ज्ञानसेंतौ तिनसंशयादिकोंकाकारणअज्ञान निवृत्त होवेहै ॥ अज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहोनेसें कार्यसंशयादिकोंकीनिवृत्ति अवश्यहोवेहै यातेंकिंचित्विरोधनहींहै ॥ ऐसेसंशयकीनिवृत्ति कहिकरि अबकर्मकीनिवृत्तिकाप्रकारकहेहैं ॥ कर्मतीनप्रकारकेहैं एकसंचितहै द्वितीयक्रियमाणहैं तृतीयप्रारब्धरूपहैं ॥ तिनमैं संचि तकर्मयहहैं अनंतकोटीजन्मोंकेबीजभूत अदृष्टरूपकरिरहनेहारेजेकर्महैं तिनकूंसंचितकर्मकहेहैं ॥ क्रियमाणकर्म तिनकर्मोंकूंकहेहैं ॥ ब्रह्माहमस्मि याज्ञानके उत्तरकालमैं जेकर्मकरेजावेहैं ॥ और जिनकर्मोंनेयाशरीरकूंउत्पन्नकराहै ॥ तथायालोकमैंसुखदुःखरूपफलकूं दे नेवालेजेकर्महैं तिनकूंप्रारब्धकहेहैं ॥ ऐसेतीनप्रकारकेकर्मोंकेमध्यमैं संचितकर्मोंकातौ ज्ञानरूपअग्निकरिके भस्मीभावहोवेहै ॥ और

क्रियमाणकर्मकासंबंधहोवेनहीं ॥ जैसेजलकेमध्यमैकमलपत्रअसंगहोइकरिस्थितहोवेहै ॥ तैसेज्ञानी आगामीकर्मकरि लिपायमानहोवे
नहीं ॥ औरप्रारब्धकर्मका भोगकरिकैनाशहोवेहै ॥ विनाभोगसें प्रारब्धकर्मकानाशहोवेनहीं ॥ यद्यपि गीतामैयहलिखाहै ज्ञानरू
पअग्निसर्वकर्मोंकूंभस्मकरेहै ॥ यातें ज्ञानसेंउत्तरकालमै प्रारब्धकाशेषमानना गीतावचनसेंविरुद्धहै प्रारब्धभीतौएककर्महै जबीसर्वक
र्मकीनिवृत्तिकही तब प्रारब्धरूप कर्मकी स्थितिबनेनहीं ॥ तथापिछांदोग्य श्रुतिमैयहलिखाहै ॥ ज्ञानीकाजबतकप्रारब्धकर्महै तब
पर्यंत विदेहकैवल्यमै विलंबहै ॥ भोगकरिप्रारब्धकर्मकूं क्षयकरताहूआ विद्वान्विदेहकैवल्यकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंगीतावचनमै श्रुति
कीअनुसारतासें प्रारब्धकर्मसें भिन्नसर्वकर्मकाग्रहणहै ॥ प्रारब्धकाभोगेविनानाशहोवेनहीं ॥ तथाजीवन्मुक्तिप्रतिपादकश्रुतिस्मृतिआ
दिकवचनोंमै प्रारब्धकीस्थितिअंगीकारहै ॥ यातेंप्रारब्धकानिराकरण श्रुतिस्मृतिविरुद्धहै ॥ और किसीआचार्यकेवचनसै प्रारब्ध
कर्मकानिषेधलिखाहोवेतौ ताकापरमार्थसेंनिषेधमैतात्पर्यहै ॥ व्यवहारमैताप्रारब्धकानिषेधबनेनहीं ॥ श्रीव्यासकेसूत्रोंमै तथातिनसू
त्रोंकेमूलभूतश्रुतिमै तथास्मृतिमै तथाभाष्यमै औरअनेकग्रंथोंमै प्रारब्धशेषमानाहै ॥ यातें तिनसर्वसेंविरुद्ध प्रारब्धकर्मकानिषेधकर
णाहै ॥ औरवेदांतकेतात्पर्यकूं नजानकरि किसीएकवचनसें प्रारब्धकासर्वथानिषेधकरणा यहवेदांततात्पर्यके अनभिज्ञताकाद्योतक
है ॥ ऐसेआत्मज्ञानसें अध्यासकीनिवृत्ति तथासर्वसंशयोंकीनिवृत्ति तथाप्रारब्धभिन्नसर्वकर्मोंकीनिवृत्ति संक्षेपसेंप्रतिपादनकरी ॥ अ
बजाआत्माकेज्ञानसें पूर्वउक्तफलहोवेहै ताआत्माकेस्वरूपकूंकहेहैं ॥ हेशौनक यहआत्मानिरवयवहै ॥ तथामायासेंरहितहै ॥ देहादि
कोंकीअपेक्षासें परतथाप्रकाशस्वरूपजाबुद्धिहै ताबुद्धिमैआत्मा साक्षीरूपसेंस्थितहै ॥ ऐसेशुद्धआत्माकूं तथासूर्यादिकोंकेप्रकाशक ॥ ४१ ॥
स्वयंज्योतिरूपकूं विवेकीआपनास्वरूपनिश्चयकरेहैं ॥ आत्माकीस्वप्रकाशताकूंहीनिरूपणकरेहैं ॥ यहसूर्य सर्वघटादिकोंकेप्रकाशकर
णेमैसमर्थहूआभीताआत्माकूं प्रकाशकरसकेनहीं ॥ तथाचंद्रमा तारे विद्युत् आत्माकरिप्रकाशकूंप्राप्तहूए आत्माकूंकैसेप्रकाशकरेंगे ॥

जबीसूर्यादिकोंने यास्वयंज्योतिआत्माकूं प्रकाशनकरा तबयहअग्नि आत्माकूंप्रकाशकरेगा यामैंक्याकहनाहै ॥ ताआत्माकेप्रकाश
करिही प्रकाशितहूए सूर्यादि घटादिकोंकूंप्रकाशेहैं ॥ जैसेप्रकाशरहितकाष्ठादि अग्निकेप्रकाशकरि प्रकाशितहूए पटादिकोंकूंप्रकाशे
हैं तथादाहकरेहैं ॥ तैसेयाआत्माकरिकैही सूर्यादिकघटादिकोंकूंप्रकाशकरेहैं ॥ और स्वतंत्रतिनमैंआपनाप्रकाशनहीं ऐसेयाआत्मा
केप्रकाशकरिही सर्वनामरूपप्रतीतहोवेहै ॥ अबब्रह्मात्माकीसर्वरूपताकूंनिरूपणकरेहैं ॥ पूर्वदिशामैंभीब्रह्मव्यापकहै ॥ तथायहब्रह्मा
त्मा पश्चिमदिशामैंभीस्थितहै ॥ दक्षिणदिशामै तथाउत्तरदिशामै तथानीचे तथाउपरि तथाच्यारिकोणोंमै ब्रह्मात्माव्यापकहै ॥
औरजाप्रपंचमैंब्रह्मव्यापकहै सोप्रपंचब्रह्मात्मासेंभिन्ननहीं ब्रह्महीसर्वसेंश्रेष्ठहै औरसर्वकाअधिष्ठानहै ॥ कल्पितवस्तु ताअधिष्ठानसें
पृथक्होवेनहीं ॥ जैसेस्वप्नकाप्रपंच स्वप्नद्रष्टासेंभिन्ननहीं ॥ रज्जुमैंसर्परज्जुसेंभिन्ननहीं ॥ तैसेब्रह्ममैंकल्पितजगत् ब्रह्मसेंभिन्ननहीं ॥ अब
प्रकारअंतरसेंताअःत्माकानिरूपणकरेहैं तथासत्यादिसाधनोंकूंनिरूपणकरेहैं ॥ शरीररूपीवृक्षमै जीव ईश्वररूपदोपक्षीरहेहैं ॥ दोनों
एकठेरहेहैं ॥ तथासत्चित्आनंदरूपसें समानस्वभाववालेहैं ॥ जैसे किसीएकवृक्षमैं दोपक्षीरहेहैं एकफलकूंभोगे दूसराउदासीनहोइक
रिस्थितहोवे ॥ तैसेयहजीव शरीररूपवृक्षमैंस्थितहूआ कर्मकेफल सुखदुःखकूंभोगेहै ॥ औरईश्वरतो उदासीनहोइकरि प्रकाशकरताहूआ
स्थितहोवेहै किंचित्भीसुखदुःखकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसे यहजीव शरीररूपवृक्षमै कर्मोंकेफलसुखदुःखका आपनेकूंभोक्तामानताहूआ शो
ककूंप्राप्तहोवेहै ॥ कर्मकेअनुसार प्राप्तभयेजेदुःख तिनकेदूरकरनेमै असमर्थहूआ अनंतसंतापकूंप्राप्तहोवेहै ॥ संतापकास्वरूपकिंचितदि
खावेहैं ॥ बडाकष्टहै ॥ मै किसीकार्यकेकरणेमैंसमर्थनहीं ॥ मैबहुतदुःखीहूं ॥ मेरेसंबंधीमृतभयेहैं ॥ अबमेरारक्षकयासंसारमैकौनहै ॥
औरमेरापुत्रमृतभयाहै ॥ मेरीभार्यानेपरलोकमैंगमनकराहै ॥ अबमेरेजीवनकूंधिकारहै ॥ ऐसे आपने शुद्ध सच्चिदानंद अखंडस्वरूपकूं
नजानकरि महान्क्लेशकूं यहजीवअनुभवकरेहै ॥ औरजबीनिष्कामकर्मसें चित्तशुद्धिकूंप्राप्तहूआ यहजीव शुद्धब्रह्मकूं आपनारूपजान

 करि ध्यानकरेहै ॥ औरताध्यानकरणेसें यहजानेहै जो मै नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभावपरमानंद अद्वितीयहूं ॥ औरसर्वभूतोंमै साक्षी
रूपसेंमैहीस्थितहूं ब्रह्मारूपसेंजगत्की उत्पत्तिकरताहूं विष्णुरूपकरिपालनकरताहूं रुद्ररूपसें जगत्कासंहारकरताहूं ॥ ऐसेआपकूं सर्व
॥ १ ॥ रूपजानताहूआ अद्वितीयभावकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ ताअद्वितीयभावकीप्राप्तिकरिही तापूर्वउक्तसंतापकूंनिवृत्तकरेहै ॥ ब्रह्मबोधसेंविना
सर्वसंतापकीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ यातेंमुमुक्षु यत्नकरि ब्रह्मज्ञानकूंहीसंपादनकरे ॥ हेशौनक यहमुमुक्षु जबीस्वप्रकाशआत्माकूं अभेद
रूपकरि निश्चयकरेहै कैसाहैसोआत्मा जाआत्मानेही हिरण्यगर्भकूंउत्पन्नकराहै ॥ तथाअन्यसर्वजगतकूं जापरमात्मानेउत्पन्नकराहै ॥
तथासर्वजगत्काजोनियंताहै ॥ ऐसेआत्माकूंअभेदरूपसें निश्चयकरताहूआ विद्वान्अविद्याकूंनिवृत्तकरेहै ॥ अविद्याकूंनिवृत्तकरि पुण्य
पापसेंरहितहूआ ब्रह्मभावकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ यहआत्माही सर्वभूतरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ ऐसेसर्वरूपब्रह्मात्माकूंजानकरि विवेकीपुरुष अ
तिवादीनहींहोवेहै ॥ अर्थयह ॥ अन्यपुरुषोंकेमतकूंखंडनकरि स्वमतकूंस्थापनकरनेवालेकानामअतिवादीहै ॥ विवेकीजोजीवन्मुक्तहै
तिसकूंभेदकीप्रतीतिहोवेनहीं ॥ यातेंहीकिसीकेमतकाखंडनकरेनहीं यातें अतिवादीहोवेनहीं ॥ जैसेबालकक्रीडाकरेहै ॥ तैसेयहविद्वान्
अद्वितीयब्रह्ममैक्रीडाकरेहै ॥ तथाजैसेयुवान्पुरुष आपनीयुवान्स्त्रीविषेही प्रीतिकरेहै ॥ तैसेयहविद्वान् ब्रह्ममैहीप्रीतीकरेहै विषयोंमै
प्रीतिकरेनहीं ॥ जैसेयागकर्तापुरुष नानाप्रकारकीक्रियाकूंकरेहै ॥ तैसेहयविद्वान् ज्ञानध्यानवैराग्यादिक्रिया ताअद्वितीयआत्मामैही
करेहै ॥ ऐसेसर्वदा आत्मचिंतनपरायण जोविद्वान्है सोसर्वविद्वानोंमैश्रेष्ठहै ॥ अबताब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते साधनोंकूंकहेहैं ॥ हे
शौनक मिथ्यावचनका त्यागरूपजोसत्यहै तथामनसहितनेत्रादिकइंद्रियोंका निरोधरूपजोतपहै तथायथार्थब्रह्मबोधरूपजोज्ञानहै ॥
तथाउपस्थइंद्रियका संयमरूपजोब्रह्मचर्यहै ॥ इनदृढसाधनोंसें ब्रह्मात्माकीप्राप्तिहोवेहै ॥ जाआत्माकूं संन्यासी रागद्वेषादिदोषर
हितहूए आपनेअंतःकरणमैप्रत्यक्षकरेहैं ॥ ताशुद्धस्वप्रकाशआत्माकीप्राप्ति सत्यादिसाधनोंसेंहोवेहै ॥ अन्यसाधनोंसें सत्यसंभाष

णकीश्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥ हेशौनक जोपुरुषसत्यवक्ताहै तापुरुषकाहीजयहोवेहै ॥ मिथ्यावादीकाजय कदाचितहोवेनहीं ॥ औरदेवयान
मार्गकीप्राप्तिभी यासत्यसेंहीहोवेहै मिथ्यावादीपुरुषकूं देवयानकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ जादेवयानमार्गकरि निष्कामऋषि ब्रह्मलोकमैप्रा
प्तहोवेहैं ॥ ताब्रह्मलोकमै ज्ञानकूंप्राप्तहोइकरि अधिष्ठानकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ अबताब्रह्मकीआश्चर्यरूपताकूं निरूपणकरेहैं ॥ यहआत्मा
आकाशादिकोंसैंभीव्यापकहै तथास्वप्रकाशहै ॥ स्वप्रकाशहोनेसेंही बुद्धिकाविषयनहींहै ॥ तथासूक्ष्मजेपरमाणुआदिकपदार्थहैं ति
नमैंभीव्यापकहोनेसें सूक्ष्मसेंभीसूक्ष्महै ॥ यहब्रह्महीसूर्यचंद्रादिरूपसेंप्रकाशकरेहै ॥ औरबहिर्मुखपुरुषोंकूं दूरपदार्थोंसेंभीअत्यंतदूरहै ॥
औरजेसाधनसंपन्नहैं तथाअंतर्मुखहैं तिनकूंआपनीबुद्धिरूपीगुहामै अत्यंतसमीपप्रतीतहोवेहै ॥ औरयाआत्माकूं नेत्रादिज्ञानइंद्रिय त
थावाक्आदिकर्मइंद्रिय ग्रहणकरिसकेनहीं तथायहआत्मा केवलअग्निहोत्रादिकर्मोंसेंभी प्राप्तहोवेनहीं आत्माकीप्राप्तिमै अन्यसाधन
कहेहैं ॥ जोअधिकारीयास्वप्रकाश तथानिरवयवआत्माकाध्यानकरेहै तथावारंवार आत्माकारवृत्तिकेकरणेसें चित्तशुद्धिकूंप्राप्तभयाहै ॥
सोविवेकी ताशुद्धअंतःकरणमै ताब्रह्मकूं आत्मरूपसेंप्रत्यक्षकरेहै ॥ हेशौनक यहसूक्ष्मआत्मा केवलशुद्धचित्तसेंहीजानाजावेहै जाआ
त्मामैपंचप्रकारकाप्राणस्थितहै ॥ याशरीरकेहृदयदेशमैही आत्माप्राप्तहोवेहै ॥ जाआत्माने सर्वप्राणीयोंकेचित्त· तथाप्राणव्याप्तकरेहैं
जैसेघृतने दूधव्याप्तकराहै तथाजैसेअग्निने काष्ठकूंव्याप्तकराहै ऐसेसर्वप्राणीयोंकेप्राण तथाअंतःकरणकरिके उपलक्षितसर्वजगत्कूं व्या
प्तकरणेहाराजोआत्माहै ॥ सोआत्माही रागद्वेषादिकलंकसेंरहित शुद्धअंतःकरणमै नित्य अजर अमरपरिपूर्ण आनंदरूपकरिप्रतीत
होवेहै ॥ अबउपासनाकेफलकूं निर्गुणआत्माकेज्ञानकीस्तुतिवासतेकहेहैं ॥ हेशौनक जोविवेकी सर्वरूपआत्माकूंही आपनास्वरूप
जानेहै ॥ सोपुरुषआपनेअर्थ वाकिसीअन्यपुरुषकेअर्थ जास्वर्गादिकलोकोंकासंकल्पकरेहै तिनसर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथासोशुद्ध
अंतःकरणवालाअधिकारी जिनजिनभोगोंकूंआपनेवासते वाकिसीअन्यवासतेसंकल्पकरेहैं तिनतिनभोगोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तातेंजापुरु

षकूंविभूतिकीइच्छाहोवे सोपुरुषसत्यसंकल्पजोज्ञानीहै ताकावारंवारपूजनकरे ॥ औरजेमुमुक्षुनिष्कामहूए ताज्ञानीकापूजनकरेहैं तेमु
मुक्षुसाताकेगर्भमैआवेंनहीं ॥ कैसाहैसोज्ञानी जाका मुमुक्षुकूंपूजनअवश्यकर्त्तव्यहै ॥ जोज्ञानी संशयविपर्ययसेंरहित आपनेअखंड
॥ १० ॥ स्वरूपकूं भलीप्रकारजानताहै ॥ ताज्ञानीरूपब्रह्ममैही यावत्चराचरविश्वस्थितहै तथाशुद्धस्वप्रकाशहै ॥ ज्ञानप्राप्तिमै मुमुक्षुकूं कामना
त्यागहीपरममोक्षकासाधनहै याकूंनिरूपणकरेहैं ॥ हेशौनक जोपुरुष यालोककेभोगोंकूं वापरलोककेभोगोंकूंचाहताहै ॥ सोमूढभोगों
कीइच्छाकरताहूआ तिनतिनभोगोंमैं स्ववासना कर्मकेअनुसार जन्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जोविवेकी आपनेयथार्थरूपकूंजानताहै सोआ
प्तकामहै ॥ अर्थयह ॥ सोज्ञानीहिरण्यगर्भादिरूपसें आपकूंसर्वपदार्थोंकाभोक्तामानताहूआ तुच्छविषयसुखकीइच्छाकरतानहीं ॥ या
तेंआत्मकाम तथाआप्तकामजोज्ञानीहै ताज्ञानीकीविषयसुखोंकीसर्वकामना निवृत्तहोवेहैं ॥ अबताआत्मप्राप्तिमै साधननिरूपणकरेहैं ॥
जैसे रोगीपुरुषकूं पथ्यवारंवारनिरूपणकरणायामैपुनरुक्तिदोषनहीं ॥ तैसेश्रुतिभगवती मुमुक्षुजनोंपरकृपाकरतीहूए वारंवारआत्माकेस्व
रूपकूं तथा ज्ञानकेस्वरूपकूं तथाज्ञानकेसाधनोंकूं कथनकरेहै यामैभीपुनरुक्तिदोषनहीं ॥ हेशौनक यहआत्माकेवलवेदकेअध्ययनकरिप्रा
प्तहोवेनहीं ॥ तथातीक्ष्णबुद्धिकरिकैभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ और अनंतअनात्मप्रतिपादकशास्त्रकेश्रवणसेंभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ जाआत्माकूं
अभेदरूपसें अधिकारी चिंतनकरेहै सोमुमुक्षुध्याताही ताआत्माकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तामुमुक्षुध्याताकूंही आत्मा आपनेशुद्धसच्चिदानंदअ
द्वितीयरूपकूं प्रकटकरेहै ॥ जैसेशुद्धअचलजलमै सूर्यकाप्रतिबिंबस्पष्टप्रतीतहोवेहै ॥ तैसेनिष्कामकर्मसें शुद्ध तथाध्यानकरणेसेंएकाग्र
अंतःकरणमै ताशुद्धआत्माकीअभिव्यक्तिहोवेहै ॥ और कामक्रोधादिकशत्रुवोंकरिकै नहीं वशभयेजे मनइंद्रियादिकहैं तिनमनइंद्रिया ॥ ४३ ॥
दिकोंका स्ववशकरणारूपजोधैर्यहै ताधैर्यसेंरहितपुरुष याआत्माकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ तथाविषयोंमै आसक्तिहोनेसें जोकर्त्तव्यकाविस्मरण
रूपप्रमादहै ताप्रमादकरिआत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तथासंन्यासरहितशुष्कज्ञानसेंभीआत्मप्राप्तिहोवेनहीं ॥ यद्यपि इंद्र अजातशत्रु

जनक गार्गी इत्यादिकोंनेसंन्यासनहींकरा और आत्माकेवास्तवरूपकूंप्राप्तभयेहैं ॥ यातेंसंन्यासरहितकेवलज्ञानसें ताआत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं यहकथनविरुद्धहै ॥ तथापिसंन्यासविनातौ आत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ जनकआदिकोंकेभी जन्मांतरकासंन्यासथाऔरइसजन्ममैंभी अंतरसेंसंन्यासथा औरकेवलबाह्यसंन्यासकाभी मोक्षमैंअतिउपयोगनहीं किंतुअंतरसंन्यासकाही उपयोगहै ॥ और यदिअंतरसंन्यासभीहै औरदृष्टविक्षेपनिवृत्तिअर्थ बाह्यसंन्यासभीहै तौताकामहिमाक्याकहें ॥ ताअंतरसंन्यासपूर्वकबाह्यसंन्यासकूं श्रुतिभगवतीने और सर्ववर्णआश्रमधर्मोंसेंश्रेष्ठकहाहै ॥ यातें शुष्कज्ञानसें ताआत्माकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ औरजोविवेकीधैर्यसहितहै ॥ तथाप्रमादसें रहितहै ॥ तथासंन्यासकूं प्राप्तभयाहै ॥ औरआत्माकीप्राप्तिवासतेवेदांतश्रवणादिकोंमैयत्नकूंकरताहै ॥ सोविवेकी ब्रह्मरूपधामकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबजीवन्मुक्तिफलकूंकहेहैं ॥ हेशौनक जेविवेकीज्ञानकरि याआत्माकूंप्राप्तभयेहैं तेविद्वान् आपनेस्वरूपज्ञानकरिहीसर्वदातृप्तहोवेहैं ॥ औरशरीरकूंस्थूलकरणेहारेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंकरितृप्तनहींहोवेहैं तथावीतरागहैंतथाचित्तशांतिकूंप्राप्तभयेहैं ॥ ऐसेजीवन्मुक्त परिपूर्णअद्वितीयआनंदस्वरूपआत्माकूं प्राप्तहूए तथासर्वदासमाहितहूए शरीरस्थितिकालमैंभीब्रह्ममैंहीस्थितहैं ॥ ऐसेजीवन्मुक्तोंने वेदांतकेश्रवणसें ब्रह्मैक्यनिश्चयकराहै तथासंन्यासकेकरणेसें जेसंन्यासीअंतःकरणकीशुद्धिकूंप्राप्तभयेहैं ॥ ऐसेजीवन्मुक्त प्रारब्धकूंभोगकरि नाशकरतेहूए तथाब्रह्मभावकूंप्राप्तहूए मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अबजैसेप्राणादिकोंकालयहोवेहै ताकूंनिरूपण करेहैं ॥ याज्ञानीकीप्राणादिपंचदशकलावोंका आपनेआपनेकारणमैलयहोवेहै ॥ तेकलाप्रश्नउपनिषत्केभारद्वाजऋषिकेप्रसंगमै हमकथनकरिआयेहैं ॥ नेत्रादिकोंमैअध्यात्मरूपसेंस्थित जेसूर्यादिकहैं तेआपने अधिदैवरूपदेवभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तथाकर्मयाविद्वान्केनाश होवेहैं ॥ औरयाविद्वान्काबुद्धिउपाधिवाला जोविज्ञानमयनामाजीवहै सोजीवस्थूलसूक्ष्मउपाधिकेनाशहोनेसें ब्रह्ममैएकताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेघटकेनाशहोनेसें महाकाशरूपसेंघटाकाशस्थितहोवेहै ॥ तैसेबुद्धिआदिउपाधिकेनाशहोनेसें जीवात्माभीब्रह्मभावकूंप्राप्त

होवेहै ॥ यद्यपि बृहदारण्यकउपनिषत्मैं सर्वप्राणादिकोंका ब्रह्ममैलयकथनकराहै औरइसउपनिषत्मैं आपनेआपनेकारणमैलयकथन
सेंविरोधप्रतीतहोवेहै ॥ तथापि. जोजाकाकार्यहोवेहै ताकारणमैताकालयहोवेहै यहलोकमैनियमहै ॥ यानियमकूंआश्रयकरिकेही या
॥ ११ ॥ श्रुतिनेआपनेआपनेकारणमैं प्राणादिकोंकालयप्रतिपादनकराहै ॥ औरबृहदारण्यकीश्रुतितौ ज्ञानीकीदृष्टिकूंआश्रयणकरि प्राणादिकों
का ब्रह्ममैलयकथनकरेहै ॥ श्रुतिद्वयकातात्पर्ययहहै ॥ प्राणादिककलाका लयतौ आपनेआपनेउपादानमैहोवेहै ॥ औरतिनकलावों
केउपादान वायुआदिकोंकालयब्रह्ममैहोवेहै ॥ ऐसेसर्वअनात्मपदार्थोंका ब्रह्ममैलयहोवेहै यातेंकिंचित्भीविरोधनहीं ॥ हेशौनक जैसे
गंगायमुनादिकनदीयां समुद्रकूंगमनकरतीहूई समुद्रमैलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं औरनामरूपकूंत्यागकरेहैं तैसेयहविद्वान् नामरूपसेंरहितहू
आ अज्ञानतत्कार्यसेंरहित जोशुद्धआत्मदेवहै ताकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ हेशौनक जोकोईविवेकी आत्माकेयथार्थरूपकूंजानताहैसोब्रह्मकूं
प्राप्तहोवेहै ॥ यामैश्रुतिपाठदिखावेहैं ॥ ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥ अर्थयह ॥ जोब्रह्मकूंजानताहै सोब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ इसब्रह्मवेत्ताकेसं
तानमैं अब्रह्मवित्नहीं होवेहै किंतुब्रह्मवितहीहोवेहै ॥ तथासोब्रह्मवेत्तासर्वशोककूंनिवृत्तकरेहै ॥ तथाधर्माधर्मरूपसें तथाअध्यासरूपग्रं
थिसेंरहितहोवेहै ॥ यामुंडकउपनिषत्केपठनकीरीतिकहेहैं ॥ आगेकामंत्र विद्याकेसंप्रदायकूंही निरूपणकरेहैं ॥ जेअधिकारीआपने
वर्णआश्रमकेकर्मोंकूंकरेहैं तथावेदअध्ययन तथासगुणब्रह्मकीउपासनापरायणहैं ॥ औरनिर्गुणब्रह्मकोजिज्ञासावालेहैं तथाशिरमैअग्नि
धारणरूपव्रत जिनअधिकारीयोंनेधारणकराहै ॥ एकर्षिनामकरिप्रसिद्धजो आथर्वणिकोंकाअग्निहै तामैश्रद्धासेंहवनकरतेहैं तिनअधि
कारीजनोंकूंही यामुंडकउपनिषत्काउपदेशकरे ॥ और अंगिरानामाऋषिने आपनेशरणकूंप्राप्तभयाजोशौनकहै ताशौनककेप्रति स ॥ ४४ ॥
त्यरूपआत्माकाउपदेशकराहै ॥ जेपुरुषमुमुक्षुहूए वैराग्यादिकोंकरिसंपन्नहैं ॥ तिनकूंतौश्रवणकरीउपनिषत् ब्रह्मज्ञानप्राप्तिद्वारामोक्ष
करेहै ॥ यातेंसाधनसहितहूआ ही याउपनिषत्कूंपठनकरे ॥ औरजाने शिरमैअग्निधारणरूपव्रतकूं तथावैराग्यादिसाधनोंकूं नहींसं

पादनकरा सोपुरुषयाउपनिषत्कूंपठनकरेनहीं ॥ जिनब्रह्मादिकऋषीयोंसें यहब्रह्मविद्या यासंसारमैप्राप्तभयीहै ॥ तथाहमअधिकारी योंकूं प्राप्तभयीहै ॥ तिनसर्वऋषीयोंकूं हमअधिकारीजनोंका वारंवारप्रणामहै ॥ ॥ ॐशांतिःशांतिःशांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामि अच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे मुंडकोपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ५ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

83

॥ इति मुंडकोपनिषद्भाषांतरं समाप्तम् ॥

॥ अथ मांडूक्योपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

85

ॐनमःपरमात्मने ॥ अबअथर्वणवेदकीमांडूक्यउपनिषत्के अर्थकूंनिरूपणकरेहैं ॥ ॐकारही यहसर्वनामरूपप्रपंचहै ॐकारसेंभिन्ननहीं ॥
तात्पर्ययह ॥ जोब्रह्मसर्वकाअधिष्ठानहै कल्पितवस्तु अधिष्ठानसेंभिन्नहोवेनहीं ॥ यातेंब्रह्मसें किंचित्भीभिन्ननहीं औरताअधिष्ठानब्रह्म
॥ १ ॥ कावाचकहोनेसें ॐकारहीब्रह्महै ॥ और जैसेशालिग्राममैं विष्णुमूर्तिकाध्यानकरनेसें शालिग्रामकूंविष्णुरूपताहै ॥ तैसेया ॐकारमैं ब्रह्म
स्वरूपकाध्यानकरनेसें ॐकारभीब्रह्मरूपहै ॥ तथाजैसेभ्रांतिकालमैं प्रतीतभयाजोचोरहै सोस्थाणुकेनजाननेसेंही प्रतीतहोवेहै ॥ जबीस्था
णुकायथार्थबोधहोइजावे तबचोरबाधहोइजावेहै ॥ तबऐसीप्रतीतिहोवेहै जोयहचोरहै सोस्थाणुहै याकूंही बाधसामानाधिकरण्यकहेहैं ॥
तैसेॐकारका अधिष्ठानब्रह्महै यातेंॐकारब्रह्महै यामैंभीबाधसामानाधिकरण्यहै ॥ औरनामके आधीननामीकीसिद्धिहोवेहै ॥ ॐका
रभीब्रह्मकानामहै नामसेंनामीभिन्नहोवेनहीं तैसेॐकारनामसेंनामीब्रह्मभिन्ननहीं ॥ औरजैसेअर्थप्रपंचमैंव्यापकब्रह्महै तैसेशब्दप्रपंचमैं
व्यापकॐकारहै ॥ यातेंव्यापकताकूंग्रहणकरि ॐकारहीब्रह्महै ॥ औरताब्रह्मसें कार्यप्रपंचभिन्ननहीं तथाब्रह्मरूपॐकारसेंभी यहप्रपं
चभिन्ननहीं यातेंयहसिद्धभया ॐकारहीसर्वनामरूपप्रपंचहै ॥ अबताॐकारकास्पष्टकथनकरेहैं ॥ जेतीनकालकरिपरिच्छिन्नपदार्थहैं तेस
र्वॐकाररूपहैं ॥ औरजोअनादि अव्यक्तसाभासअज्ञानहै सोकालकाभीकारणहोनेसें कालकरिपरिच्छिन्ननहींहै ॥ तथा हिरण्यगर्भसें
पूर्ववर्षादिरूपकालनहोताभया ऐसेश्रुतिभगवतीकहेहै यातेंत्रिकाल अतीत अव्यक्त तथाहिरण्यगर्भयहदोनोंहैं ॥ तेदोनों अव्यक्त त
थाहिरण्यगर्भ ॐकारसेंभिन्ननहीं ॐकाररूपहीतेदोनोंहैं ॥ पूर्वतौॐकारहीसर्वनामरूपप्रपंचहै ऐसेश्रुतिमैंकहाथा अबसर्वजोवाच्यप्रपं
चहै ताप्रपंचकूं वाचकजोॐकारहै तावाचकॐकाररूपसेंनिरूपणकरेहैं ॥ प्रयोजनतौदोनोंकेपरस्पर अभेदकथनकायहहै जोवाच्यवा ॥ ४६ ॥
चकदोनोंकूं शुद्धब्रह्ममैंलयकरि अधिष्ठाननिर्विशेषब्रह्मकूंनिश्चयकरे ॥ यहसर्वप्रपंचब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेपरोक्षरूपसें कथनकराजोब्रह्महै ता
ब्रह्मकूंहीश्रुतिभगवतीआपनेहस्तकूं हृदयदेशमैंप्राप्तकरि प्रत्यक्षरूपसेंकथनकरेहै ॥ अतिकृपावतीजामहावाक्यरूपाश्रुतिहै साश्रुति

आपनेअतिप्रियमुमुक्षुजनोंकूं यहउपदेशकरेहै ॥ भोमुमुक्षवः ॥ अयमात्माब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ नित्यअपरोक्षजोयहसाक्षीआत्माहै ॥ यह साक्षीआत्माहीब्रह्महै यातेंब्रह्मभिन्ननहींजानना ॥ ऐसेमहावाक्यकेश्रवणसेंभी जामंदबुद्धिपुरुषकूं ज्ञानभयानहीं तापुरुषकेबोधवासते अबताआत्माके च्यारिपादकथनकरेहैं ॥ यहआत्माही चतुष्पाद्है ॥ जैसेएकरूपीयाविषेव्यवहारवासते च्यारिभागकहेजावेहैं ॥ तैसे एकआत्मामै मुमुक्षुजनोंकेबोधअर्थ च्यारिपादकावर्णनहै ॥ जैसे विश्व तैजस प्राज्ञ तुरीय यहजीवकेच्यारिपादहैं ॥ तैसे विराट् हिरण्यगर्भ ईश्वर तथाईश्वरसाक्षी यहईश्वरकेच्यारिपादहैं ॥ अबविराट्‌काविश्वसें अभेदकूंमनमैधारिकरि विश्वरूपप्रथमपादकूं वर्णनकरेहैं ॥ विश्वसेंअभिन्नजोविराट्है ॥ यहआत्माकाप्रथमपादहै ॥ कैसाहै यहविश्वअभिन्नविराट् जागरितअवस्था तथास्थूलशरीरकाअभिमानी है ॥ बाह्यशब्दादिकोंमैवृत्तिवालाहै ॥ याविश्वअभिन्नविराट्‌के सप्तअंगहैं ॥ स्वर्गलोकमस्तकहै ॥ चंद्रसूर्यनेत्रहैं ॥ वायुप्राणहै ॥ आकाशधडहै ॥ समुद्रादिरूपजलमूत्रस्थानहै ॥ पृथिवीपादहैं ॥ जाअग्निमैहवनकरेहैं ताअग्निकूंआहवनीयकहेहैं सोआहवनीयअग्नि याविश्वअभिन्नविराट्‌कामुखहै ॥ औरयाविश्वकेउनीसमुखहैं ॥ तथाहि ॥ पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय पंचप्राण मन बुद्धि अहंकार चित्त यहच्यारिअंतःकरण ॥ यहउनीसही मुखकीन्यांई भोगकेसाधनहोनेसें मुखकहेजावेहैं ॥ याविश्वकूं स्थूलभुक्भीकहेहैं ॥ स्थूलशब्दादिकविषयोंकूं भोगेहै यातेंहीस्थूलभुक्है ॥ औरयहहीसर्वनररूपहैयातेंवैश्वानरहै ॥ यहप्रथमपादनिरूपणकरा ॥ अबद्वितीयपादकूंकहेहैं ॥ व्यष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानीतैजसका समष्टिसूक्ष्मशरीरकेअभिमानी हिरण्यगर्भकेसाथअभेदहै ॥ हिरण्यगर्भसें अभिन्न तैजसही स्वप्नअवस्थाकाअभिमानीहै ॥ औरयहतैजस मनोमात्रजेपदार्थहैं तिनकूंभोगेहै ॥ यातेंहीतैजसकूं अंतःप्रज्ञकहेहैं ॥ अर्थयह ॥ अंतरहै सूक्ष्मअविद्यारचितपदार्थोंमै प्रज्ञाजाकी ताकानामअंतःप्रज्ञहै ॥ जैसे सप्तअंग उनीसमुखविश्वकेकहे तैसेहीतैजसकेहैं विश्वकेतोईश्वररचितहैं ॥ औरतैजसकेमनोमात्रहैं ॥ अबतृतीयपादकेनिरूपणवासते सुषुप्तिअवस्थाकूंप्रथमकहेहैं ॥ जाअवस्थामैप्राप्तहूवायहजीव किसी

मां०उ० भोगमैंइच्छाकरेनहीं ॥ तथाजाअवस्थामै अनेकप्रकारकेविपर्ययरूपस्वप्नदर्शनकूंकरेनहीं ॥ ताअवस्थाकूंसुषुप्तिकहेहैं ॥ ऐसीसुषुप्तिअव भा० ६
स्थावाला ईश्वरअभिन्नप्राज्ञही तृतीयपादहै ॥ ताव्यष्टिकारणशरीरअविद्याकेअभिमानीप्राज्ञकेही विशेषणकहेहैं ॥ यहप्राज्ञ सुषुप्तिमै ई
॥ २ ॥ श्वरकेसाथएकताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याकूंहीप्रज्ञानघनकहेहैं ॥ जाग्रतकेतथास्वप्नकेसर्वज्ञान अविद्यामैएकरूपहोइजावेहैं ॥ इसीसेंयाकूं प्रज्ञा
नघनकहा ॥ तथाअधिकआनंदकूंप्राप्तहोवेहै यातेंआनंदमयकहेहैं ॥ औरयहप्राज्ञही अविद्याकीवृत्तियोंसें अज्ञानआवृतआनंदकूंभोगेहै
यातेंआनंदभुक्है ॥ औरजाग्रतस्वप्नकेज्ञानमैंद्वाररूपसेंजोस्थितहोवे ताकूंचेतोमुखकहेहैं ॥ प्राज्ञहीजाग्रतस्वप्नमैद्वारहै यातेंताकूंचेतोमुख
कहेहैं ॥ याकूंहीभूतभविष्यत्वर्तमानपदार्थोंकाज्ञान जाग्रतस्वप्नमैहोताभया यातेंप्राज्ञकहेहैं ॥ जाग्रतस्वप्नकेज्ञानोंसें रहित केवलचेतनप्र
धानतारूपकरि स्थितहोनेसेंभी यातृतीयपादकूंप्राज्ञकहेहैं ॥ अबप्राज्ञकूं ईश्वररूपताकेसूचनअर्थईश्वरकेधर्मोंका प्राज्ञमैंवर्णनकरेहैं ॥
यहप्राज्ञहीसर्वकाईश्वरहै ॥ तथायहप्राज्ञही सर्वज्ञहै ॥ यहप्राज्ञही सर्वभूतोंकेअंतरस्थितहूआ सर्वकानियंताहै ॥ तथासर्वभूत याप्रा
ज्ञसेंहीउत्पन्नहोवेहैं औरयाप्राज्ञमैहीलयहोवेहैं ॥ अबचतुर्थपादकूं साक्षात्शब्दकाअविषयहोनेसें निषेधमुखसें तातुरीयआत्मारूप
चतुर्थपादकानिरूपणकरेहैं ॥ यहतुरीयआत्मा तैजसनहींहै ॥ तथाविश्वनहींहै तथाजाग्रतस्वप्नअवस्थाकेजामध्यअवस्थाहै सा
अवस्थाभी तुरीयरूपआत्मानहीं ॥ तथासुषुप्तिअवस्थाआत्मानहीं ॥ तथाएककालमै सर्वविषयोंकाज्ञातानहीं तथासर्वपदार्थों
काअज्ञाताभीनहीं ॥ औरयहतुरीयआत्मानिर्विशेषहोनेसेंही ज्ञानइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ यातेंहीक्रियासेंरहितहै तथाकर्मइंद्रियों
काअविषयहै तथास्वतंत्रअनुमानकाअविषयहै ॥ तथाबुद्धिकाअविषयहै तथाशब्दकाअविषयहै ॥ सर्वप्रकारसेंआत्माकूं अविषय
होनेकरिप्राप्तभयीजाशून्यताकीशंका ताशंकाकूंनिवृत्तकरतेहैं ॥ यहआत्मात्रितयअवस्थामैअनुगतहोइकेप्रकाशकरेहै ऐसीवृत्तिकरि ॥ ४७ ॥
जाननेयोग्यहै यातेंशून्यताकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ तथातुरीयआत्माआपनीसिद्धिमै आपहीप्रमाणहै यातेंभीशून्यताकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥

तथासर्वप्रपंचकाजातुरीयमैअभावहै ॥ तथानिर्विकारहै तथाशुद्धपरमानंदबोधरूपहै तथाभेदकल्पनासेंरहितहै तथा तीनपादसेंविलक्षण है इसीसेंया आत्माकूंचतुर्थकहेहैं ॥ तीनकी अपेक्षासेंतुरीयकह्याजावेहै औरउक्तपादत्रय याआत्मासेंभिन्नवास्तवहैंनहीं यातेंयाआत्माकूंतुरीयकथनकेवलउपदेशअर्थहै ॥ कोईश्रुतिभगवती स्वअभिप्रायसें याआत्माकूंतुरीयरूपतानहींकहेहै ॥ ऐसेसर्वकल्पनासेंरहित तुरीयआत्माकूंही विवेकीपुरुष आत्मरूपसें मानतेहैं भिन्नरूपसेंमानेंनहीं ॥ ऐसाआत्मासर्वकल्पनाका अधिष्ठानतुरीयहीमुमुक्षुकूंजाननेयोग्यहै ॥ याकेज्ञानसें मुमुक्षुकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबविश्वआदिकपादोंका अकारादिमात्रावोंसें अभेदवर्णनकरेहैं ॥ पूर्व चतुष्पाद्रूपसें निरूपणकराजोआत्मा सोआत्मा ॐकाररूपहै ॥ ॐकारकीतीनमात्राहैं प्रथमकानामअकारहै द्वितीयकूंउकारकहेहैं तृतीयकूंमकारकहेहैं ॥ अबजामात्रासें जाआत्माकेपादका अभेदहैताकूंकहेहैं ॥ जागरितअवस्थावालाजोविश्वसेंअभिन्नवैश्वानरहै सो प्रथमअकारमात्रारूपहै ॥ अभेदकेसंपादक तुल्यधर्मकूंवर्णनकरेहैं ॥ जैसेसर्वप्रपंचमै व्यापकविराट्है तैसेअकारहीसर्ववाक्रूपहै ऐसे श्रुतिमैकहाहै यातेंअकारभीव्यापकहै ॥ जैसेआत्माकेपादोंमेंप्रथमपादविराट्है तैसेओंकारकीमात्रामें प्रथममात्रा अकारहै ॥ ऐसे व्यापकतातथाप्रथमतारूपदोसमानधर्मोंसें दोनोंकीएकताहै ॥ अबदोसमानधर्मोंसें प्रथमपादकीप्रथममात्रासें जोपुरुषअभेदचिंतन करेहै ताकूंफलप्रतिपादनकरेहैं ॥ जोपुरुषप्रथमपादका प्रथममात्रासें उक्ततुल्यधर्मोंकरि अभेदचिंतनकरेहै ॥ सोपुरुषसर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै तथासर्वमहात्मावोंकेमध्यमै अग्रणीयहोवेहै ॥ स्वप्नअवस्थावालाजोतैजसहै सोद्वितीयउकारमात्रारूपहै दोनोंमैसमानधर्म यहहैं उत्कृष्टता तथाद्वितीयता ॥ तैजसरूपद्वितीयपादमै तथाउकाररूपद्वितीयमात्रामै समानधर्मउत्कृष्टता तथाद्वितीयतारूपजानकरि जोपुरुषदोनोंकाअभेदचिंतनकरताहै ताकूंफलप्राप्तिकहेहैं ॥ उच्चारणकी अपेक्षासें उकारमैउत्कृष्टतागौणजाननी ॥ वास्तवसें तोउत्कृष्टतासर्ववर्णोंमैव्यापकजो अकारहै तामैहीहै ॥ ऐसेद्वितीयपादमै औरद्वितीयमात्रामै उत्कृष्टतारूपसमानधर्मकरिअभेदचिंतन

सें अत्यंतज्ञानकीवृद्धिकूं पुरुषप्राप्तहोवेहै ॥ तथाद्वितीयतारूपसमानधर्मकरिअभेदचिंतनसें शत्रुमित्रमैंसमानतारूप फलकूंप्राप्तहोवेहै ॥
दोनोंधर्मोंकरिअभेदचिंतनसें यावक्ष्यमाणफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याध्यातापुरुषकीकुलमैं कोईअज्ञानीपुत्रादिकनहींहोवेहैं किंतुसर्वब्रह्म
॥ ३ ॥ वेत्ताहीहोवेहैं ॥ सुषुप्ति अवस्थावालाप्राज्ञतृतीयमात्रारूपहै ॥ विश्वतैजसकूं उत्पत्ति प्रलयमैं निर्गमनसें तथाप्रवेशसेंप्राज्ञ परिमाणरूप
मिनतीकरेहै ॥ तथाॐकारकेवारंवारउच्चारणकरणेसें अकार उकारकामकारमैलय तथामकारसेंउत्पत्तिप्रतीतहोवेहै ॥ यातेंउत्पत्तिप्रल
यकालमैं मकार अकारउकारदोनोंकीमिनतीकरेहै ॥ यामिनतीरूपधर्मसें प्राज्ञकातथामकाररूपतृतीयमात्राका अभेदकह्या ॥ जैसे
ॐकारकेउच्चारणकरे मकारमैं अकारउकारकीसमाप्तिहोनेसेंदोनोंकी मकारमैंएकताहोवेहै ॥ तैसेविश्व तैजस सुषुप्तिमैंप्राज्ञविषे एक
ताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ याएकीभावरूपसमानधर्मसें प्राज्ञकामकारसेंअभेदहै ॥ अबप्राज्ञ मकारकेअभेदचिंतनका फलवर्णनकरेहैं ॥ जोपुरु
ष प्राज्ञकामकारसें मिनतीरूपसमानधर्मकरि अभेदचिंतनकरेहै ॥ सोपुरुषजगत्केयथार्थस्वरूपकूंजानेहै ॥ औरएकीभावरूपसमानध
र्मसें जोपुरुष प्राज्ञकामकारसेंअभेदचिंतनकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वजगत्काकारणहोवेहै ॥ ईहांजोविश्वकाअकारमैं अभेद तथातैजसका
उकारसें अभेद तथाप्राज्ञकामकारसें अभेद ऐसेअभेदकूंनिरूपणकरिकेपुनःयात्रितयअभेदके जेभिन्नभिन्नफलनिरूपणकरे ॥ तेप्रधानॐ
कारकेध्यानवासतेकहेहैं ॥ यातेंॐकारकेध्यानकीस्तुतिरूपहोनेसें अर्थवादरूपजानने ॥ श्रुतिभगवती भिन्नभिन्नफलनिरूपणमैं तात्पर्य
वालीनहीं ॥ किंतु प्रधानजोॐकारकाध्यानताकेफलनिरूपणमैंही श्रुतिभगवतीकातात्पर्यहै ॥ अन्यथाउपासनाकीअनेकताप्राप्तहोवे
गी ॥ औरकेवलएकॐकारकाध्यानही श्रुतिमैंविवक्षितहै ॥ अबचतुर्थपादजोतुरीयहै ताकाअमात्रॐकारकेसाथ अभेदनिरूपणकरे ॥ ४८ ॥
हैं ॥ जोचेतनअध्यस्तत्रिमात्रावालेॐकारकेसाथ अभेदरूपसेंप्रतीतहोवेहै सोईहां ॐकाररूपसेंविवक्षितहै ताॐकाररूपचेतनकी पर
ब्रह्मकेसाथएकताहोवेहै ॥ ऐसेमात्राकल्पनासेंरहित जोॐकारकावास्तवअमात्ररूपहै ताअमात्ररूपका तुरीयसेंअभेदहै ॥ अमात्ररूप

तुरीय क्रियासेंरहितहै तथाप्रपंचकेसंबंधसेंशून्यहै तथाआनंदरूपहै औरसर्वभेदकल्पनासें रहितहै ॥ ऐसेजाननेवालाअधिकारी आप
ने पारमार्थिकस्वरूपमै प्रवेशकरेहै ॥ अज्ञानकेनिवृत्तहोनेसें पुनःजन्ममृत्युकूं प्राप्तहोवेनहीं ॥ ॐकारकेध्यानसेंहीकृतार्थताहोवेहै ॥ या
अर्थकूंकारिकासेंकहेहैं ॥ युंजीतप्रणवेचेतःप्रणवोब्रह्मनिर्भयम् ॥ प्रणवोनित्ययुक्तस्यनभयंविद्यतेक्वचित् ॥ १ ॥ अर्थयह ॐकारनिर्भयब्रह्म
रूपहै ॥ यातेंॐकारमैचित्तकूंपुरुषजोडे ॥ और जोपुरुष ॐकारमै चित्तकूंजोडताहै ॥ तापुरुषकूंकहींभी भयप्राप्तहोवेनहीं ॥ १ ॥ या
स्थानमैयहनिष्कर्षहै ॥ पूर्वनिरूपणकराजोविराट्सेंअभिन्नविश्व सोअकाररूपकह्याहै ताविश्वरूपअकारका तैजसरूपउकारमैलयकरे ॥
विश्वरूपअकार तैजसरूपउकारसेंभिन्ननहीं ऐसेचिंतनकानाम याउपनिषत्मैलयचिंतनइष्टहै ॥ ऐसे औरमात्रामैभीजानलेना ॥ तथातै
जसरूपउकारका प्राज्ञरूपमकारमैलयकरे ॥ प्राज्ञरूपमकारका ॐकारकेपरमार्थरूपअमात्रमैलयकरे ॥ काहेते ॥ स्थूलकीउत्पत्ति तथा
लय सूक्ष्ममै होवेहैं ॥ यातेंस्थूल विश्वरूपअकारकासूक्ष्मतैजसरूपउकारमैलयकह्या ॥ सूक्ष्मकीउत्पत्ति औरलय कारणमैहोवेहैं यातेंसू
क्ष्मतैजसरूप उकारका कारणप्राज्ञरूपमकारमैलयकह्या ॥ विश्वादिकोंकेलयकथनसें समष्टिविराट् तथाहिरण्यगर्भभी ग्रहणकरिलेने ॥
जाप्राज्ञरूप मकारमै तैजसअभिन्नहिरण्यगर्भरूपउकारका लयनिरूपणकरा ॥ ताईश्वरअभिन्नप्राज्ञरूपमकारका तुरीयरूपजो ॐ
कारकापारमार्थिक अमात्ररूपहै तामैलयकरे ॥ काहेते ॥ ॐकारकापरमार्थरूपअमात्रहै सोअमात्रतुरीयरूपहै तातुरीयकाब्रह्मसेंअ
भेदहै शुद्धब्रह्ममै मायाउपाधिविशिष्टईश्वर तथाअविद्याविशिष्टप्राज्ञ दोनूंकल्पितहैं ॥ कल्पितवस्तु अधिष्ठानसेंपृथक्होवेनहीं यातेंईश्वर
अभिन्नप्राज्ञरूपमकारकालय अमात्रमैनिरूपणकरा ॥ ऐसेजाॐकारकेवास्तवअमात्रस्वरूपमै सर्वकालयकराहै सोमेरास्वरूपहै ॥ सर्व
नामरूपप्रपंचकाअधिष्ठान नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावपरमानंदअद्वैतस्वरूपजो ॐकारकापारमार्थिकस्वरूपहै सोईमैहूं ॥ ऐसेचिंतनसें
ज्ञानउदयहोवेहै ॥ ऐसेज्ञानद्वारामोक्षकेकरणेहारा यहप्रणवरूप ॐकारकाचिंतनहै ॥ जोपुरुष याप्रकारसें ॐकारकेध्यानकूंकरताहै

 ताकूंश्रीगौड़पादाचार्यवृद्ध मुनिरूपकरिवर्णनकरतेभये ॥ जोपुरुष अनेकप्रकारके अनात्मप्रतिपादकशास्त्रकूं जानताभीहै ॥ परंतु
याॐकारकेध्यानसेंरहितहै ॥ तौभीसोपुरुषमुनिनहींहै ॥ परमहंसमहात्मावोंकूं यहअतिप्रियहै ॥ तथाजोबहिर्मुखहै तथारागद्वेषादिदो
 षकरिदूषित अंतःकरणहै ताकाया ॐकारकेध्यानमैं अधिकारनहीं ॥ जोपुरुष रागद्वेषादिदोषरहितहै तथाअंतर्मुखहै ताकायाॐकार
ध्यानमैंअधिकारहै ॥ जापुरुषकीभोगोंमैकामनानहीं ताकूंइसजन्ममैंही याध्यानसेंज्ञानप्राप्तहोवेहै ॥ जापुरुषकी परलोककेभोगोंमै
कामनातौहै परंतुताकामनाकूं रोककरि गुरुमुखसें ॐकारकेउपदेशकूंश्रवणकरि ॐकारकाध्यानकरेहै ॥ ताप्रतिबंधकेवशसेंज्ञानतौहोवे
नहीं ॥ किंतुदेवयानमार्गकरि ब्रह्मलोकमैंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मलोकमैंप्राप्तहूआ सोउपासक ईश्वरकेसमानसत्यसंकल्पहोवेहै ॥ परंतुजग
त्कीउत्पत्तिआदिकोंकेकरणेमैतौईश्वरमैंही सामर्थ्यहै ॥ उपासकमैं जगत्केउत्पत्तिआदिककरणेकासामर्थ्यहोवेनहीं ॥ और उपासकता
लोकमैंहीज्ञानकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरप्रलयकालमै जबीब्रह्मलोककानाशहोवेहै तबहिरण्यगर्भकेसाथही यहउपासकविदेहकैवल्यकूंप्राप्तहो
वेहै ॥ औरयदिॐकारके ध्यातापुरुषकी यालोककेभोगोंमै कामनारहीहोवे तौयालोकमैं जेशुद्धकुलवालेधनाढ्यहैं तिनकेगृहमै सो
योगभ्रष्टउत्पन्नहोवेहै ॥ ताजन्ममैअनेकप्रकारकेभोगोंकूं भोगकरि वैराग्यकूंप्राप्तहूआ ॐकारकेध्यानमै वाश्रवणादिकोंमैप्रवृत्तहोइक
रि ज्ञानद्वारामोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरॐकारकेध्यातापुरुषकी जबीयालोककेवापरलोककेभोगोंमै कामनातौहैनहीं ॥ कोईप्रारब्धकर्मरू
पभावीप्रतिबंधहै तौताध्यातापुरुषकाद्वितीयजन्मयोगीतथाज्ञानीपुरुषोंकेकुलमैंहोवेहै ॥ ताद्वितीयजन्ममै अभ्यासवैराग्यादिसाधनोंकूंसं
पादनकरताहूआ ज्ञानप्राप्तिद्वारा मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसीयोगभ्रष्टकी व्यवस्थाभगवद्गीताके अनुसार हमनेलिखीहै ॥ औरमांडूक्य
उपनिषत्का तात्पर्यरूपवृद्धश्रीगौडपादाचार्योंकीयां कारिकाहैं ॥ तिनकारिकावोंके च्यारिप्रकरणहैं ॥ तिनच्यारिप्रकरणोंकाभा
ष्य भगवत्पूज्यपादश्रीशंकरस्वामिने विस्तारसेंकराहै ॥ च्यारिप्रकरणोंके नामयहहैं ॥ प्रथमकानामॐकारप्रकरणहै ॥ द्वितीयका

नाम वैतथ्यप्रकरणहै ॥ तृतीयकानामअद्वैतप्रकरणहै ॥ चतुर्थकानाम अलातशांतिप्रकरणहै ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमै मूलमांडूक्यउपनिषत्कीव्याख्याहै ॥ तिसमूलमांडूक्यउपनिषतका अर्थतौ हमनेकहदीया ॥ उपनिषत्कातात्पर्यरूप जेआगेकेतीनप्रकरणहैं तिनमैभी केवलसिद्धांतकाहीनिरूपणहै ॥ परंतुग्रंथविस्तारकेभयसें हमतिनसर्वकीभाषानहींकरेहैं ॥ औरअत्यंतसंक्षेपसें तिनकाभावअर्थकहेहैं ॥ द्वितीयवैतथ्यप्रकरणकासंक्षिप्तअर्थयहहै ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमै अद्वैतकाश्रुतिके बलसेंनिरूपणकरा ॥ याद्वितीयप्रकरणमै युक्तिके बलसें प्रपंचमैमिथ्यात्वनिरूपणकराहै ॥ यहसंपूर्णप्रपंचमिथ्याप्रतीतहोवेहै ॥ जैसेस्वप्नमै मिथ्याहीपदार्थ सत्यरूपसेंप्रतीतहोवेहैं जाग्रतकालमैतिनसर्वकाबाधहोइजावेहै ॥ तैसेयहजगत् अज्ञानकालमै सत्यरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ ब्रह्मज्ञानरूपजागरणकरि यासर्वप्रपंचका बाधहोवेहै ॥ अबस्वप्नअवस्थामै सर्वपदार्थजेप्रतीतहोवेहैं तिनमैमिथ्यात्वप्रतिपादनकरेहैं ॥ काहेते ॥ विनादृष्टांतसेंदार्ष्टांतिकसिद्धहोवे नहीं यातें प्रथमदृष्टांतरूप स्वप्नकेजगतकूंही मिथ्याकह्याचाहिये ॥ शंका ॥ स्वप्नकेपदार्थमिथ्यानहींहैं किंतुसत्यहैं यातेंस्वप्नकूंदृष्टांत धरकरिजाग्रतकेपदार्थौकूं मिथ्याकैसेकहोहो ॥ समाधान ॥ स्वप्नकेपदार्थअंतरप्रतीतहोवेहैं यातेंमिथ्याहैं ॥ शंका ॥ अंतरतौगृहमैघटादिकभीप्रतीतहोवेहैं औरप्रतीतिमात्रनहींहैं ॥ यदिशरीरकेअंतरप्रतीतहोनेसें मिथ्याकहोतौ सुखादि शरीरकेअंतर अंतःकरणमैस्थितहैं औरमिथ्यानहींहैं यातेंअंतरप्रतीतहोनेसें स्वप्नपदार्थौकूं मिथ्याकहनाबनेनहीं ॥ उत्तर ॥ स्वप्नकेपदार्थमिथ्याहीहैं ॥ शरीरकेअंतरजोअतिसूक्ष्मनाडीदेशहै तामैपर्वतनदीयांसमुद्रादिप्रतीतहोवेहैं ॥ जबीदेहमैभी पर्वतादिकनहींरहिसकते तबअतिसूक्ष्मनाडीमैकैसेरहेंगे ॥ औरप्रतीतहोवेहैं ॥ यहहीतिनमैमिथ्यारूपताहै जोयुक्तिकूंनसहना औरप्रतीतहोना ॥ शंका ॥ स्वप्नकेपदार्थ नाडीदेशमैअनिर्वचनीयउत्पन्ननहींहोवेहैं ॥ किंतुशयनकर्त्तापुरुषपूर्वदिशामै शयनकरताहूआ पश्चिमदेशमैजाइकरि बाह्यपदार्थौकूंदेखेहै-यातेंस्वप्नकेपदार्थमिथ्यानहींहैं ॥ समाधान ॥ हेवादिन् यदिबाह्यदेशमैजीवकागमनमानेतौ हरिद्वारमैशयनकर्त्तापुरुष रामनाथकूं स्वप्नमैदेखेहै ॥ एकमुहूर्त्तमात्रमै

93

प्राप्तभयाजोस्वप्नदर्शन तामैमासोंकरिप्राप्तहोनेयोग्य रामनाथकाअनुभवकरणाविरुद्धहै ॥ दीर्घकालकेअभावसें स्वप्नमैरामनाथकादर्शन
गमनकरिहोवेनहीं ॥ किंतुअंतरअनिर्वचनीयउत्पन्नभयेरामनाथकूं अनुभवकरेहै ॥ औरयदिगमनकरिही स्वप्नमैरामनाथकादर्शनमाने
॥ ५ ॥ तौजाग्रतकूंप्राप्तभयापुरुष रामनाथमैहीरहेगा ॥ ता रामनाथसेंचलकरि दोघटिकामै हरिद्वारकीप्राप्तिहोनीकठिनहै ॥ औरयदिस्वप्न
मैप्रतीतभयेपदार्थोंकूं सत्यअंगीकारकरें तौभद्रसेननामवालेकिसीपुरुषने स्वस्वप्नमै चित्रसेननामकपुरुषकेसाथमिलकरि अनेकतीर्थोंकी
यात्राकरि ॥ जबीभद्रसेनकास्वप्ननिवृत्तभया औरजाग्रतमैचित्रसेनमिला ॥ तौचित्रसेनने भद्रसेनकूंकह्याचाहिये जोहेभद्रसेन तुमने
हमारेसाथमिलकरि आजरात्रिमैअनेकतीर्थोंकीयात्राकरी ॥ चित्रसेनतौ भद्रसेनकूं जाग्रतमैदेखेनहीं वार्त्ताआलापतौक्याकरनाथा ॥
यातेंभद्रसेनने अनिर्वचनीयउत्पन्नकराजोचित्रसेन तासेंमिलकरि अनिर्वचनीयहीयात्राकरीहै ॥ अनिर्वचनीयताकूंकहेहैं जोसत्रूपसेंत
थाअसत्रूपसेंकह्यानजावे औरप्रतीतहोवे ॥ ऐसेस्वप्नकेपदार्थहैं ॥ स्वप्नकेपदार्थयदिसत्यहोवैं तौंजाग्रतकालमैरहेचाहिये ॥ यदितुच्छरू
पअसत्होवैं तौ वंध्यापुत्रकीन्यांई कदाचित्प्रतीतनहोनेचाहिये ॥ स्वप्नमैप्रतीतहोवेहैं यातेंहीस्वप्नपदार्थअनिर्वचनीयहैं ॥ औरस्वप्नअव
स्थामै सत्यपदार्थोंकाअभावश्रुतिकहेहै ॥ ऐसेहीस्वप्नकेतुल्यही जाग्रतकेपदार्थहैं ॥ ब्रह्मज्ञानरूपजागरणकरि सत्यरूपसें प्रतीतहोवेंनहीं ॥
औरअज्ञानरूपस्वप्नअवस्थामै सत्यरूपसेंप्रतीतहोवेहैं ॥ यातेंअनिर्वचनीयहैं ॥ और जैसेस्वप्नअवस्थासेंप्रथम स्वप्नकेपदार्थप्रतीतहोवेंन
हीं ॥ तथा स्वप्नअवस्थाकेनिवृत्तभये जाग्रतमैवासुषुप्तिमै रहेंनहीं केवलस्वप्नमैहीप्रतीतहोवेहैं ॥ तैसेभ्रांतिविना यहजाग्रतकेपदार्थभीप्र
तीतहोवेनहीं केवलभ्रांतिकालमैही प्रतीतहोवेहैं यातेंमिथ्याहैं ॥ याअर्थकूंही याकारिकासेंकहेहैं ॥ आदावंतेचयन्नास्ति वर्त्तमानेऽपि ॥ ५० ॥
तत्तथा ॥ वितथैःसदृशाःसंतोऽवितथा इवलक्षिताः ॥ २ ॥ अर्थयह ॥ जोवस्तुआदिमैनहींहै जोवस्तुअंतमैनहींहै सोवस्तुवर्त्तमानमैक
हीये मध्यमैभीहेनहींहै ॥ वितथनाममिथ्याभूत मृगतृष्णाआदिकपदार्थोंकेसदृशहूएभी मूढोंनेतौ अवितथनामसत्यरूपसेंहीलखेहैं

कहीयेजानेहैं ॥ २ ॥ औरजैसेरज्जु यथार्थरूपसेंनजानीहूई सर्पदंडजलधारादिअनेकरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ जबीरज्जुकायथार्थबोधहोइजावे तब सर्पादिनिवृत्तहोइजावेहैं ॥ तैसेआपनेपरमार्थरूपकरि नजानाहूआआत्मा अनेकस्थावरजंगमरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ आत्माकेयथार्थरूपकेजाननेसें सर्वद्वैतभ्रमनिवृत्तहोइजावेहै ॥ इंद्रजालकीमायारचितपदार्थ तथागंधर्वनगर मिथ्यारूपहूएभी अज्ञानकरिसत्यरूपसें प्रतीतहोवेहैं ॥ औरबुद्धिमान् तिनकूंमिथ्यारूपहीजानेहै ॥ तैसे अविवेकीमूढोंकूं यहप्रपंच दृष्टविनष्टस्वभावहूआभी सत्यरूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ परंतु विवेकीतौ जैसाप्रपंचकादृष्टविनष्टस्वभाव तथास्वतःसत्ताशून्यस्वभावहै ताकूंजानेहैं ॥ सर्वलौकिकवैदिक व्यवहार आरोपमैहीहै वास्तवसेंतौ यहसिद्धांतहै ॥ नप्रलयहै नउत्पत्तिहै नसंसारीजीवहै नमोक्षकेसाधनवालाहै नकोईसाधनसंपन्न मुमुक्षुहै नकोईमुक्तहै ॥ यहतौ परमार्थनिरूपणकरा यातेंभिन्न प्राणकाल आकाशपरमाणु प्रधानादिकोंकूंनित्यमानना यहमहान्भयकेउत्पन्न करनेहाराहै ॥ जेमहात्मा प्रपंचकूं अनेकश्रुतियुक्तिकरि मिथ्याजानतेहूए अद्वैतब्रह्मकूंजानेहैं ॥ तथारागद्वेषभयादिकोंसेशून्यहूएहैं ते महात्मासदाब्रह्ममैंवर्त्तेहैं ॥ ऐसेमुमुक्षुपुरुषभी अद्वैतब्रह्ममैं सजातीय प्रत्ययकरताहूआ तथासंसारमैजडकीन्यांईविचरताहूआ किसीपुरुषकी स्वव्यवहारवासते स्तुतिकूंकरेनहीं ॥ तथास्वशरीरादिकोंकेरक्षावासते किसीकेआगेनमस्कारकूंकरेनहीं ॥ स्वभावसेंही जेकौपीनआच्छादनादिकप्राप्तहोवें तिनसेंशरीरकीरक्षाकरे ॥ अंतरबाह्यआत्माकूंहीदेखे ॥ आत्मारूपहूआ कदाचित्आत्मासेंचलायमानहोवेनहीं सदाहीआत्मपरायणरहे ॥ इतिसंक्षिप्तवैतथ्यप्रकरणार्थबोधनं ॥ जैसेद्वैतप्रपंचकूंयुक्तियोंसें मिथ्यानिरूपणकरा तैसेब्रह्मअद्वैतहै यामै युक्तिनिरूपणकरेहैं ॥ शंका ॥ तुमारांअद्वैतनहींबनता काहेते देवदत्तउत्पन्नभयाहै यज्ञदत्तनष्टभयाहै याप्रतीतिसेंउत्पत्तिनाशवालेभिन्नभिन्नआत्मामानेचाहियै जबीभिन्नभिन्नमाने तबअद्वैतकथनमनोराज्यमात्रहै अद्वैतहैनहीं ॥ समाधान ॥ जैसेघटादिउपाधियोंकीउत्पत्तिसें घटाकाशादिकोंकीउत्पत्तिव्यवहारहोवेहै तथाघटादिकोंकेनाशहोनेसें घटाकाशादिकोंमैनाशव्यवहारहोवेहै ॥ तैसेशरीरोंकी

उत्पत्तिसें आत्मामैउत्पत्तिव्यवहार तथाशरीरादिकोंकेनाशहोनेसें आत्मामे नाशव्यवहारहोवेहै ॥ वास्तवसेंउपाधिदृष्टिविना आत्मामैं
घटाकाशकीन्यांई उत्पत्तिआदिहैनहीं ॥ शंका ॥ उत्पत्ति तथाप्रलयश्रुतिसेंविरोधनहींहै यहतुमनेसत्यकहा परंतुएकआत्मानामे चैत्रपु
॥ ६ ॥ रुषकेसुखदुःखादि मैत्रकूंहूएचाहिये मैत्रकेसुखादि विष्णुदत्तनामकपुरुषकूं हूएचाहिये होवेंतौनहीं ॥ यासंकरकीप्राप्तिसें अद्वैतबनेन
हीं ॥ समाधान ॥ अत्माकेसुखादिधर्मनहीं किंतु साभासअंतःकरणकेधर्महैं ॥ आत्मामैतो तिनकीभ्रांतिहै अंतःकरणकूंभिन्नभिन्नहोने
सें परस्परसुखदुःखकासंकरहोवेनहीं ॥ जैसेएकघटाकाशमै धूमका वाधूलीका आरोपितसंबंधहूएभी द्वितीयतृतीयादिघटाकाश धूम
धूलीसेंरहितहीहोवेहैं ॥ तैसेएकआत्मामे भ्रांतिसिद्धसुखादिप्रतीतहूएभी शरीरभेदकरिभिन्न जेद्वितीयादिआत्माहैं तिनमैसुखादिप्रती
तहोवेनहीं ॥ जैसेएकआकाशमै घटाकाशमठाकाशादिकोंके अल्पता वृद्धता भिन्नभिन्न उपाधिकरिप्रतीतहोवेहैं ॥ औरजलआनयन
शयनादिकार्य तथाघटाकाशमठाकाशयहनामभी उपाधिकरि भिन्नभिन्नप्रतीतहोवेहैं ॥ तैसेएकहीआत्मा उपाधिकरि देवमनुष्यादिरूपसें
भिन्नस्वरूपवाला भिन्नकार्यवाला भिन्ननामवालाप्रतीतहोवेहै वास्तवसेंभेदकागंधमात्रनहीं ॥ जिनशरीरोंकरि आत्माभिन्नभिन्नप्रतीत
होवेहै तेशरीर स्वप्नकीन्यांईकल्पितहैं तहांकारिकाकहेहैं ॥ संघाताःस्वप्नवत्सर्वेआत्ममायाविसर्जिताः ॥ आधिक्येसर्वसाम्येवानोपपत्तिर्हि
विद्यते ॥ ३ ॥ अर्थयह सर्वशरीर आत्माकीमायाकरिरचितहैं यातेंस्वप्नकेशरीरोंकीन्यांईमिथ्याहैं ॥ अविवेकीकीदृष्टिसें देवादिकोंमैअधि
कताकेहूए वाविवेकीकीदृष्टिसें पांचभौतिकतारूपसें सर्वकीसमताकेहूएभी इनसंघातोंकीसत्यताका साधकहेतुनहींहै ॥ ३ ॥ जैसेस्व
प्नकेशरीरोंमै जेदेवतादिकश्रेष्ठप्रतीतहोवेहैं मनुष्यादिमध्यम तथासर्पादिअधमप्रतीतहोवेहैं ॥ परंतुतेसर्वही जागरितअवस्थामैरहेंनहीं ॥ तै ॥ ५१ ॥
सेअधिकन्यूनसर्वशरीर अविद्यादशामैप्रतीतहोवेहैं ब्रह्मज्ञानरूपजागरणकरि तिनकाबाधहोइजावेहैं ॥ जीवोंकीएकतामैंहीवेदकातात्प
र्यहै औरभेदकेद्रष्टाकूंपशुरूपसें वेदनेनिंदनकराहै तथाभेदद्रष्टाकूं वारंवारजन्ममरणरूपअनर्थकीप्राप्ति वेदवर्णनकरेहै ॥ यदिअद्वैतमैवेद

96

कातात्पर्यनहोता तौभेदद्रष्टाकूंपशुवत्कथन औरअनर्थप्राप्तिकिसवासते वेदकथनकरता ॥ यातेंअद्वैतमैही वेदकातात्पर्यहै ॥ शंका ॥ यदिसर्वथाअद्वैतहै तौश्रुतिमैप्रपंचकोउत्पत्ति ब्रह्मसेंकैसेनिरूपणकरीहै उत्पत्तिवालाप्रपंचतौ ब्रह्मसेंभिन्नही अंगीकारकरणाहोगा जबी भिन्नमाना तबअद्वैतकैसे ॥ समाधान ॥ प्रपंचकीउत्पत्तिमैवेदकातात्पर्यनहींहै ॥ यातेंकिंचित्भीविरोधनहीं ॥ औरयावत्कालपर्यंत कार्यस्थितहै तावत्कालपर्यंत आपनेउपादानसेंभिन्ननहीं ॥ जैसेमृत्तिकासें उत्पन्नहूआघट तथाअग्निसेंउत्पन्नभयाविस्फुलिंग आपने कारणमृत्तिका तथाअग्निसेंभिन्ननहीं ॥ तैसेअद्वैतसेंउत्पन्नभयाजगत् तासेंभिन्ननहीं ऐसेअद्वैतब्रह्मकेज्ञानकीउत्पत्तिवासतेही जगत्की उत्पत्तिआदिकोंकाकथनहै ॥ कोईजगत्कीउत्पत्तिआदिकोंमैवेदकातात्पर्यनहीं ॥ औरउपासनाकांड तथाकर्मकांडकेसाथभी अद्वैतके विरोधकीशंकाबनेनहीं ॥ मंदमध्यम उत्तम भेदसें मुमुक्षुतीनप्रकारकेहैं ॥ मंदोंके अंतःकरणकीपापनिवृत्तिपूर्वक जाशुद्धि ताशुद्धि वासते कर्मोंकाउपदेश वेदनेकराहै ॥ मध्यमपुरुषोंकेअंतःकरणमै मलतौहैनहीं परंतुएकाग्रतातौ उपासनाबिनाहोवेनहीं ॥ यातेंमध्य मोंकेअंतःकरणकीएकाग्रतावासते उपासनावेदनेकहीहै ॥ औरउत्तमअधिकारीयोंकेवासते तौ वेदांत श्रवणहीनिरूपणकराहै ॥ ऐसे परंपरासेंउपासनाकांड तथाकर्मकांड अद्वैतमैतात्पर्यवालेहैं ॥ शुद्धएकाग्रमनवालाहीवेदांतकूंश्रवणकरि अद्वैतनिष्ठाकूंसंपादनकरेहै ॥ यातेंचित्तके पापरूपदोषकीनिवृत्तिवासते कथनकराजोकर्मकांड ताकाचित्तशुद्धिद्वारा अद्वैतब्रह्ममैतात्पर्यहै ॥ तथाउपासनाकांडभी चित्तकीएकाग्रताद्वारा अद्वैतब्रह्ममैहीतात्पर्यवालाहै ॥ ऐसेअद्वैतवादमै किंचित्विरोधनहीं ॥ प्रत्युतद्वैतवादीजे नैयायिक सांख्यआ चार्य आदिकहैं तेआपसमैरागद्वेषकरतेहूए विवादकूंकरेहैं ॥ यातेंतिनभेदवादीयोंकेमत रागद्वेषादिदोषकरिदूषितहोनेसें अप्रमाण है ॥ यहअद्वैतवादतौ आपनेअद्वैतकूंसिद्धकरेहै भेदबुद्धिकेअभावसें रागद्वेषादिदोषरहितहै ॥ औरवेदमैकारणमायाका तथाकार्य हिरण्यगर्भादिकोंका अभावप्रतिपादनकराहै ॥ यातेंअद्वैतहै औरकार्यकारणसें ताअद्वैतकाबाधहोवेनहीं ॥ जीवचेतनकूंब्रह्मरूप

तावेदमैंकहीहै यातेंजीवकरिभी अद्वैतकाबाधहोवेनहीं ॥ जेअविवेकी याघटादिप्रपंचकरि अद्वैतकाबाधकहेहैं ॥ तेअतिमूढहैं ॥
काहेते, जाप्रपंचकरिद्वैतापत्तिकहेहैं ॥ सोप्रपंचतौमनोमात्रहै ॥ जाग्रतस्वप्नमैंमनरहेहै प्रपंचभीप्रतीतहोवेहै ॥ सुषुप्तिमे तथानिर्वि
॥ ७ ॥ कल्पसमाधिमैंमनरहेनहीं औरप्रपंचभीरहेनहीं ॥ ऐसेअन्वयव्यतिरेकसें प्रपंचमनोमात्रहै ॥ अन्वयकहिये जिसकेहूएजोहोवे जैसे
मृत्तिकाहूएघटहोवेहै ॥ व्यतिरेककहिये जिसकेनहोनेसेंजोनहोवे जैसेमृत्तिकाकेनहोते घटहोवेनहीं ॥ ऐसेमनजाग्रतस्वप्नमैंहै प्र
पंचभीप्रतीतहोवेहै ॥ समाधिसुषुप्तिमैंमनहैनहीं प्रपंचभीप्रतीतहोवेनहीं ॥ ऐसेअन्वयव्यतिरेकसेंप्रपंचकूं मनोमात्रताकही ॥ जबी
पुरुषनिर्विकल्पसमाधिकूं सर्वप्रतिबंधसेंरहितहोइकरिसंपादनकरे तबीमननिरोधकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अभ्यासवैराग्यसेंमनकानिरोधहोवेहै ॥
मनकेजीतनेसेंहीसर्वकाजयहै ॥ मनरूपीशत्रुजबतकजीवताहै तबतकशत्रुजीवेहैं ॥ जैसेंटिट्टिभनामपक्षीने समुद्रसें आपने अंडेग्रह
णकरे ॥ तैसेखेदमात्रेविनामनकानिरोधहोवेहै ॥ टिट्टिभकीकथासंक्षेपसेंयहहै ॥ किसीकालमैंकोईटिट्टिभनामकपक्षी समुद्रकेतटउपरि
आपनेअंडेराखताभया ॥ उसकीस्त्री टिट्टिभीने बहुतवारणभीकरा जोहमारेअंडे यहसमुद्रअपनीलहरोंसेंबहायलेजावेगा ॥ परंतु अभि
मानकूंप्राप्तहूआ टिट्टिभ समुद्रकूंतुच्छ मानताभया ॥ औरगर्वकूं प्राप्तभयाटिट्टिभ आपनीस्त्रीकूं यहकहताभया ॥ अरी भामिनी तूं
किसवासतेभयकूंप्राप्तहोतीहै ॥ यदिसमुद्रहमारे अंडेयोंकूं लेजावेगा तौ इसअभिमानीसमुद्रकूं हमजलविनाशुष्ककरेंगे ॥ टि
ट्टिभी तौ यहहीकहतीभयी जोकहांयहसमुद्र कहांहमतुच्छपक्षी ॥ परंतुपतिकीआज्ञामानकरि अंडयोंकूंतातटउपरिराखकरि दोनों
आहारवासतेकहींजातेभये ॥ समुद्रनेभीटिट्टिभी टिट्टिभके सर्ववाक्यश्रवणकरे औरहसताहसता अंडेयोंकूं उठाइलेजाताभया ॥ औ
रसमुद्रनेमनमैं यहविचारकरा जोस्थावरजंगमसर्वपरमेश्वरकीविभूतियांहैं ॥ इसवासतेकिसीदेशमैं किसीकालमैं किसीनिमित्तसें
किसीमैंकैसीशक्तिहोजातीहै यहनहींकहसकते ॥ क्याजानेइसपक्षीके कितनेमित्रसहायकहैं ॥ यातेंइसपक्षीकेअंडे किसीदेशमै

धरदेनेचाहिये ॥ ऐसेअंडयोंकूं किसीदेशमै धरकरि पूर्वकीन्यांईगर्जनकरताहूआ स्थितभया ॥ जबोटिट्टिभ आपनीभार्यासहितगृहमै आया तौअंडेयोंकूंनदेखकरिरक्तनेत्रहूआ महान्क्रोधकूंप्राप्तभया ॥ औरसमुद्रकेशुष्ककरनेकासंकल्पकरताभया ॥ ऐसेपतिकूंदेखकरि टिट्टिभीबहुतसुंदरयुक्तवचनकहतीभयी ॥ हेपते मैंतौतुमकूंप्रथमभीवारणकराथा परंतुतुमनेमेराकह्यानमाना इसीसेंमेरेअंडेदूरभये ॥ अबभीतुम समझो जोइसमहान्समुद्रसेंवैरकात्यागकरो ॥ मैत्री औरवैरतुल्योंसेंकरणाचाहिये ॥ तुमछोटेसेपक्षी ऐसेबडेसमुद्रसेंवैरकरणेयोग्यनहींहो ॥ जिसशरीरसें तुमकुछकराचाहतेहैं ॥ सोशरीर बहुतछोटानिर्बलहै ॥ औरकालकाभीबल तुमारेविषेनहींहै ॥ कालभीबडेदेवादिदेहोंमैहीकार्यकरणेहाराहै तुमारेअल्पशरीरमै कुछकरेगानहीं ॥ औरतुमारामित्रभी सहायताकरणेहाराकोईदीखतानहीं ॥ धनसेंशत्रुभीमित्रहोजातेहैं सोधनबलभीतुमारेमै मैंदेखतीनहीं ॥ जन्मसेंपक्षीमैजातिबलभीनहीं ॥ औरलक्षयोजनविस्तारवालासमुद्र तथा प्रलयकालमैत्रिलोकीकूंलयकरणेवाला तथाअनेकदेवतामुनिजनोंकीसहायतावाला कैसेशुष्कहोवेगा ॥ इंद्रसेंभयभीतहूए मैनाकआदिकपर्वतोंकी इससमुद्रनेरक्षाकरीहै ऐसेसमुद्रसेंवैरकरणाव्यर्थहै ॥ यातेंतुमारीमूढतासें मैनेआपनेअंडे गवायदीये अबकिसवासतेतुमशांतनहींहोते ॥ ऐसेअनेकप्रकारके टिट्टिभीके वचनोंकूंश्रवणकरि क्रोधसेंसंरक्तनेत्रहूआ टिट्टिभ आपनीस्त्रीकूंयहकहताभया ॥ अरीमूढ तुममेरेसमीपसें अबीचलीजा ॥ संपत्कालमैअनंतकोटिमित्रहोजातेहैं ॥ आपत्कालमै जोमित्ररहेसोमित्रकहलाताहै ॥ जोविपत्तिमैत्यागकर्त्ताहै सोशत्रुहै मित्रनहीं ॥ पुण्यपापमै तथासुखदुःखमै साथहोवेसोईमित्रहै ॥ क्लेशकेप्राप्तहोनेसें जोपुरुष अभिमानपूर्वक बहुतवचनकहनेलगजाताहै सो शत्रुहै मित्रनहीं ॥ जोआपनाकल्याणचाहताहै सोप्रथममित्रकीन्यांई प्रतीत होनेहारे शत्रुकानाशकरे पश्चात् दूसरेशत्रुकूंमारे ॥ यातें प्रथमतूंमित्ररूपभीथी परंतुअबविपत्तिकालमै शत्रुरूपभयीहैं ॥ तूंस्त्रीहैं इसवासतेतेरावधमैनहींकरता ॥ तूंचलीजा ॥ मैएकलाहीसमुद्रकूंशुष्ककरताहूं ॥ ऐसेवचनसुनकरि पतिव्रता टिट्टिभीने पतिका दृढनिश्चयदेखा ॥ पतिसेंक्षमाकराइकै अनुसारहोजातीभयी ॥ अनेकवा

99

रआपनी चुंचसें तथापक्षोंसें जलकूंबाहिरगेरनेलगे ॥ औरअनेकपक्षीइनकूं वारणकरतेभये ॥ जबीदोनोंवारणनहींभये तबीसर्वपक्षीमि
लकरि समुद्रकेशोषणकरणेवासते उद्यमकरतेभये ॥ तबीतीनलोकोंमैविचरणेहारानारद तहांप्राप्तभया ॥ नारदनेबहुतवारणभीकरा ज्ञब
॥८॥ पक्षीदुःखीहोतेभीनिवृत्तनभये तबनारदमुनिगरुडके आनेकाउपायकहतेभये ॥ जबीगरुडआया ताकूंदेखकरि समुद्रभयभीतहूआटिट्टि
भकेअंडेयोंकूं देदेताभया ॥ ऐसेजोपुरुष खेदरहितहोइकरि मनकेजयवासतेनिश्चयकरताहै ॥ उसकी गरुडकी न्याईदेवताभीसहायकर
तेहैं ॥ मनकेनिरोधमै उपाय वैराग्यतथाअभ्यासहै ॥ जोपुरुषदुःखरूपसंसारकूंजानकरि त्यागकरताहै ॥ तिसपुरुषकामन संसारमैग
मनकरेनहीं ॥ और आत्माकार वारंवारवृत्तिकरणेसें संकल्पविकल्पकूंत्यागकरि निरुद्धहूआमनस्थितहोवैहै ॥ मनकेनिरोधहोनेसें प्रपं
चरूप त्रिपुटीकाभानहोवेनहीं ॥ केवलशुद्ध स्वप्रकाशब्रह्मभूमाही तासमाधिमैप्रतीतहोवैहै ॥ तानिर्विकल्पसमाधिसें मनकानिरोधहो
वैहै ॥ तामनकेनिरोधहोनेसें सर्वभयकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इतिअद्वैतप्रकरणसंक्षिप्तार्थबोधनं ॥ चतुर्थअलातशांतिनामप्रकरणके अर्थकूं किं
चित्दिखावैहैं ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमै तौॐकाररूपकरि श्रुतिप्रमाणसें अद्वैतनिरूपणकरा ॥ द्वितीयप्रकरणमै अद्वैतविरोधीद्वैतकूं
स्वप्नादिदृष्टांतोंकरि मिथ्यारूपतावर्णनकरी ॥ तृतीयप्रकरणमै अद्वैतब्रह्मकूं युक्तियोंसेंवर्णनकरा ॥ चतुर्थप्रकरणमै भेदवादीजैसेआपसमैं
विवादकरतेहैं ताविवादकूंदिखाइकरि अर्थसेंसिद्धजोअद्वैतहै ताअद्वैतकूंनिरूपणकरेहैं ॥ यहअद्वैतवाद मुमुक्षुजनोंकेमोक्षकेकरणेहाराहै ॥
औरविवादसेंरहितहै ॥ औरमतोंमैतौविवादहै ताकूंकिंचित्दिखावैहैं ॥ नैयायिकसांख्याचार्यकूंकहेहै हेसांख्याचार्य तुमसत्कार्यकीउ
त्पत्तिमानतेहो तथाकार्यकूंकारणसें अभिन्नमानतेहो ॥ सोअसंगतहै ॥ काहेते ॥ उत्पत्तिसेंप्रथमकार्यकूंसत्यमानेतौ तासत्यकोउत्पत्ति ॥५३॥
कैसेहोवेगी यामै कारणकुलालदंडादिकोंकी निष्फलतारूपदोषहै ॥ तथाकार्यकूंकारणसें अभिन्नमाने तौघटकाकार्यजलआनयना
दि मृत्तिकासेंभी हूआचाहिये ॥ तथातुमजगत्काकारण प्रधानकूंमानतेहो ॥ जबीप्रपंचरूपकार्यकूं प्रधानरूपकारणसेंअभिन्नमाना

तो प्रधानकीउत्पत्तिभयी यहव्यवहारहूआचाहिये ॥ प्रधानकूं तुमनित्यमानतेहैं ताकीउत्पत्तिकहनीविरुद्धहै ॥ अबसाख्याचार्य नैया
यिककूंकहेहै ॥ अरेनैयायिक तुमआपनेमतमैंदूषणनहींदेखता ॥ आपनेमैंदूषण नदेखना तथादूसरेके दूषणोंकूंदेखना यहहीतेरेमैंमूढों
केलक्षणहैं ॥ अबतूंआपनेमतमैंदूषणकूंश्रवणकर ॥ कारणमैंउत्पत्तिसें प्रथमतेरेमतमैंकार्यअसत्है ॥ ताअसत्कीकारणसेंउत्पत्तिमानेतो
वंध्यापुत्रकीभी ताकारणसेंउत्पत्तिहूई चाहिये ॥ उत्पत्तिसेंप्रथम असत्जैसेप्रपंचरूपकार्यहै तैसेअसत्वंध्यापुत्रहै ॥ असत्प्रपंचकीउ
त्पत्तिहोवेहै वंध्यापुत्रकीनहींहोवेहै यामैंनियामककेनमिलनेसें ॥ तेरामतदुष्टहै ॥ तथावालुसेंतैलकी तंतुवोंसेंघटकी कपालोंसेंपटकी
उत्पत्तिहूईचाहिये तथाअनेकपरमाणुवोंकूंकारणमानना अतिगौरवग्रस्तहै ॥ तथाआत्माजोआपनास्वरूपहै ताकूंज्ञानभिन्नजडमानने
सें तूंभीजडहै ॥ जडहोनेसेंहीतेरेकूं आपनेमतमैंदूषणनहींभानहोते ॥ चेतनहोतातौजानता ॥ ऐसेआपसमैंविवादकरतेहूए यहसूचन
करेहैं ॥ जोकिंचित्कार्यउत्पन्नभयानहीं ॥ तिनेवादीयोंनेसूचनकरी जाअनुत्पत्ति सोईअजातवादहै ॥ इसप्रकारताअजातवादकूं ह
मअंगीकारकरेहैं ॥ और जैसेतेवादी द्वेषपूर्वक आपसमैंविवादकरेहैं ॥ तैसेहम विवादकूंकरेंनहीं ॥ यातें किंचित्कार्यउत्पन्नभयानहीं
इसीसेंअद्वैतब्रह्महै ॥ जोवास्तवप्रपंचकीउत्पत्तिमाने ताकूंहमपूछेहैं ॥ जोकारणसेंअभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै ॥ वाभिन्नउत्पन्नहोवेहै ॥ वा
कारणसें अभिन्नऔरभिन्नउभयरूपउत्पन्नहोवेहै ॥ तथाकार्यसत्रूपउत्पन्नहोवेहै ॥ वाअसत्रूपउत्पन्नहोवेहै ॥ वासत्असत्उभयस्वरू
पउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेषट्विकल्पकरि एकएकखंडनकरेहैं ॥ कारणसेंअभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै यहप्रथमविकल्पबनेनहीं ॥ काहेते जैसे
घटसेंअभिन्नमृत्तिकासें घटकीउत्पत्तिमानतेहो तैसेमृत्तिकासें अभिन्नमृत्तिकाकी तथाघटसेंअभिन्नघटकीउत्पत्तिहूईचाहिये ॥ और
होवेतैंनहीं यातेंघटकीअभिन्नरूपमृत्तिकासें उत्पत्तिकथनअसंगतहै ॥ तथाकारणसेंभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै यहद्वितीयविकल्पबनेनहीं ॥
काहेते घटसेंभिन्नमृत्तिकासें जैसेघटउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसेघटसेंभिन्नपटभीहै तापटसेंभी घटउत्पन्नहूआचाहिये ॥ यदिवादीकहे केवलभिन्न

रआपनी चुंचसें तथापक्षोंसें जलकूंबाहिरगेरनेलगे ॥ औरअनेकपक्षीइनकूं वारणकरतेभये ॥ जबीदोनोंवारणनहींभये तबीसर्वपक्षीमि
लकरि समुद्रकेशोषणकरणेवासते उद्यमकरतेभये ॥ तबीतीनलोकोंमैविचरणेहारानारद तहांप्राप्तभया ॥ नारदनेबहुतवारणभीकरा जब
॥ ८ ॥ पक्षीदुःखीहोतेभीनिवृत्तनभये तबनारदमुनिगरुडके आनेकाउपायकहतेभये ॥ जबीगरुडआया ताकूंदेखकरि समुद्रभयभीतहूआटिट्टि
भकेअंडेयोंकूं देदेताभया ॥ ऐसेजोपुरुष खेदरहितहोइकरि मनकेजयवासतेनिश्चयकरताहै ॥ उसकी गरुडकी न्याईदेवताभीसहायकर
तेहैं ॥ मनकेनिरोधमै उपाय वैराग्यतथाअभ्यासहै ॥ जोपुरुषदुःखरूपसंसारकूंजानकरि त्यागकरताहै ॥ तिसपुरुषकामन संसारमैग
मनकरेनहीं ॥ और आत्माकार वारंवारवृत्तिकरणेसें संकल्पविकल्पकूंत्यागकरि निरुद्धहूआमनस्थितहोवेहै ॥ मनकेनिरोधहोनेसें प्रपं
चरूप त्रिपुटीकाभानहोवेनहीं ॥ केवलशुद्ध स्वप्रकाशब्रह्मभूमाही तासमाधिमैप्रतीतहोवेहै ॥ तानिर्विकल्पसमाधिसें मनकानिरोधहो
वेहै ॥ तामनकेनिरोधहोनेसें सर्वभयकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ इतिअद्वैतप्रकरणसंक्षिप्तार्थबोधनं ॥ चतुर्थअलातशांतिनामप्रकरणके अर्थकूं किं
चितदिखावेहैं ॥ प्रथमॐकारप्रकरणमै तौॐकाररूपकरि श्रुतिप्रमाणसें अद्वैतनिरूपणकरा ॥ द्वितीयप्रकरणमै अद्वैतविरोधीद्वैतकूं
स्वप्नादिदृष्टांतोंकरि मिथ्यारूपतावर्णनकरी ॥ तृतीयप्रकरणमै अद्वैतब्रह्मकूं युक्तियोंसेंवर्णनकरा ॥ चतुर्थप्रकरणमै भेदवादीजैसेआपसमैं
विवादकरतेहैं ताविवादकूंदिखाइकरि अर्थसेंसिद्धजोअद्वैतहै ताअद्वैतकूंनिरूपणकरेहैं ॥ यहअद्वैतवाद मुमुक्षुजनोंकेमोक्षकेकरणेहाराहै ॥
औरविवादसेंरहितहै ॥ औरमतोंमैतौविवादहै ताकूंकिंचितदिखावेहैं ॥ नैयायिकसांख्याचार्यकूंकहेहै हेसांख्याचार्य तुमसत्कार्यकीउ
त्पत्तिमानतेहो तथाकार्यकूंकारणसें अभिन्नमानतेहो ॥ सोअसंगतहै ॥ काहेते ॥ उत्पत्तिसेंप्रथमकार्यकूंसत्यमानेतौ तासत्यकोउत्पत्ति ॥ ५३ ॥
कैसेहोवेगी यामै कारणकुलालदंडादिकोंकी निष्फलतारूपदोषहै ॥ तथाकार्यकूंकारणसें अभिन्नमाने तौघटकाकार्यजलआनयना
दि मृत्तिकासेंभी हूआचाहिये ॥ तथातुमजगतकाकारण प्रधानकूंमानतेहो ॥ जबीप्रपंचरूपकार्यकूं प्रधानरूपकारणसेंअभिन्नमाना

तौ प्रधानकीउत्पत्तिभयी यहव्यवहारहूआचाहिये ॥ प्रधानकूं तुमनित्यमानतेहैं ताकीउत्पत्तिकहनीविरुद्धहै ॥ अबसाख्याचार्य नैया यिककूंकहेहै ॥ अरेनैयायिक तुमआपनेमतमैंदूषणनहींदेखता ॥ आपनेमैंदूषण नदेखना तथादूसरेके दूषणोंकूंदेखना यहहीतेरेमैंमूढों केलक्षणहैं ॥ अबतूंआपनेमतमैंदूषणकूंश्रवणकर ॥ कारणमैंउत्पत्तिसें प्रथमतेरेमतमैंकार्यअसत्है ॥ ताअसत्कीकारणसेंउत्पत्तिमानेतो वंध्यापुत्रकीभी ताकारणसेंउत्पत्तिहूई चाहिये ॥ उत्पत्तिसेंप्रथम असत्जैसेप्रपंचरूपकार्यहै तैसेअसत्वंध्यापुत्रहै ॥ असत्प्रपंचकीउ त्पत्तिहोवेहै वंध्यापुत्रकीनहींहोवेहै यामैंनियामककेनमिलनेसें ॥ तेरामतदुष्टहै ॥ तथावालुसेंतैलकी तंतुवोंसेंघटकी कपालोंसेंपटकी उत्पत्तिहूईचाहिये तथाअनेकपरमाणुवोंकूंकारणमानना अतिगौरवग्रस्तहै ॥ तथाआत्माजोआपनास्वरूपहै ताकूंज्ञानभिन्नजडमानने सें तूंभीजडहै ॥ जडहोनेसेंहीतेरेकूं आपनेमतमैंदूषणनहींभानहोते ॥ चेतनहोतातौजानता ॥ ऐसेआपसमैंविवादकरतेहूए यहसूचन करेहैं ॥ जोकिंचित्कार्यउत्पन्नभयानहीं ॥ तिनेवादीयोंनेसूचनकरी जाअनुत्पत्ति सोईअजातवादहै ॥ इसप्रकारताअजातवादकूं ह मअंगीकारकरेहैं ॥ और जैसेतेवादी द्वेषपूर्वक आपसमैंविवादकरेहैं ॥ तैसेहम विवादकूंकरेंनहीं ॥ यातें किंचित्कार्यउत्पन्नभयानहीं इसीसेंअद्वैतब्रह्महै ॥ जोवास्तवप्रपंचकीउत्पत्तिमाने ताकूंहमपूछेहैं ॥ जोकारणसेंअभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै ॥ वाभिन्नउत्पन्नहोवेहै ॥ वा कारणसें अभिन्नऔरभिन्नउभयरूपउत्पन्नहोवेहै ॥ तथाकार्यसत्रूपउत्पन्नहोवेहै ॥ वाअसत्रूपउत्पन्नहोवेहै ॥ वासत्असत्उभयस्वरू पउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेषट्विकल्पकरि एकएककाखंडनकरेहैं ॥ कारणसेंअभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै यहप्रथमविकल्पबनेनहीं ॥ काहेते जैसे घटसेंअभिन्नमृत्तिकासें घटकीउत्पत्तिमानतेहो तैसेमृत्तिकासें अभिन्नमृत्तिकाकी तथाघटसेंअभिन्नघटकीउत्पत्तिहूईचाहिये ॥ और होवेतौनहीं यातेंघटकीअभिन्नरूपमृत्तिकासें उत्पत्तिकथनअसंगतहै ॥ तथाकारणसेंभिन्नकार्यउत्पन्नहोवेहै यहद्वितीयविकल्पबनेनहीं ॥ काहेते घटसेंभिन्नमृत्तिकासें जैसेघटउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसेघटसेंभिन्नपटभीहै तापटसेंभी घटउत्पन्नहूआचाहिये ॥ यदिवादीकहे केवलभिन्न

मात्रसेंकार्यकीउत्पत्तिनहींमानेहैं ॥ किंतुकारणतायोग्यजोभिन्नकारण तासेंकार्यउत्पन्नहोवेहै ऐसेमानतेहैं ॥ पटघटसेंभिन्नतौहै परंतु कारणताकेयोग्यनहीं यातेंपटसें घटनहींउत्पन्नहोवेहै ॥ औरमृत्तिकातौ घटकीकारणताकेयोग्यहै यातेंमृत्तिकासें घटउत्पन्नहोवेहै यामें दोषनहीं ॥ ऐसेजबीवादीनेकहा तबसिद्धांतीऐसेकहेहै ॥ हेवादिन् जबीमृत्तिकासेंघटउत्पन्नहोवेहै ऐसेसिद्धहोइजावे तबतौ ऐसाकह्या जावेजो घटकीकारणताकेयोग्यमृत्तिकाहैपटनहीं ॥ जैसेंदेवदत्तकेपुत्रहूएविना देवदत्तकूंपिताकहनाअसंगतहै ॥ तैसेमृत्तिकासें घटउ त्पत्तिकातौ हमविचारहीकरतेहैं ॥ घटउत्पत्तिहूएविना मृत्तिकाकूंघटकेउत्पन्नकरणेके योग्यमाननाअसंगतहै ॥ ऐसेदोनोविकल्पोंकूं निराकरणकरिकै अबतृतीयविकल्पकाखंडनकरेहैं ॥ अभिन्नभीघटमृत्तिकासेंहै तथाभिन्नभीहै ॥ ऐसेअभिन्नभिन्नरूपघटकीउत्पत्तिहोवेहै यहतीसराविकल्पभीबनेनहीं ॥ काहेते एककालमैं अभिन्नभिन्नउभयरूपकहना तमप्रकाशकीन्यांईविरुद्धहै ॥ भिन्नपक्षकादोष तथाअभि न्नपक्षकादोष उभयपक्षकेमाननेसेंप्राप्तहोवेहै तेदोषऐसेपूर्वकहआयेहैं ॥ यदिघटअभिन्नउत्पन्नहोवे तौ मृत्तिकासें मृत्तिकाकी ॥ तथाघटसें घटकी उत्पत्तिहूईचाहिये ॥ मृत्तिकासें मृत्तिकाअभिन्नहै ॥ तथाघटसेंघटअभिन्नहै ॥ यातेंमृत्तिकासेंमृत्तिकाकी जैसेउत्पत्तिहोवेनहीं तथाघटसेंघटकीउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ तैसेमृत्तिकासेंघटअभिन्नउत्पन्नहोवेनहीं ॥ औरभिन्नपक्षमैंयहदोषकहाहै जैसेभिन्नपटसें घटकीउत्प त्तिहोवेनहीं तैसे भिन्नमृत्तिकासें घटउत्पन्नहोवेनहीं ॥ जैसेएकपुरुषकूं ज्वररोगहै द्वितीयकूं कफवृद्धिरोगहै ॥ जबीतेदोनोंरोग तृतीय पुरुषमैंहोवैं तबतृतीयपुरुषरोगीकैसेनकहावेगा ॥ तैसेअभिन्नपक्षमैं तथाभिन्नपक्षमैं पृथक्पृथक्दोषकहे ॥ अभिन्नभिन्नरूपउभयपक्षमैं तेदोषकैसेनहोवैंगे ॥ ऐसेतीनविकल्पतौखंडनभये सत्रूपकार्यउत्पन्नहोवेहै याचतुर्थविकल्पकानिराकरणकरेहैं ॥ यदिसत्कार्यकीउत्प त्तिमानेतौ सत्रूपउत्पत्तिसें प्रथम मृत्तिकाहै तामृत्तिकाकीउत्पत्तिकहीजावेगी घटकीउत्पत्तिबनेनहीं ॥ असत्रूपकार्यकीउत्पत्तिहो वेहै यहपंचमविकल्पमानेतौ असत्रूपवंध्यापुत्रकी उत्पत्तिहूईचाहिये ॥ सत्असत्उभयस्वरूपकार्यउत्पन्नहोवेहै यहषष्ठविकल्पभीबनेन

हीं ॥ काहेते उभयस्वरूपतौकहनाविरुद्धहै ॥ तथाउभयस्वरूपमाननेमें मृत्तिकाकीउत्पत्तिसत्मानेदोष वंध्यापुत्रउत्पत्ति असत्मानेदोष यादोनूंदोषोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंकिसीरीतिसेंभी कार्यप्रपंचसिद्धहोवेनहीं ॥ ऐसेचेतनअद्वैतहीवास्तवहै ताअद्वैतसेंभिन्नकिंचित् भीनहीं ॥ जैसेअलातसें ऋजुवक्रादिभिन्नकहेजावेनहीं भिन्नहूएसर्वथाअसत्हैं ॥ तैसेचेतनअद्वैतसेंभिन्न द्वैतसर्वथाअसतहै केवलअद्वैतहीसर्वरूपकरिप्रतीतहोवेहै ॥ विवेकीपुरुषकूं यहच्यारिपदार्थजानेचाहियें ॥ हेय ज्ञेय आप्य पाक्य ॥ हेयकहिये अनात्मस्वरूपजानकरि त्यागकरणेयोग्य ॥ ऐसेतीन अवस्था तीनशरीर तीनप्रकारकेज्ञानरूपभोग तीनप्रकारके विश्व तैजस प्राज्ञरूपभोक्ता तथातीन प्रकारकेविषयतीनअवस्थामैहोनेहारेहैं ॥ यहसर्वत्रिपुटी त्यागकरणेवासतेहीजानीचाहियें ॥ जिससेंजानकरिही त्यागहोवेहै ॥ यातें इनसर्वकूंअनात्मरूपजानकरि तिनकात्यागकरना ॥ अबद्वितीयज्ञेयरूपपदार्थकूंकहेहैं ॥ याभारतखंडमैं दुर्लभमानुष्यदेहकूंप्राप्तहोइकरि तथामानुष्योंमैभी • शूद्रादिकोंसेंविना याअधिकारीदेहकूंप्राप्तहोइकरि तथाबुद्धिमैं सामर्थ्यरूप जाधारणशक्तिहै ताकरिअद्वैततत्त्वही मुमुक्षुकूंज्ञेयहै ॥ ज्ञेयकूंनिरूपणकरि तृतीयआप्यपदार्थकूंवर्णनकरेहैं ॥ आप्यकहीयेप्राप्तहोनेयोग्य ॥ मुमुक्षुनिष्कामकूंतो प्राप्तहोनेयोग्य आत्माके श्रवण मनन निदिध्यासन यहतीनहैं ॥ स्त्रीपुत्रधनादि मुमुक्षुकूंप्राप्तहोनेयोग्यनहीं ॥ अबचतुर्थपाक्यपदार्थकूंकहेहैं ॥ पाक्यकहियेपकानेयोग्य ॥ अर्थयह निवृत्तकरणेयोग्य सोऐसेमुमुक्षुजनोंकूं रागद्वेष मानापमान हर्षशोकादिदोषहैं ॥ पूर्वकह्याजोपरमार्थतत्त्वब्रह्महै ताकूं अज्ञानीपुरुष जानसकेनहीं ज्ञानीहीप्राप्तहोवेहैं याअर्थकूंकारिकासेंकहेहैं ॥ अजेसाम्येतुयेकेचिद्भविष्यंतिसुनिश्चिताः ॥ तेहिलोकेमहाज्ञानास्तच्चलोकोनगाहते ॥ ४ ॥ अर्थयह ॥ अजन्मतथासमरूपपरमार्थतत्त्वविषे जेकोई यथार्थनिश्चयवालेहोवेंगे ॥ तेपुरुषही यासंसारमैमहाज्ञानीहैं ॥ ताज्ञानीकेमार्गकूं सामान्यबुद्धिवालेलोक विषयकरसकेनहीं ॥ ४ ॥ अबअंतमैं आपनेस्वरूपकूंनमस्कारकरेहैं ॥ जाआत्माकूं अविवेकीजानेनहीं ऐसाशुद्धसच्चिदानंदपद तथाभेदरहितपद तथानिर्विशेषपदहै ॥ ताकूंआपनास्वरूप

जानकरि हमवारंवारनमस्कारकरतेहैं ॥ इत्यलातशांतिनामकंचतुर्थप्रकरणं ॥ ॥ ॐशांतिः शांतिः शांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपाद शिष्यसंप्रदायप्रविष्ट परमहंसपरिव्राजक स्वामि अच्युतानंदगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारेमांडूक्योपनिषदर्थनिर्णयः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ अथ तैत्तिरीयोपनिषद्भाषान्तरं प्रारभ्यते ॥

105

ॐ नमः श्रीशंकराय ॥ अबयजुर्वेदकीतैत्तिरीयउपनिषत्काअर्थदिखावेहैं ॥ तित्तिरिनामवालेऋषिनेस्वशिष्योंकूंकहीहै यातेंयाउपनिषत्
कानामतैत्तिरीयऐसेकहेहैं ॥ उपनिषत्केआरंभमै शांतिमंत्रपठनकराहै ॥ ताशांतिमंत्रकेअर्थकूंदिखावेहैं ॥ प्राणवृत्तिका तथादिनकाअ
॥ १ ॥ भिमानीजोमित्रनामादेवताहै सोमित्रदेवताहमारेकूंकल्याणकरे ॥ तैसेहीरात्रिका तथाअपानवृत्तिकाअभिमानीजोवरुणहै सोवरुणहमा
रेकूं सुखकेकरणेवालाहोवे ॥ चक्षुमै तथाआदित्यमंडलमैस्थित अर्यमानामादेवता हमारेकूंसुखकरे ॥ तथाहस्तकाअभिमानी इंद्रदेवता
हमारेकूंकल्याणकरे ॥ वाणीमै तथाबुद्धिमैस्थितबृहस्पतिदेवता हमारेसुखकूंकरे ॥ पादोंकाअभिमानी अधिकबलवान्जोविष्णुहै सोवि
ष्णुदेव हमारेकल्याणकूंकरे ॥ ऐसेअध्यात्मकरणोंकेअभिमानी सर्वदेवताहमारेकल्याणकूंकरें ॥ ब्रह्मविद्याकाअर्थीमुमुक्षु समष्टिवायुरूपब्र
ह्मकूंनमस्कारकरेहै ॥ हेब्रह्मन्तेरेतांईमेरानमस्कारहै ॥ हेवायोतेरेतांईमेरानमस्कारहै ॥ हेवायो तुमब्रह्मरूपहूएही प्राणरूपसेंचक्षुआदि
कोंसेंभी अव्यवहितहो ॥ नेत्रादिकतौरूपादिकोंकेज्ञानद्वाराअनुमेयहैं ॥ नेत्रादिकोंसेंयहप्राण भोक्ताकेअत्यंतसमीपहै ॥ यातेंनेत्रादि
कोंकी अपेक्षासेंश्रुतिमै प्राणकूंप्रत्यक्षरूपताकहीहै ॥ हेवायो प्रत्यक्षब्रह्मरूपतेरेतांई मेरानमस्कारहै ॥ जैसेराजाकेद्वारपालकूं राजाकेद
र्शनकीइच्छावालापुरुष कहेहै तुमहीराजाहो ॥ तैसेहृदयमैसाक्षीरूपसेंस्थितजोब्रह्महै ताब्रह्मकेप्राप्तिकीइच्छावालामुमुक्षु प्राणकूंकहेहै ॥
तुमारेप्राणस्वरूपकूंब्रह्मरूपसें मैअधिकारीकथनकरताहूं ॥ हेप्राण बुद्धिमैजाअर्थकानिश्चयहोवेहै ॥ तथावाक्कायकरिके जोअर्थसिद्ध
होवेहै तिनसर्वरूपसें आपहीस्थितहो ॥ सर्वरूपसें आपकूंकथनकरणेद्वाराजोमैअधिकारीहूं तिसमेरेतांई विद्याकीप्राप्तिकरो ॥ तथाव ॥ ५६ ॥
क्ताजोआचार्यहै तावक्ताकूंवक्तृत्वशक्तिकेदानसेंरक्षाकरो ॥ तथाब्रह्मविद्याकेदानसें मै अधिकारीकीरक्षाकरो ॥ ऐसेब्रह्मविद्यामै विघ्न
निवृत्तिवासते अधिकारी वारंवारदेवतावोंकेतांई नमस्कारकरे ॥ औरआध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविक यातीनप्रकारकेविद्याप्रा
प्तिमैजेविघ्नहैं ॥ तिनविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते तीनवार ॐशांतिःशांतिःशांतिः यहमंत्रअधिकारीपठनकरे ॥ स्वरके तथाअक्षरोंके तथामा

त्रावोंके इत्यादिकोंकेउच्चारणमै पुरुषकूंप्रमादनप्राप्तहोवे इसप्रयोजनवासते शिक्षाअध्यायवर्णनकराहै ॥ ताशिक्षाअध्यायमै अनेकप्रकारके कर्मादिकोंकाविचारकराहै ॥ यातेंमुमुक्षुकूंविशेषअनुपयोगीजानकरि ताशिक्षाअध्यायमैंसें किसीकिसीस्पष्टमंत्रकाअर्थदिखावेहैं ॥ अधिकारी ॐकाररूपपरमेश्वरके आगेप्रार्थनाकरैहै ॥ हेसर्ववेदोंमैश्रेष्ठॐकार आपसर्वरूपहो ॥ प्रथमआपप्रजापतिकेतांईस्पष्टप्रतीतभयेहो ॥ हेपरमेश्वररूपॐकार मै अधिकारीकूं ब्रह्मविद्याकादानकरो ॥ हेभगवन् आपकीकृपाकरि मै बहुतअर्थके धारणशक्तिवालाहोवों ॥ मेराशरीर ब्रह्मविद्याकेयोग्यहोवे ॥ मेरीजिव्हामधुरभाषणेवालीहोवै ॥ औरकर्णोंकरि मै बहुतअर्थकूंश्रवणकरूं ॥ हेॐकारतुमब्रह्मकेकोशहो ॥ जैसेकोशमैखड्गरहेहै ॥ ताखड्गकोप्रतीतिकोशमैहोवेहै ॥ तैसेब्रह्मकीप्राप्ति ॐकारकेचिंतनसेंहोवेहै ॥ यातें ॐकारकूंब्रह्मकाकोशरूपसेंनिरूपणकरा ॥ बाह्यघटादिकोंकेज्ञानसें तुमप्रतीतहोतेनहीं ॥ अर्थयह ॥ बाह्यवृत्तिवालेतुमकूंजानेनहीं ॥ हेभगवन् जोआत्मज्ञान मैश्रवणकरताहूं तिनकीआपरक्षाकरो ॥ अर्थयह ॥ मेरेकूंआत्मज्ञानकीविस्मृतिनहोवे ॥ मुमुक्षुवोंकेजपवासते यहमंत्रनिरूपणकरेहैं ॥ वेदकूंजबीशिष्यनेपठनकरिलीया तबआचार्यशिष्यकूंउपदेशकरेहैं ॥ हेशिष्य सर्वकालमैसत्यसंभाषणकरणा मिथ्यासंभाषणकबीनहींकरणा ॥ वेदकानित्यपाठकरो तावेदकेविचारसें कबीप्रमादमतिकरो ॥ जैसेवामदेवऋषिने लोकोंकेउद्धारवासते आपनाअनुभववर्णनकराहै ॥ तैसेब्रह्मभूतब्रह्मवेत्तात्रिशंकुनामकऋषिनेभीलोकोंकेब्रह्मविद्याकीउत्पत्तिवासते आपनेअनुभवकानिरूपणकराहै ॥ वामदेवऋषिकाअनुभवतौआगेकहेंगे ॥ अबत्रिशंकुऋषिकाअनुभवकहेहैं ॥ मैसंसाररूपवृक्षकाअंतर्यामीरूपप्रेरकहूं ॥ मेरीपर्वतकेपृष्ठकीन्यांई कीर्त्तिउठीहै सर्वसेंउपरिपवित्रब्रह्महीमेराआत्माहै ॥ औरजैसेसूर्यउपाधिकब्रह्मअमृतस्वरूपहै ॥ तैसेमैअमृतरूपहूं ॥ औरमैप्रकाशमानहीं धनकीन्यांई अत्यंतप्रियहूं ॥ औरमैशुद्धआत्माकारबुद्धिकूं प्राप्तभयाहूं ॥ तथाजरामरणसेंरहितहूं ॥ तथा सांसारिकसर्वउपद्रवसेंरहितहूं ॥ ऐसात्रिशंकुऋषिकाअनुभव ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते वारंवारविचारणा ॥ वेदकूंआचार्यसेंग्रहणकरि

सर्वत्यागीहोवैंनहीं ॥ यातेंब्रह्मचर्यसेंपश्चात् गृहस्थआश्रमकूं धारणकरणेकीइच्छावालाजोपुरुषहै ताकूंआचार्यअबकहेहैं ॥ हेशिष्यजो
वेदकाउपदेष्टाआचार्यहै ताकूं वेदपठनकरिके प्रिय धनरूपदक्षिणाकादानकरो ॥ तादक्षिणादानकेपीछे आपनेगृहस्थाश्रममैं स्थितहो
॥ २ ॥ इकरि पुत्रउत्पत्तिवासतेयत्नकरो ॥ प्रजारूपतंतुकाउच्छेदमतिकरो ॥ औरगृहस्थाश्रममैंस्थितहोइकरि नित्यवेदकापाठकरो ॥ सत्यसं
भाषणकरो ॥ धर्मकरो ॥ आपनीरक्षाअर्थअनेकप्रकारकेकर्मकरो ॥ औरमंगलकरणेहारेकर्मसें कदाचित्प्रमादनहींकरणा औरसंध्या
कालमैं भस्मकेत्रिपुंड्रकेलगानेसेंकबीप्रमादनहींकरणा ॥ वेदकेपठनेपठानेसेंप्रमादमतिकरो ॥ देवतापित्रोंकेवासते अग्निहोत्रश्राद्धादि
कर्मोंकूंकरो तिनसेंप्रमादमतिकरो ॥ माता पिता आचार्य तथाअतिथि इनच्यारिकूंदेवताजैसामानो ॥ संसारमैं जे निंदितकर्महैं ति
नकूंकबीमतिकरो सर्वकालमैंशुभकर्मकूंकरो ॥ जेहमारेसेंश्रेष्ठमहात्मापुरुषहैं तिनकीअनेकप्रकारसेंसेवाकरो ॥ जोमहात्माकहैं तिसकूंधा
रणकरो ॥ औरतिनमहात्मावोंकेसाथ विवादकरनेसें महान्क्लेशप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंतिनमहात्मावोंसें कदाचितविवादमतिकरो ॥ जोकिं
चित्भीकिसीकेताईंदानकरो तौश्रद्धाकरिदानकरो ॥ श्रद्धाविनादानमतिकरो ॥ विभूतिकरिकेदानकरो ॥ लज्जाकरिकेदानकरो ॥ भय
करिकेदानकरो ॥ मित्रादिकोंकेकार्यकरिदानकरो ॥ ऐसेअनेकप्रकारकेकर्मकरणेवालेतुमकूं किसीकर्ममैंयदिसंशयउत्पन्नहोइजावे ॥ तौ
तादेशमैंजेमहात्माकर्मकरणेहारेहैं ॥ तेविचारयुक्त तथाकठोरतारहित तथानिष्कामस्वधर्मकेअनुष्ठानकरणेहारे जैसेकर्मकूंकरेहैं ॥ तिन
कूंदेखकरि तुमभीतैसेकर्मकरो ॥ तथातिनसेंपूछकरि संशयकीनिवृत्तिकरो ॥ हेअधिकारिजना यहउपदेश पुत्रादिकोंकूंवारंवारहै ॥ औ
रवेदकारहस्यभीयहहीहै तथाईश्वरकीयहहीआज्ञाहै ॥ अधिकारीपुरुष चित्तशुद्धिवासतेअवश्यकर्मकरे यहसर्वअध्यायकाअर्थहै ॥ अब
द्वितीयअध्यायकेआरंभमैं ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिविषेजेविघ्नहैं तिनकीनिवृत्तिवासते औरशांतिमंत्रहै ॥ ताशांतिमंत्रकेअर्थकूंदिखावेहैं ॥ सो ॥ ५७ ॥
परमात्मा हमगुरुशिष्यदोनोंकी ज्ञानप्रकाशकरनेसेंरक्षाकरे ॥ तथाहमदोनोंकी ज्ञानकेफलप्रगटकरनेसेंरक्षाकरे ॥ हमगुरुशिष्यका पठा

नापठना सर्वविघ्नोंकेनाशकरनेमैंसमर्थहोवे ॥ प्रमादकरिपठानेपठनेसें प्राप्तभयाजोद्वेष सोद्वेषनिवृत्तहोवे आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदैविकयातीनप्रकारकेविघ्नोंकीनिवृत्तिवासते ॐशांतिः शांतिः शांतिः यहमंत्रतीनवारपठनकरणा ॥ तैत्तिरीयउपनिषत्कीदोवलीहैं ॥ एकतो आनंदवल्लीहै ॥ द्वितीयभृगुवल्लीहै ॥ प्रथमआनंदवल्लीकेअर्थकूंदिखावेहैं ॥ आनंदवल्लीकेप्रथम यहसूत्ररूपवचनकथनकराहै ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ अर्थयह ब्रह्मवेत्तापरब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यासूत्रमैंसमग्रब्रह्मविद्यास्थितहै ॥ जाकेअल्पअक्षरहोवें बहुतअर्थकूंसूचन करे ताकूंसूत्रकहेहैं ॥ सर्वग्रंथोंकेच्यारिअनुबंधहोवेहैं ॥ वेदांतकेच्यारिअनुबंधोंकूंभीसूचनकरणेहारायहसूत्रहै ॥ च्यारिअनुबंधोंकूं जैसेसूचनकरेहै तैसेजनावेहैं ॥ ब्रह्मविदाप्नोतिपरं ॥ यासूत्रमै ब्रह्मकहनेसें प्रथमअज्ञातहूआ ब्रह्मात्माविषयकह्याहै ॥ अज्ञातहीविषयहोवेहै ॥ औरयावाक्यकेश्रवणकरनेसें सामान्यरूपसेंब्रह्मकाज्ञानहूएभी बिशेषआत्मरूपकरि ब्रह्मज्ञानकेनहोनेसें सूत्रमैंस्थितब्रह्मपद विषयकाबोधकहै ॥ आगेप्रयोजनदोप्रकारकाहोवेहै एकतोगौणप्रयोजनहै दूसरामुख्यप्रयोजनहै ॥ अंतःकरणकीवृत्तिरूप अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका यथार्थनिश्चयतो गौणप्रयोजनहै ॥ अविद्यानिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मप्राप्ति यहमुख्यप्रयोजनहै ॥ दोनोंप्रकारकेप्रयोजनकीकामनावाला अधिकारीहै ॥ संबंधरूपचतुर्थअनुबंधयहहै जोग्रंथका औरअधिकारीका बोधकबोध्यसंबंधहै ॥ अधिकारीबोध्यहै वेदांतबोधकहै ॥ ज्ञानका औरवेदांतका जन्यजनकभावसंबंधहै ॥ ब्रह्मका औरवेदांतशास्त्रका अभिव्यंग्य अभिव्यंजकभावसंबंधहै ॥ जैसेहरीतकीऔरआमलादिकोंकेभक्षणसें पूर्वसिद्धजलकेमधुररसकी अभिव्यक्तिहोवेहै ॥ तैसेवेदांतशास्त्रकेश्रवणसें पूर्वसिद्धब्रह्मकीप्रगटताहोवेहै यातेंब्रह्म अभिव्यंग्यहै ॥ तासिद्धब्रह्मकूंही आमलादिकोंकीन्यांई वेदांतशास्त्रप्रगटकरावेहै यातेंवेदांतशास्त्रअभिव्यंजकहै ॥ तथावेदांतशास्त्र ज्ञानद्वाराअज्ञानकानिवर्त्तकहै ॥ अज्ञाननिवर्त्त्यहै ॥ यातेंवेदांतशास्त्रका औरअज्ञानका निवर्त्तकनिवर्त्त्यभावसंबंधहै ॥ इसतैत्तिरीयउपनिषत्कीसमाप्तिपर्यंत पूर्वउक्तसूत्रकाहीअर्थनिरूपणकराहै केवलअनुबंधकूंसूचनकरिकेही सूत्रसमाप्तनहींभया ॥ यातेंसूत्रकेअर्थकूंही

समग्रउपनिषत्वर्णनकरेहै ॥ सूत्रमैंस्थित जोप्रथमब्रह्मपदहै ताब्रह्मपदकाअर्थपरमात्माहै ॥ अबताब्रह्मकेलक्षणकूंकहेहैं ॥ ब्रह्मकालक्षण भा० ७
तै० उ० दोप्रकारकाहै एकस्वरूपलक्षणहै दूसरातटस्थलक्षणहै ॥ जोअसाधारणधर्म आपनेआश्रयकास्वरूपभूतहोइकरिआपनेआश्रयकूं इत
रोंसेंभिन्नकरे ताकूंस्वरूपलक्षणकहेहैं ॥ जैसेपृथिवीमैंरहनेहारा पृथिवीत्वधर्म पृथिवीकास्वरूपभूतहूआ पृथिवीरूपआश्रयकूं इतरजला
॥ ३ ॥ दिकोंसेंभिन्नकरेहै ॥ यातेंपृथिवीत्व पृथिवीकास्वरूपलक्षणहै ॥ यद्यपि नैयायिक पृथिवीत्वकाऔरपृथिवीकाभेदमानेहैं यातेंस्वरूप
लक्षणकैसेवर्णनकरा ॥ तथापि वेदांतमतमै जातिव्यक्तिकातादात्म्यहै ॥ यातेंपृथिवीत्वजातिकूं स्वरूपलक्षणताबनेहै ॥ तैसेब्रह्मकेस्वरू
पलक्षणकूं श्रुतिभगवती निरूपणकरेहै ॥ सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म ॥ अर्थयह ॥ सत्यरूप ज्ञानरूप अनंतरूप ब्रह्महै ॥ शास्त्रकीदृष्टिकूंअंगी
कारकरिकेतौ यावाक्यमैंतीनलक्षणहैं ॥ लौकिकदृष्टिकूंअंगीकारकरिके सत्यज्ञानअनंतयहएकहीब्रह्मकालक्षणहै ॥ यालक्षणसें असत्
जड देशकालवस्तुकरि परिच्छिन्नवस्तुकी निवृत्तिहोवेहै ॥ ऐसे सत्यचित्अनंतस्वरूपब्रह्मकूं जोबुद्धिरूपीगुहामै साक्षीरूपसेंस्थितजान
ताहै सोपुरुषब्रह्मरूपहूआ एककालमैंसर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अबब्रह्मकेद्वितीयतटस्थलक्षणकूं निरूपणकरेहैं ॥ जोअसाधारणधर्म
आपनेआश्रयसेंभिन्नहोवे और आपकादाचित्कहूआ आपनेआश्रयसेंभिन्नोंकीव्यावृत्तिकरे ताकूंतटस्थलक्षणकहेहैं ॥ जैसेन्यायमतकी
रीतिसेंगंध पृथिवीकीउत्पत्तिकालमैंहोवेनहीं किंतुपृथिवीकीउत्पत्तिसेंपश्चात् उत्पन्नहोवेहै ॥ और महाप्रलयकालमै पृथिवीमैंगंधरहे
नहीं औरजलादिकोंसें पृथिवीकूं भिन्नकरेहै ॥ यातेंगंधपृथिवीकातटस्थलक्षणकहीयेहै ॥ तैसेजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणा यहब्रह्म
कातटस्थलक्षणहै ॥ काहेते प्रलयकालमै तथामोक्षकालमै जगत्कीउत्पत्तिआदिककरणा ब्रह्ममैंहैनहीं ॥ औरब्रह्मसेंभिन्नहूआ ब्रह्मकूं ॥ ५८ ॥
प्रधानपरमाणुआदिकोंसेंभिन्नकरेहै ॥ यातेंजगत्उत्पत्तिआदिकारणता ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ पूर्वमंत्रमै अनंतब्रह्मकह्याथा ताअनंतपद
काअर्थयहहै जावस्तुकाकिसीदेशमै तथाकिसीकालमै अभावनहोवे ॥ औरजावस्तुसेंभिन्नकिंचित्मात्रनहोवे किंतुसर्वरूपहीहोवे ता

कूंअनंतकहेहैं ॥ ब्रह्मसर्वव्यापकहै तथानित्यहै औरसर्वरूपहै ॥ यातेंअनंतहै ऐसेश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ आकाशादिसर्वजगत् ब्रह्मसें भिन्नप्रतीतहोवेहै यातेंब्रह्मकूंसर्वरूपताकहनाअसंगतहै याप्रकारकीशंकाकीनिवृत्तिवासतेही आकाशादिकोंकी ब्रह्मसेंउत्पत्तिवर्णनक रीहै ॥ जैसेघटादिककार्य मृत्तिकासेंउत्पन्नहूआ मृत्तिकासेंभिन्ननहींहै ॥ तैसेब्रह्मसें उत्पन्नहूआजगत् ब्रह्मसेंभिन्ननहींहै ॥ याअर्थके बोधनअर्थही आकाशादिकोंकीउत्पत्ति ब्रह्मसेंकथनकरीहै ॥ ताउत्पत्तिके प्रकारकूं वर्णनकरेहैं ॥ सूत्रभागमें तथासत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म यामंत्रमेंकथनकराजोब्रह्महै ताब्रह्मसें आकाशउत्पन्नभया ॥ औरशुद्धकूंयदिकारणमानेतो मोक्षअवस्थामेंभी जगतउत्पन्नहूआचाहिये इत्यादिअनंतदोषहैं ॥ यातेंमायाविशिष्टपरमात्मासें जगतउत्पन्नहोवेहै ॥ तामायाविशिष्टपरमात्मासेंहीं आकाशउत्पन्नभया ॥ आका शरूपउपाधिउपहितपरमेश्वरसें वायुउत्पन्नभया ॥ वायुउपहितपरमेश्वरसें अग्निउत्पन्नभया ॥ अग्निउपहितपरमेश्वरसें जलउत्पन्नभये ॥ तथाजलउपहितपरमात्मासेंपृथिवीउत्पन्नभयी ॥ सोपरमात्मा इनसूक्ष्मपंचभूतोंका पंचीकरणकरताभया ॥ पंचीकरणकाप्रकारसंक्षेप करिप्रसंगसेंकहेहैं ॥ प्रथमपंचभूतोंकेदोदोवृद्धभागकरे ॥ पंचवृद्धभागोंकूं तो पृथक्राखा ॥ द्वितीयपंचभागोंकेच्यारिच्यारिभागकरे औरआपनेआपनेभागोंकूंत्यागकरि दूसरेभूतोंकेभागोंमैंमेलनेसें पंचीकरणहोवेहै ॥ परंतुपृथिवीआदिकभूतोंके जेतामसभागहैं तिन कापंचीकरणभया ॥ औरतिनभूतोंकेमिलेहूए राजसभागसेंप्राणकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ औरभिन्नभिन्नराजसभागोंसेंतो पंचकर्मइंद्रियोंकी उत्पत्तिहोवेहै ॥ आकाशकेराजसभागसें वाक्इंद्रियकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ वायुकेराजसअंशसेंहस्त तथाअग्निकेराजसअंशसेंपाद तथाज लेंकेराजसअंशसेंगुदा तथापृथिवीकेराजसअंशसेंउपस्थ इंद्रियउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेअपंचीकृतभूतोंकेराजसभागकाकार्यनिरूपणकरा ॥ सात्विकभागकेकार्यकूंकहेहैं ॥ भूतोंकेमिलेसात्विकभागसें अंतःकरणउत्पन्नभया ॥ वृत्तिभेदसेंअंतःकरणच्यारिप्रकारकाहै ॥ संकल्प विकल्परूपवृत्तिसेंमन तथानिश्चयवृत्तिसेंबुद्धि तथास्मरणवृत्तिसेंचित्त तथाअहंकरणवृत्तिसें अहंकारकहावेहै ॥ भूतोंकेपृथक्पृथक्सात्विक

भागोंकेकार्यकहेहैं ॥ आकाशकेसात्विकभागसें श्रोत्र वायुकेसात्विकभागसेंत्वक् अग्निकेसात्विकभागसेंचक्षु जलोंकेसात्विकभागसें
रसना पृथिवीके सात्विकभागसें घ्राणइंद्रियउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेसूक्ष्मभूतोंकेसात्विकभोगोंसेंतौ समष्टिव्यष्टिरूपसूक्ष्मशरीरकीउत्पत्तिभ
॥ ४ ॥ यी ॥ और सूक्ष्मभूतोंकेतामसभागोंका पंचीकरणपरमात्मानेकरा ॥ पंचीकरणसेंपंचभूतस्थूलहोवेहैं ॥ इनस्थूलभूतोंसें ब्रह्मांडउत्पन्न
भया ब्रह्मांडमै चतुर्दशभुवनउत्पन्नभये ॥ औरस्थूलपृथिवीसें फलपाकपर्यंतजे औषधियांहैं तेऔषधियांउत्पन्नभयी ॥ तिनऔषधियों
सें व्रीहियवादिअन्नउत्पन्नभया ॥ मातापितानेभक्षणकराजोअन्नहै ताअन्नसेंवीर्यउत्पन्नभया ॥ तावीर्यसेंशिरहस्तपादादिकोंवालाश
रीरउत्पन्नभया ॥ ऐसेआकाशादिकसर्वजगत् ब्रह्मात्मासें उत्पन्नहोनेसें ताब्रह्मात्मासेंभिन्ननहीं ॥ यातेंब्रह्मअनंतहै यहनिरूपणकरा ॥
अबताब्रह्मकेज्ञानवासते पंचकोशोंकूं श्रुतिभगवतीमुमुक्षुजनोंपरकृपालुहूईकथनकरेहै ॥ पूर्वनिरूपणकराजोब्रह्महै सोब्रह्महीसाक्षीरूप
सेंस्थितहै ॥ ताअंतरसाक्षीकेबोधवासते प्रथमश्रुति अन्नमयकोशकानिरूपणकरेहै ॥ अन्नकेभक्षणसें शुक्रशोणितद्वारा उत्पन्नभयाजो
पुरुषशरीरहै यहशरीरहीअन्नमयकोशहै ॥ और याशरीरसेंहीपुरुषकूंब्रह्मज्ञान तथाधर्माधर्मकाज्ञान लोकपरलोककाज्ञानहोवेहै ॥ पशुआ
दिकशरीरोंमै ब्रह्मज्ञानआदिकहोवेनहीं ॥ यातेंपशुआदिकशरीरोंकूंत्यागकरि पुरुषशरीरकूंहीअन्नमयकोशरूपसें वर्णनकराहै ॥ इनपंच
कोशोंकूं जोआत्मरूपताकाकथनहै सोशाखाकेअग्रचंद्रमाहै याकीन्यांई आत्मासाक्षीकेबोधनवासतेहै ॥ कोईअन्नमयादिक
हीआत्माहै यानिरूपणवासतेनहीं ॥ अबअन्नमयकोशकूं ध्यानवासते पक्षीरूपसेंवर्णनकरेहैं ॥ जैसेपक्षीके शिरवामपक्ष द
क्षिणपक्ष उदर पुच्छ यहपंचअवयवहोवेहैं ॥ तैसेयाअन्नमयकोशके पंचअवयवकल्पनाकरिकेहेहैं ॥ तेपंचअवयवयहहैं ॥ अन्नमयकोश ॥ ५१ ॥
रूपपक्षीका यहप्रसिद्धशिरहीशिरहै ॥ दक्षिणभुजादक्षिणपक्षहै ॥ वामभुजाउत्तरपक्षहै ॥ यहप्रसिद्धउदरहीउदरहै ॥ औरनाभिकेनीचेपादप
र्यंतदेश पुच्छहै ॥ यापुच्छकूंस्थितिकाआधारहोनेसें तापुच्छकूंही प्रतिष्ठायानामकरिकेकथनकराहै ॥ यद्यपि प्रसिद्धपक्षीतौ आप

नीपुच्छउपरिस्थितहोवेनहीं ॥ तथापिवानरभल्लुक आदिजीवोंकीस्थिति पुच्छउपरिभीहोवेहै यास्थितिकाआधार प्रतिष्ठापदकाअर्थक ह्या ॥ ताअन्नमयकोशविषे यहमंत्रहै ॥ रसबीजरूपसेंपरिणामकूंप्राप्तभयाजोअन्नहै ताअन्नसेंही यापृथिवीमैंस्थितजेप्रजाहैं तेसर्वप्रजा उत्पन्नहोवेहैं ॥ ताअन्नकरिकेही जीवनकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ औरपृथिवीरूपअन्नमैंही लयकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ जोजीवजाकूंभक्षणकरेहै ताभक्षण करणेयोग्यपदार्थकूंही अन्नकहेहैं ॥ जलकरिवृक्षादिकोंकाजीवनहोवेहै यातेंतिनकाजलहीअन्नहै ॥ सिंहादिकमांसकूं भक्षणकरेहैं यातेंतिनकामांसहीअन्नहै ॥ मनुष्य शाकादिकोंकूंभक्षणकरेहैं तिनमनुष्योंका शाकादिरूपजीवहीभोजनहै ॥ यहअर्थअन्यग्रंथमेंभीलि खाहै ॥ जीवोजीवस्यभोजनं ॥ अर्थयह जीवहीजीवकाभोजनहै ॥ सर्वजीवोंकेउत्पत्तिस्थितिलय अन्नमैंहीहोवेहैं इसीसेंयहअन्नज्येष्ठ हैकहीये सर्वभूतोंकावडाहै और सर्वरोगरूपक्षुधाका निवर्तकहोनेसें सर्वौषधभीअन्नकूंकहेहैं ॥ जेपुरुष अन्नकूंही भूतोंकेउत्पतिस्थिति लयकाकारणरूपजानकरि उपासनाकरतेहैं ॥ और सर्वभूतोंकाज्येष्ठ तथासर्वौषधरूपसें अन्नकीउपासनाकरतेहैं तथाअन्नकीहि ब्र ह्मरूपसेंउपासनाकरतेहैं ॥ ऐसेउपासक मनवांछितअन्नकीप्राप्तिरूपफलकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ उपनिषतकेआदिमें तथासमाप्तिमें ब्रह्मकाप्रति पादनकराहै ॥ यातेंअन्नआदिकोंकाब्रह्मरूपसें जोध्यानकाफलकथनकरा सोअर्थवादहै पूर्वपूर्वकोशमें आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकराइकें सा क्षीआत्माकेबोधनमैंवेदकातात्पर्यहै ॥ औरअन्नमयआदिकपंचकोशोंका पक्षीरूपसेंजोवर्णनहै ॥ सोभी केवलआत्माकेबोधनमैंप्रकार है ॥ पक्षीरूपसें उपासनामें वेदकातात्पर्यनहीं ॥ जैसेकन्याकूं अरुंधतीकादर्शनकरानेवासते अनेकतारावोंकूं अरुंधतीरूपताकाकथ नहै ॥ तैसेप्रत्यगात्माकेबोधवासते अन्नमयादिकोंकूं आत्मरूपताकाकथनहै ॥ अन्नमयादिकोंकेआत्मरूपताकेबोधनवासते वाअन्नम यादिकोंकीआत्मरूपसें उपासनाकेवासते अन्नमयादिकोंकूंआत्मरूपताकाकथननहीं ॥ याअभिप्रायकेबोधनवासतेही कोशोंकीपरंप राकूंदिखावेहैं ॥ पूर्वकहेअन्नमयकोशसें अंतरतथाभिन्न आत्माप्राणमयहै ॥ जैसेवायुकरिमशकपूर्णहोवेहै ॥ तैसेअंतरप्राणमयकोशरूप

आत्माकरिके यहअन्नमयकोशपूर्णहोवेहै ॥ जैसेमूषाविषेप्राप्त जेद्रवीभूतताम्रादिधातुहैं तिनताम्रादिकोंकरिके मूषापूर्णहोवेहै ॥ तैसे
प्राणमयकरिके यहअन्नमयकोशपूर्णहै ॥ औरप्राणमयकोश पंचअवयववालाहोनेसें अन्नमयकोशकेसदृशहै ॥ जैसेपंचअवयववा
॥ ५ ॥ लाहोनेसें अन्नमयकेसदृशहै तैसेनिरूपणकरेहैं ॥ मुखनासिकाकरिचलनहाराजोप्राण सोप्राणही याप्राणमयकोशरूपपक्षीकाशिरहै ॥
सर्वशरीरमैंगमनकरणेहाराव्यान दक्षिणपक्षहै ॥ औरनीचेगमनकरणेहाराअपानवायु उत्तरपक्षहै ॥ आकाशहैदेवताजाकाऐसास
मान सर्वअंतरअन्नजलकूंसमकरणेहारा उदरहै ॥ पृथिवीहै देवताजाका ऐसाऊर्ध्वगमनकरणेहारा उदानपुच्छहै ॥ औरउदानवायुके श
रीरसेंबाह्यनिकसनेसें सर्वबाह्यनिकसेहैं ॥ यातें सोउदानप्रतिष्ठाहै ॥ ताप्राणमयकोशमैं मंत्रकूंकहेहैं ॥ प्राणरूपदेवकरिकेही सर्वदेव
तामनुष्यपशुआदिकचेष्टाकरेहैं ॥ प्राणहीसर्वजीवोंकाआयुरूपहै ॥ यातेंहीवेदभगवान्प्राणकूं सर्वायुषयानामकरिके कथनकरेहै ॥
पूर्वअन्नमयकोशकीन्यांई याप्राणमयकोशकेब्रह्मरूपसें उपासनकरनेसें श्रुतिफलप्रतिपादनकरेहै ॥ जेपुरुष प्राणमयकूंब्रह्मरूपसें
उपासनाकरतेहैं ॥ तेपुरुष सर्वआयुकूंयालोकमैंप्राप्तहोवेहैं ॥ तिनका अपमृत्युकदाचितहोवेनहीं ॥ प्राणहीसर्वभूतोंकाआयुहै
यातेंहीप्राणकूं आयुरूपश्रुतिमैंकहाहै ॥ ऐसेप्राणकूं सर्वायुषरूपसें तथाब्रह्मरूपसें उपासनाकरनेवालेकूं आयुप्राप्तिकही ॥ पूर्वअन्नमय
कोशका यहप्राणमयआत्माहै ॥ तात्पर्ययहहै जोअन्नमयमैंआत्मत्वबुद्धित्यागकरि प्राणमयआत्माहै यहजानना ॥ अबतृतीयमनोम
यकोशकानिरूपणकरेहैं ॥ जैसेअन्नमयकोशसेंभिन्न अंतरप्राणमयकह्या तैसेताप्राणमयकोशसें अंतर तथाप्राणमयकोशसेंभिन्न मनोम
यकोशहै ॥ तामनोमयकरिके प्राणमयपूर्णहै ॥ प्राणमयकेसदृशहीमनोमयहै ॥ जैसेपंचअवयववालाहोनेसें प्राणमयकेसदृशमनोमय ॥ ६० ॥
कोशहै ॥ तैसेनिरूपणकरेहैं ॥ तामनोमयकोशरूपीपक्षीका यजुर्वेदशिरहै ॥ ऋग्वेददक्षिणपक्षहै ॥ सामवेदउत्तरपक्षहै ॥ वेदमैंजोव्या
ख्यानरूपब्राह्मणभागहै ॥ सोब्राह्मणभागमनोमयकोशरूपीपक्षीकाउदरहै ॥ अथर्ववेदपुच्छहै ॥ शांतिपुष्टिआदिगुणोंकाकारणहोनेसें सो

अथर्ववेदस्थितिकाहेतुहै यातेंप्रतिष्ठाहै ॥ यद्यपि बाह्यऋगादिवेदोंकूं शब्दरूपहोनेसें मनोमयकोशकेअवयवरूपकहनाविरुद्धहै ॥ तथा
पि वेदोंकेस्वरवर्णआदिस्वरूप तथातिनवेदोंकीप्रमाणताकूं सिद्धकरणेहारी जेमनकीवृत्तियांहैं ॥ तेमनमैंहीरहेहैं ॥ यातेंमनोमयकोशका
तेवृत्तियांअवयवरूपबनेहैं ॥ यामनोमयकोशमैंही यहमंत्रकहेहैं ॥ जैसेब्रह्मस्वप्रकाशमैं मनवाणीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तैसेयामनोमयको
शरूपब्रह्ममैं मनवाणीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ आपनेस्वरूपमैं आपनीप्रवृत्तिकहींदेखीनहीं ॥ जैसेअग्निआपनेसेंभिन्नकाष्ठादिकोंकादाहकरे
है आपनादाहकरेनहीं तैसेमनवाणी आपनेसेंभिन्नमैंप्रवृत्तहोवेहैं मनवाणीविशिष्टआत्मरूपस्वस्वरूपमैं मनवाणीप्रवृत्तहोवेंनहीं ॥ ऐसे
आनंदरूपतथाब्रह्मरूपजानकरि मनोमयकोशकाजोध्यानकरताहै सोध्यातापुरुष जन्ममरणआदिसंसारसें भयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ ति
सपूर्वकहेप्राणमयका यहमनोमयकोशआत्माहै ॥ यातेंप्राणमयमैंआत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि मनोमयकूं आपनास्वरूपजाने ॥ अबच
तुर्थविज्ञानमयकोशकानिरूपणकरेहैं ॥ तामनोमयकोशसेंभिन्न तथातासें अंतर विज्ञानमयआत्माहै ॥ याविज्ञानमयकरिकेही सोमनो
मयपूर्णहै ॥ पंचअवयववालाहोनेसें मनोमयकेयहविज्ञानमयसदृशहै ॥ पंचअवयवनिरूपणकरेहैं ॥ गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे विश्वासरू
पश्रद्धा याविज्ञानमयकोशरूपपक्षीकाशिरहै ॥ शास्त्रविषेकहेकर्मोंके मीमांसाशास्त्रके विचारसें उत्पन्नभयी जामांनसीबुद्धिहै ॥ ता
कूंऋतकहेहैं ॥ सोऋतदक्षिणपक्षहै ॥ करेहूए शुभकर्मकूं विषयकरणेहारीबुद्धिकूं सत्यकहेहैं ॥ सोसत्यउत्तरपक्षहै ॥ वेदांतशास्त्रकानि
श्रयरूपयोगउदरहै ॥ हिरण्यगर्भरूपसमष्टिबुद्धिकूं महकहाहै ॥ सोमहपुच्छहै ॥ औरसर्वस्थूलप्रपंचकाकारणहोनेसें सासूक्ष्मसम
ष्टिबुद्धिप्रतिष्ठाहै ॥ याविज्ञानमयकोशमैंभीयहमंत्रहै ॥ जोपुरुष विज्ञानमयका यावक्ष्यमाणरीतिसेंउपासनाकरेहै ताकूंफलकहेहैं ॥ यह
विज्ञान यज्ञादिकवैदिककर्मोंकूं तथागमनआगमनादिकलौकिककर्मोंकूं करणेहाराहै ॥ सर्वदेवताइंद्रआदिकभी याविज्ञानमयकूंब्रह्म
जानकरि उपासनाकरेहैं ॥ ऐसेविज्ञानमयकूं जोपुरुषब्रह्मरूपजानताहै ॥ तथादेहादिकोंमैं आत्मत्वबुद्धिरूपप्रमादकूं नहींकरता सदा

हीविज्ञानमयकूं आत्मरूपजानेहै ॥ सोपुरुषदेहअभिमानकेअभावसें देहकृतसर्वपापोंसेंरहितहूआ सर्वकामनावोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वमनोमयका यहविज्ञानमयआत्माहै ॥ अबआनंदमयरूपपंचमकोशकानिरूपणकरेहैं ॥ ताविज्ञानमयसेंभिन्न तथाअंतर आनंदमयकोशहै ॥ ताआनंदमयकरिके यहविज्ञानमयपूर्णहै ॥ जैसेविज्ञानमयकेपंचअवयवकहे ॥ तैसेया आनंदमयकेपंचअवयवहैं ॥ यातेंविज्ञानमयकेसदृशहै ॥ अबपंचअवयवनिरूपणकरेहैं ॥ अनुकूलपुत्रादिपदार्थकेदर्शनजन्यजोसुखहै ताकूंप्रियकहेहैं ॥ सोप्रियआनंदमयकोशरूपपक्षीकाशिरहै ॥ तथाइष्टपदार्थकीप्राप्तिजन्यसुखकूं मोदकहेहैं ॥ सोमोददक्षिणपक्षहै ॥ इष्टपदार्थकेभोगसें उत्पन्नभयाआनंदप्रमोदहै ॥ सोप्रमोदउत्तरपक्षहै ॥ और प्रिय मोद प्रमोद इनसर्वमैसामान्यरूपसेंव्यापकजोआनंदहै सोआनंदउदरहै ॥ सर्वजगत्काकारणरूपब्रह्म तथाअधिष्ठानरूपब्रह्म आनंदमयपक्षीकापुच्छहै ॥ तथाप्रतिष्ठाहै ॥ याआनंदमयकरिकेही विज्ञानमयपूर्णहै ॥ यातेंविज्ञानमयकायहआनंदमयआत्माहै ॥ विवेकीपुरुष याविज्ञानमयकोशमै आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरिके आनंदमयकोशकूं आत्मरूपसेंनिश्चयकरे ॥ ऐसेश्रुतिमैपंचकोशकानिरूपणकराहै सोकेवलअधिष्ठानब्रह्मकेबोधवासतेहै ॥ अन्नमयादिकपंचकेनिरूपणवासतेनहीं ॥ काहेते ॥ अधिष्ठानब्रह्मात्माकेज्ञानसें मोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवेहै ॥ अन्नमयादिकोंकेज्ञानसें मोक्षरूपफलहोवेनहीं ॥ ऐसेविवेकीपुरुष अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय इनच्यारिकोशोंकूं अनात्माजानकरि आनंदमयकोशकाअधिष्ठानरूप तथापुच्छकीन्यांईपुच्छजोब्रह्म ताकूंनिश्चयकरे ॥ आनंदमयहीआत्माहै ताकाब्रह्मपुच्छहै ऐसेजानेनहीं ॥ ब्रह्मकेज्ञानवासतेपंचकोशकहेहैं ॥ तथाएकएककोशकेपंचपंच अवयवश्रुतिनेकहे पंचमआनंदमयकोशके च्यारिअवयवनिरूपणकरिके श्रुतिनेविचारकराजो पुच्छरूपअवयव आनंदमयपक्षीकाकिसपदार्थकूंकहूं औरकोईपदार्थप्रतीतहोवेनहीं ऐसेविचारकरिपुच्छरूपब्रह्मनहींभी तौभी अधिष्ठानब्रह्मकूं पुच्छरूपश्रुतिनेकहाहै ॥ यातेंअधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानवासतेहीपंचकोशनिरूपणकरे ॥ ताब्रह्मकेस्वरूपमैयहमंत्रहै ॥ जोपुरुषब्रह्मकूंअसत्जानेहै सोपुरुष

आपहीअसत्होवैहै ॥ औरजोपुरुष ब्रह्मकूंसतरूपजानैहै ॥ तापुरुषकूं ब्रह्मवेत्तासत्रूपजानैहैं ॥ ऐसेआत्माकेवास्तवस्वरूपकूं श्रवणरीतिसेंकहा अबमननरीतिसें प्रश्नउत्तरद्वारा ताआत्माकानिरूपणकरैहैं ॥ प्रथमयहप्रश्नहै सत्यज्ञानअनंतरूपब्रह्मजोवेदांतीमानैहैं सोमाननामिथ्याहै ॥ काहेते जोब्रह्मसत्यादिरूपहोता तोपृथिवीजलादिकोंकीन्यांई हमसर्वकूंप्रतीतहोता प्रतीतहोवेनहीं ॥ यातेंसोब्रह्महैनहीं ॥ १ ॥ द्वितीयप्रश्नयहहै ॥ ब्रह्मसर्वकाआत्माहै औरब्रह्मकाकिसीविषे पक्षपाततौहैनहीं ॥ यातेजैसेज्ञानीब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै तैसेअज्ञानी ब्रह्मकूंकिसवासतेनहींप्राप्तहोता ॥ २ ॥ अबतृतीयप्रश्नकूंनिरूपणकरैहैं ॥ जैसे व्यापकजोआकाशहै सोआकाश ज्ञानीअज्ञानी सर्वकूंप्राप्तहै ॥ ताआकाशकीज्ञानीकूंप्राप्ति अज्ञानीकूंअप्राप्ति कहनीविरुद्धहै ॥ तैसेसर्वत्र आत्मरूपकरिव्यापकब्रह्मकी ज्ञानीकूंप्राप्ति अज्ञानीकूंअप्राप्ति कहनीविरुद्धहै ॥ यदिअज्ञानीब्रह्मकूंप्राप्तनहींहोता तौविद्वान्भीब्रह्मकूंप्राप्तनहींहूआचाहिये ॥ ३ ॥ इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर विस्तारसेंनिरूपणकरैहैं ॥ प्रथमअंतकेदोनोंप्रश्नोंका समाधानयहहै ॥ यद्यपि ब्रह्मसर्वकाआत्माहै यातेंअज्ञानीकूंभीप्राप्तहै ॥ तथापि ब्रह्मज्ञानकरि अज्ञाननिवृत्तिसें ज्ञानी ब्रह्मकूंनिरावरणआत्मरूपसें जानताहूआ ब्रह्मकूंप्राप्तभया ऐसेकह्याजावैहै ॥ अज्ञानीका आवरणनिवृत्तभयानहीं यातेंअज्ञानी ब्रह्मकूंप्राप्तनहींभया ऐसेकह्याजावैहै ॥ जैसेकिसीदोपुरुषोंकेगृहमैं स्वर्णरूपनिधि पृथिवीमैंदाबी होवे ॥ एकपुरुषकूंतौ किसीदयालुनेकहदीया जोतेरेगृहमैंअनंतस्वर्णरूपनिधिहै तूंदरिद्रीकिसवासतेभयाहै ॥ ऐसेवाक्यकूंश्रवणकरि सोपुरुष प्राप्तहूईनिधिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरद्वितीयपुरुषकूं दयालुपुरुषकीप्राप्तिभयीनहीं ॥ यातेंसोपुरुष प्राप्तहूईनिधिकूंभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषकूं शुभकर्मोंसें ब्रह्मनिष्ठगुरुकीप्राप्तिहोवैहै ॥ गुरुकहेहैं भोमुमुक्षो तूं शुद्धसच्चिदानंदनिर्विकार परिपूर्णरूपब्रह्म है ॥ ऐसेआपनेशुद्धरूपकूंत्यागकरि आपकूं सुखीदुःखीजन्ममरणवाला किसवासतेमानताहै ॥ ऐसेवाक्यकूंश्रवणकरि सोशुद्धअधिकारी प्राप्तब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ औरद्वितीयपुरुषकूं निष्कामकर्मकेअभावसें अंतःकरणशुद्धि तथाज्ञानीगुरुकीप्राप्तिहोवेनहीं ॥ सामग्रीकेअ

॥ ७ ॥

भावसेंज्ञानहोवेनहीं ॥ यातेंसोपुरुष प्राप्तब्रह्मकूंभीप्राप्तहोवेनहीं ॥ अबब्रह्मकीअसत्ताकहनेहारे प्रथमप्रश्नके उत्तरकूं विस्तारसेंकहेहैं ॥ सोपरमात्मा जगत्उत्पत्तिवासतेकामनाकरताभया ॥ मैंआपही प्रजारूपकरिकैंबहुतरूपहोवों ॥ ऐसेइच्छाकरिकै जगत्केविशेषनामरूपकीउत्पत्तिवासते विचारकरताभया ॥ ताविचारकूंकरिके यासर्वनामरूपजगत्कूं सोपरमात्माउत्पन्नकरताभया ॥ तासर्वप्रपंचकूंउत्पन्नकरिकै आपहीपरमात्मा याशरीरमैंप्रवेशकरताभया ॥ परमात्माकाप्रवेशमुख्यतौबनेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकाहीमुख्यप्रवेश होवेहै ॥ यातेंप्रवेशकथन जीवकूंब्रह्मरूपताबोधनवासतेहै ॥ जैसे कोईदेवदत्तनामकपुरुष आपनेगृहमैंप्रवेशकरेहै ॥ सोदेवदत्तप्रवेशकर्त्ता बाह्यस्थितआपनेस्वरूपसेंभिन्ननहीं किंतुजोबाह्यस्थितदेवदत्तथा सोईदेवदत्तआपनेगृहमैंविराजमानहै ॥ तैसेपरिपूर्णब्रह्मनेही जीवरूपसेंयासंघातमैं प्रवेशकराहै यातेंयहजीव परिपूर्णब्रह्मसेंभिन्ननहीं किंतु परिपूर्णब्रह्मरूपहीजीवहै ॥ यातात्पर्यकेबोधनअर्थहीप्रवेशश्रुतिअर्थवादरूपहै ॥ ऐसेपरमात्माही अंतःकरणमैंस्थितहूआ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातारूपसेंप्रतीतहोवेहै ॥ सोपरमात्माही पृथिवीजल अग्निरूप मूर्त्तरूपहोताभया ॥ और आकाशवायुरूप अमूर्त्तरूपहोताभया ॥ जिनकानामरूपक्रियाकरिके मनुष्यादिकथनकरेहैं ॥ ताकूंनिरुक्तकहेहैं ॥ जाकानामरूपक्रियासें व्यवहारनहींकरेहैं ताकूंअनिरुक्तकहेहैं ॥ ऐसेकहेनिरुक्त अनिरुक्त मूर्त्त अमूर्त्तरूपहीहैं ॥ गृहआदिआश्रयरूपमूर्त्तकूंही निलयनकहेहैं ॥ तासें विपरीत अमूर्त्त अनिलयनहै ॥ औरचेतनरूपसें प्रतीतहोनेहारेनेत्रादिक तथाअंतःकरण ॥ तिनकूंविज्ञानकहेहैं ॥ तिनसेंभिन्नपाषाणादि अविज्ञानहैं ॥ तथाव्यवहारिकसत्यजेघटादिहैं तथास्वप्नपदार्थ गंधर्वनगरआदिजेप्रातिभासिकहैं ॥ सत्यरूपपरमात्मा इनपूर्वकहेसर्वपदार्थरूपसें आपहीउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेकामनाकरणेवाला तथाविचारकरणेवाला तथा जगत्उत्पत्तिकरणेवाला तथाप्रवेशकरणेवाला तथामूर्त्तअमूर्त्तादिरूपताकूं आपधारणेवालाब्रह्म असत्रूपकैसेहोवेगा ॥ किंतुसत्रूपहीहै ॥ तामैंयहमंत्रहै यहसंपूर्णजगत् उत्पत्तिसेंप्रथम स्थूलरूपसेंरहितब्रह्मरूपहीहोताभया ॥ ताअविकृतब्रह्मसेंही यहस्थूलजगत्उत्प

118

न्नभया ॥ औरब्रह्मआंपनेआपकूं जगत्‌रूपसेंउत्पन्नकरताभया ॥ यातेंब्रह्मकूंश्रुतिमैं सुकृतयानामकरिकथनकराहै ॥ यानामरूपजगत्‌कूं उत्पन्नकरणेहाराब्रह्महीसुकृतहै ॥ ऐसे सुकृतब्रह्मसत्यहै असत्यनहीं ॥ इतनेग्रंथकरिसत्यरूपसें ब्रह्मकानिरूपणकरा ॥ अबआनंदरूपसेंब्रह्मकानिरूपणकरेहैं ॥ पूर्वकह्यासत्यरूपब्रह्मात्माही आपनेस्वरूपभूतआनंदसें सर्वजगतकूंआनंदकरेहै ॥ यातेंरसरूपहै कहीयेसाररूपहै ॥ ब्रह्मकीआनंदरूपताविषेप्रमाण विद्वान्‌काअनुभवहै ॥ स्त्रीपुत्रादिकविषयोंकूं नप्राप्तहूएभीविद्वान् ताआनंदरूपब्रह्मात्माकूं प्राप्तहोइकरि परमआनंदीहीप्रतीतहोवेहैं ॥ यहस्थूलशरीर इंद्रियादिकसहितहूआजीवताहै याशरीरकाजीवनभी आनंदरूपआत्मा विनाहोवेनहीं ॥ यहसत् रूप तथाआनंदरूपआत्मा याशरीरमैं प्राणअपानादिकोंकी चेष्टाकरानेवाला यदिनहोवेतौ याजडसंघातकीप्रवृत्ति ताचिद्‌आनंदरूपआत्माविनाकैसेहोवेगी किंतुनहींहोवेगी ॥ यातेंयहआत्माही सर्वकूंआनंदकरेहै तथायाब्रह्मात्माकरिकेही सर्वचेष्टासिद्धहोवेहै ॥ यहआत्मा बाह्यस्थूलप्रपंचसेंरहितहै तथास्थूल सूक्ष्म कारण यात्रितयशरीरसेंरहितहै ॥ अद्वैतब्रह्ममैंहूं यहजानताहूआविद्वान् तथाभयसेंरहितनिष्ठाकूंप्राप्तहूआ अभयब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ भेदद्रष्टाकूंतौ महान्‌भयकीप्राप्तिहोवेहै यहनिरूपणकरेहैं ॥ जोपुरुष याअद्वैतब्रह्ममैं किंचित्‌भीभेददेखताहै सोभेदद्रष्टा भयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेएकचंद्रमामैं दोचंद्रमाजाननेवालाविद्वान्‌भी अज्ञानीकहीयेहै ॥ तैसेअद्वितीयब्रह्ममैं भेदबुद्धिकरणेहाराविद्वान्‌भीअज्ञानीकहीयेहै ॥ ईश्वरअन्यहै मैअन्यहूं याभेदबुद्धिकरिके ताविद्वान्‌कूंभी ब्रह्मभयकाहेतुहै ॥ ब्रह्मज्ञानविना मायाविशिष्टपरमेश्वरसें सर्वकूंभयप्राप्तहोवेहै ॥ यामैयहमंत्रहै ॥ यापरमात्माकेभयकरिके वायुचलताहै ॥ तथायापरमात्माकेभयकरिकेही सूर्यउदयहोवेहै ॥ यापरमात्माकेभयकरिके अग्निप्रज्वलितहोवेहै ॥ यापरमात्माकेभयकरिकेही इंद्रवर्षाकरेहै ॥ और वायु अग्नि सूर्य इंद्र याच्यारिंदेवतावोंकीअपेक्षासें पंचममृत्युयमश्रुतिमैंकह्याहै ॥ सोमृत्यु यापरमेश्वरकेभयकरिही धावताहूआ सर्वजीवोंकेप्राणोंकूंनिकासेहै ॥ जबी यहबडेबडेदेवताभी तापरमेश्वरसें भयकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ तबी अन्यजी

वकीक्याकथाहै ॥ सूर्यादिकसर्वदेवतावोंने पूर्वजन्ममैंकरेजेकर्मउपासनाहैं ॥ तिनकाफलतिनदेवतावोंकूं देवभावकीप्राप्तिभयीहै ॥ और
भेदबुद्धिसें कर्मउपासनाकरेहैं ताभेदबुद्धिकाफल भयकीप्राप्तिभयीहै ॥ यातेंकदाचित्भीमुमुक्षुनेभेदबुद्धिकरणीनहीं ॥ ब्रह्मकेआनंदकरि
॥ ८ ॥ कैही ब्रह्माआदिकसर्वआनंदीहोरहेहैं याअर्थकेनिरूपणवासते विषयजन्यआनंदकी न्यूनताअधिकताकूंकहेहैं ॥ तथाब्रह्मस्वरूपआनंदही
सर्वमैंजैसेव्यापकहै ताविचारकूंकरेहैं ॥ यामानुष्यलोकविषे जोपुरुषयुवान्होवे तथासुंदररूपशीलादिगुणोंकरिसहितहोवे तथावेदपठितहो
वे ॥ तथामातापिता आचार्यइनोंकरिकेशिक्षितहोवे ॥ वज्रकेतुल्यजाकेअंगहोवें ॥ इंद्रकेतुल्यबलीहोवे ॥ तथास्वर्णादिधनकरिकेपूर्ण त
थाव्रीहीआदिअन्नोंसे पूर्ण जापृथिवीहै तासंपूर्णपृथिवीकापतिहोवे ॥ औरदीर्घजाकाआयुहोवे ॥ ऐसेसर्वगुणकरियुक्त चक्रवर्तीराजाकूं
संपूर्णमानुष्यविषयानंद प्राप्तहोवेहै ॥ औरईहां याकल्पमैंही जिनमनुष्योंनेकर्मउपासनाकरेहैं ॥ तिनकर्मउपासनाके बलसें गंधर्वभावकूं
प्राप्तभयेहैं ॥ तिनमनुष्यगंधर्वोंकूं ताचक्रवर्तीराजासें शत१००गुणअधिकआनंदप्राप्तहोवेहै ॥ सोसर्वआनंद निष्कामहोनेसें ज्ञानीकूंप्राप्त
होवेहै ॥ तथा चक्रवर्तीराजागंधर्वआदिरूपसें ज्ञानीआपकूंहीभोक्तामानेहै ॥ यातेंराजाआदिकोंके सर्वआनंद ज्ञानीकूंप्राप्तहोवेहैं ॥
यामैंसंशयनहीं ॥ पूर्वकल्पमैंकरेकर्मउपासनाकेबलसें याकल्पकेआदिमै जेपुरुष गंधर्वभावकूंप्राप्तभयेहैं ताकूंदेवगंधर्वकहेहैं ॥ तिनगंधर्वों
कूं मनुष्यगंधर्वोंसें शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवेहै ॥ सोसर्वआनंद निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरबहुतकालपर्यंत स्थायीहैलोकजि
नोंका ऐसेचिरलोकवासीपित्रोंकूं तिनदेवगंधर्वोंसें शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवेहै ॥ सोआनंदभी निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहोवेहै ॥ या
कल्पकेआदिमै स्मार्त्तकर्मवापीकूपतडागादिकोंकेकरणेसें जेदेवभावकूंप्राप्तभयेहैं तिनकूं आजानदेवताकहेहैं ॥ तिनआजानदेवतावोंकूं
पित्रोंसें शतगुणअधिकआनंद प्राप्तहोवेहै ॥ सोआनंद निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जेयाकल्पमै श्रौतअग्निहोत्रअश्वमेधादिककर्मोंकूं
करिकै देवभावकूंप्राप्तभयेहैं तिनकूं कर्मदेवताकहेहैं तिनकर्मदेवतावोंकूं आजानदेवतावोंसें शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहै ॥ सोआनंदभी

निष्कामज्ञानीकूंप्राप्तहै ॥ और अष्टवसु एकादशरुद्र द्वादश आदित्य इंद्र प्रजापति ॥ यह ३३ तेतीसमुख्यदेवताहैं ॥ कर्मदेवतावोंसें तिनमुख्यदेवतावोंका शतगुणअधिकआनंदहै ॥ सोआनंदनिष्कामज्ञानीकाहै ॥ देवराजइंद्रकूं तिनमुख्यदेवतावोंसें शतगुणअधिक आनंदप्राप्तहै ॥ सोआनंदभीनिष्कामज्ञानीकाहै ॥ ताइंद्रसें बृहस्पतिदेवगुरुकूं शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवेहै ॥ सोआनंदभीनिष्का मज्ञानीकूंप्राप्तहै ॥ तादेवगुरुबृहस्पतिसें प्रजापतिविराट्कूं शतगुणअधिकआनंदप्राप्तहै ॥ सोआनंदभीनिष्कामज्ञानीकाहै ॥ ताप्रजाप तिसें ब्रह्माजोहिरण्यगर्भहै ताकूंशतगुणअधिकआनंदप्राप्तहोवेहै सोआनंदभी ज्ञानीनिष्कामकूंप्राप्तहोवेहै ॥ आगेआत्मानंदरूपसमु द्रका यहहिरण्यगर्भकाआनंद किंचित्लेशमात्रहै ॥ यातेंहीश्रुतिभगवतीने आत्मानंदकूं हिरण्यगर्भकेआनंदसें शतगुणवासहस्रगुण अ धिकनहींकह्या ॥ ताआत्मानंदसमुद्रकूं ज्ञानीनिष्कामप्राप्तहै ॥ यहआनंदरूपब्रह्महीं आदित्यमंडलमै तथानेत्रोंमैस्थितहै ॥ औरयाअध्या त्मरूपनेत्रोंमै तथाअधिदेवरूपआदित्यमंडलमैस्थित ब्रह्मात्माकाभेदनहीं ॥ ऐसेआत्माकूं अभेदरूपसें जानताहूआविद्वान् अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय इनपंचकोशोंमै आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ याअर्थमैयहमंत्रहै ॥ शब्दसेंर हितब्रह्ममैवाणीप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ तथानामरूपसेंरहितब्रह्ममै मनप्रवृत्तहोवेनहीं ॥ ऐसेमनवाणीकेअविषय आनंदरूपब्रह्मकूं जानताहूआ विद्वान् भेदबुद्धिकेअभावसें किसीसेंभी भयकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ औरअज्ञानीपुरुषकूं पुण्यकर्म नकरेहूए यारीतिसें तपावेहैं यदिमैपुण्यक र्मकरता तौमैभी अन्यसुखीपुरुषोंकीन्यांई सुखकूंप्राप्तहोता ॥ औरपापकर्मकरेहूए यारीतिसें अज्ञानीपुरुषकूंतपावेहैं ॥ धिक्कारहै मैपापीकूं मैनेपापकर्मबहुतकरेहैं यातेंहीसर्वदादुःखकूं अनुभवकरताहूं मैपापीकूं ऐसाहीदंडयोग्यहै॥ऐसेमूढअज्ञानीकूं पुण्यकर्मनकरेहूए तथापापक र्मकरेहूए दुःखकूंदेवेहैं ॥ विद्वान्पुरुषतौ मैनेपुण्यकिसवासतेनकरे औरपापकिसवासतेकरे ऐसेतपायमानहोवेनहीं ॥ तामै हेतुयहहै ॥ जोज्ञानी तिनपुण्यपापरूपकर्मोंकूं आपनास्वरूपजानेहै ॥ यातें जैसे अग्नि आपनेस्वरूपकूंदाहकरेनहीं ॥ तैसेसर्वकर्मोंकाआपनाआत्मा

121

॥ १ ॥ जोविद्वान् ताविद्वान्कूं पुण्यकर्मनकरे पापकर्मकरेहूए तपायमानकरेनहीं ॥ अबआनंदवल्लीकी समाप्तिमै शांतिमंत्रकेअर्थकूंदिखावेहैं ॥ सोपरमात्मा हमगुरुशिष्यदोनोंकी ज्ञानकेप्रकाशकरनेसेंरक्षाकरे ॥ तथाब्रह्मविद्याकेफलप्रगटकरनेसेंपालनकरे ॥ हमगुरुशिष्यकापठानापठ नासर्वविघ्नोंकेनाशकरणेविषेसमर्थहोवे ॥ हमारेप्रमादकरिपठनेपठानेसें प्राप्तभयाजोदोष तादोषसें उत्पन्नभयाजो हमदोनोंमैद्वेष सोद्वेषनि वृत्तहोवे हमारेकूंसोद्वेषकदाचितन्प्राप्तहोवे ॥ ॐ शांतिःशांतिःशांतिः याकापूर्वउक्तअर्थजानलेना ॥ ऐसेआनंदवल्लीकूंसमाप्तकरिके अब भृगुवल्लीकूंदिखावेहैं ॥ जाशांतिमंत्रकाअर्थ पूर्वअबीकह्याहै ताशांतिमंत्रकेअर्थकूं याभृगुवल्लीकेआरंभमैभी जानलेना ॥ पूर्वकालविषे भृगु नामवाला वरुणऋषिकापुत्रहोताभया ॥ सोभृगुऋषि पितावरुणऋषिकेपासजाइके याप्रकारकाप्रश्नकरताभया ॥ हेभगवन् आपजाब्रह्म कूंजानतेहैं ताब्रह्मकाही मेरेतांईउपदेशकरो ॥ याप्रश्नकूंश्रवणकरिके सोवरुणपिता यहविचारकरताभया ॥ जबी यहभृगुबुद्धिमान्होवेगा तौआत्माकीप्राप्तिविषे साधनजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंद्वारा तावास्तवआत्माकूं निश्चयकरिलेवेगा ॥ यातेंआत्माकीप्राप्तिमैजेसाधनपदार्थहैं तिनकाहीमैनिरूपणकरूं ॥ यहअन्नमयस्थूलशरीर तथापंचप्राण पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय च्यारिअंतःकरण जीवसाक्षीकीप्राप्तिमै द्वाररूपइनपदार्थोंकूंनिरूपणकरिके ब्रह्मकीप्राप्तिमैद्वारभूत ब्रह्मकेलक्षणकूंनिरूपणकरेहै ॥ हेभृगो जाउपादानकारणसें यहसर्वभूत उ त्पन्नहोवेहैं ॥ तथाजाकारणकरिकै प्राणोंकूंधारणकरेहैं ॥ तथाजामैमरेहूए प्रवेशकरेहैं ॥ अर्थयह ॥ जामैलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसे कारणकूं तुमब्रह्मरूपजानो सोईकारणब्रह्महै ॥ ऐसेब्रह्मका यहजगतउत्पत्तिआदिकोंकीकारणता तटस्थलक्षणनिरूपणकरा ॥ जैसेका कवालादेवदत्तकागृहहै ईहांकाक गृहकातटस्थलक्षणहै ॥ काहेते गृहमैकाकसर्वदारहेनहीं तथाइतरपुरुषोंकेगृहोंसें देवदत्तकेगृहकूंभिन्न ॥ ६४ ॥
करेहै ॥ तैसेजगतकारणतादि ब्रह्ममैसर्वदारहेनहीं तथाब्रह्मभिन्नपरमाणुप्रधानादिकोंसें ब्रह्मकूंभिन्नकरेहै ॥ यातेंजगतकारणतादि क ब्रह्मकातटस्थलक्षणहै ॥ ऐसे भृगुपुत्रश्रवणकरि यहनिश्चयकरताभया ॥ जोपिताजीनेतौ मेरेकूंब्रह्मउपदेशकराहै ॥ परंतु ताब्रह्म

122

त्माकाप्रत्यक्ष विनाइंद्रियसंयमरूपतपसें तथाविचाररूपतपसेंविनाहोवेगानहीं यातेंमैतपकूंकरूं ॥ ऐसेभृगुऋषिने प्रथम इंद्रियसंयम रूपतपकूंकरा ॥ ताअनंतर मननहैनामजाकाऐसाजोविचाररूपतपहै ताकूंसोभृगुकरताभया ॥ ताविचारसें भृगुनेयहनिश्चयकरा ॥ अन्नहीब्रह्महै ॥ काहेते समष्टिविराट्‌रूपअन्नसें तथायाव्यष्टिस्थूलशरीररूपअन्नसें यहप्राणीउत्पन्नहोवेहैं ॥ तथातासमष्टिव्यष्टि स्थूलशरीरसें उत्पन्नहूएतामैहीस्थितहोवेहैं ॥ तथातामैहीलयहोवेहै ॥ ईहांपंचभूतरूपविराट्‌मै तथाव्यष्टिस्थूलशरीरमै अन्नशब्द कीप्रवृत्ति भोगसाधनहोनेसेंजाननी ॥ इनपंचभूतोंमै स्थूलजगत्‌केकारणतादिकभीबनेहैं ॥ ऐसेअन्नमयकूंब्रह्मरूपजानकरि सोभृगु पुनःविचारकरि ताअन्नमयकोशमै याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ समष्टिस्थूलशरीरविराट्‌कादेहतौ उत्पत्तिनाशवान्‌है तथाजड औरपरिच्छिन्नहै ॥ यातेंब्रह्मनहीं ॥ तथाव्यष्टिस्थूलशरीरमै याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहस्थूलदेहभी जड परिच्छिन्न उत्पत्तिना शवान्‌ प्रत्यक्षप्रतीतहोवेहै ॥ औरयादेहकूंही आत्मामानेतौ जबीयास्थूलशरीरकानाशहोवेहै तबसुखदुःखकाज्ञानकिसवासतेनहींहोता ॥ औरमै बालकनवीनउत्पन्नभयेकीस्तनपानमै प्रवृत्तिदेखताहूं ताबालककीप्रवृत्तिक्षुधाकीनिवृत्तिवासते यादेहकूंआत्मामाने बनेनहीं ॥ काहेते ताबालककूं अनुकूलपदार्थकाज्ञान याजन्ममैतौभयानहीं जाज्ञानसें संस्कारद्वारा स्मृतिहोइकरि स्तनपानमैंप्रवृत्तिसंभवे ॥ या तेंयादेहसेंभिन्न अनुकूलस्मृतिआदिकोंकाआश्रयआत्माहै ॥ और जायते अस्ति वर्धते विपरिणमते अपक्षीयते विनश्यति यहषट्‌विका रवान्‌देहहै ॥ तथामाताकेरक्तसें औरपिताकेशुक्रसें याकीउत्पत्तिहै ॥ तथा त्वचा अस्थिमांस नाडि मज्जादिकअपवित्रपदार्थोंकरिपूर्णहै ॥ अनंतरोगोंका यहस्थूलशरीरआश्रयहै ॥ तथाप्राणकेनिकसनेसें अग्निकरिकैभस्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यदिसिंहादिकयाकूंभक्षणकरें तौयहदेह मलभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरकोईदिन प्राणविनायहदेहपडारहे तौकीटरूपहोइजावेहै ॥ औरअन्नविना याकीस्थितिहोवेनहीं ॥ ऐसाअ नेकदोषग्रस्त परमअशुद्धयहदेह कदाचित्‌आत्माबनेनहीं यहविचारकरिपिताकूंकहेहै ॥ हेभगवन्‌ यहदेहतौआत्मानहीं ॥ मेरेकूंब्र

ह्मकाउपदेशकरो ॥ पितावरुण भृगुकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र विचारविनाआत्माकाप्रत्यक्षहोवेगानहीं ॥ यातेंविचारसेंहीब्रह्मकूंनिश्चयकरो ॥
ऐसेश्रवणकरिकेभृगु पुनःविचारकरिकें प्राणमयविषेहीब्रह्मकेलक्षणकूं जोडताभया ॥ सर्व जीव प्राणविशिष्टदेहसेंहीउत्पन्नहोवेहैं ॥
॥ १० ॥ याप्राणकरिकेहीजीवेहैं ॥ प्राणकेनिकसनेसें नाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंउत्पत्तिआदिकोंकाकारणहोनेसें प्राणहीब्रह्महै ॥ ऐसेप्राणकूं
ब्रह्मरूपसें जानताहूआ सोभृगुऋषिविचारकरि याप्रकारकेप्राणमयविषेभी दोषोंकूंदेखताभया ॥ समष्टिव्यष्टिप्राणतौजडहै स्थूलशरीर
कीन्यांईउत्पत्तिनाशवान्है ॥ तथाजलविना याप्राणकीस्थितिहोवेनहीं ॥ ऐसेप्राणमयविषे अनंतदोषोंकूंदेखकरि तेसर्वदोषप्राणमयवि
षे पिताकूंकहेऔरयहकहा मेरेकूंब्रह्मउपदेशकरो पिताविचारकरिकेब्रह्मकूंजानोऐसेकहतेभये पुनःभृगु मनोमयविषेब्रह्मकेलक्षणकूं
जोडताभया ॥ यहमनहीचेतनप्रतीतहोवेहै ॥ यातेंमनही जगत्कीउत्पत्तिआदिकोंकाकारणहोनेसेंब्रह्महै ॥ मनसावधानहोवेतौ ज्ञा
नादिकहोवेहैं ॥ सावधाननहींहोवेतौ ज्ञानादिकहोवेंनहीं ॥ यातेंमनसेंभिन्नब्रह्मनहीं ॥ ऐसेमनकूंब्रह्मरूपजानकरि तामैंभीदोषोंकूंदेख
ताभया ॥ यहमनभीब्रह्मरूपनहींहै ॥ काहेते यहसमष्टिव्यष्टिरूपमन उत्पत्तिवालाहै ॥ तथापरिच्छिन्नहै तथाअन्नकीशुद्धिसें शुद्धि
कूंप्राप्तहोवेहै ॥ अन्नकीमलिनतासें यहमनमलिनताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसाशुद्धिअशुद्धिवालामन जलवस्त्रकीन्यांईब्रह्मनहीं ॥ तथा
सुषुप्तिमैं मनइंद्रियोंसहित लयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अन्नविना नाशजैसाहोइजावेहै यातेंमनभीब्रह्मनहीं ॥ ऐसेमनविषेसर्वदोषोंकूं पिता
केतांईश्रवणकराइकरि यहकहेहै ॥ हेभगवन् मेरेकूंब्रह्मउपदेशकरो पिताभी पुनःविचारकरिब्रह्मकूंजानो यहकहतेभये ॥ भृगु पुनःविचा
रकरि विज्ञानसें सर्वभूतोंकीउत्पत्तिआदिकोंकूं जानकरि निश्चयरूपबुद्धि मनकाभीकारणहोनेसेंब्रह्महै यहजानताभया ॥ पुनःतावि ॥ ६५ ॥
ज्ञानमयविषेभी याप्रकारकेदोषोंकूंदेखताभया ॥ यहसमष्टिव्यष्टिरूपविज्ञान उत्पत्तिनाशवालाहै ॥ तथापरिच्छिन्नहै तथासुषुप्तिमैंलयकूं
प्राप्तहोवेहै ॥ ममताकीविषयतातौ यामैं स्थूलशरीरादिकोंकेसमानहै ॥ यातेंविज्ञानमयभीब्रह्मनहीं ॥ याप्रकारकेदोष विज्ञानमयविषे

पिताकेआगे भृगुनेजबीश्रवणकराये ॥ तबीपिता विचारकरिब्रह्मकूंजानो यहहीकहतेभये ॥ पुनःभृगुविचारकरि आनंदमयविषे ब्रह्म कालक्षणजानकरि ताआनंदमयकूंही ब्रह्मरूपजानताभया ॥ द्वेष्यसर्पादिकोंमै तथाउपेक्ष्यतृणादिकोंमै किसीपुरुषकी प्रवृत्तिसुखवास तेहोवेनहीं ॥ किंतु अनुकूलअन्नादिकोंमै सुखवासते पुरुषकीप्रवृत्तिहोवेहै ॥ स्त्रीआदिकोंकेआनंदकरिही जगत्केउत्पत्तिआदिकदेख तेहैं ॥ यातेंआनंदमयहीब्रह्महै ॥ पुनःआनंदमयविषेभी उपाधिरूपअज्ञानकूंजडहोनेसें ब्रह्मरूपताबनेनहीं ॥ शेषजोपुच्छरूपअधिष्ठान ब्रह्महै तथाउत्पत्तिआदिकोंसेंरहितहै ॥ सर्वमैव्यापकहै सर्वकाआत्माहै ॥ ताआनंदरूपब्रह्मकूं आपनास्वरूपनिश्चयकरिके सोभृगु मोक्षकूं प्राप्तभया सावरुणपितानेउपदेशकरी भृगुनेनिश्चयकरी ब्रह्मविद्या हृदयविषेस्थितब्रह्मकूं आत्मरूपसेंबोधनकरेहै ॥ यातेंजोअधिकारी या विद्याकूंप्राप्तहोवेगा सोअधिकारी भृगुकीन्यांई मोक्षकूंप्राप्तहोवेगा ॥ समष्टिअन्नमयादिककोशोंकी जोपुरुषउपासनाकरताहैसोपुरुष स र्वअन्नकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथायालोकमैमहान्होवेहै ॥ पुत्र पशु ब्राह्मणत्वजाति कीर्तिइत्यादिकफलोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेश्रुतिभगवती भृ गुवरुणकेसंवादद्वारा विचाररूपतपकूंही ज्ञानप्राप्तिमैसाधनकहेहै ॥ यातें इदानींतनमुमुक्षुजनोंनेभी वारंवार संशयादिकोंकीनिवृत्तिवास ते विचाररूपतपकूंकरणा ॥ ऐसेजोपुरुष समष्टिआदित्यमंडलमै तथास्वशरीरमैंस्थितब्रह्मकूं अभेदरूपसेंजानताहै ॥ सोइन्पंचकोशोंमै आ त्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि जीवन्मुक्तहूआ संसारमैयाप्रकारकागायनकरताहूआ विचरताहै ॥ बहुतआश्चर्यहै मैहीअन्नरूपहूं तथाअन्नभोग्य काभोक्ताजोपुरुषादिकहै सोभीमैहूं मैहीअन्नका तथापुरुषोंकाजनकहूं ॥ मैहीहिरण्यगर्भरूपहूं तथाविराट्रूपहूं ॥ औरदेवताअतिथिआदि कोंकेतांई अन्नकूंनदेकरि जेपुरुषदरिद्रीभोजनकरेहैं ॥ तिनकृपणोंकूं मैमृत्युरूपहोइकरि भक्षणकरताहूं ॥ मैईश्वरसर्ववेदोंकाकर्त्ताहूं ॥ मै ऋषिरूपसें वेदोंकास्मरणकरताहूं ॥ मैईश्वरहीसर्वपुरुषोंकरि भजनकरणेयोग्यहूं ॥ मैसंसाररूपीचक्रमै नाभीकीन्यांईस्थितहूं ॥ औरमैही धर्म अर्थकाम मोक्षरूपहूं ॥ मैहीअन्नादिरूपहूं ॥ तथा अन्नादिकोंकादातारूपहूं ॥ जोपुरुष देवताअतिथिआदिकोंकेतांई अन्नादिकपदार्थों

125

कादानकरिकै भोजनकरेहै ॥ सोपुरुष आपनेआत्माकाजोरक्षणकरेहै सोमैआत्माकाहीरक्षणकरेहै ॥ औरब्रह्माआदिभूत जामैउत्पन्नहोवें ताकूंभुवनकहेहैं ॥ ताभुवनकामैईश्वररूपही संहारकरणेहाराहूं ॥ अहमन्नं ॥ अर्थयह ॥ मैअन्नरूपभोग्यहूं ॥ अहमन्नादः ॥ मैअन्नकाभोक्ता अनुभवरूपचेतनहूं ॥ इत्यादिमंत्रोंका उपनिषत्मै जोवारंवारकथनहैं सोआश्चर्यकेबोधनअर्थहै ॥ मैस्वर्णकीन्यांई प्रकाशमान तथाआदित्यमंडलमै स्थितहूं ॥ मैही सर्वजगत्काप्रकाशक तथासर्वजगत्सेंउत्कृष्टहूं ॥ ऐसेआपने अनुभवके प्रगटकरणेहारेगायनकूं करताहूआविद्वान् यासंसारमैंविचरताहै ॥ जैसेश्रुतिभगवती केवलमुमुक्षुजनोंके बोधवासते नानाप्रकारसें आत्माकाउपदेशकरेहै ॥ तैसेविद्वान्भी मुमुक्षुजनोंकेबोधवासते आपनेअनुभवकूंगायनसें प्रगटकरताहूआ यासंसारमैविचरेहै शांतिमंत्रपूर्व आरंभकीन्यांईसमाप्तिमैभीपठनकरिलेना ॥ ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य भगवत्पूज्यपाद श्रीमच्छंकराचार्य शिष्यसंप्रदाय प्रविष्टपरमहंसपरिव्राजकस्वामिअच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे तैत्तिरीयार्थनिर्णयः ॥ ७ ॥ ॥

126

॥ अथ ऐतेरेयोपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

127

ॐ नमः श्रीगुरुचरणकमलेभ्यः ॥ अबऋग्वेदीय ऐतरेयउपनिषत्केअर्थकूंदिखावेहैं ॥ सनकादिक ब्रह्माजोकेपुत्र सकलमुमुक्षुजनों
केउद्धारवासते ब्रह्मासेंप्रगटभये ॥ कैसेसनकादिकहैं ॥ सर्ववेदोंकेअर्थकूं जाननेहारेहैं ॥ तथापरमविरक्त निवृत्तिमार्गकेपालनेहारेहैं ॥
॥ १ ॥ ऐसेपरमविद्वान् सनकादिक वामदेवादिक मुमुक्षुजनोंकेतांई ब्रह्मउपदेशकूंकथनकरतेभये ॥ सोउपदेश ऐतरेयउपनिषत्रूपहै ॥ 128
सनकादयउचुः ॥ भोमुमुक्षवः यहसंपूर्णनामरूपजगत् उत्पत्तिसेंप्रथम त्रिविधपरिच्छेदसेंरहित आत्मरूपहीहोताभया ॥ आत्मासें
भिन्नसजातीयविजातीय कोईपदार्थनहोताभया ॥ स्वगतभेदतौ निरवयवआत्मामै कदाचित्संभवेनहीं ॥ आत्मासेंभिन्न कोईपदार्थ
व्यापारयुक्तनहोताभया ॥ प्राणीकर्मौकेअनुसार सोपरमात्मा याप्रकारकाविचारकरताभया ॥ मायाविशिष्टमुझपरमात्माविषेही यहभू
तभौतिकप्रपंच सूक्ष्मरूपसें स्थितहोइरहाहै ॥ प्राणीयोंकेभोगवासते अबस्थूलरूपसेंमैप्रगटकरूं ॥ ऐसेविचारकरि पंचभूतोंसेंब्रह्मांडकूं उ
त्पन्नकरिके लोकोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तेलोकयहहैं ॥ सप्तलोकस्वर्गादिउपरिके तथासप्तलोकनीचेके यहचतुर्दशलोक तापरमेश्वरसें उ
त्पन्नभये ॥ ऐसेलोकोंकूंरचिकरि सोपरमेश्वरपुनःविचारकरताभया ॥ यहचतुर्दशलोकरूप सर्वविराट्काशरीरहै ॥ यहसर्वलोक लोकपालों
सेंविनानाशकूंप्राप्तहोवेंगे यातें लोकपालोंकीउत्पत्तिकूंकरूं ॥ जैसे गृहकेस्वामीविना गृहनाशकूंप्राप्तहोइजावेहै ॥ तैसे चेतनलोकपालों
विना याअंडकी स्थितिहोवेगीनहीं ॥ यातें अवश्यहीलोकपालोंकूंउत्पन्नकरणायोग्यहै ॥ ऐसेविचारकरिपंचभूतोंसें उत्पन्नभयाजोविरा
ट् ताविराट्केअवयवोंसें लोकपालोंकीउत्पत्तिकहेहैं ॥ यद्यपि भूतोंके सात्विक राजसभागसें इंद्रियतथादेवतावोंकीउत्पत्तिभयीहै ॥ त
थापि विराट्केअवयवोंसें तिनकीप्रगटताहोवेहै ॥ विराट्केशरीरमै सोपरमेश्वरनानाप्रकारकेछिद्रोंकूंकरिके तिनछिद्रोंसें इंद्रियोंकीप्रगट ॥ ६७ ॥
तायाप्रकारसें करताभया ॥ परमेश्वरकेसंकल्पकेवशसें पक्षीकेअंडेकीन्यांई मुखच्छिद्रभया ॥ तामुखच्छिद्रसें वाक्इंद्रिय प्रगटभया तावाक्सें
अग्निदेवताप्रगटभया ॥ नासिकाछिद्रभया तानासिकासें घ्राणइंद्रियभया ताघ्राणसेंगंधउपाधिवालावायुप्रगटभया ॥ यागंधवालेवायुक

रिकेपृथिवी देवतालेना ॥ नेत्रच्छिद्रभया तानेत्रच्छिद्रसें चक्षुइंद्रियभया ताचक्षुसेंसूर्यभगवान् प्रगटभया ॥ कर्णच्छिद्रभया ताकर्णच्छिद्रसें श्रोत्रइंद्रियभया ताश्रोत्रसेंदिशारूपदेवता प्रगटभयी ॥ देहमैंजेअनंतछिद्रहैं तेछिद्रप्रगटभये तिनछिद्रोंसें त्वचाइंद्रियभया तात्वचासेंविराट् केरोम केशरूपवृक्षादिकोंकाअधिष्ठाता वायुप्रगटभया ॥ हृदयच्छिद्रभया ताहृदयसेंमनप्रगटभया तामनसें चंद्रमाप्रगटभया ॥ नाभिच्छिद्र भया तानाभिच्छिद्रसें अपानवायुकाआश्रय गुदइंद्रियभया तागुदासें सर्वकेनाशकरणेहारा मृत्युप्रगटभया ॥ उपस्थइंद्रियकाछिद्रभया ता छिद्रसें उपस्थइंद्रियभया ताउपस्थइंद्रियसें प्रजापतिप्रगटभया ॥ वाक्इंद्रियकीउत्पत्तिसें रसनाइंद्रिय तथाताकावरुणदेवता उपरिसें जानलेना ॥ उपनिषत्मैंतौ पूर्वकहेछिद्र इंद्रियदेवता हीलिखेहैं ॥ शेषदेवताकी तथा इंद्रियोंकीप्रगटता उपरिसेंहीजाननीयोग्यहै ॥ श्रुतिमैं केवल मनकीताकेचंद्रमादेवताकीप्रगटताकहीहै ताकरिकै बुद्धिकी तथाबुद्धिके देवताब्रह्माकी अहंकारकी औरअहंकारकेदेव तारुद्रकी चित्तकी औरचित्तकेदेवताविष्णुकी प्रगटताजानलेनी ॥ और अपानवायुकरिकै प्राण समान उदान व्यान याक्रियाशक्ति वालेसर्वप्राणोंका ग्रहणकरणा ॥ औरदोहस्त दोपाद विराट्केशरीरमैं प्रगटभये ॥ हस्तोंसेंइंद्रदेवता औरपादोंसेंवामनभगवान्प्रगटभ ये ॥ जबीकर्मउपासनासेंप्राप्तभये देवतावोंकेशरीरोंमैंभी दुःखप्राप्तहोवेहै तब अन्यमानुष्य आदिशरीरोंमैं दुःखकैसेनप्राप्तहोवेगा ॥ या तात्पर्यकेबोधनअर्थ श्रुतिमैंविराट्केशरीरकूं समुद्ररूपसें वर्णनकराहै ॥ विराट्केशरीररूपसमुद्रमैं अविद्याकामकर्मरचित जन्मजरामरण दुःखही जलहै ॥ ज्ञानविना संसाररूपयाविराट्शरीरका नाशहोवेनहीं यातेंअनंतहै ॥ यहविराट्शरीररूपसंसारसमुद्र प्रवाहरूपसेंअना दिहै ॥ संचितआदिकर्मजामैंचक्रहैं ॥ कामक्रोधादिक जामैंमहाग्राहहैं ॥ अज्ञानीपुरुषकापारउतरणाहोवेनहीं यातेंअपारहै ॥ विषयइं द्रियोंकेसंबंधसें उत्पन्नहोनेहारा जोआनंदहै ताआनंदमैंहीविश्रामकूं प्राप्तहोइरहाहै ॥ विषयोंमैं तृष्णारूपवायुसें उत्पन्नभयीहैं अनंतस हस्रक्लेशरूपीलहरीजाविषे ॥ रौरवादिकनरकोंकेदुःखोंकरि उत्पन्नभयाहै हाहाइत्यादिमहान्शब्दजामैं ॥ तथाबाल्यादिअवस्थामैं होनेहारे

 दुःखोंकरि जासमुद्रमै हाहामुंचमुंचइत्यादि अनंतशब्दउत्पन्नहोवैहैं ॥ ज्ञानरूपजहाजकरि जासमुद्रसेंपारउतरणाहोवैहै ॥ ज्ञानरूपज
हाजमैंभी रसतेकवासते ऐसेअन्नआदिचाहिये ॥ सत्यसंभाषण कोमलस्वभाव दान दया उदारता अहिंसा शम दम धैर्य क्षमा इत्या
॥ २ ॥ दि ज्ञानरूपीजहाजमै यहसर्व मार्गवासते अन्नादिकहैं ॥ सत्संग सर्वस्त्रीआदिकविषयोंका त्याग यहजामैंमार्गहै ॥ मोक्षरूपीजाकाप
रतीरहै ॥ ऐसेसमुद्ररूपीविराट्शरीरमैं प्राप्तभयेदेवतावोंकूं क्षुधा तृषाने व्याकुलकरा ॥ ताविराट्शरीरमैंतृप्ति योग्य अन्न जलकूं नदेखकरि
आपनेपितापरमेश्वरकूं याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् आपनेउत्पन्नकराजो विराट्शरीरहै तासेंभिन्नतो किंचित्भी अन्नजला
दिकप्रतीतहोवैनहीं ॥ यातेंअल्पकोईशरीरउत्पन्नकरो जाशरीरमैंहम स्थितहूए अन्नजलकूंग्रहणकरें ॥ याशरीरकीप्रार्थनाकूं श्रवणकरि
देवतावोंके अन्नआदिकोंकेभोगवासते सोपितागौकेशरीरकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तागौकेशरीरकूंदेखकरि तेदेवता प्रसन्न नभये और
कहतेभये यहशरीरतौयोग्यनहीं ॥ पुनःसोपिता अश्वकेशरीरकूं उत्पन्नकरताभया ॥ ताअश्वकेशरीरकूं देखकरिकेभी तेदेवता प्रसन्नता
कूं नप्राप्तभये औरकहतेभये यहशरीरभीयोग्यनहीं ॥ ऐसेतापरमेश्वरने मनुष्यदेहविना चौरासीलक्षदेह तिनदेवतावोंकी प्रसन्नतावासते
उत्पन्नकरे परंतुकिसीदेहमैंभी देवताप्रसन्ननभये ॥ ताअनंतरपरमेश्वरने मनुष्यदेहकूंउत्पन्नकरा तादेहकूंदेखकरि प्रसन्नहूएतेदेवतायाप्र
कारकेवचनकूं कहतेभये ॥ हेभगवन् यहतौबहुतसुंदरहै धर्मअधर्मकाज्ञान तथाब्रह्मकाज्ञान तथालोकपरलोककाज्ञान यामनुष्यदे
हमैंहोवैहै ॥ जैसेबुद्धिमान्तक्ष आपनेहस्तोंसेंजोवस्तुरचैहै सोअतिसुंदरहोवैहै तैसेहेभगवन् यहमनुष्यदेह तुमनेआपरचाहै यातें
ही यहशोभनीयहै ॥ ऐसेप्रसन्नहूए देवतावोंकूं परमेश्वररूपपिताकहैहैं ॥ भोदेवा याशरीरमैं नेत्रादिइंद्रियरूपसें तुमप्रवेशकरो ॥
यद्यपिवाक्आदिकइंद्रियोंसेंभिन्नहीदेवताहैं ॥ तथापि तिनवाक् आदिकइंद्रियोंविषे अग्निआदिकदेवतावोंसेंविना शब्दउच्चारणादिका
र्यप्रतीतहोवैनहीं ॥ तथावाक् आदिविना ताअग्निआदिदेवतावोंकीभी प्रत्यक्षप्रतीतिहोवैनहीं ॥ यातें अध्यात्मइंद्रियोंसें अधिदैवरूपदे

वतावोंका अभेदरूपसेंही श्रुतिमैंप्रवेशकहाहै ॥ अग्नि वाक्रूपहूआ मुखगोलकमैं प्रवेशकरताभया ॥ वरुणदेवता रसनारूपसें जिव्हाके अग्रभागमैंस्थितभया ॥ गंधविशिष्टवायुदेवता घ्राणइंद्रियरूपहूआ नासिकाछिद्रमैं प्रवेशकरताभया ॥ सूर्यभगवान् चक्षुरूपसें नेत्र गोलकमैंप्रवेशकरताभया ॥ दिक्देवता श्रोत्ररूपहूआ कर्णगोलकमैंस्थितभया ॥ स्थावररूपउपाधिवालावायुदेवता रोमोंकेसहितहूआ त्वक्इंद्रियरूपसें त्वचारूपगोलकमैंस्थितभया ॥ चंद्रमा मनरूपहूआ हृदयगोलमैंप्रवेशकरताभया ॥ मृत्युदेवता पायुइंद्रियरूपसें गुदाछिद्ररूपगोलकमैंस्थितभया ॥ प्रजापति उपस्थइंद्रियरूपसें शिश्नच्छिद्ररूपगोलकविषेस्थितभया ॥ इतनेदेवतावोंकाप्रवेश उपनिषत्मैंकह्याहै शेषरहेजेदेवता तेभीऐसेहीप्रवेशकरतेभये ॥ क्षुधातृषाके अभिमानीदेवता आपना कोईस्थानन देखकरि परमेश्वरकूं कहतेभये ॥ हेजनक हमारेकूंभीकोईस्थान कृपाकरिदेवो ॥ परमेश्वर तिनकूं अध्यात्म अधिदैवरूप देवतावोंविषेहीस्थानदेकरि कहताभया ॥ इनदेवताबोंकी तृप्तिकरिकेही तुमारीतृप्तिहोवेगी ॥ सोअबभीऐसेहीदेखीताहै ॥ सूर्यादिकदेवतावोंकूं घृतादिरूपहविकादानकरे तिनकी क्षुधा तृषा शांतहोवेहै ॥ रूपादिविषयरूपहविकादानकरे नेत्रआदिकोंकी क्षुधातृषाकीशांतिहोवेहै ॥ यद्यपि व्यष्टि स्थूलशरीरवाले भोक्ताजीवमैंही क्षुधातृषाहोवेहैं ॥ तथापि जीवभीवास्तवसें शुद्धब्रह्मरूपहै तामैंक्षुधाआदिकभी इंद्रियदेवतादिउपाधि करिहीहैं ॥ यातेंश्रुतिमैं तिनइंद्रिय तथादेवतावोंविषेही क्षुधातृषाआदिकोंकाकथनहै ॥ जैसेपितापुत्रपौत्रादिकोंकरिकेनकह्याहूआभो तिनकीरक्षावासते अन्नआदिकोंकरि तिंनपुत्रादिकोंकापालनकरेहै ॥ तैंसेपरमेश्वर देवतारूपपुत्रोंकेरक्षाअर्थ अन्नकीउत्पत्तिवासते विचारकूंकरताभया ॥ ऐसेविचारकरि सोजनकपरमेश्वर पंचभूतोंसें नानाप्रकारकेअन्नकूं उत्पन्नकरताभया ॥ सिंहादिकोंका मांसभोजनहै मनुष्योंकाव्रीहियवादिभोजनहै ॥ सर्पादिकोंका मूषकआदिरूपअन्नहै ॥ ऐसेअनंतप्रकारका अन्नउत्पन्नभया ॥ परमेश्वरने देवतावोंकूंकहा हेदेवा यहअन्न उत्पन्नभयाहै तुम याअन्नकूं ग्रहणकरो ॥ अब आत्मामैं वास्तवसें अन्नादिकोंकाभोक्तृत्वनहीं किंतु अपानवृ

त्तिमान् प्राणउपाधिकरिकेहै ॥ याअभिप्रायसें आत्मामै भोक्तृत्वअभावबोधनकरणेकूं लोकपालोंकी अन्नआदिकोंकेग्रहणमै असाम
र्थ्यकहेहैं ॥ जबीतापरमात्माने अन्नकूंउत्पन्नकरिके देवतावोंकूं भक्षणकरणेकी आज्ञाकरी तबदेवता भक्षणकरणेवासते प्रवृत्तभये ॥
॥ ३ ॥ जैसेमूषकआदि बिडालआदिकोंकेआगे छोडेहूए भागजावेहैं ॥ तैसेअन्नकूं जबीलोकपालोंकेआगे स्थापनकरा तबीसोअन्न भागने
कासंकल्पकरताभया ॥ यद्यपि व्रीहिआदिरूपअन्नमैतौ ऐसीइच्छाबनेनहीं ॥ तथापि सोव्रीहिआदिरूपअन्न शरीरमैप्राप्तनभया किंतु
बाह्यहीस्थितभया यामैतात्पर्यहै ॥ यहइंद्रियोंसहितस्थूलशरीर वाणीकरिके अन्नकेग्रहणकीइच्छाकरताभया ॥ परंतु अपानवायुविना
ग्रहणकरणेमैसमर्थनभया ॥ औरवाणीकरिउच्चारणकरिकेही तृप्तिकूं प्राप्तभया ॥ अर्थयह जोअन्नकेग्रहणकरणेकूं समर्थनभया ॥ ऐसे
ही घ्राण चक्षु श्रोत्र त्वक् मन उपस्थ इत्यादि इंद्रियोंकरि अन्नकेग्रहणकरणेकूं सोपिंड नसमर्थभया ॥ पश्चात् अपानवायुकरिके मु
खच्छिद्रद्वारा सोपिंड अन्नकूंग्रहणकरताभया ॥ यातेंअपानवायुकूं अन्नकाग्राहककहेहैं ॥ ऐसेपरमेश्वरनेलोकोंकी तथाशरीरोंकी और
भोगसाधनवागादिकइंद्रियोंकी उत्पत्तिकरी ॥ विराट्केसमष्टिशरीरमै देवतावोंकी लोकपालरूपतासेंस्थितिकरी ॥ औरव्यष्टिस्थूल
शरीरविषे सूर्यादिदेवतावोंकी करणोंकेअधिष्ठातारूपसेंस्थितिकरी ॥ तिनदेवतावोंविषेही क्षुधातृषाकूंस्थानकादानकरा ॥ पुनःअन्नकूं
उत्पन्नकरि अपानवृत्तिमान्प्राणकरिकेही अन्नकाग्रहणबोधनकरा ॥ पुनःसोजनकप्रवेशवासते विचारकरताभया ॥ अपानादिसहित
यहसंघात मेरेविना किंचित्भी कार्यकरणेकूं समर्थनहींहै ॥ जैसेपुरस्वामीराजासेंविना पुरकीशोभाहोवेनहीं ॥ तैसेमै चेतनविना या
स्थूलसूक्ष्म संघातकीसिद्धिहोवेनहीं ॥ यातें मै यासंघातविषे शब्दादिकोंकेभोगवासते तथाआपनेस्वरूपकेज्ञानवासते अवश्यप्रवेशक ॥ ६१ ॥
रूं ॥ ऐसेप्रवेशकासंकल्पकरिके प्रवेशके मार्गकाविचार करताभया ॥ क्रियाशक्तिवाले प्राणनेतौ पादकेअग्रमार्गकरि प्रवेशकराहै ॥
ज्ञानशक्तिकेअभावसें जडजोयहप्राणहै ताप्राणकूं गुणदोषकाविवेकनहींहै यातेंहीताप्राणने पादाग्ररूपनिकृष्ट मार्गकरिकेही याशरीरमै

प्रवेशकराहै ॥ और चेतनरूपमेरेकूंभी यासंघातमैअबअवश्यप्रवेशकरणायोग्यहै ॥ परंतुजिनमार्गोंकरिके मेरेभृत्यप्राणादिकोंनेप्रवेशकराहै ॥ तिनमार्गोंकरिके मैस्वामिकूंप्रवेशकरणायोग्यनहीं ॥ ऐसेप्रवेशमार्गचिंतनकरताहूआपरमात्मा यहविचारताभया ॥ यहवागादिकजडसंघातका प्रकाशकजो मैचेतनहूं तिसमेरेविनातौ वागादिककदाचित् आपनेकार्यकरणेकूं समर्थहोवेंगेनहीं ॥ यातेंमेरेकूं अवश्यप्रवेशकराचाहिये ॥ ऐसेविचारकरि सोपरमेश्वरपिता आपनीसमीपतामात्रसें मूर्द्धसीमाकूंभेदनकरताहूआ तामूर्द्धसीमामार्गकरिके ही याशरीरमैप्रवेशकरताभया ॥ यद्यपि यहमूर्द्धसीमारूप शिरकेकपालत्रयकामध्यभाग द्वाररूपसेंलोकमैप्रसिद्धनहींहै ॥ तथापि जबी शिरमै घृततैलादिकोंका धारणकरें तबीताद्वारसेंसर्वपुरुष ताघृतादिकोंकेरसकाअनुभवकरेहैं यातेंप्रत्यक्षसिद्धहै ॥ औरविदृतियानामकरिकेश्रुतिविषेप्रसिद्धहै ॥ परमेश्वरने आपनेप्रवेशवासते भेदनकरिके जाकूंउत्पन्नकराहो ताकूंविदृतिकहेहैं ॥ औरउपासकका बाह्यउत्क्रमण यामार्गसेंहीहोवेहै ॥ याद्वारकानाम नांदन भीहै ॥ जामार्गद्वारानिकसनेसें पुरुषआनंदकूंप्राप्तहोवे ताकूंनांदनकहेहैं ॥ यास्थानकूं आपनेप्रवेशकरणेयोग्यजानकरि तापरमात्माने यामार्गद्वाराही प्रवेशकरा ॥ औरतापरमात्माकाप्रवेशभी मुख्यप्रवेशनहींहै ॥ किंतुश्रोत्रकरिके मैश्रवणकरूं ॥ नेत्रोंकरिके मैरूपादिकोंकूंदेखूं ॥ ऐसे श्रोत्रनेत्रादिकइंद्रियोंकेसाथतादात्म्य अध्यासकरनाहीप्रवेशहै ॥ इसप्रकारपरमात्माके जीवरूपसें प्रवेशकूंकहिकरि अबदेहइंद्रियादिउपाधिकरिके ताआत्मामैसंसारप्राप्तिकावर्णनकरेहैं ॥ जीवरूपसेंप्रवेशकराहै याशरीरमै जाआत्माने ताआत्माकेही तीनस्थाननिरूपणकरेहैं ॥ जागरितअवस्थामै नेत्रइंद्रियकेदक्षिणगोलक विषे आत्मारहेहै ॥ स्वप्नअवस्थाविषेकंठस्थानमैरहेहै ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे आत्माहृदयदेशमैरहेहै ॥ यद्यपि आत्माअद्वितीयरूपसें याउपनिषत्केआदिमै निरूपणकराहै ॥ ताअसंगअद्वितीय आत्माके स्थानबनेनहीं ॥ तथापि स्थानसर्वसत्यहोवें तबतौआत्माअसंग अद्वितीय सिद्धनहोवे स्थानादिसर्वमिथ्याहैं यातें वास्तवसें असंगअद्वितीयआत्माहै ॥ याअभिप्रायकेबोधनवासते तीनस्थानोंकूं तथातीनस्था

नोंमैहोनेहारी तीनअवस्थावोंकूं तथावक्ष्यमाण पितृगर्भ मातागर्भ औरआपनास्थूल शरीररूप तीनदेशोंकूंस्वप्नदृष्टांतसें मिथ्यारूपताव
र्णनकरेहैं ॥ उक्तजागरितआदिक सर्वपदार्थस्वप्नरूपहैं ॥ यद्यपि स्वप्नभिन्न जागरितआदिकोंकूं स्वप्नरूपताबनेनहीं ॥ तथापि जैसेनिद्रा
॥ ४ ॥ करिके स्वप्नमै मिथ्यापदार्थोंकूंभीसत्यरूपसेंदेखेहै ॥ तैसे अज्ञानरूपनिद्राकरिके सर्वमिथ्यापदार्थोंकूं सत्यरूपसेंव्यवहारकरणारूप स्वप्नकूं
अनुभवकरेहै ॥ औरजैसेस्वप्नकेपदार्थ जागरितअवस्थामैबाधहोवेहै ॥ यातेंसर्वपदार्थस्वप्नकीन्यांई मिथ्याभीहैं परंतु अज्ञानरूपनिद्राकरि
सत्यरूपसेंमानेहैं ॥ जैसेगाढनिद्राकरिशयनकरतेहूएपुरुषकूं ताकेश्रोत्रदेशकेसमीप भेरीकेबजानेकरिजगावेहैं ॥ तैसेअज्ञानरूपीघोरनिद्रा
करि शयनकरताजोयहजीवात्माहै ॥ ताकूंपरमकृपालु ब्रह्मज्ञानीगुरु महावाक्यरूपमहाभेरीके उपदेशरूपीबजानेसें जगावेहैं ॥ तबी यह
जीव ब्रह्मज्ञानरूपीजागरणकूं प्राप्तहूआ आपनेशुद्धसच्चिदानंदब्रह्मरूपकूं निश्चयकरेहै ॥ यहआत्माआपही अपरोक्षरूपसें आपनेस्वरूपकूं
निश्चयकरताभया इसीसेंताआत्माकानामइदंद्रभया ॥ यद्यपि इंद्रनामसें आत्मा बृहदारण्यक आदिकउपनिषदोंमैप्रसिद्धहै ॥ तथापि ब्र
ह्मवेत्तापरमात्माका परोक्षरूपसेंहीनामकहेहैं ॥ दकारअक्षरकूंदूरकरि इदंद्रकेस्थानमै इंद्रकहेहैं ॥ तामैहेतुयहहै ॥ जेयासंसारमैपूज्यहैं तिन
कापरोक्षरूपसेंही नामकहनायोग्यहै ॥ इसीसें आचार्यआदिकभी गुरुजी दीक्षितजी शास्त्रीजी स्वामिजी इत्यादिपरोक्षरूपसें बुलानेक
रिही प्रसन्नहोवेहैं ॥ साक्षात् देवदत्त विष्णुदत्तादिस्वनामसेंबुलाएहूए प्रसन्नहोवेंनहीं ॥ और स्त्रीआदिकभी स्वपतिआदिकोंकेनामकूं सा
क्षात्नहींकहेहैं ॥ किंतु हेस्वामिन्इत्यादिपरोक्षरूपसें उच्चारणकरेहैं ॥ यातेंजेसात्विकदेवताहैं तेपरमेश्वरकापरोक्षरूपसें नामकहेहैं ॥ ऐसे
वामदेवादिकमुमुक्षुरूप सात्विकीप्रजाकूं सनकादिकऋषि अध्यारोप और अपवादरीतिकरिके आत्माकाउपदेशकरतेभये ॥ ऐसेउपदेशकूं ॥ ७० ॥
करिकेकहतेभये हेसात्विकीप्रजा हमताआत्माकेसाक्षात् उपदेशकरणेविषेसमर्थनहीं ॥ इसीसेंहमनेअध्यारोपअपवादरीतिकरिकेही ताआ
त्माकाउपदेश तुमअधिकारीजनोंकूंकराहै ॥ स्वप्रकाशआत्माके साक्षात् उपदेशकरणेविषेतौ कोईसमर्थनहींहै ॥ और आचार्यभी केवल

134

रीतिमात्रसें आत्माकाउपदेशकरेहैं ज्ञानकाकारणतौ अधिकारीकी आपनीयुक्तिआदिकोंविषेचातुर्यहै ॥ जैसेउपदेष्टापुरुषनेतौ कहदियाजोबदरिकाश्रम उत्तरदिशामैंहै ॥ ताबदरिकाश्रमकीप्राप्तितापुरुषकेउद्यमसें तथाऊहापोहरूपचातुर्यसें होवेहै ॥ तैसे आत्माकाउपदेश आचार्यकरेहैं ताआत्माकीप्राप्तितौ शिष्यकेमननादिरूपविचारसेंहोवेहै ॥ यातें हेऋषयः ज्ञानविना मोक्षप्राप्तिहोवेनहीं ॥ ताज्ञानकीप्राप्ति वैराग्यविनाहोवेनहीं ॥ वैराग्यकीप्राप्ति संसारमैदोषदृष्टिसें विनाहोवेनहीं ॥ ऐसे उपदेशकूंकरिके सनकादिकऋषितौ अंतर्धानहोतेभये ॥ सात्विकीप्रजारूपऋषि मिलकरि विचारकरतेभये ॥ ऋषिआपसमैकहेहैं ॥ हेऋषयः हमारेबडेउत्तमभाग्यहैं जिनभाग्यकरि हमारेसनकादिकगुरुभये ॥ परंतुहमारेमै वैराग्यकेअभावसें तिनसनकादिकोंकाउपदेश अपरोक्षब्रह्मज्ञानकूं नउत्पन्नकरताभया ॥ किंतु परोक्षज्ञानकूंही उत्पन्नकरताभया ॥ यामैहमाराहीदोषहै ॥ कोईमहात्मावोंके उपदेशविषेदोषनहीं ॥ यातें हेसज्जना हमवैराग्यकीउत्पत्तिवासते संसारमैदोषोंकूंविचारें ॥ प्रथमतौ याशरीरमै दोषविचारकरणे योग्यहै ॥ यहजीवजबी अनंतयत्नोंकरि अग्निहोत्रादिकोंकूंकरेहै ॥ ताकर्मोंकरि स्वर्गमैप्राप्तहूआ भोगोंकूं भोगकरि वृष्टिआदिद्वारा अन्नमैप्राप्तहोवेहै ॥ ताअन्नकूं जबीपुरुषभक्षणकरे तबीयाजीवका पुरुषकेशरीरमै वीर्यरूपसेंप्रवेशहोवेहै ॥ अन्नादिद्वारा वीर्यरूपसें पिताकेउदरमैस्थितहोनाही ताजीवकाप्रवेशजानना ॥ तावीर्यरूपजीवकूं पिताआपनास्वरूपसेंही धारणकरेहै ॥ ऐसेपिताकेशरीरमै जीवकीप्राप्तिकूंवर्णनकरिके अबमाताके उदरमै प्राप्तिकूंकहेहैं ॥ ऐसेपुरुषकेउदरमैवीर्यरूपसें प्राप्तभयायहजीव जबीपिता ऋतुमतीस्त्रीकेसाथ रमणकरेहै तबीमाताके उदरमैप्राप्तहोवेहै ॥ माताके उदरमै प्राप्तहोना यहजीवकाप्रथमजन्महै ॥ तामाताकेउदरमै प्राप्तहूआयहजीव स्त्रीकेआपनेअंगरूप होइकर रहेहै ॥ यातेंहीतामाताकौ यहजीवनाशकरेनहीं ॥ इसपितारूपमनुष्यकूंक्लेशदेनेहारा जोयहवीर्यरूपपुत्रहै ॥ ताकूंयास्त्रीनेधारणकराहै ॥ यातेंउपकारके करणेहारीस्त्रीकां अन्नवस्त्रादिकोंकरिके पुरुषकूं अवश्यपालनकरणाउचितहै ॥ यापुरुषकेआत्मारूपपुत्रकूं यहस्त्री आपनेउदरमै अनेक

अनुकूलभोजनादिकोंकेकरणेसें रक्षाकरेहै ॥ और पिताभी पुत्रकीउत्पत्तिसें प्रथम नानाप्रकारकेमंत्रउच्चारणादिरूप कर्मकूंकरेहै ॥ जन्म
हूएसेंपश्चात् जातकर्मादिकोंकूंकरेहै ॥ अबजाप्रयोजनवासते पिताने पुत्रकूंउत्पन्नकराहै ॥ ताप्रयोजनकूं निरूपणकरेहैं ॥ पुत्रविना पु
॥ ५ ॥ रुषकी यालोकमैंशोभाहोवेनहीं तथापौत्रादिरूपसंतानवृद्धिभी पुत्रविना होवेनहीं ॥ और श्रेष्ठ धर्मात्मापुत्रकरिके पिताकूं स्वर्गलोककी
प्राप्तिहोवेहै ॥ यातेंयालोककीन्यांई स्वर्गकीप्राप्तिकाकारणभीपुत्रहै ॥ और मोक्षप्राप्तितौ ज्ञानविनाहोवेनहीं ॥ यातेंशुभपुत्र लोकों
काहीकारणहै ॥ मोक्षप्राप्तिकाकारणनंहीं ॥ और यामनुष्यदेहकूं कर्मउपासनाज्ञानद्वारासर्वफलकाहेतुहोनेसें देवादिकभी यामनुष्यदेहकी
इच्छाकरेहैं ॥ यातेंयाभारतखंडविषे द्विजजन्मकूं प्राप्तहोइकरि ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते यत्नअवश्यकरणा ॥ ऐसे द्वितीयजन्मकूं प्राप्तभया
जोपुत्रहै ताकूं पिता शास्त्रीयपुण्यकर्मोंकेकरणेवासते प्रतिनिधिरूपसें आपनेस्थानमैंस्थापनकरेहै ॥ पितातौ देवऋण पितृऋण ऋषिऋण
इनतीनऋणोंसें रहितहोइकरि वृद्धअवस्थाकूंप्राप्तहूआ शरीरकूंत्यागकरेहै ॥ याजीर्णदेहकूंत्यागकरि तृणजलौकाकीन्यांई द्वितीयनवीनदेह
कूंप्राप्तहोवेहै ॥ याजीर्णदेहकूंत्यागकरि द्वितीयनवीनदेहकूंप्राप्तहोना यहहीपुत्रकातृतीयजन्महै ॥ यद्यपि पिताकेगर्भसें माताकेगर्भमैं
आना यहएकजन्म ॥ औरद्वितीयजन्म माताकेगर्भसें बाह्यनिकसनाभीपुत्रकाबनेहै ॥ तृतीयजन्मतौ पिताकाहोवेहै एकहीपुत्रआ
त्माका तृतीयजन्मबनेनहीं ॥ तथापि पुत्रआत्मा तथा पिताआत्मा वास्तवसें एकहीविवक्षितहै यातेंकिंचितविरोधनहीं ॥ और जैसे
पिताजीर्णहूआ कर्मकरणादिक पुत्रकूं अर्पणकरिके मृतहूआ स्वकर्मकेअनुसार द्वितीयजन्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तैसेपुत्रभी स्वपुत्रके शिरपर
सर्वभारअर्पणकरिके मृतहोवेहै ॥ तैसेपौत्र प्रपौत्रादिकभीआपनेकर्मकेफलकूं भोगकरिनाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसे पुण्यात्माकी स्वर्गसेंगिर ॥ ७१ ॥
करि यामनुष्यदेहमै प्राप्तिहोवेहै ॥ पुनःमनुष्यदेहसें स्वकर्मअनुसार शुभअशुभयोनिकीप्राप्तिहोवेहै ॥ भोःऋषयः जेपुरुषपापात्माहैं तिनका
तौस्वर्गमैगमनहोवेनहीं ॥ किंतु नरकप्राप्ति वास्वपापकर्मकेअनुसार सर्पादितिर्यग्योनियोंकीप्राप्तिहोवेहै ॥ मिश्रितकर्मवालेभी पापकी

अधिकतासें म्लेच्छादिक जेजातिसें अधम तथाधनरहित औरपापात्माहैं तिनकेगृहमैउत्पन्नहोवेहैं ॥ पुण्योंकी अधिकतासें उत्तमजातिवाले सत्संगीधनीयोंके गृहमैउत्पन्नहोवेहैं ॥ ऐसेयहजीव ब्रह्मबोधविना स्ववासनाकर्मअनुसार संसारमैघटीयंत्रकीन्यांईफिरेहैं ॥ यासंसारकी ब्रह्मबोधसेंविना कदाचित्भीनिवृत्तिहोवेनहीं ॥ हेसज्जना हमनेभीदुःखरूपयासंसारमै अनित्यता तथास्वर्गआदिकोंसें कर्मफलभोगकेपश्चात् पतनआदिकोंकरि महान्क्लेशहीअनुभवकरेहैं ॥ ऐसेदुःखरूपसंसारसें हमाराचित्त विरक्तभयाहै ॥ यातेंअबहमब्रह्मविचारकूंकरें ॥ ताविचारकरणेकालमै वामदेवमहात्मा मृत्युकूंप्राप्तभया ॥ भावीप्रतिबंधकेवशसें पूर्वजन्ममै सनकादिकोंके उपदेशसेंभी वामदेवमहात्माकूं ज्ञानभयानहीं ॥ माताकेगर्भमै नवमासकेअनंतर प्रारब्धकर्मके भोगसेंनिवृत्तभये ॥ ताकर्मरूपभावीप्रतिबंधकेअभावसें सोवामदेवऋषि ज्ञानकूंप्राप्तभया ॥ और जिनऋषियोंकेसाथमिलकरि विचारकराथा तिनमित्ररूपऋषियोंकूं याप्रकारकेवचनोंकूं माताकेगर्भमैस्थितहूआ वामदेवकहताभया ॥ अबवामदेवकेअनुभवकूं वर्णनकरेहैं ॥ वामदेवउवाच ॥ हेऋषयः मैही पूर्वादिदशदिशावोंमै व्यापकहूं ॥ मैही सूर्यभगवान्रूपहूं ॥ इंद्र यम कुबेर वरुण इत्यादि जेलोकपाल अनंतशक्तिसंपन्नहैं तेसर्वमेराहीस्वरूपहैं मेरेसें भिन्ननहींहैं ॥ ब्रह्मासें आदिजेप्राणी अंडज जरायुज स्वेदज उद्भिज्जरूपहैं तेसर्वरूपमैहूं ॥ महान्आश्चर्यहै मैसर्वअग्निवायुआदिदेवतावोंके जन्मोंकूंजानताहूं ॥ जन्म अस्तिता वृद्धि परिणाम क्षीणता नाश यहषट्विकार स्थूलदेहकाधर्महैं मैतौ सूक्ष्म तथा कारणशरीरकाभी अधिष्ठानहूं कल्पितकेधर्मोंकरि मैअधिष्ठानकी किंचित्हानीहोवेनहीं ॥ जैसे मृगतृष्णाकीनदीकेजलकरि पृथिवीगीलीहोवेनहीं ॥ तैसे मैअधिष्ठानविषे स्थूलसूक्ष्मकारण इनतीनशरीरोंकेधर्मोंका संबंधनहीं ॥ औरजैसे श्येनपक्षीबलवालाहोवेहै ॥ ताकूं लोहकेपिंजरेकरि निरोधकरेहैं ॥ परंतु कोईबलवान्जोश्येनहै सो आपनेवज्रसमानतुंडकरिके पिंजरेकेनीचेदेशकूं भेदनकरिबाहरिनिकसनेसें आनंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे अज्ञानरूपलोहकरिरचित जेचौराशीलक्षयोनीरूपपुरीयांहैं ॥ यहयोनीहीपिंजरहैं रागद्वेषादिरूप जा

पिंजरेमैकीलहैं ॥ ब्रह्मज्ञानरूपीतुंडकरि पंचकोशोंमै आत्मत्वअध्यासरूपपाशकूं मैनेनिवृत्तकराहै ॥ ब्रह्मज्ञानकरि अज्ञाननिवृत्तहो
नेसें देहादिकोंमैअध्यासरूप पाशनिवृत्तिस्पष्टहीहै ॥ हेऋषयः महात्मासनकादिकोंने जोउपदेशकराथा ताउपदेशकरिही मेरेकूं ब्रह्मबो
॥ ६ ॥ धभयाहै ॥ ताबोधकेप्रतापकरिमै मृत्युसेंभी भयकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ काहेते जोजन्मवालाहै ताकामृत्युअवश्यनाशकरेहै ॥ मैअजन्माहूं
यातें मेरेमारणेकूं मृत्युसमर्थनहीं ॥ और मृत्युकाभीमै आत्माहूं आपनेनाशकरणेमै मृत्युकैसेप्रवृत्तहोवेगा ॥ जैसे अग्नि स्वभिन्नकाष्ठादि
कोंकादाहकरेहै आपनेनाशकरणेमै समर्थनहीं ॥ तैसेमृत्यु आपनेसेंभिन्नकेमारणेविषेतौसमर्थहै मृत्युकाभीआत्माजोमैहूं मेरेमारणेमै
मृत्युसमर्थनहीं ॥ जैसे अन्यकेदुःखकरि अन्यद्वितीयपुरुषकूंदुःखहोवेनहीं ॥ तैसे जन्म जरा मृत्यु आदि देहकेधर्मोंकरिके देहसेंभिन्न
जोमैहूं मेरा जन्म जरा मरणआदि कदाचित्होवेनहीं ॥ हेऋषयः आत्मबोधशून्यपुरुषोंकूं यहअष्टदोष अचिकित्स्यहैं ॥ अर्थयह ॥ ज्ञा
नविनाजिनकीऔषधिद्वितीयनहींहै ॥ प्रसंगसें तिनदोषोंका अबनिरूपणकरेहैं ॥ इच्छा द्वेष भय क्षुधा तृषा निद्रा मलमूत्रकीपीडा
यहअष्टदोषहैं ॥ इनअष्टदोषोंकीसंसारमैव्यापकताकहेहैं ॥ संसारमै सात्विक राजस तामस भेदसें तीनप्रकारकेपुरुषहैं ॥ सात्वि
कजेमुमुक्षुहैं तेमोक्षकीइच्छाकरेहैं ॥ राजसपुरुष मोक्ष औरविषय दोनोंकीइच्छाकरेहैं ॥ तामसतौ केवलविषयोंकीइच्छाकरेहैं ॥ इ
च्छाविनाकोईजीवनहींहै ॥ सात्विकका विषयोंसेंद्वेषहै ॥ राजसकाशत्रुवोंसेंद्वेषहै ॥ तामस शत्रुवोंसे तथामित्रोंसें तथासंतजनोंसें द्वेष
करेहै ॥ ऐसे द्वेषभी देहधारीजीवोंमैरहेहै ॥ सात्विककूंप्रमादसेंभयहै ॥ राजसपुरुषोंकूं यमराजासेंभयहोवेहै ॥ तामसकूं राजासें
तथाराजाकेभट्टादिकोंसें भयप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंविषेभयव्याप्तहै ॥ सात्विकपुरुषकूं आत्माकाअज्ञानरूपमोहहै ॥ राजसकूं ॥ ७२ ॥
शास्त्रविद्याका तथाआत्माका अज्ञानहै ॥ तामस सर्वविषेअज्ञानवालाहै ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंमै मोह व्याप्तहै ॥ क्षुधा तृषा निद्रा यह
तीनों सात्विकराजसतामसमैसमानहैं ॥ मलमूत्रकीपीडा वृक्षादिकोंविना सर्वमैसमानहै ॥ अथवा वृक्षादिकभी गूंद एल आदिकोंकूं

त्यागकरेहैं ॥ ऐसे ब्रह्मज्ञानविना यहअष्टदोषकदाचित्निवृत्तहोवैंनहीं ॥ मैंतो महात्माकृपालुसनकादिकोंके उपदेशसें ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहू
आ अष्टदोषोंसेंरहितभयाहूं ॥ भोऋषयः ॥ यहअष्टदोषमनआदिकोंकेधर्महैं ॥ मैं शुद्धसच्चिदानंद परिपूर्णआत्माकूं स्पर्शकरेंनहीं ॥ इच्छा
द्वेष भय मोह यहच्यारितौमनमैंरहेहैं यातेंमनकाधर्महैं ॥ क्षुधा तृषा यहदोनोंप्राणकाधर्महैं ॥ निद्रा इंद्रियोंकातथामनकाधर्महै ॥ मलमू
त्रकीपीडा यास्थूलदेहकाधर्महै ॥ मैंतौमनआदिकोंका साक्षीहूं तासाक्षीआत्माविषे मनआदिसाक्ष्यका तथासाक्ष्यमनआदिकोंकेधर्मों
कासंबंधबनेनहीं ॥ हेऋषयः माताकेगर्भरूपअग्निकुंडविषे मैंवामदेव स्थितहूआभी ब्रह्मज्ञानरूप पौर्णमासीकेचंद्रमाकीशीतलताकरिके ग
र्भकेदुःखरूपतापकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ यातें ज्ञानकेफलमोक्षप्राप्तिमैं तुमने कदाचित् संशयकरणानहीं ॥ ऐसे आत्मज्ञानकाउपदेशकरताहूआ
वामदेवऋषि माताकेगर्भसेंबाहरिनिकसकरि सनकादिकोंकेसमान यासंसारमैं आपनीइच्छाअनुसार विचरताभया ॥ जैसेंसनकादिक
आपनीइच्छाअनुसार ब्रह्मलोकपर्यंतविचरेहैं ॥ तैसे परमजीवन्मुक्त वामदेवभी ब्रह्मलोकपर्यंतकिसीकरिकेभी निरोधकूंनप्राप्तहूआ विचर
ताभया ॥ औरयालोकमैं होनेहारे विषयानंदकी तथापरलोकमैंहोनेहारे विषयानंदकी इच्छाकूं जावामदेवने प्रथमजन्मविषेही निवृत्तकरा
है ॥ ऐसे आपनेप्रारब्धकूं भोगकरिकेक्षयकरताहूआ वामदेवऋषिविदेहकैवल्यकूंप्राप्तभया ॥ ऐसेवामदेवकेवचनोंकूं श्रवणकरिके अ
धिकारीमुमुक्षु परमआश्चर्यकूंप्राप्तहूए आपसमैंयहकहतेभये ॥ महान्आश्चर्यहै यहवामदेव किसीपुण्यकेप्रभावसें परममोक्षकूंप्राप्त
भया ॥ हमखालीरहगये जैसेंगौवांक़ासमूह पंकविषेनिमग्नहोइजावे तिनमैंसें कोईएकगौआपनेभुजाकेबलसें तथापुण्यकेप्रभावसें
निकसजावे ॥ और जैसेजालकरि बांधेपक्षीयोंकेमध्यसें कोईएकपक्षी पुण्यकेप्रतापसेंनिकसजावे ॥ तैसेमोहरूपपंकविषे निमग्नजेहम
हैं तथाकामक्रोधादिपाशोंकरि बांधेजेहमहैं ॥ तिनसर्वसेंवामदेवमुक्तभयाहै ॥ जैसेंदुर्भिक्षआदिउपद्रवके प्राप्तहूएभी मोहकेवशभयेपुरुष
गृहविषेही क्लेशकूंअनुभवकरेहैं ॥ कोईपुरुष मोहरहितहूआ तादेशका परित्यागकरिके सुखकूंप्राप्तहोवे ॥ तैसेहमसर्वसें निकसकरि

139

मोहरहितहूआ वामदेवऋषिआनंदकूंप्राप्तभयाहै ॥ जैसेमार्गविषेमिलकरि सर्वगमनकरेहैं तिनमैंसें कोईपुरुष स्वर्णनिधिकूंप्राप्तहोवे ॥
तैसेवामदेव ब्रह्मज्ञानरूपनिधिकूंप्राप्तभयाहै ॥ जैसेबहुतविद्यार्थी गुरुकीसेवाकरि वेदकापठनकरेहैं ॥ परंतु कोईपुण्यात्मा निपुणमति
॥ ७ ॥ समग्रविद्याकूं प्राप्तहोइकरि आनंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेवामदेव ब्रह्मविद्याकूंप्राप्तभयाहै ॥ जैसेअणिमादिसिद्धियोंकी प्राप्तिवासते तप
मंत्र जपादिकोंकूं अनेकपुरुषकरेहैं ॥ तिनमैंसेंकोईएकपुरुष आपने पुण्यप्रभावसें महान्‌सिद्धिकूंप्राप्तहोइजावे तैसेहमसर्वमैंसें एक
वामदेव ज्ञानरूपसिद्धिकूंप्राप्तभया हमसर्व खालीरहगये ॥ जैसे बहुतव्याधमिलकरि मृगोंकूं पकडलेवें ॥ तिनमैंसें कोईएकमृग आ
पनेपुण्यकेप्रभावसें निकसजावे ॥ तैसेहमसर्वकेमध्यसें यहवामदेव निकसकरिआनंदकूंप्राप्तहूआहै ॥ यावामदेवकूं गर्भविषेभी ज्ञान
उत्पन्नभयाहै ॥ हमारेकूं पृथिवीमै गुरुशास्त्रादिउपायसहस्रकेप्राप्तहोतेभी ज्ञानभयानहीं ॥ औरवामदेवमहात्माने माताकेगर्भविषेस्थित
होइकरि जोहमारेकूं उपदेशकराहै ॥ सोकेवलतामहात्माकीकृपाहै कोईस्नेहनहीं ॥ यदिस्नेहकहैं तौ मातापिताकूं तावामदेवने किसवासते
उपदेशनकरा ॥ गर्भसेंबाहिरनिकसताही वनमैंगमनकरताभयाहै ॥ किसीप्राणीविषे तावामदेवका मोहनहींहै ॥ यातें जैसे सनकादिकों
ने केवलकृपासें हमारेतांई उपदेशकराथा तैसेंकृपापरवशवामदेव माताकेगर्भविषेस्थितहूआभी हमारेतांई उपदेशकरताभयाहै ॥ हमारेबडे
मंदभाग्यहैं ॥ जोहम किसीपुण्यकेप्रभावसें याभारतखंडविषे अधिकारीदेहकूंप्राप्तभयेभी ॥ सनकादिकोंने तथावामदेवमहात्माने हमारे
तांईउपदेशकराभी ॥ परंतु हममंद ब्रह्मबोधकूंनप्राप्तभये ॥ औरकालकूं हमनेव्यर्थहीव्यतीतकरा ॥ ब्रह्मबोधसें रहितहूए हमअबपर्यंत
दुःखकूंही अनुभवकरेहैं ॥ यालोकविषे जैसेविषयसुखदुःखमिश्रितहै ॥ तैसेस्वर्गलोकविषेभी हमनेदुःखकूंही अनुभवकराहै ॥ काहेते ॥ ७३ ॥
स्वर्गलोकमैंयहतीनदोषतौस्पष्टहैं ॥ एकयह जोन्यूनपुण्यकर्मसें जेन्यून भोगवालेपुरुषहैं ॥ तेअधिकभोगवालेपुरुषोंकेसाथ ईर्षाकरेहैं ॥
याकूंसातिशयदोषकहेहैं ॥ द्वितीय पराधीनतादोषहै ॥ इंद्रादिकोंके आधीनही देवतारहेहैं ॥ तीसरा यह जेस्वर्गमै स्थितदेवताहैं ॥

तिनकूंयहज्ञानहोवेहै जोहमने एतेपुण्यकाफलभोगलीयाहै ॥ एताअबीशेषरहताहै ॥ याकर्मकेफलकूं भोगकरि हमपृथिवीविषे अवश्य गिरेंगे ॥ तागिरनेकाभयदेवतावोंकूं सर्वदातपावेहै ॥ यहभयरूपही तीसरादोषहै ॥ हेअधिकारीजना हमस्वकर्मोंकेअनुसार यासंसारमै कबीस्वर्गकूं कबीनरककूं कबीयापृथिवीलोकविषे मनुष्यदेहकूं कबीतिर्यग् देहकूं प्राप्तभये ॥ ऐसेसंसारमैदोषदर्शनसेंहमारेकूं वैराग्यतौभयाहै ॥ अबहममिलकरि ब्रह्मबोधवासते आत्माकाविचारकरें ॥ जाआत्माका हमारेकूं सनकादिकोंनें उपदेशकराहै ॥ सोआत्माकौनहै ॥ स्थूलदेहतौ प्रत्यक्ष जड भौतिक परिच्छिन्नहोनेसेंअनात्माहै ॥ यदिइंद्रियोंकूंआत्मामाने तामैभी यहविचारणीयहै ॥ एकएकइंद्रिय आत्माहै वासर्वमिलकरि तिनकासमुदायहीआत्माहै ॥ एकएकमैभी यदिनेत्रकूंआत्मामाने तौ अंधकाजीवननहींहोवेगा ॥ यदिश्रोत्रकूं आत्मामाने तौबधिरकाजीवननहींहोवेगा ॥ अन्यइंद्रियआत्मामाननेविषेभी यहदोषसमानहै ॥ यातेंएकएकइंद्रिय आत्माबनेनहीं ॥ यदि तिनइंद्रियोंका समुदायही आत्मामाने ॥ तौ एकनेत्र इंद्रियरहित जोअंधपुरुषहै तामै नेत्रघटितसमुदायका अभावहोनेसें ॥ ताअंधकाजीवननहींहूआचाहिये ॥ औरजबीसर्वइंद्रियोंकूंआत्मामाने तौसर्वका एकजैसा संकल्पहोनादुर्घटहै ॥ एककहेगा मै बाहिरजाताहूं द्वितीयका अंतररहनेकासंकल्पहै ॥ ऐसेजबीविरुद्धसंकल्पकरेंगे ॥ तौशीघ्रही यादेहकानाशहोवेगा ॥ यातें इंद्रियआत्मा नहीं ॥ औरप्राण मन विज्ञान चित्त अहंकार इनसर्वमैदृश्यत्व परिच्छिन्नत्व भौतिकत्व ममताविषयत्वादिकोंके अनुभवहोनेसें अनात्मता जाननीयोग्यहै ॥ ग्रंथविस्तारकेभयसें हमने औरयुक्तिविशेषलिखीनहीं ॥ यहआत्माही याशरीरमै साक्षीरूपसें प्रवेशकरताभयाहै ॥ और याआत्मासाक्षीकरिकेही पुरुषनेत्रसेंरूपकूंदेखेहै ॥ तथायाआत्माकरिके श्रोत्रसें शब्दकूंश्रवणकरेहै ॥ औरयाआत्माकरिके घ्राणइंद्रिय द्वारा पुरुषगंधकूंजानेहै ॥ याआत्माकरिकेही यहवाक्इंद्रिय नानाप्रकारकेसंस्कृतभाषादिशब्दोंकूं उच्चारणकरेहै ॥ याआत्माकरिकेहीरसनाइंद्रियद्वारा नानाप्रकारकेमधुरादि स्वादु अस्वादुरसकूंजानेहै ॥ ऐसेयासाक्षीआत्माकूं त्रिविधपरिच्छेदशून्यरूपसें हमनेनिश्चयकराहै ॥

141

॥ ८ ॥ आत्माकूं नित्यहोनेसें कालपरिच्छेदका ताआत्मामैंअभावहै ॥ सर्वत्रव्यापकहोनेसें ताआत्मामें देशपरिच्छेदनहीं ॥ आत्माकूंहीसर्वरूप होनेसें आत्मामें वस्तुपरिच्छेदभीनहीं ॥ इसीआत्माका हमारेतांई सनकादिकऋषियोंने उपदेशकराथा ॥ औरपरमकृपालुवामदेवनेभी याअद्वितीयआत्माका उपदेशकराहै ॥ तिनगुरुवोंकीकृपासें तथा वारंवार आपसमैंमिलकरिविचारकरणेसें अबीयाआत्माकाहमारेकूं निश्चयभयाहै ॥ हेसज्जना हमने वृत्तियोंसहितजोसाक्षी आत्मानिश्चयकराहै ॥ यहआत्माही वास्तवसें अंतःकरण औरवृत्तिउपाधिसेंशून्य शुद्धस्वरूपहै ॥ यातें आगेहोनेहारे अधिकारीजनोंकूं आत्मबोधप्राप्तहोवे इसीप्रयोजनवासते आत्माकेनामोंकूं हमअर्पणकरें ॥ तात्पर्ययह जैसेहमनेहृदयादिपदोंकरिके याशुद्धआत्माका उपाधिकूंत्यागकरिनिश्चयकराहै ॥ तैसेअधिकारीभी हृदयादिनामोंकरिके उपाधिकूंत्यागकरि शुद्धआत्माकूंनिश्चयकरेंगे ॥ अबआत्माके नामोंकूंकहेहैं ॥ प्रथमआत्माकानामहृदयहै ॥ हृदयविषेहीआत्माप्रत्यक्षहोवेहै ॥ उपासनाभीआत्माकी सगुणरूपसें वानिर्गुणरूपसें हृदयविषेहोवेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं हृदयनामसेंनिरूपणकराहै ॥ आत्मासर्वकूंमननकरेहै ॥ तथामनकरिकेही ताआत्माकानिश्चयहोवेहै ॥ यादोनिमित्तोंसें आत्माकूं मनकहेहैं ॥ औरआत्माही आपनेविषेकल्पितजगतकूंप्रकाशेहै यातेंयाचेतनकूं संज्ञानकहेहैं ॥ सूर्य इंद्र चंद्र वायु अग्नि वरुण यम कुबेरादिसर्वप्राणी याआत्माकीआज्ञाविषेरहेहैं ॥ यातें ताआत्माका आज्ञान यहनामहै ॥ यहआत्माही गीत वाद्य आदिचौसठकलाकेज्ञानवालाहै ॥ यातेंयाआत्माकूं विज्ञानकहेहैं ॥ वर्तमान पदार्थकूं यहआत्माजानेहै ॥ यातें याआत्माकूं प्रज्ञानकहेहैं ॥ यहआत्माही ग्रंथकेअर्थकूं धारणकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं मेधाकहेहैं ॥ यहआनंदरूपआत्माही इंद्रियोंकरिकेघटादिकोंकूंप्रकाशेहै यातेंदृष्टिकहेहैं ॥ जाअंतःकरणकीवृत्तिसें दुःखितहूआभीपुरुष इंद्रियोंकूंधारणकरेहै ॥ तावृत्तिविशिष्टआत्माकानाम धृतिहै ॥ यहआत्माही सर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषे स्थितहूआ शुभअशुभकूंजानेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं मति यानामसें कहेहैं ॥ संकल्पविकल्परूपमनकूं आधीनकरणेहारी बुद्धिकीजावृत्तिहैतावृत्तिविशिष्टहूए याआत्माकूंमनीषाकहेहैं ॥

अध्यात्मादित्रिविधदुःखकरि उत्पन्नभयीजाअंतःकरणकीवृत्ति तावृत्तिका प्रकाशहोनेसें याआत्माकूं जूति कहेहैं ॥ भूतपदार्थकूं स्मरण करणेहारी जावृत्तिहै तावृत्तिकेसाथमिलनेसें आत्माकूंस्मृतिकहेहैं ॥ शुक्लपीतरक्तादिअनेकरूपसें आत्माही सम्यक्कल्पनाकरेहै ॥ यातें आत्माकूं संकल्पकहेहैं ॥ यहआत्माही घटादिकोंकेनिश्चयकरणेसें क्रतु कहावेहै ॥ यहआत्मा आपनीसमीपताकरिके प्राणोंकीचेष्टाकूं करावेहै ॥ यातेंआत्माकूं असुकहेहैं ॥ दूरप्राप्तविषयकी तथादुःखनिवृत्तिकीइच्छाकूंकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूंही कामकहेहैं ॥ स्त्रीसुखकी पुरुषकूं जाअभिलाषाहै ताअभिलाषारूपवृत्तिकूं यहआत्माप्रकाशकरेहै ॥ यातेंयाआत्माकूं वशकहेहैं ॥ यह अष्टादशनाम १८ आत्मा के हमनेनिरूपणकरे ॥ अंतःकरण औरअंतःकरणकीवृत्तियोंकूं आत्माप्रकाशकरेहै ॥ यातेंहृदयआदि ताआत्माकेनामहैं ॥ अंतःकरण अंतःकरणकी वृत्तियोंके त्यागकरणेसें यहप्रकाशरूप आत्माहीशुद्धात्माहै ॥ औरवास्तवसेंतौ आत्मासेंभिन्नभूतभौतिकप्रपंच किंचित्मात्रभीनहींहै ॥ यातें देवदत्त यज्ञदत्त घट पट कुड्य वृक्षादियहसर्वनाम आत्माकेहैं ॥ हमनेजेहृदयादि पूर्वनाम निरूपणकरेहैं ॥ सोहमने आत्माकूं अंतःकरणविषे साक्षीरूपसें प्रथमनिश्चयकराहै ॥ यातेंही अष्टादशनामनिरूपणकरेहैं ॥ वास्तवसें सर्वनाम आत्मदेवकेहैं ॥ यहआत्मादेवही सूक्ष्मसमष्टिशरीरका अभिमानीब्रह्मारूपहै ॥ तथा स्थूलसमष्टिशरीरका अभिमानीविराट्‌रूपहै ॥ तथायह आत्मादेवही आपनेस्वरूपकूं प्रत्यक्षकरताभया ॥ यातेंइंद्रकहेहैं ॥ अथवा प्रसिद्धदेवराजइंद्रहीआत्माहै ॥ यहआत्माही प्रजापति अग्नि वायु वरुण यमादिसर्वदेवरूपहै ॥ पृथिवी जल अग्नि वायु आकाश यहपंचभूतआत्मासेंभिन्ननहीं ॥ सर्पादिकजेतुच्छजीवहैं तथा सर्पादिकही द्वितीय सर्पादिकोंकेकारणहैं ॥ तेसर्पादिक तथाअंडजपक्षीआदिक तथाजरायुजमनुष्यादिक स्वेदजयूकादिक उद्भिज्जवृक्षादिक अश्व गौ पुरुष हस्ति जेप्राणी पादोंकरिके गमनकरणेहारेहैं ॥ जेप्राणी आकाशमें गमनकरणेहारेहैं ॥ तथाजेवृक्षादि स्थावरप्राणीहैं ॥ तेसर्वही आत्मरूपहैं ॥ आत्मासेंभिन्न कोईप्राणीनहींहै ॥ ऐसेशरीरोंकूं यहआत्माहीउत्पन्नकरेहै ॥ ताआत्मदेवने उत्पन्नकरणाभीमिथ्याहीहै औरविनाप्रयोजनसेंहै ॥ जैसेमायावी राक्षसोंकाबालक विनाप्रयोजनसें नानाप्रकारकेपदार्थोंकूं आपनी

143

॥ १ ॥ मायाकरि उत्पन्नकरेहै ॥ और आपनेविषेलयकरेहै ॥ तैसेयहआत्माभी आपनीमायाके बलकरि अनंतपदार्थोंकूं विनाप्रयोजनसें उत्पन्नकरेहै ॥ आपनेविषेहीलयकरेहै ॥ जैसेराक्षसोंके बालककीमायाकरि रचितपदार्थमिथ्याहैं ॥ तैसेआत्माकीमायाकरि रचितप दार्थमिथ्याहैं ॥ यहआत्मादेव सजातीय विजातीय स्वगतभेदसेंरहितहै ॥ तथाज्ञानरूपहै यातेंप्रज्ञाकह्याजावेहै तथा प्रज्ञानकह्याजा वेहै ॥ जैसे वृक्षके सजातीय द्वितीयवृक्षहै ॥ पाषाणादि वृक्षसें विजातीयहैं ॥ पत्रपुष्पादिक स्वगतकहीयेहैं ॥ याब्रह्मात्माकेसदृश द्वितीयब्रह्मात्मानहीं यातेंसजातीयभेदनहीं ॥ अज्ञानतत्कार्य ब्रह्मात्माविषे कल्पितहै ॥ यातेंयाब्रह्मात्माविषे विजातीयभेदनहीं ॥ निरवयवहोनेसें आत्माविषेस्वगतभेदभीनहीं ॥ प्रज्ञानरूपब्रह्महीसर्वविषेव्यापकहै ॥ यहसंपूर्णनामरूपजगत् प्रज्ञानरूपब्रह्मविषेस्थितहै ॥ यासर्वलोकका प्रज्ञानरूपब्रह्महीनेत्रहै ॥ अर्थयह जैसेचर्ममयनेत्र तथाइननेत्रोंविषेस्थित जोनेत्रइंद्रियताकरिके हमाराबाह्यव्यवहारसि द्धहोवेहै ॥ तैसेप्रज्ञानरूपब्रह्मकरिकेही हमारासर्वव्यवहारसिद्धहोवेहै ॥ मांसमयनेत्रगोलक तथाइनकेभीतर जोनेत्रइंद्रियहै ॥ सोजग त्काआश्रयनहीं ॥ और यहप्रज्ञानब्रह्मरूपनेत्रतौ सर्वजगत्काआश्रयहै ॥ प्रज्ञानरूप नेत्रही साक्षीरूपसें मनुष्य देव गंधर्व पशु वृक्षा दिकोंविषेस्थितहै ॥ ऐसे प्रज्ञानरूपआत्माकी साक्षीरूपसें स्थितिकूं कथनकरिके महावाक्यकूंकहेहैं ॥ प्रज्ञानंब्रह्म ॥ अर्थयह जासा क्षीआत्माके अष्टादशनामप्रतिपादनकरेहैं ॥ यहसाक्षी चेतनरूपसें सर्वमेंस्थितहै ॥ यातें यहसाक्षीहीब्रह्महै ॥ याप्रज्ञानकूं जोविद्वान् ब्रह्मरूपजानताहै ॥ सोविद्वान् वामदेवकीन्यांई देहादिकोंविषे आत्माभिमानकूं त्यागकरि सुखस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्तहूआ सर्वकामनावों कूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाअमृतत्वभावकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जैसेसनकादिकोंकेउपदेशसें तथावामदेवके उपदेशसें अधिकारी वैराग्यादिसाधनसं पन्नऋषि ज्ञानद्वारामोक्षकूंप्राप्तभये ॥ तैसेजोकोई और अधिकारीभी वैराग्यादिसाधनोंकरिके ज्ञानकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोपुरुषजीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमोक्षकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशिष्यसंप्रदायप्रविष्ट परमहंसपरिव्राजकस्वामि अच्युतानन्दगिरिविरचिते प्राकृतोपनिषत्सारे ऐतरेयार्थनिर्णयः ॥ ८ ॥ ॥ ॥

145

॥ अथ छांदोग्योपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

 ॐ नमस्तस्मैगणेशाय ब्रह्मविद्याप्रदायिने ॥ यस्यागस्त्यायतेनाम विघ्नसागरशोषणे ॥ १ ॥ यामंगलश्लोकका अर्थयहहै ॥ तिसगण
पतिकूंताईं हमारावारंवारनमस्कारहै ॥ जोगणपति ध्यानकरणेसेंब्रह्मविद्याकाप्रदाताहै ॥ औरजिसगणपतिकानाम विघ्नरूप
॥ १ ॥ समुद्रकेशोषणकरणेमै अगस्त्यऋषिकीन्यांईवर्त्तैहै ॥ अबसामवेदकीछांदोग्यउपनिषत्के सारअर्थकूंदिखावेहैं ॥ प्रथमॐकारकी
उपासना ऐसेलिखीहै ॥ ॐ याअक्षरकूं उद्गीथरूपसेंध्यानकरे ॥ जैसेपटकेएकदेशकेदाहहोनेसें पटकादाहभया यहकह्याजावे
है ॥ तैसेसामवेदकेभागकानामउद्गीथहै ॥ ताउद्गीथकेअवयवरूपॐकारकूं उद्गीथरूपजानकरि उपासनाकरे ॥ ऐसेउद्गी
थरूपसें ॐकारकीउपासनाकूंनिरूपणकरिके ताॐकारमै पृथिवीजलादिकोंसें अत्यंतसारतारूप रसतमत्वगुणकाविधानकरा प
श्चात्सर्वकामोकी प्राप्तिकीकारणतारूप आप्तिगुणकाविधानकरा ॥ पश्चात् प्राप्तकामोंकीवृद्धिरूपसमृद्धिगुणकाविधानकरा ॥ ऐ
सेॐकारकीउद्गीथरूपसें रसतमत्वआप्तिसमृद्धिरूपगुणोंविशिष्ट उपासनानिरूपणकरीहै ॥ पश्चात् ताॐकारकीप्राणदृष्टिसें उपा
सनाकहीहै ॥ औरइंद्रियजन्यसात्विकीवृत्तिरूपदेवता तथाइंद्रियजन्यतामसीवृत्तिरूपअसुर ऐसेदेवताओरअसुरोंके युद्धकूंकथनकरि
प्राणकीहीश्रेष्ठतावर्णनकरीहै ॥ ऐसेश्रेष्ठअध्यात्मप्राणरूपसें उद्गीथरूपॐकारकी उपासनानिरूपणकरिके अधिदैवआदित्यरूपसें
ताउद्गीथकी उपासनावर्णनकरी ॥ पश्चात्सर्वसें श्रेष्ठतादिगुणविशिष्टपरमात्मदृष्टिसें ताउद्गीथकी उपासनाकेविधानवासते शि
लक दालभ्य जैवलि इनतीनोंकासंवादवर्णनकरा ॥ ऐसेउद्गीथकीउपासनाकूं निरूपणकरिकै सामभागरूपप्रस्तावकी उपासना
केविधानकरणेवासते आख्यायिकाकथनकरेहैं ॥ एककालमै कुरुदेशविषे सूक्ष्मपाषाणोंकीवृष्टिसें दुर्भिक्षहोइजाताभया ॥ ताकाल
मै चक्रऋषिकापुत्रहोनेसें चाक्रायणनामवाला उपस्तिनामाऋषि अन्नकेनप्राप्तहोनेसें आपनीजायासहित देशांतरविषेगमनकर
ताभया ॥ हस्तिपालककेग्राममै सोउषस्तिऋषिप्राप्तभया ॥ अन्नकेवासतेअटनकरताहूआ सोउषस्तियहदेखताभया ॥ जोहस्ति

पालक निंदितमाषनामउडदरूपअन्नकूं हस्तिकेतांईभक्षकराताहै ॥ मरणपर्यंतविपत्तिकूं प्राप्तहूआसोउषस्ति तिसहस्तिपालकसें तिनमाषोंकूं मांगताभया ॥ सोहस्तिपालक यहकहताभया ॥ हेऋषेयहउच्छिष्टमाषही मेरेसमीपहैं तेरेयोग्यपवित्रमाष मेरेसमीपहैंनहीं ॥ उषस्तितिनउच्छिष्टमाषोंकूंही मांगताभया ॥ सोहस्तिपालक उषस्तिकेतांई तिनमाषोंकूंदेताभया ॥ पुनःहस्तिपालक जलकूंग्रहणकरो यहकहताभया ॥ तबउषस्तियहकहताभया ॥ यहतेराउच्छिष्टजल मैंकैसेपानकरूं ॥ तबहस्तिपालक यहकहताभया क्यायहमाष उच्छिष्टनहींहैं ॥ तबउषस्ति यहकहताभया जबीमैंइनमाषोंकूं नहींभक्षणकरता तबमृत्युकूंप्राप्तहोइजाता ॥ औरजलतौ कूपतडागादिकोंसें इच्छापूर्वकप्राप्तहोइजावेगा ॥ ताउच्छिष्टजलकेपानसें मैंनरककूंप्राप्तहोवूंगा ॥ ऐसेकथनकरिके तिनउच्छिष्टमाषोंकूं भक्षणकरिके शेषरहेमाषोंकूं आपनी जायाकेतांई देताभया ॥ ताभार्याने पूर्वहीभिक्षाकरीथी तिनमाषोंकूं पतिकेहाथसें ग्रहणकरिकै धरदेतीभयी ॥ सोउषस्ति प्रातःकालमैं निद्राकूंत्यागकरिके खेदकूंप्राप्तहूआ यहकहताभया ॥ यहांसें समीपहीराजायज्ञकरताहै ॥ जबीकिंचित्भीअन्न प्राप्तहोइजावे तौताअन्नकूंभक्षणकरिके ताराजासें मैंधनकूंप्राप्तहोवूं ॥ तिनउच्छिष्टमाषोंकूं साजाप्रादेतीभयी ॥ तिनउच्छिष्टमाषोंकूंभक्षणकरिके ताराजाकेयज्ञविषेप्राप्तहूआ सोउषस्ति तिनयज्ञकरणेहारे ब्राह्मणोंके समीपस्थितभया ॥ तबप्रस्तावनामसामके कथनकरणेवाले प्रस्तोतानामाब्राह्मणकेतांई सोउषस्ति यहकहताभया ॥ हेप्रस्तोतः जिसप्रस्तावका तूंउच्चारणकरताहै तिसप्रस्तावकेदेवताकूं नजानकरि यदिमैंविद्वान्केसमीप उच्चारणकरेगा तबतेरामस्तकका अधःपतनहोवेगा ॥ ऐसेउद्गाताआदिनामवाले ब्राह्मणोंकेतांईकह्या ॥ तबसर्वहीभयभीतहूए उपरामहोइजातेभये ॥ तिनब्राह्मणोंकेतूष्णींभावकेअनंतर ताउषस्तिकूं राजायहकहताभया ॥ भगवन् मैंआपकूंजानाचाहताहूं आपकौनहैं ॥ उषस्तिरुवाच ॥ हेराजन्मैंचक्रऋषिकापुत्र उषस्तिनामाहूं ॥ राजोवाच ॥ हेभगवन् मैंनेआपकाबहुतअन्वेषणकरा परंतुआपप्राप्तभयेनहीं ॥ आपकूंनप्राप्तहोइकरि औरहीयज्ञकराने

147

छां॰उ॰ वालेऋत्विक् मैंनेग्रहणकरे ॥ अबभीआपकृपाकरि यज्ञकरवावो ॥ उषस्तिअंगीकारकरतेभये ॥ औरयहकहतेभये जोयहब्राह्मण भा॰१
मेरेआज्ञासें यायज्ञमैं आपनाआपनाकार्यकरें ॥ औरजितनीदक्षिणा तुमइनब्राह्मणोंकेतांईदेवोगे तितनीदक्षिणाहीमेरेतांईदेनी ॥ राजा
॥ २ ॥ नेअंगीकारकरा ॥ तबप्रस्तोताब्राह्मण ताउषस्तिकेसमीपआइकरि यहकहताभया ॥ हेभगवन् आपनेयहकहाथा जोप्रस्तावकेदेवता
कूंजानेविना जबीतूंप्रस्तावभागका उच्चारणकरेगा तबतेरामस्तक गिरजावेगा ॥ भगवन् सोप्रस्तावकादेवता कौनहै आपकृपाकरिक
हो ॥ ऐसेपूछाहूआउषस्ति यहकहताभया ॥ हेप्रस्तोतः जापरमात्मामैं सर्वभूतोंकेउत्पत्तिआदिकहोवेहैं ऐसाप्राणशब्दकाअर्थपरमात्मा
ही प्रस्तावकादेवताहै ॥ ऐसेउद्गातानामऋत्विग्कूं उद्गीथकादेवता आदित्यकथनकरा ॥ औरप्रतिहर्तानामऋत्विग्कूं प्रतिहारनामभा
गका अन्नदेवताकथनकरा ॥ अभिप्राययह जोप्रस्तावभागमैं प्राणपदवाच्य परमात्मदृष्टिकरणी ॥ उद्गीथभागमैं आदित्यदृष्टिकर
णी ॥ प्रतीहारनामकभागमैं अन्नदृष्टिकरणी ॥ इत्यादिउपासनाप्रथमाध्यायमैंहैं ॥ ॥ इतिछांदोग्येप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥ ॥
ॐनमःपरमात्मने ॥ प्रथमाध्यायमैंसामके एकदेशरूपॐकारकाध्यानकह्या ॥ अबद्वितीयाध्यायमैं लोकादिअनेकपदार्थरूपसें समस्त
सामउपासनाकथनकरिकै पश्चात्यहनिरूपणकराहै ॥ तीनधर्मकेस्कंधनामविभागहैं ॥ अग्निहोत्रतथानियमपूर्वक वेदोंकाअध्ययन त
थावेदिसेंबाह्यदान ॥ यहगृहस्थोंकाप्रथमधर्मस्कंधहै ॥ वानप्रस्थोंका कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपतपही द्वितीयधर्मस्कंधहै ॥ आचार्यगृहमैं वि
धिपूर्वकवेदकाअध्ययनकरणेहारा तथाजबतकप्राणहैं तबतकगुरुसेवामैआसक्त तथाभिक्षाअटनादिकोंसें शरीरकानिर्वाहकरणेहारा
जोनैष्ठिकब्रह्मचारीहै ॥ सोनैष्ठिकब्रह्मचारीही धर्मकातृतीयस्कंधहै ॥ यहतीनोंआश्रमी पुण्यकर्मकरतेहूए पुण्यलोकोंकूंही प्राप्तहोवेहैं ॥ ॥ ७७ ॥
ब्रह्मसंस्थोऽमृतत्वमेति ॥ अर्थयह ॥ सर्वकर्मोंकेत्यागकरणेसें ब्रह्मविषे व्यभिचाररहित जाकीस्थितिभयीहै ऐसासंन्यासीही कर्मभिन्नअमृत
रूप मोक्षफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अथवाॐकारकीउपासनाप्रकरणसें पूर्वकहीश्रुतिका यहअर्थजानना ॥ प्रणवहैप्रतीकजाका ऐसाजोब्रह्म

ताब्रह्मकी ॐकाररूपसें उपासनाकरणेवालासंन्यासी क्रमकरिके मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ॐकारहीसर्वसेंश्रेष्ठहै याअर्थकूं उपपादनकरेहैं ॥ प्रजापति सर्वलोकोंसें सारकेग्रहणकरणेकी इच्छावासते ध्यानकरताभया ॥ ध्यानकरते ताप्रजापतिकेमनमै ऋग् यजुर् साम यहती नहीसाररूपसें प्रतीतभये ॥ तिनवेदोंसेंभी सारग्रहणकीइच्छाकरताहूआ प्रजापतिपुनःध्यानकरताभया ॥ ध्यानकरते भूर्भुवःस्वर् य हव्याहृतिरूपअक्षरही साररूपसें प्रतीतहोतेभये ॥ तिनअक्षरोंसेंभी सारजाननेकीइच्छावाला प्रजापति पुनःध्यानकरताभया ॥ तब ॐकारहीसाररूपसें प्रतीतभया ॥ जैसेपर्णोंकेनालरूपशंकुकरिके पत्रोंकेअवयवव्याप्तहैं ॥ अर्थयह ॥ सोपर्णरूपनालही पत्रोंकेअवयवों मे व्याप्तहोइरहाहै ॥ तैसेॐकारही सर्वशब्दोंविषेव्यापकहै ॥ ऐसे ॐकारकेध्यानकूं विधानकरिके पुनःसामविज्ञानकेनिरूपणक रते अध्यायसमाप्तभया ॥ ॥ इतिछांदोग्येद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ ॥ ॐ नमोऽस्तुसूर्यादिविविधरू पिणे ॥ पूर्वद्वितीयाध्यायमै कर्मोंकेअंगभूत सामादिकोंकीउपासनाकही याहृतीयाध्यायमै स्वतंत्रउपासनावोंका विचारकराहै ॥ प्रथमआदित्यादिकोंविषे मधुदृष्टिकाविधानकराहै ॥ पश्चात्गायत्रीका ब्रह्मरूपसेंध्यानकथनकराहै ॥ गायत्रीवाइदंसर्वं ॥ अर्थय ह ॥ यहसंपूर्ण स्थावरजंगमप्राणिमात्रगायत्रीस्वरूपहै ॥ इत्यादिवचनोंसें गायत्रीकूं सर्वरूपताकाकथन गायत्रीउपाधिकब्रह्महीसर्व रूपहै ॥ याअभिप्रायसेंजानना ॥ केवलगायत्रीछंदमात्रकूंतो चरअचरसर्वरूपताबनेनहीं ॥ यातेंगायत्रीउपाधिकब्रह्मकी गायत्रीविषे उपासना जाननी ॥ ऐसेगायत्रीउपाधिकब्रह्मकी उपासनाकूंकथनकरिके पश्चात्शांडिल्यनामाऋषिने कहीविद्याकूं कथनकरेहैं ॥ स र्वंखल्विदंब्रह्मतज्जलानितिशांतउपासीतं ॥ अर्थयह ॥ नामरूपक्रियात्मक यहसर्वजगत् खलुनामनिश्चयकरिके ब्रह्मस्वरूपहै ॥ जिसहे तुसें ताब्रह्मसेंही यहसर्वजगत् उत्पन्नभयाहै ॥ ताब्रह्ममैही लीनहोवेहै ॥ और स्थितिकालमैभी ताब्रह्ममैही स्थितहोइकरि चेष्टाकरिर हाहै ॥ यातेंसर्वकूंब्रह्मस्वरूपजानकरि रागद्वेषादिविघ्नोंसेंरहितहूआ ब्रह्मकाध्यानकरे ॥ ऐसेरागद्वेषसेंराहित्यरूप शमगुणकाविधानक

149

रिकै अबउपासनाकाविधानकरेहैं ॥ शांतहोइकरि अधिकारी ऐसादृढसंकल्पकरे ॥ जैसापुरुषसंकल्पकरताहै यास्थूलशरीरकात्याग
करि आपनेसंकल्पकेअनुसार ताफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंअधिकारीपुरुषने ऐसासंकल्पकरणायोग्यहै तासंकल्पकेविषयकूंदिखावेहैं ॥
॥ ३ ॥ यहआत्मामनोमयहै ॥ अर्थयह ॥ मनकेप्रवृत्तहोनेसें आत्माभीप्रवृत्तहोताप्रतीतहोवेहै ॥ औरमनकेनिवृत्तहोते आत्माभी निवृत्तहो
ताप्रतीतहोवेहै ॥ यातेंआत्माकूंमनोमयरूपसेंध्यानकरे ॥ औरयहआत्मा प्राणशरीरहै ऐसेध्यानकरे ॥ प्राणशब्दकरि प्राणप्रधानलिंगश
रीरलेना ॥ तालिंगशरीरउपाधिकआत्माकूं प्राणशरीरयानामकरिकेकथनकराहै ॥ आत्माके मनोमयः औरप्राणशरीरः यहदोनोंविशेष
ण जीवकाब्रह्मसेंवास्तवअभेदहै यातात्पर्यसें कथनकरेहैं ॥ पुनःयहआत्मा भारूपहै ॥ चैतन्यरूपहोनेसें याआत्माकूं भारूपकथनक
राहै ॥ तथासफलसंकल्पहोनेसें सत्यसंकल्पकह्याहै ॥ आकाशकीन्यांई व्यापक तथासूक्ष्म औररूपरहितहै यातेंयाआत्माकूं आकाशात्मा
ऐसेकह्याहै ॥ सर्वजगत्के उत्पन्नकरणेहाराहै यातेंसर्वकर्माआत्माहै ॥ व्यभिचारादि दोषरहितजोकामहै सोकाम परमेश्वररूपहै यातेंया
आत्माकूं सर्वकामः ऐसेकह्याहै ॥ सर्वसुगंधआत्मरूपहैं यातेंआत्मा सर्वगंधः ऐसेकह्याहै ॥ सुखकरणेहारेरस आत्मरूपहैं यातेंयाआत्मा
कूं सर्वरसःयहकह्याहै ॥ औरसर्वजगत्में व्यापकहै ॥ औरवागादिकसर्वइंद्रियोंसेंरहितहै ॥ अप्राप्तपदार्थकी इच्छाकरिके पुरुषकूंसंभ्रमहो
वेहै नित्यतृप्तआत्मामें तासंभ्रमकाअभावहै ॥ यहआत्माही अधिकारीका वास्तवआपनास्वरूपहै ॥ यहआत्मा व्रीहि यव सर्षप श्यामा
कादिकोंकीन्यांई सूक्ष्महूआभीपरमार्थसेंपृथिवीआकाशस्वर्गादिलोकोंसें महान्व्यापकहै ॥ ऐसेआत्माकूं अधिकारीपुरुष संदेहरहित
आपनेरूपसें जानताहूआ याशरीरकूंत्यागकरि मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसे शांडिल्यनामाऋषि कहताभया ॥ ऐसी शांडिल्यविद्याके प ॥ ७८ ॥
श्चात् विराट्कोशउपासना और आत्मयज्ञउपासनाकानिरूपणकराहै ॥ आत्मयज्ञउपासनामें पुरुषकूंही यज्ञरूपसें वर्णनकराहै ॥ ऐ
सीआत्मयज्ञउपासनाकूं देवकीपुत्रश्रीकृष्णरूपआपनेशिष्यकेतांई आंगिरस्नामकऋषि कथनकरताभया ॥ पश्चात्मनऔरआकाशकी

ब्रह्मरूपसें प्रतीकउपासनाकथनकरीहै ॥ मनकूंब्रह्मरूपजानकरि अधिकारी उपासनाकरे ॥ तथासूर्यकूंब्रह्मरूपसें उपासनाकरे ॥ मन रूपब्रह्मकेचारिपादहैं वाक् प्राण चक्षुः श्रोत्र ॥ ऐसेमनरूपब्रह्मके चारिपादोंकूंकथनकरि अबआदित्यरूपब्रह्मके चारिपादोंकूं दिखा वेहैं ॥ अग्नि वायु आदित्य दिशा ॥ ऐसेचारिचारि पादोंकूं निरूपणकरि ताउपासनाकेफलकूंकथनकरा ॥ ऐसीउपासनाकरणेवालापु रुष यशकूंतथावेदोंकेपठनसें उत्पन्नहोनेहारे ब्रह्मतेजकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ॥ इतिछांदोग्येतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॥

ॐनमःशिवाय ॥ पूर्वतृतीयाध्यायमै आदित्यकीउपासनावर्णनकरी ॥ याचतुर्थाध्यायमै आदित्यमंडलउपाधिवालेहिरण्यगर्भकी उपास नाकहनेकूं प्रथमदानआदिकोंकी उपासनामैसाधनताकूं कथाद्वारावर्णनकरेहैं ॥ जानश्रुतिनामकराजा श्रद्धापूर्वक बहुतपदार्थका दानकरताभया ॥ तथाअतिथिआदिकोंकेतांई बहुतभोजनकादानकरताभया ॥ सर्वदिशावोंमै बहुतस्थानोंकूं बनवाताभया ॥ ताराजा केमनमै यहअभिप्रायथा जोसर्वलोकइनस्थानोंमै मेरेभोजनकूंकरेंगे देवतातथाऋषि राजाकेदानादिगुणोंकरिप्रसन्नहूए हंसोंकेरूपों कूंधारणकरि रात्रिमैराजाकेदृष्टिकाविषय हूए गमनकरतेभये ॥ सर्वकेपीछेचलनेवालाजोहंसथा सोअग्रगामीहंसकूं यहकहताभ या ॥ अरेभद्राक्ष नामसुंदरनेत्रवाले याजानश्रुतिराजाकातेज स्वर्गलोकपर्यंतव्याप्तभयाहै ॥ ताराजाकेतेजकेसाथ संबंधकूंमतिकरो ॥ संबंधकरणेंसें याराजाकातेजतेरादाहकरेगा ॥ अबअग्रगामीहंस पृष्ठगामीहंसकूंकहेहै ॥ अरेभद्राक्ष क्यातूं इसप्राणिमात्र जानश्रुति राजाकूं रैक्ककेसदृशकहताहै ॥ जोमहात्मारैक्क आपनेशकटकूंसाथराखताहै ॥ तिसरैक्ककेसदृश यहराजाकैसेहोइसकताहै ॥ अग्रगामी हंसउवाच ॥ अरेभद्राक्ष सोमहात्मारैक्कऋषि कैसेवर्त्तताहै ॥ पृष्ठगामीहंसउवाच ॥ जैसेचारिअंकोंमै एकदोतीनअंकअंतर्गतहोवेहैं ॥ न्यू नसंख्या अधिकसंख्याके अंतर्गतहोवेहै ॥ यातेंचारिअंकके अंतर्गत एक दो तीन अंकहैं ॥ तैसेजेशुभकर्म सर्वपुरुषकरतेहैं तेसर्वधर्म रै क्ककेधर्मकेअंतर्भूतहैं ॥ तथासर्वपुरुषोंकेधर्मकाफलभी रैक्कऋषिकेधर्मकेफलविषे अंतर्भूतहै ॥ औरकेवलरैक्ककाही यहमाहात्म्यनहींहै ॥

151

किंतुजोपुरुष रैक्ककीउपासनाजैसीउपासनावालाहै ॥ तिससर्वउपासकपुरुषका यहमाहात्म्यजानना ॥ ऐसेहंसोंकेमुखसें आपनीनिं
दाकूं औररैक्ककीप्रशंसाकूं जानश्रुतिराजा श्रवणकरताभया ॥ रात्रिमैंनिद्रासेंविनाही वर्त्तमानहूआराजा प्रातःकालमैं स्तुतिकरनेवाले
॥ ४ ॥ आपनेसार्थीकूं यहकहताभया हेप्रिय अबमेरीतूंक्यास्तुतिकरताहै ॥ स्तुतिकेयोग्यरैक्कऋषिहै मैंस्तुतिकेयोग्यनहीं ॥ शकटसहितजोरैक्क
ऋषिहै सोसर्वसेंअधिकधर्मात्माहै ॥ राजाकेअभिप्रायअनुसार सोसार्थी अनेकग्रामोंमैं तारैक्कऋषिका अन्वेषणकरताभया ॥ परंतुता
ऋषिकूंप्राप्तभयानहीं ॥ तासार्थीकूंराजाकहेहै ॥ अरेसूत जहांएकांतदेशमैं ऋषिलोकस्थितहोवें तादेशमैंजाइकरि अन्वेषणकरो ॥ ऐ
सेवचनकूंश्रवणकरि एकांतदेशमैं आपने शरीरविषेकंडूकरतेरैक्ककूं सोसूतदेखताभया ॥ समीपजाइकेरैक्कऋषिकेपासस्थितभया ॥
औरयहकहताभया ॥ भगवन् आपहीरैक्कऋषिहैं ॥ रैक्ककहतेभयेहमहीरैक्कहैं ॥ सोसूत जानश्रुतिराजाकूं सर्वनिवेदनकरताभ
या ॥ सूतकेवचनकूंश्रवणकरि जानश्रुतिराजा षट्शत ६०० गौतथाकंठपहरणेयोग्यहार औररथ ऐसेधनकूंग्रहणकरि रैक्कऋषि
कूंप्राप्तभया नमस्कारकरताहूआ राजाकहेहै ॥ हेभगवन् यहषट्शतगौहार रथ इनकूंग्रहणकरो ॥ और जिसदेवताकी आपउ
पासनाकरतेहो तादेवताकामेरेतांईउपदेशकरो ॥ रैक्कउवाच ॥ अरेशूद्र गौहार रथ इनकूंतुमलेजावो मैंइनकूंक्याकरूंगा ॥ क्षत्रि
यराजाकूं शूद्रकहनेसें रैक्कऋषिआपनीसर्वज्ञतासूचनकरतेभये ॥ रात्रिमैंतूंशोककरताहूआ मेरेपासप्राप्तभयाहैं ॥ ऐसेशोककरणे
सें क्षत्रियराजाकूं रैक्कऋषिने शूद्रकहा ॥ रैक्ककेवचनकूंश्रवणकरि राजानेसूतकेवचनसें यहनिश्चयकरा ॥ यारैक्ककीगृहस्थहोने
कीइच्छाहै औरधनभीअल्पहै ॥ पुनःराजाएकसहस्र १००० गौ औरहार रथ और आपनीकन्याकूं लेकरि रैक्कऋषिकेपासप्राप्तहूआ
यहकहताभया ॥ हेभगवन् यासर्वधनकूंग्रहणकरो ॥ और यहमेरीकन्या आपकीजायाहोवे ॥ और जिनग्रामोंमैं आपस्थितभयेहो य
हग्रामभी आपकेहोवें ॥ जादेवताकीआपउपासनाकरतेहो तादेवताकामेरेतांई आपकृपाकरिउपदेशकरो ॥ रैक्कउवाच ॥ हेशूद्र शास्त्र

उक्तप्रकारसें धनादिकोंकेदानपूर्वकतूंपूछताहै ॥ ऐसेंकथनकरिके सर्वधनकूं तथाकन्याकूं सोरैक्कग्रहणकरताभया ॥ औरजिनग्रा
मोंकूंराजा रैक्ककेतांईदेताभया तिनमहावृषनामकदेशमैंहोनेहारे ग्रामोंकूं रैक्कपर्णनामसेंकहेहैं ॥ अबरैक्कऋषि राजाकूंउपदेशकरेहै ॥
वायुहीसंवर्गहै ॥ संवर्गनाम सर्वकेग्रसनेहाराहै ॥ जबअग्निशांतहोवेहै तबसो अग्निवायुमैंहीलीनहोवेहै ॥ ऐसेंसूर्यअस्तहूआ वायुमैंलीन
होवेहै ॥ चंद्रमाअस्तहूआ वायुमैंलीनहोवेहै ॥ जलशुष्कहूए वायुमैंलीनहोवेहैं ॥ वायुहीइनसर्वकूं ग्रसनकरेहै ॥ यहअधिदैवउपदेशक
रा ॥ अबअध्यात्मउपदेशकूं श्रवणकरो ॥ हेराजन् यहप्राणहीसंवर्गहै ॥ जबपुरुषशयनकरेहै तबप्राणमैंही वाग्लीनहोवेहै ॥ तथाप्राणमैं
हीचक्षुश्रोत्रमनलीनहोवेहैं ॥ इनसर्ववागादिकोंकूं प्राणआपनेविषेलीनकरेहै ॥ देवतावोंविषे बाह्यवायु तथाअंतरइंद्रियरूप सर्वप्राणों
विषे मुख्यप्राण यहदोनोसंवर्गहैं ॥ अबइनदोनोंसंवर्गोंकीस्तुतिवासते आख्यायिकाकहेहैं ॥ शौनक पुरोहितसहित अभिप्रतारीनाम
कराजा भोजनस्थलविषे भोजनवासतेदोनोंस्थितभये ॥ ताकालमैं कोईब्रह्मचारी भिक्षाकूंमांगताभया ॥ ब्रह्मचारीकेज्ञानकी परीक्षावास
ते पुरोहिततथाराजा ताब्रह्मचारीकूं भिक्षानदेतेभये ॥ तबब्रह्मचारी यहकहताभया ॥ जोदेव भूरादिसर्वलोकोंकारक्षकहै ॥ तथाचारिअ
ग्निआदिकोंकूं तथाचारिवागादिकोंकूं आपनेविषेलीनकरेहै सोदेवकौनहै ॥ जादेवकूं अविवेकीपुरुषजानेनहीं जोदेव अध्यात्मअधिदैव
अधिभूतरूपसें बहुतप्रकारसें स्थितहोइरहाहै ॥ अन्नकेभोक्ताप्राणकूं एकरूपसेंजानताहूआ ब्रह्मचारीकहेहै ॥ हेअभिप्रतारिन् जादेवके
वासते अनेकप्रकारकेअन्नहैं तादेवकूंतुमनेअन्ननहींदीया ॥ ब्रह्मचारीकेवचनकूंश्रवणकरिके मनमेविचारकरताहूआशौनक ब्रह्मचारी
केपासआइकरि यहकहताभया ॥ हेब्रह्मचारिन् तादेवकूंअविवेकीनहींजानते परंतुहमतौजानतेहैं ॥ अग्निआदिदेवोंकासोदेवआत्माहै
स्थावरजंगमकाजनकहै ॥ सोदेव अभग्नदंष्ट्रहै तथामेधावीहै ॥ जादेवकी अपरिमितविभूतिहैं ऐसेध्यानानिष्ठपुरुषकहतेहैं ॥ सोदे
व अग्निआदिकोंकूं भक्षणकरेहै ॥ तादेवकाभक्षणकरणेहाराकोईनहीं ॥ हेब्रह्मचारिन् ऐसेप्रजापतिकेरूपका हमध्यानकरतेहैं ॥ शौ

छां० उ० नकपुरोहितब्रह्मचारिसें ऐसेसंवादकरिकै आपनेस्वपकारभृत्योंकूं यहकहताभया ॥ भोभृत्या तुम इसब्रह्मचारीकेतांई भिक्षादेवो ॥ भा० १
भृत्य भिक्षाकूंदेतेभये ॥ जोकोईपुरुष पूर्वकहेप्रकारसें प्राणकेस्वरूपकाउपासनकरेहै ॥ सोउपासक सर्वपदार्थोंकाज्ञाता तथातेजस्वी
॥ ५ ॥ होवेहै ॥ अबश्रद्धागुरुसेवादिसाधन उपासनाकेअंगहैं याअर्थकेकहनेकूं औरआख्यायिकाकहेहैं ॥ जबालामाताकापुत्रहोनेसें जाबालना
मक सत्यकामनामाबालक आपनीजबालानामामाताकूं यहकहताभया ॥ हेमातः गुरुकुलमै मेराब्रह्मचर्यकरणेकासंकल्पहै ॥ हमा
राक्यागोत्रहै ॥ यहकृपाकरिकहो ॥ मातोवाच ॥ हेपुत्र यौवनअवस्थामै आपनेपतिकीसेवाविषे मैतत्पररही ॥ तथापतिकेगृहमैप्राप्त
भये जेअतिथिआदिकहैं तिनकीसेवामै तत्पररही ॥ औरतायौवनावस्थामै पतिसें लज्जाकरि मैनेगोत्रनहींपूछा ॥ तायौवनकालमैही
तुमप्राप्तभये ॥ तेरेपिताभी मेरेयौवनकालमैहीमृतभये ॥ यातेंमै गोत्रकूंतौनहींजानती ॥ मेरानामजबालाहै ॥ हेपुत्र तेरानामसत्यका
महै ॥ एतावन्मात्रमैजानतीहूं ॥ तुमगुरुकेसमीपजावो औरगुरुजीपूछेंतौतिनकूंयहकहदेना ॥ जोमेरीमाताकानामजबालाहै तथामे
रानामसत्यकामहै ॥ ऐसेमाताकेवचनकूंश्रवणकरि गौतमऋषिकेशरणकूंप्राप्तहूआसत्यकामयहकहताभया ॥ भोभगवन् आपके
समीप मैब्रह्मचर्यकराचाहताहूं मैशिष्यपरकृपाकरो ॥ गौतमउवाच ॥ भोसौम्य तेराकौनगोत्रहै ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् मै
आपनेगोत्रकूंनहींजानता ॥ मैने आपनीमातासेंपूछाथा तामातानेमेरेकूंयहकहा ॥ हेपुत्र यौवनावस्थामैलज्जाकरि पतिसें आपनागोत्र
मैनेपूछानहीं पश्चात्पतिमृतहोइगये ॥ यातेंमैगोत्रकूंजानतीनहीं ॥ जबतुमकूंगुरुजीपूछें तबयहकहना जोमेरीमाताकानामजबालाहै मे
रानामसत्यकामहै ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि गुरुकहेहैं यदियहब्राह्मणनहोता तौसत्यकैसेकहता ब्राह्मणहीस्वभावसें ऋजु सत्यवक्ता ॥ ८० ॥
होवेहैं ॥ हेसौम्य तूंसत्यसेंचलायमाननहींभया यातेंप्रसन्नहूआ मैतेराउपनयनरूपसंस्कारकरूंगा तूंसमिधलेआ ॥ ऐसेसत्यकामके
उपनयनादि करिके अध्ययनकरावतेभये ॥ तागौतमऋषिकेगृहमै गौबहुतथी तिनगौवोंमैसें चारिशत ४०० गौ कृशबलहीनथी तिन

चारिशतगौवोंकूं पृथक्करिके सत्यकामशिष्यकूंदेताभया ॥ औरगुरुयहकहताभया ॥ हेसौम्य यहगौबहुतनिर्बलहैं इनकूंबनविषेले जावो ॥ तिनगौवोंकूं बनविषेलेजाताहूआ सत्यकामयहकहताभया ॥ जबपर्यंतयहचारिशतगौवां एकसहस्र १००० नहींहोवेंगी तबप र्यंतमैंने बनसेंआनानहीं ॥ ऐसेकहकरि तिनचारिशतगौवोंकूं बनविषे सत्यकामलेजाताभया ॥ ताबनमैं बहुतवर्षरहताभया ॥ तेचारिश तगौ जबएकसहस्रपूर्णहोइगयी ॥ तागौवोंकूं चरानेवालेसत्यकामकूं वृषभशरीरविषेप्रविष्टहूई दिशाअभिमानीवायुदेवता गुरुकी सेवाकरिप्रसन्नहूई कहतीभयी ॥ हेसत्यकाम ॥· सत्यकामकहताभया हेभगवन् ॥ वृषभउवाच ॥ हेसौम्य हमगौवांसहस्रपूर्णहोइ ग यीहैं ॥ तेरीप्रतिज्ञापूर्णभयीअबहमारेकूं आचार्यकेगृहविषेलेचलो ॥ औरब्रह्मकेपादकूंमै तेरेतांईकहताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभ गवन् ॥ वृषभउवाच ॥ हेसत्यकाम पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण यहचारिदिशाब्रह्मकाचारिकलावालापादहै ॥ यादिशारूपब्रह्मकेपादका नामप्रकाशवान्‌है॰॥ जोउपासक याप्रकाशवान्‌नामक ब्रह्मकेपादकूं जानताहै सोआपप्रकाशवान्‌हूआ प्रकाशवान्‌लोकोंकूं प्राप्तहो वेहै ॥ हेसत्यकाम ब्रह्मकादूसरापाद तेरेकूं अग्निउपदेशकरेगा ॥ ऐसेकथनकरिके वृषभतौउपरामभया ॥ तबसत्यकाम प्रातःकालविषे गौवोंकूंआचार्यकेगृहमैलेआनेवासते तिनगौवोंकूंचलाताभया ॥ जबसायंकालभया तबसर्वगौवां एकठीस्थितभयी ॥ सत्यकाम का ठसेंअग्निकूंप्रज्वलितकरिके अग्निकेसन्मुख औरगौवोंकेसमीपहीस्थितभया ॥ वृषभनेजो कहाथा तेरेकूं अग्निदूसरेपादकाउपदेशकरेगा तावृषभकेवचनकूं स्मरणकरताभया ॥ तबअग्निनेसंभाषणकरा ॥ हेसत्यकाम ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् ॥ अग्निरुवाच ॥ हेसत्य काम मैब्रह्मकेपादका उपदेशकरताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ अग्निरुवाच ॥ पृथिवी अंतरिक्ष स्वर्ग समुद्र यहब्रह्मकापाद है ॥ यापादकानामअनंतवान्‌है ॥ जोध्यातापुरुष याचारिकलावालेब्रह्मके पादकाध्यानकरेहै सोध्यातापुरुष अनंतलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरब्रह्मकेपादकूं तेरेतांई हंसरूपसूर्यउपदेशकरेंगे ॥ गौवोंकूंआचार्यकेगृहमै लेआनेवासते प्रातःकालमै सत्यकाम गौवोंकूंचला

ताभया ॥ रात्रिमैं अग्निकेसन्मुखस्थितभया ॥ ताकालमैं हंसरूपसूर्यकहतेभये हेसत्यकाम ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् ॥ हंसउवाच ॥
ब्रह्मकेपादकूंमैं कहताहूं ॥ सत्यकामउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ हंसउवाच ॥ अग्नि सूर्य चंद्र विद्युत् यहचारिकलावालाब्रह्मकापादहै ॥ या
॥ ६ ॥ पादकानामज्योतिष्मान्है ॥ जोपुरुषयाचारिकलावाले ज्योतिष्मान्नामकपादका ध्यानकरताहै ॥ सोध्यातापुरुष ज्योतिष्मान्लोकोंकूं
प्राप्तहोवेहै ॥ हेसत्यकाम मद्गुनामकजलचरपक्षी तेरेकूंब्रह्मकापादकहेगा ॥ मद्गुकरिकेयहांप्राणलेना सोप्राणरूपमद्गु सायंकालमैं
कहेहै ॥ हेसत्यकाम ॥ सत्यकामउवाच ॥ भगवन् ॥ मद्गुरुवाच ॥ हेसत्यकाम तेरेतांई मैंब्रह्मकेपादकाउपदेशकरताहूं ॥ सत्यका
मउवाच ॥ कहोभगवन् ॥ मद्गुरुवाच ॥ प्राण चक्षु श्रोत्र मन यहचारिकलावालाब्रह्मकापादहै ॥ यापादकानामआयतनवान्है ॥ जो
पुरुषयाआयतनवान् नामकब्रह्मकेपादकाध्यानकरताहै सोपुरुष सावकाशलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ पश्चात्सोसत्यकाम आपनेआचार्य
केगृहविषे प्राप्तहूआ आचार्यकूंदंडवत्करताभया ॥ आचार्यकहेहैं हे सत्यकामजैसेब्रह्मवेत्ता प्रसन्नवदन तथाचिंतारहित कृतार्थहोवेहै ॥
तैसेतूंभी प्रसन्नवदनत्वादिलिंगोंसें ब्रह्मवित्कीन्यांईप्रतीतहोताहैं ॥ तुमकूं किसने उपदेशकराहै ॥ सत्यकामउवाच ॥ हेभगवन् मनुष्यों
सेंविनाहीदेवतावोंने मेरेतांई उपदेशकराहै ॥ भगवन् तेरेविनाकिसकासामर्थ्यहै जो आपकेमैंशिष्यकूं उपदेशकरिसके ॥ तेरेशापसें
सर्वमनुष्यभयभीतहैं ॥ हेभगवन् मेरेतांईदेवतावोंने उपदेशकराभीहै ॥ परंतु मैंनेआपसदृश ऋषियोंसें यहश्रवणकराहै जोआपनेगुरुसें
प्राप्तभयीविद्या श्रेष्ठफलकूंप्राप्तकरेहै ॥ यातेंभगवन् मेरीयहइच्छाहै जोआपकृपाकरि ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरो ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणक
रिआचार्यउपदेशकरतेभये ॥ हेसत्यकाम देवतावोंने जोतुमारेतांई पृथक्पृथक्ब्रह्मकेपादनिरूपणकरे तिनकेध्यानसें पुरुषकृतार्थहोवे ॥ ८१ ॥
नहीं ॥ किंतुसो षोडशकलब्रह्मचतुष्पादहै ॥ ऐसीसमस्तउपासनासेंही फलप्राप्तहोवेहै ॥ अबपुनःश्रद्धातपआदिकोंकूं उपासनाकाअं
गरूपकहनेवासते औरआख्यायिकाकहेहैं ॥ कमलनामककिसीऋषिकापुत्रहोनेसें कामलायननामकूंप्राप्तहूआ उपकोसलनामकऋषि

पूर्वकहेसत्यकामऋषिके शरणकूंप्राप्तभया ॥ तासत्यकामऋषिकेसमीप ब्रह्मचर्यकूंधारणकरताहूआ द्वादश १२ वर्षगुरुकेअग्नियोंकीसे
वाकरताभया ॥ और सत्यकामऋषि अन्यबहुतशिष्योंकेतांई वेदपठाइकरि आपनेआपनेगृहोंमै भेजदेताभया ॥ उपकोसलनामशिष्य
केतांई वेदकाउपदेशनहींकरताभया ॥ तासत्यकामऋषिकीजाया सत्यकामकूंयहकहतीभयी ॥ हेपते यहउपकोसलनामकब्रह्मचारी
बहुतकालसें अग्नियोंकीसेवाकरताहै ॥ याअग्नियोंकेभक्तउपकोसलकूं विद्यादेकरिआपनेगृहविषे आपनहींभेजते ॥ यहसत्यकामहमारे
भक्तउपकोसलकूं विद्याकाउपदेशनहींकरता याअभिप्रायसें यहअग्नि तुमारीनिंदामतिकरें ॥ यातेंयाउपकोसलकेतांई विद्याकाउपदेश
करो ॥ सत्यकामश्रवणकरताभया ॥ औरविद्याकेउपदेशकरेविनाही जायाकूंभीकुछउत्तरनदेताहूआ किसीविदेशमैचलाजाताभया ॥
ताआचार्यकेअभिप्रायकूं नजानकरि उपकोसल मानसदुःखकरिपीडितहूआ अन्नकेत्यागकरणेकासंकल्पकरताभया ॥ तूर्णींहोइकरि
अग्नियोंकेगृहमैस्थितभया ॥ ताउपकोसलकूं दुःखीदेखकरि आचार्यकीजायायहकहतीभयी ॥ हेउपकोसल तूंभोजनकरिले तुमनेभोजन
काकिसवासतेत्यागकराहै ॥ उपकोसलउवाच ॥ हेमातः याप्राकृतपुरुषमै अनेकप्रकारकीइच्छाहोवेहैं ॥ अनेकमानसदुःखोंकरि मैंपरिपूर्ण
हूं ॥ यातेंमैभोजननहींकरता ॥ अग्नियोंने जबउपकोसलकाअन्नकेत्यागकाहीसंकल्पदेखा तबसेवाकरिप्रसन्नहूए तीनोंअग्निमिलक
रिआपसमैयहकहतेभये ॥ याउपकोसलनामकब्रह्मचारीने हमारीबहुतसेवाकरीहै औरआचार्यनेइसकीउपेक्षाकरीहै ॥ यातेंऐसे
श्रद्धालुकेतांई हमहीविद्याकाउपदेशकरें ॥ ऐसेकृपायुक्तअग्नि आपसमैविचारकरि तपस्वीब्रह्मचारीकेतांई यहकहतेभये ॥ हेउपको
सल प्राणोब्रह्म कंब्रह्म खंब्रह्म ॥ उपकोसलउवाच ॥ हेभगवंतः जीवनकेहेतुप्रसिद्ध प्राणकूंतौ मैब्रह्मरूपजानताहूं कं खं केअर्थकूंमै
नहींजानता ॥ अग्नयऊचुः ॥ हेउपकोसल जोयहकंनामसुखरूपब्रह्महै सोई खं नामआकाशकीन्याई व्यापक ब्रह्महै ॥ जोखंहैनामव्याप
कब्रह्महै ॥ सोईकंनामसुखस्वरूपब्रह्महैभिन्ननहीं ॥ कं ब्रह्म एताहीकहते तौसुखस्वरूपब्रह्महै ॥ यहअर्थहोनेंसे जन्यविषयसुखहीब्रह्म

 सिद्धहोता यातें खं ब्रह्मनामआकाशकोन्यांई व्यापकब्रह्मकहा ॥ विषयसुखपरिच्छिन्नहै व्यापकब्रह्मरूपनहीं ॥ खंब्रह्म एताहीकहते व्या
पकब्रह्महै यहअर्थहोनेसें आकाशहीब्रह्महै यहअर्थसिद्धहोता ॥ यातेंकंब्रह्मनाम सुखरूपब्रह्महै यहकहा ॥ सुख भिन्नहोनेसें दुःखरूपआ
॥ ७ ॥ काश सुखरूपनहीं ॥ यातें कं खं यहदोनोंस्वरूपब्रह्महै ॥ ऐसेअग्निमिलकरि प्राणरूपकार्यब्रह्मका तथाआकाशनामक सुखविशिष्टकारण
ब्रह्मका उपदेशकरतेभये ॥ पश्चात् गार्हपत्यनामकअग्नि आपनीविद्याकाउपदेशकरताभया ॥ हेब्रह्मचारिन् पृथिवी अग्नि अन्न आदित्य
यहचारिमेरेशरीरहैं ॥ जोयह आदित्यमंडलमैं स्थितपुरुषहै सोमैंगार्हपत्यनामअग्निहूं मैंगार्हपत्यअग्निही आदित्यमंडलमैं स्थितपुरु
षहूं ॥ जोपुरुषऐसेंध्यानकरताहै सोपुरुषमेरेलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयालोकमैंभीप्रसिद्धहूआ शतवर्षपर्यंतजीवताहै ॥ याउपासक
पुरुषकीसंततिकाउच्छेदनहींहोवेहै ॥ ताउपासकका यालोकविषे तथापरलोकविषे हमपालनकरेहैं ॥ पश्चात् अन्वाहार्यपचननाम
कअग्निने आपनीविद्याका उपदेशकरा ॥ हेसौम्य जल दिशा नक्षत्र चंद्रमा यहमेरेचारिशरीरहैं ॥ चंद्रमामैंस्थितपुरुषमैंहूं मैंहीचंद्रमामैं
स्थितपुरुषहूं ॥ उपासककूं फलप्राप्तिपूर्वकीन्यांईजानलेनी ॥ पश्चात्आहवनीयनामकअग्निने आपनीविद्याका उपदेशकरा ॥ हेउपकोस
ल प्राण आकाश स्वर्ग विद्युत् यहचारिमेराशरीरहैं ॥ उपासककूंफलप्राप्ति गार्हपत्यअग्निप्रकरणमैंकहीरीतिसें जानलेनी ॥ तीनोंअग्निमि
लकरि उपकोसलकूंकहेहैं ॥ हेउपकोसल यहहमने पृथक्पृथक्आपनीविद्याकही आत्मविद्यातौहमने कं ब्रह्म खं ब्रह्मइसवाक्यसेंकही
है ॥ औरआचार्यविना विद्याफलीभूतहोवेनहीं ॥ यातें आचार्यस्तुतेगतिंवक्ता ॥ अर्थयह ॥ तेरेतांईआचार्य आत्माके स्थानादिकोंका
कथनकरेंगे ॥ ऐसेकथनकरि अग्निउपरामहोतेभये ॥ पश्चात् आचार्यभी आइप्राप्तभये ॥ आचार्यउवाच ॥ भोउपकोसल उपकोसल
दंडवत्करताहूआ कहताभया भगवन् ॥ आचार्यउवाच ॥ हेसौम्य ब्रह्मवेत्ताकेमुखकीन्यांई तेराप्रसन्नमुख मैंदेखताहूं ॥ तेरेकूंकिसनेउ
पदेशकराहै ॥ उपकोसलउवाच ॥ भगवन् आपकेशिष्यमेरेकूं आपसेंविना औरकौनउपदेशकरणेहाराहै ॥ यहअग्निआपकेआनेसेंप्रथ

म औरप्रकारकेप्रतीतहोतेथे ॥ अबआपकेआनेसें जैसेंपुरुष कांपताहै वैसेंहीप्रतीतहोतेहैं ॥ याकहनेसें यहसूचनकराया जो अग्नियों नेही मेरेतांईउपदेशकराहै ॥ आचार्यउवाच ॥ हेसौम्य तेरेतांई इनअग्नियोंनेक्याउपदेशकराहै ॥ उपकोसलने अग्नियोंका उपदेश सर्वश्रवणकराइदीया ॥ आचार्यकहेहैं हेसौम्य अग्नियोंने तेरेतांई लोकोंकाही उपदेशकराहै ॥ ब्रह्मका संपूर्णउपदेशकरानहीं ॥ तेरे तांई प्रथमसविशेष ब्रह्मज्ञानकेमाहात्म्यकूं मै कथनकरताहूं ॥ जैसे कमलपत्रमै जलोंकासंबंधहोवेनहीं तैसेंब्रह्मज्ञानीमै पापकर्मका संबंधहोवेनहीं ॥ उपकोसलउवाच ॥ हेभगवन् आपकृपाकरि ब्रह्मकाउपदेशकरो ॥ आचार्यउवाच ॥ हेसौम्य निवृत्ततृष्णावाले तथा जितइंद्रिय शांतात्मा जापुरुषकूं द्रष्टारूपसें नेत्रमैस्थितजानतेहैं यहद्रष्टापुरुषही सर्वप्राणियोंकाआत्माहै ॥ यहआत्माही अविनाशी अ भय व्यापकब्रह्मस्वरूपहै ॥ याउपकोसलकेतांई जाआत्माकाउपदेश अग्नियोंने कं खं रूपसेंकराथा ताआत्माकाहीउपदेश द्रष्टारूपसें अ बआचार्यनेकरा कोईभिन्ननहींजानना ॥ औरयहद्रष्टाआत्माअसंगहै ॥ जैसेकोईनेत्रोंमै जलकावाघृतका प्रक्षेपकरेहै ॥ सोजलवाघृत ने त्रोंकेपक्षरूपपलकोंमैही स्थितहोवेहै नेत्रोंमैसंबंधवालाहोवेनहीं ॥ जबीनेत्रभी जलघृतादिकोंसें संबंधवालेहोवेंनहीं तबनेत्रोंमै स्थित द्रष्टापुरुष असंगहैयामैक्याकहनाहै ॥ अबनेत्रस्थद्रष्टाआत्माकेध्यानवासते ताद्रष्टाआत्माकेगुणोंकूं कथनकरेहैं ॥ यानेत्रस्थआत्माकूं संय द्वाम ऐसेकहेहैं ॥ संयद्वामइसपदकाअर्थयहहै ॥ सर्वप्राणिमात्रकेकर्मोंकेफल याद्रष्टापुरुषकूंआश्रयकरिकेही उत्पन्नहोवेहैं ॥ यातें यानेत्रस्थपुरुषकूं संयद्वामकहेहैं ॥ औरयाआत्माकूं वामनीकहेहैं ॥ सर्वप्राणियोंके आपनेकर्मोंकेफलोंकूं यहआत्माहीप्राप्तकरेहै ॥ या तेंयाआत्माकूं वामनीकहाहै ॥ औरयाद्रष्टाआत्माकूं भामनीकहेहैं ॥ यहनेत्रस्थआत्माही सूर्यचंद्रादिरूपहूआ सर्वकाप्रकाशकरेहै ॥ यातें याद्रष्टाआत्माकूं भामनीकहाहै ॥ औरजोउपासक यानेत्रस्थपुरुषका ब्रह्मरूपसेंध्यानकरताहै ॥ सोध्यातापुरुषभी सबकर्मफलोंकूंप्राप्तहो वेहै ॥ औरप्राणियोंकेकर्मोंकेफलोंका प्राणियोंकेतांई प्राप्तकरणेहाराहोवेहै तथासर्वलोकोंमै प्रकाशकरेहै ॥ औरयाउपासककेशरीरसेंप्रा

 णकेवियोगरूपमरणहूए ताउपासककेमृतशरीरका पश्चात् पुत्रशिष्यादि दाहादिरूपसंस्कारकरें अथवानहींकरें सोउपासकतौब्रह्मलोकमै
अवश्यप्राप्तहोवेगा ॥ अबउपासकपुरुषोंकी ब्रह्मलोकमैप्राप्तिकेवासते देवयानमार्गकूंकहेहैं ॥ यहउपासकपुरुष यास्थूलशरीरकात्याग
॥ ८ ॥ करतेहूए प्रकाशअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् दिनअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् शुक्लपक्षके अभिमानीदेवताकूंप्रा
प्तहोवेहैं ॥ पश्चात् षट्मासउत्तरायणअभिमानी देवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् वर्षअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात् आदित्यकूंप्रा
प्तहोवेहैं ॥ पश्चात् चंद्रमाकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात्विद्युत्नामविजलीकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ ब्रह्मलोकसें यामनुस्टष्टिमैनहोनेहारा अमानवपुरुष
ताविद्युतलोकमैआइकरि तिनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकमैप्राप्तकरेहै ॥ ताब्रह्मलोकमै हिरण्यगर्भरूपकार्यब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यामार्गमै
देवताहीउपासककूं प्राप्तकरणेहारेहैं ॥ यातेंयामार्गकानाम देवपथश्रुतिमैकहाहै ॥ यामार्गकरि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै यातेंया
मार्गकानाम ब्रह्मपथभीकहाहै ॥ यामार्गकरि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मकूं प्राप्तहूएउपासक यामनुभगवान्कीसृष्टिरूपसंसारचक्रमै घटीयंत्र
कीन्यांई प्राप्तहोवेंनहीं ॥ यामार्गकरि हिरण्यगर्भरूपब्रह्मकीप्राप्ति कार्यब्रह्मकीउपासनाकेसहित सोपाधिककारणब्रह्मकीउपासनाका
फलहै ॥ ऐसे सत्यकामऋषि आपनेउपकोसलनामकशिष्यकूं सोपाधिकब्रह्मकाही उपदेशकरताभया ॥ निर्गुणब्रह्मवेत्ताकेतौ प्राणादि
कगमनकरेनहीं किंतुब्रह्ममै लयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अबकिंचित् शेषरहे चतुर्थाध्यायकातात्पर्ययहहै ॥ जबपुरुषयज्ञकरेहै तायज्ञमै
कोईअंगभंगरूपक्षतउत्पन्नहोवे तबताक्षतरूप प्रतिबंधकी निवृत्तिअर्थ व्याहृतियोंकाविधानहै ॥ इतिछांदोग्येचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ८३ ॥
ॐनमोनारायणाय ॥ अबपंचमाध्यायका पुनरावृत्तिवाले पितृयाणमार्गकेनिरूपणवासतेआरंभहै ॥ तथाकष्टरूपसंसारगतिकावर्ण
न वैराग्यउत्पत्तिवासतेकराहै ॥ प्रथमप्राणकीज्येष्ठता श्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥ माताकेगर्भमै यहप्राणही प्रथमवृत्तिकूंलभताहै यातेंअव
स्थाकरि यहप्राणहीज्येष्ठहै ॥ प्राणही सर्ववागादिकोंसें गुणोंकरिभीश्रेष्ठहै ॥ जोपुरुष श्रेष्ठ तथाज्येष्ठरूपसें प्राणकीउपासनाकरताहै ॥

सोउपासकभी आपनेंज्ञातियोंमै ज्येष्ठश्रेष्ठहोवेहे ॥ ऐसेहीवागादिकोंमैभी जोजोगुणकह्याहै तिसतिसगुणकीप्राप्ति उपासकपुरुषकूं जानले नी ॥ वाग्हीवसिष्ठगुणवालाहै वाग्मिनाम यथार्थकहनेहारेपुरुष अन्यधनीपुरुषोंकूंभीदबायलेवेहैं ॥ चक्षुहीप्रतिष्ठाहै चक्षुवालापुरुषही नेत्रोंकरि समविषमस्थानकूं देखताहूआ स्थितहोवेहे ॥ श्रोत्रहीसंपतहै पुरुष श्रोत्रोंकरिवेदोंकाश्रवणकरेहे ॥ श्रवणकरिकर्मकेज्ञानवाला हूआ तिनकर्मोंकिकरणेसें इच्छापूर्वकसंपतकूंप्राप्तहोवेहे ॥ यातेंसंपतकाहेतुहोनेसें याश्रोत्रमैसंपतगुण श्रुतिमैकहाहै ॥ नेत्रादिइंद्रियोंसें उत्पन्नभये जेसर्वविषयोंकेज्ञानहै तेसर्वज्ञान मनविषेरहेहैं यातेंयामनकूं आयतनश्रुतिमे कहाहै ॥ यहवागादि तथामुख्यप्राण आपस मैविरोधकरतेभये ॥ वाक्कहेहैमैश्रेष्ठहूं नेत्रकहेहैमैश्रेष्ठहूं ऐसेसर्वही आपसमै विवादकरतेहूए निर्णयवासते आपनेपिताप्रजापतिकेपास आतेभये ॥ प्रजापतिकूंकहतेभये हेभगवन् हमारेसर्वमै कौनश्रेष्ठहे यहआपकृपाकरिकहो ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ तुमारेमध्यमै जिसके निकसनेसें यहशरीरगिरजावे सोईतुमारेमैश्रेष्ठहै ॥ तबवाग्इंद्रिय याशरीरसें निकसजाताभया ॥ एकवर्षकेपश्चात् वाग्इंद्रियप्राप्तभया औरश्रोत्रादिकोंकूं यहकहताभया ॥ तुममेरेविना कैसेजीवतेभये ॥ श्रोत्रादिकयहकहतेभये ॥ जैसेमूकपुरुष औरसर्वइंद्रियोंका व्या पारकरतेहूए वाग्इंद्रियसेंविनाभीजीवतेहैं ॥ ऐसेहमभी तेरेविनाजीवतेरहेहैं ॥ तबवाग्इंद्रिय आपकूंअश्रेष्ठमानताहूआ याशरीरमैप्रवेश करताभया ॥ तबचक्षुइंद्रिय बाह्य निकसिकरि वर्षभरबाहिररहा पश्चात्आइकरि जबश्रोत्रादिकोंसें यहपूछा मेरेविना तुमकैसे जीवते भये ॥ तबश्रोत्रादिकोंनेयहकह्या जैसेअंधे औरइंद्रियोंसेंव्यापारकरतेहूए स्थितहोवेहैं तैसेतेरेविनाभीहमजीवतेभये ॥ तबचक्षुभी आ पकूंअश्रेष्ठमानकरि याशरीरमै प्रवेशकरताभया ॥ श्रोत्रभी याशरीरसेंबाह्यनिकसकरि कहींचलागया ॥ वर्षकेपश्चात् आइकरिनेत्रादिकों सेपूछा जोतुममेरेविना कैसेजीवतेरहे ॥ नेत्रादिकोंनेकहा जैसेबधिरपुरुष औरइंद्रियोंसें व्यापारकरतेहूएश्रोत्रविनाभीजीवतेहैं ऐ सेहमभी तेरेविनाजीवतेरहे ॥ तबश्रोत्रनेभी आपकूंअश्रेष्ठमानकरिप्रवेशकरा ॥ मनभीशरीरसें बाह्यनिकसिकरि वर्षभरबाहिररहा

161

॥ १ ॥ पश्चात्नेत्रादिकोंसें आइकरिपूछा तुममेरेविना कैसेजीवतेरहे ॥ नेत्रादिकोंनेकहा ॥ जैसेबालक मनकीप्ररूढावस्थासैंविनाही जीवतेहैं ॥
तैसेहमभी तेरेविना जीवतेरहे ॥ मनभी आपकूंअश्रेष्ठमानकरि शरीरमैं प्रवेशकरताभया ॥ तबमुख्यप्राण याशरीरसें बाहिरनिकसने
कूं संकल्पकरताभया ॥ जैसेकोईबलवान्अश्व आपनेपादकेबंधनकेहेतुकीलोंकूं उत्पाटनकरेहै ॥ तैसेनेत्रश्रोत्रादिइंद्रियोंकूं मुख्यप्राण
आपनेस्थानोसैं चलायमानकरताभया ॥ नेत्रश्रोत्रादिइंद्रिय आपनेस्थानोंसैंचलायमानहूए प्राणोंविना तिनआपनेस्थानोंविषे स्थित
होनेकूं समर्थनहोतेभये ॥ औरमुख्यप्राणकूं यहकहतेभये हेभगवन् आपहमारेस्वामीहोवो आपहीश्रेष्ठहो याशरीरसें मतिनिकसे ॥ जै
सेवैश्यलोक वलियोंकूंलेकरि राजाकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसेवागादिकआपनेआपनेगुणोंकूं ताप्राणकेतांई अर्पणकरतेभये ॥ वागुवाच ॥ हेभ
गवन् जो मै वसिष्ठगुणसहितहूं सोवसिष्ठगुणआपकाहै ॥ ऐसेनेत्रने प्रतिष्ठागुणअर्पणकरा ॥ श्रोत्रने संपत्गुणअर्पणकरा ॥ मनने
आयतनगुणअर्पणकरा ॥ औरयहकहतेभये हेभगवन् यहगुणतौ आपकेहीथे परंतुअज्ञानकरि हमने आपनेमानलीयेथे ॥ जिस
हेतुसें वागादिकोंकीचेष्टा प्राणोंसैंविनाहोवेनहीं इसीवासते इनवागादिकोंकूंभी वेदवेत्तापुरुष प्राणनामसैंहीकथनकरेहैं ॥ वागा
दिकोंकास्वामी श्रेष्ठतादिगुणोवालाप्राणमैंहूं यहप्रधानउपासनाकही ॥ अबप्राणके अन्नवस्त्रदृष्टिरूपअंगका विधानकरेहैं ॥ मुख्य
प्राणउवाच ॥ हेवागादिकामेअन्नक्याहै ॥ वागादिकहेहैं हे भगवन् देवता मनुष्य पशु पक्षि आदिप्राणिमात्रका अन्नही आपका अ
न्नहै ॥ प्राणकेउपासकपुरुषने सर्वकेअन्नविषे मैंप्राणकाहीयहअन्नहै ऐसीदृष्टिकरणी ऐसेध्यानकरणेहारेपुरुषकेसमष्टिप्राणकाही यहसर्व
अन्नहैं ॥ अबवस्त्रदृष्टिकाविधानकरेहैं ॥ मुख्यप्राणउवाच ॥ हेवागादिका मेरावस्त्रक्याहै ॥ वागादिकहेहैं ॥ हेभगवन् जलहीतेरावस्त्र ॥ ८४ ॥
है ॥ इसीवासते श्रेष्ठपुरुष भोजनकेआदिमै तथाअंतमै जलसेंआचमनलेतेहैं ॥ सोआचमनलेनाही प्राणकाजलरूपवस्त्रसें आच्छादनकर
णाहै ॥ ऐसेध्यानकरणेवालापुरुष वस्त्रोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यहसत्यकामजाबालने गोश्रुतिनामआपनेशिष्यकूं उपदेशकराहै ॥ ऐसेऔरभीप्राण

उपासनाकीस्तुतिलिखीहै ॥ संक्षेपसेंहमनेकुछकहीहै ॥ प्राणउपासनाका निरूपणकरिके अबपंचअग्निविद्याका निरूपणकरेहैं ॥ अरुण ऋषिकापौत्र श्वेतकेतुनामाकुमार प्रवाहणनामाराजाकीसभामै प्राप्तहोताभया ॥ प्रवाहणराजाताश्वेतकेतुकूं यहपूछताभया ॥ हेकुमार तेरेकूंपिताने उपदेशकराहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ हांभगवन् मेरेकूंपितानेउपदेशकराहै ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो यालोककूंत्यागक रि प्रजा जहांउपरिजातीहैं सोतुमजानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन्यहमैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो परलोकमैप्राप्तहूई प्रजाजिसप्रकारसेंपुनः यालोकमैप्राप्तहोवेहैं सोतूंजानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन् यहभीमैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो देवयानमार्गके तथापितृयाणमार्गके परस्परवियोगकूंतूं जानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन् मैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ स्वर्गलोक मै अनेकपुरुषप्राप्तहोवेहैं सोस्वर्गलोक जानिमित्तसें पूर्णनहींहोता तानिमित्तकूं तूंजानताहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन् मैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो जिसप्रकारसें अग्निहोत्रकेसाधन दुग्धघृतादिरूपजल अपूर्वरूपहूए वीर्यरूपपंचमीआहुतिसें पुरुषशब्दवाच्य होवेहैं सोतुमजानतेहो ॥ श्वेतकेतुरुवाच ॥ भगवन् मैनहींजानता ॥ राजोवाच ॥ हेश्वेतकेतो तुमनेप्रथमयहकिसवासतेकहा जोमेरेकूं पिताने उपदेशकराहै ॥ जोमैतेरेसेंपूछताहूं तिसकेउत्तरकूं तूंकहतानहीं औरयहभीकहताहैं जोमेरेकूंपिताने उपदेशकराहै ॥ जोतेरे कूंउपदेशकराहै तौकिसवासतेनहींकहता ॥ ऐसेश्वेतकेतुउत्तरकेनहींआनेसें दुःखीहूआ पिताकेस्थानमैआइकरि पिताकूं यहकहताभ या ॥ हेभगवन् मेरेकूंउपदेशकरे विनाही तुमनेयहकहा जोहेपुत्र तुमारेतांईहमनेउपदेशकरदीयाहै ॥ प्रवाहणनामकराजाने मेरेसें पं चप्रश्नपूछे मेरेकूं एककाउत्तरनहींआया ॥ पितोवाच ॥ हेपुत्र जिनपंचप्रश्नोंकाउत्तर राजाने तेरेसेंपूछा तिनपंचप्रश्नोंकेउत्तरकूं मैभीनहींजानता ॥ यदिमैजानता तौतुमप्रियपुत्रकूं मैकिसवासतेनकहता यातेंमैनहींजानता ॥ ऐसेकथनकरि श्वेतकेतुकापिता गो त्रसेंजो गौतमसंज्ञाकूंप्राप्तथा सोप्रवाहणराजाके स्थानमैप्राप्तभया ॥ ताप्राप्तभयेश्वेतकेतुकेपिता गौतमऋषिकी सोप्रवाहणराजा पूजा

॥ दूसरेदिनमैं प्रातःकालविषे सोगौतमऋषि प्रवाहणराजाकेसमीप प्राप्तभया ॥ सोप्रवाहणराजा गौतमंऋषिका पूजनकरता
 करताभया ॥ दूसरेदिनमैं प्रातःकालविषे सोगौतमऋषि प्रवाहणराजाकेसमीप प्राप्तभया ॥ सोप्रवाहणराजा गौतमंऋषिका पूजनकरता
हूआ यहकहताभया ॥ हेगौतम जोयहमेराधनहै तथाग्रामादिकहैं तिनमैंसें आपनीइच्छाअनुसार तुममांगो जोमांगोगे सोईमैंआपके
॥१०॥ तांईंदेवूंगा ॥ गौतमउवाच ॥ हेराजन् यहमानुष वित्ततेरे पासहीरहे मैंइसधनकूंनहींचाहता ॥ मैंतौयहचाहताहूंजेपंचप्रश्न मेरेपुत्रश्वे
तकेतुसें आपनेपूछेथे तिनपंचप्रश्नोंकेहीउत्तर मेरेकूंकहो ॥ तबयहश्रवणकरि राजादुःखीभया दुःखीहोनेमैकारणयह जोविद्याभीगो
प्यहै औरब्राह्मणमांगताहै नदेनाभीउचितनहीं ॥ तब राजागौतमकूं यहकहताभया ॥ हेगौतम तुमयहांचिरकालरहो ॥ चिरकालके
पश्चात् राजायहकहताभया ॥ हेगौतम तुमसर्वविद्यासंपन्नहूएभी जोमेरेसें पंचप्रश्नोंका उत्तरपूछतेहो तुमारेअज्ञानसेंमैयह जा
नताहूं जोयहविद्या हमक्षत्रियराजालोकोंमैहीथी ॥ अबमेरेसेंतुमारेद्वारा ब्राह्मणोंमैभी प्रवृत्तहोवेगी ॥ औरजोहमनेचिरकालरहणेवासते
आपकूंकहा ॥ सोविद्यान्यायसेंहीकहनीचाहिये याशास्त्रकीआज्ञाकूंमानकरि हमनेकहा ॥ हमाराअपराध आपक्षमाकरणेयोग्यहो ॥
ऐसेकथनकरि अर्थक्रमकेअनुसार प्रथमपंचमप्रश्नकेउत्तरकूं राजाकहताभया ॥ राजोवाच ॥ हेगौतम यहस्वर्गलोकही आहवनी
यअग्निहै ॥ यास्वर्गलोकअग्निका आदित्यहीप्रज्वलितकरणेहारा समिध्नाम इंधनरूपहै ॥ सूर्यकीकिरणाहीधूमहैं ॥ दिनहीस्वर्गलोक
रूप अग्निका अर्चिःनामप्रकाशहै ॥ चंद्रमाहीअंगारहैं ॥ नक्षत्रहीविस्फुलिंगहैं ऐसेध्यानकरणा ॥ यजमानकेवागादिइंद्रिय अधिदेव
अग्निआदिरूपकूंप्राप्तहूए श्रद्धाकरिसंपादनकरी जोजलादिरूपआहुतिहै ताआहुतिकूं स्वर्गलोकरूपअग्निमै हवनकरेहैं ॥ ताआहुतिसें
चंद्रमंडलमैजलरूपयजमानकाशरीर उत्पन्नहोवेहै ॥ पर्जन्यनामवृष्टिकेकरणेहारे देवताविशेषमै अग्निध्यानकरणा ॥ वायुहीताकाइंधन ॥८५॥
है ॥ वादलहीधूमहै ॥ विद्युत्प्रकाशहै ॥ मेघसेंउत्पन्नभये उल्काविशेष तथाइंद्रखड्गादिकहीअंगारहैं ॥ मेघोंकेशब्दहीविस्फुलिंगहैं ॥
यापर्जन्यरूपअग्निमै पूर्वकहेदेवही सोमरूपआहुतिका हवनकरेहैं ॥ श्रद्धापूर्वक हवनकराजोजलरूपसोम तासेंवृष्टिउत्पन्नहोवेहै ॥ हेगौ

तम पृथिवीहीअग्निहै ॥ ताकावर्षहीइंधनहै ॥ तथाआकाशहीधूमहै ॥ अवांतरदिशाहीविस्फुलिंगहैं ॥ यापृथिवीरूपअग्निमै देवताव र्षारूपआहुतिकाहवनकरेहैं ॥ तबअन्नउत्पन्नहोवेहै ॥ ऐसेध्यानकरणा ॥ यहपुरुषहीअग्निहै ॥ यापुरुषरूपअग्निका वाग्हीइंधनहै ॥ प्राणहीधूमहै ॥ जिव्हाप्रकाशहै ॥ चक्षुअंगारहैं ॥ श्रोत्रविस्फुलिंगहैं ॥ यापुरुषरूपअग्निमै अन्नरूपआहुतिकेहवनकरणेसें रेतनामवी र्यउत्पन्नहोवेहै ॥ पंचमस्त्रीहीअग्निहै ॥ याकाउपस्थहीइंधनहै ॥ यास्त्रीसेंअवाच्यकर्मवासते पुरुषसंकेतकरेहै सोईधूमहै ॥ योनिप्रकाशहै ॥ अवाच्यकर्महीअंगारहैं ॥ रेतरूपआहुतिकेहवनकरणेसें गर्भउत्पन्नहोवेहै ॥ हे गौतम ऐसेपंचमीरेतरूपआहुतिके हवनकरणेसें दुग्धादि रूपजलही परंपरासें पुरुषशब्दवाच्यहोवेहैं ॥ ऐसेसोमाताकेउदरमैस्थित तथाजरायुकरिआच्छादितहूआगर्भ नववादशमासकेपश्चात् बाहिरआवेहै ॥ जबपर्यंतकर्महै तबपर्यंतयालोकमै स्थितहोवेहै ॥ भोगकरिकर्मकेक्षीणहूए परलोकमै आपनेकर्मकेअनुसारप्राप्तहोवेहै ॥ तापुरुषकेपुत्रादियाकूंमृतहूआदेखकरि दाहकरणेवासते ग्रामसेंबाह्यलेजावेहैं ॥ यहपुरुषशरीर श्रद्धापूर्वकअग्निमैहवनकरणेसें अग्निकेस काशसेंहीआयाथा पश्चात्अग्निमैही प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेपंचमप्रश्नकेउत्तरकूंकथनकरिकै अबयादेहकूंत्यागकरि प्रजाउपरिकहांजातीहैं याप्रथमप्रश्नके तथादेवयानऔरपितृयाणकेपरस्परवियोगरूप यातृतीयप्रश्नके उत्तरकूंकहेहैं ॥ हेगौतम जेगृहस्थ पूर्वकहीरीतिसें पंच अग्नियोंकी उपासनाकरतेहैं तथाजेवानप्रस्थ तथासंन्यासी श्रद्धापूर्वकतपकूंकरतेहैं ॥ तेसर्व पूर्वकहेदेवयानमार्गकरि ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोवेहैं ॥ औरजेपुरुषगृहस्थाश्रममै अग्निहोत्रादिरूपइष्टकर्मकूं तथावापीकूपादिरूप आपूर्त्तकर्मकूं तथावेदीसेबहिरदानकूंकरते हैं ॥ तेकेवलकर्मीगृहस्थ पितृयाणमार्गसें स्वर्गकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पितृयाणमार्गकाक्रम याश्रुतिमैऐसेलिखाहै ॥ तेकर्मीयाशरीरकूं त्यागकरि प्रथमधूमअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात्रात्रिअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ तासेंकृष्णपक्षअभिमानीदेवताकूंप्राप्त होवेहैं ॥ तासेंषट्मासदक्षिणायनअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ पश्चात्वर्षअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवेनहीं किंतु षट्मासअभिमानी

देवतासें पितृलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पितृलोकसें आकाशकूं आकाशसें चंद्रमंडलकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तेकर्मी चंद्रमंडलरूपहूए देवतावोंकेभो
गकासाधनहोवेहैं ॥ जबपर्यंतकर्महैं तबपर्यंतचंद्रमंडलमै स्थितहोवेहैं ॥ भोगकरिकर्मकेक्षीणहूए जामार्गकूंप्राप्तहोवेहैं तामार्गकूंकहैहैं ॥
॥११॥ कर्मीपुरुषचंद्रमंडलसें आकाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ आकाशसेंवायुकूं वायुसेंधूमकूं धूमसेंअभ्रकूं अभ्रसें वर्षाकरणेयोग्यमेघकूं प्राप्तहोवेहैं ॥
मेघसेंवर्षाद्वारा यापृथिवीमै व्रीहि यव औषधि तिल माषादिरूपसें उत्पन्नहोवेहैं ॥ आकाशादिकोंसेंतथाव्रीहियवादिकोंसेंकर्मीपुरुष
संबंधकूंप्राप्तहोवेहैं व्रीहियवादिरूपही नहींहोवेहैं ॥ यहवार्त्ता याउपनिषत्केभाष्यमै तथाश्रीमच्छारीरकभाष्यविषे विस्तारसेंकहीहै ॥ औ
रयाअन्नकेसकाशसें कर्मीपुरुषोंका निकसना अतिकष्टसेंहोवेहै ॥ जबीताअन्नकूं पुरुषभक्षणकरेहै सोअन्नरेतरूपहोइकुरि पुरुषकेशरीरमै
रहैहै ॥ ऋतुकालमै जबपुरुष स्त्रीकेसाथगमनकरेहै तबस्त्रीकेउदरमै कलल बद्बुदादिरूपअवस्थाकूं प्राप्तहोइकरि बालकहूआ पश्चा
त्बाहिरआवेहै ॥ तद्यइहरमणीयचरणाअभ्याशोहयत्तेरमणीयां योनिमापद्येरन् ब्राह्मणयोनिंवाक्षत्रिययोनिं वावैश्ययोनिंवा ॥ अर्थ
यह ॥ तिनकर्मीयोंकेमध्यमै यालोकविषे पूर्वजेपुण्यकर्मवालेहैं अभ्याशनामशीघ्रही तेपुण्यात्मा रमणीयनामपुण्ययोनिकूंहीप्राप्तहोवे
हैं ॥ तापवित्रयोनिकूंही कथनकरेहैं जैसेब्राह्मणयोनि वाक्षत्रिययोनि वावैश्ययोनि ऐसेपवित्रयोनियोंकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ अथयइहकपूयच
रणाअभ्याशोयहत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन्श्वयोनिंवासूकरयोनिंवाचंडालयोनिंवा ॥ अर्थयह ॥ पुनःयालोकमै पूर्वजेपापकर्मवालेहैं तेपा
पात्मा शीघ्रही निंदितपापयोनिकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ जैसेकूकरयोनि वासूकरयोनि वाचंडालयोनि ऐसीनीचयोनियोंकूं पापीपुरुषप्राप्तहोवे
हैं ॥ इसरीतिसें प्रवाहणराजाने यालोकसें उपरिप्रजाकहांजातीहैं याप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं ऐसेकह्या ॥ जेपुरुष पंचाग्निउपासनामै तथाश्र ॥८६॥
द्धासहिततपमै आरूढहैं तेउपासकपुरुषदेवयानमार्गकरि ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहैं ॥ केवलकर्मीपितृयाणमार्गकरि स्वर्गकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ पि
तृयाणमार्गका तथादेवयानमार्गका परस्परवियोगकैसेहै ॥ यातृतीयप्रश्नकाउत्तरयहकह्या पितृयाणमार्गवालेकर्मी वर्षअभिमानी

166

देवताकूं प्राप्तहोवेनहीं तथापुनः यासंसारमैप्राप्तहोवेहैं ॥ परलोकमैप्राप्तभयीप्रजा पुनःयालोकमै कैसेप्राप्तहोवेहैं याद्वितीयप्रश्नकाउत्तरभी ऐसेजानलेना मेघादिद्वारायालोकमैप्राप्तहोवेहैं ॥ अबस्वर्गलोक अनेककर्मीपुरुषोंके प्राप्तहोनेसें पूर्णकिसवासतेनहींहोता याचतुर्थप्रश्नकेउत्तरकूं कथनकरेहैं ॥ हेगौतम जेपुरुषाधम पितृयाणमार्गके साधनशुभकर्मसें रहितहैं ॥ तथादेवयानमार्गकेसाधन उपासना श्रद्धातप ब्रह्मचर्य सत्य क्षमा अकौटिल्य आदिकोंसेंरहितहैं ॥ तेक्षुद्रपुरुष वारंवारयासंसारमै घटीयंत्रकीन्यांई जन्ममरणकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंही स्वर्गलोक पूर्णहोवेनहीं ॥ अभिप्राययह ॥ प्रथमतो यासंसारमै स्वर्गकेसाधनधर्मका अनुष्ठानही केचित्पुरुषकरेहैं ॥ बहुत पुरुष धर्मकेअनुष्ठानसेंरहित रसनाऔरउपस्थइंद्रियकेआधीनहूए कीटपतंगादियोनीयोंकूंहीप्राप्तहोवेहैं ॥ स्वर्गकेसाधन धर्मके अनुष्ठान करणेसेंभी आपनेकर्मफलकूंभोगकरि पूर्वकहीरीतिसें यासंसारमैहीप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसेपापीपुरुषोंकी तथासकामपुण्यवालेपुरुषोंकी या कष्टरूपसंसारमै प्राप्तिकूंदेखकरि उत्तमअधिकारीपुरुष वैराग्यकूंप्राप्तहोवे ॥ वैराग्यउत्पत्तिवासतेही यासंसारगतिकाकथनहै ॥ अब मंत्रकेअर्थसें पंचाग्निविद्याकी स्तुतिकूंदिखावेहैं ॥ जोपुरुषपंचाग्नियोंकीउपासनाकरेहै सोपुरुष स्वर्णचोरी सुरापान गुरुस्त्रीगमन ब्रह्महत्या इनपापकरणेहारोंकासंसर्ग इनपंचमहापातकोंसेंरहितहोवेहै ॥ औरयापंचप्रश्नोंकूं तथातिनपंचप्रश्नोंकेउत्तरोंकूं यथार्थजानताहै सोपुरुषउत्तमलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वयहकह्याजोकर्मीचंद्रमंडलमै परतंत्रहूए देवतावोंके भोगकासाधनहोवेहैं ॥ यादोषकी निवृत्तिवासते अबवैश्वानरकीउपासनाकहनेकूं प्रथमआख्यायिकाकहेहैं ॥ एकप्राचीनशालनामकऋषि दूसरासत्ययज्ञनामकऋषि तीसराइंद्रद्युम्न चतुर्थजन पंचमबुडिलं यहपंचहीमहागृहस्थ तथामहाश्रोत्रिय मिलकरि यहविचारकरतेभये ॥ हमाराआत्माकौनहै औरब्रह्मकौनहै प्रत्यग्सेंअभिन्नब्रह्मके निश्चयकूंनप्राप्तहूए उद्दालकऋषि वैश्वानरब्रह्मकूंजानताहै ताउद्दालककूंप्राप्तहोवें ॥ ऐसे निश्चयकरि उद्दालकऋषिकेसमीपप्राप्तभये ॥ तबतिनप्राचीनशालादिकऋषियोंकूं देखकरि सोउद्दालकऋषि आपनेमनमै यहविचा

167

 रकरताभया ॥ यहपंचही महाश्रोत्रियहैं औरवैश्वानरकेस्वरूपकूं अनेकप्रश्नोंसेंपूछेगे तिनसर्वप्रश्नोंकेउत्तरदेनेकूं मेरेमनमै उत्सा
हनहींहै ॥ यातेंकिसीऔरवक्ताकूंही मैकथनकरूं यहविचारकरि तिनऋषियोंकूं सोउद्दालकऋषि यहकहताभया ॥ हेभगवंतः इसकाल
॥ १२ ॥ मै अश्वपतिनामकराजा वैश्वानरकेस्वरूपकूं यथार्थजानताहै ॥ ताअश्वपतिकेपासजाइकरि तिससें वैश्वानरविद्याकूंग्रहणकरें ॥ ऐसेसं
कल्पकरि अश्वपतिराजाकेपासंप्राप्तभये ॥ तबअश्वपतिराजा आपनेपुरोहितादिकोंसें तिनऋषियोंका भिन्नभिन्नपूजनकरावताभया ॥
दूसरेदिनमैप्रातःकालविषे तिनऋषियोंकूं राजायहकहताभया ॥ भोभगवंतः आपइसमेरेधनकूंग्रहणकरो ॥ जबऋषियोंनेधनग्रहणनक
री तबराजानेआपनेमनमै यहजाना जोयहधन अल्पहै यातेंहीयहऋषि याअल्पधनकूंग्रहणकरतेनहीं ॥ तबराजायहकहताभया ॥ हे
भगवंतः मेरेराजमैचोरनहीं ॥ तथाधनहोतेअदातानहीं ॥ तथामद्यकेपीनेवालानहीं ॥ अधिकारीहूआआपनेअग्निसें तथाविद्यासेंरहित
नहीं ॥ व्यभिचारीपुरुष वाव्यभिचारिणीस्त्रीनहीं ॥ इनचौरादिकोंकेदंडसें हमारेकूं धनप्राप्तनहींहोता ॥ न्यायसेंही हमधनकाग्रहणक
रतेहैं अन्यायसेंग्रहणकरतेनहीं ॥ यातेंआप इसअल्पधनकूंभीग्रहणकरो ॥ औरहेभगवंतः अबमैंयागकरणेवालाहूं तायज्ञमै एकएकयज्ञ
करानेवालेऋत्विग्कूं जितनाजितनामैधनदेवूंगा तितनाहीधन पुनःतुमारेतांईभीमैदेवूंगा आपमेरेगृहमैहीनिवासकरो ॥ ऐसेश्रद्धाभक्ति
सहितवचनोंकूं श्रवणकरतेहूएतेऋषि यहकहतेभये ॥ हेराजन् जिसपुरुषकी जापदार्थमैइच्छाहोवे तिसपुरुषकूं सोअभिलषितअर्थ दी
याजावे सोपुरुष तबहीप्रसन्नहोवेहै ॥ हमारेकूं इसधनकीइच्छानहीं ॥ आप वैश्वानरकेस्वरूपकूंयथार्थजानतेहो तावैश्वानरकेस्वरूपका
ही हमारेतांईउपदेशकरो ॥ हमवैश्वानरकीविद्यावासतेही आपकेसमीपआयेहैं धनवासतेनहींआये ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि राजाय
हकहताभया ॥ आपऋषि प्रातःकालविषे मेरेकूंप्राप्तहोवो मैंप्रातःकालविषे उत्तरकहूंगा ॥ राजाकेमनविषे अभिप्रायह ॥ जोशि
ष्यरीतिविना उपदेशकरणाउचितनहीं ॥ ताराजाकेअभिप्रायकूंजानकरि दूसरेदिनमै प्रातःकालमै समित्पाणिहूए राजाकूंप्राप्तहोते

भये ॥ जातिकरिब्राह्मणोंकूंश्रेष्ठहोनेसें दंडवत्प्रणामकरायेविनाही उपदेशकरणेवासते प्रथमएकएककूं राजा यहपूछताभया ॥ प्रथम प्राचीनशालसें यहपूछताभया ॥ हेप्राचीनशाल तूंकिसकूं वैश्वानररूपजानकरि उपासनाकरताहै ॥ प्राचीनशालउवाच ॥ हेभगवन् स्वर्गलोककूंही वैश्वानररूपजानकरि मैध्यानकरताहूं ॥ राजा प्रथमतो तास्वर्गादिएकएकअवयवमें वैश्वानरकेध्यानकी स्तुतिकरता भया ॥ पश्चात्समस्तउपासनाकेविधानवासते एकएकअवयवमें वैश्वानरकेध्यानकी निंदाकरताभया ॥ सोदिखावैहैं ॥ हेप्राचीनशाल जास्वर्गकूं तूं वैश्वानररूपजानकरि उपासनाकरताहै सोस्वर्ग वैश्वानरकामस्तकहै ॥ यहस्वर्गहीवैश्वानरनहीं जबीतूंमेरेसमीप समस्तउपासनावासते नहींआवता तबमिथ्याज्ञानकरि तेरेमस्तकका अधःपतनहोता ॥ पश्चात्सत्ययज्ञसें राजायहपूछताभया ॥ हेसत्ययज्ञ तूं किसकूंवैश्वानररूपसें ध्यानकरताहैं ॥ सत्ययज्ञउवाच ॥ भगवन् आदित्यकूं वैश्वानररूपजानकरि मैध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेसत्ययज्ञ जिसअनेकरूपवाले आदित्यका तूंवैश्वानररूपसें ध्यानकरताहै सोआदित्य वैश्वानरकाचक्षुहै आदित्यहीवैश्वानररूपनहीं ॥ जबतूं मेरेपासनआवता तबतूंविपरीतज्ञानसें अंधहोइजाता ॥ इंद्रद्युम्नसें राजायहपूछताभया ॥ हेइंद्रद्युम्न तूंकिसकूं वैश्वानररूपसें ध्यानकरताहै ॥ इंद्रद्युम्नउवाच ॥ हेभगवन् मैवायुकावैश्वानररूपसें ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेइंद्रद्युम्न यहवायुवैश्वानरभगवान्काप्राणहै ॥ याप्राणरूपवायुकूं वैश्वानररूपजानताहूआ जबीतूं मेरेपासनआवता तबयाविपरीतज्ञानसें तेरेप्राणनिकसजाते पश्चात्जनऋषिकूं राजायहकहताभया ॥ हेजन तूंकिसकूंवैश्वानररूपजानकरि ध्यानकरताहै ॥ जनउवाच ॥ हेभगवन् मैआकाशकूं वैश्वानररूपजानकरि ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेजन यहआकाश वैश्वानरकेदेहका मध्यभागहै याआकाशकूं वैश्वानररूपजानताहूआ जबतूंमेरेपासनआवता तबतेरादेहनष्टहोइजाता ॥ पश्चात्बुडिलकूं राजायहपूछताभया ॥ हेबुडिल तूंकिसकूंवैश्वानररूपजानकरि ध्यानकरताहै ॥ बुडिलउवाच ॥ भगवन् मैसमुद्रादिरूपजलकूं वैश्वानररूपसें ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेबुडिल यहसंपूर्णजल वैश्वानरकेमूत्रस्थिति

कास्थलहै ॥ जबतूं याजलकूंहीवैश्वानररूपजानताहूआ मेरेसमीपनहींआवता तबताविपरीतज्ञानसें तेरेमूत्रस्थलका भेदनहोइजाता ॥
पश्चात् राजा उद्दालकसें यहपूछताभया ॥ राजोवाच ॥ हेउद्दालकतूंकिसका वैश्वानररूपसेंध्यानकरताहै ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेभगवन् मैं
॥ १३ ॥ पृथिवीकूं वैश्वानररूपसें ध्यानकरताहूं ॥ राजोवाच ॥ हेउद्दालक यहपृथिवी वैश्वानरभगवान्कापादहैं ॥ जबतूं यापादरूपपृथिवीकूंही
वैश्वानररूपसेंजानताहूआ मेरेसमीपनहींआवता तबताविपरीतज्ञानसें तेरेपादशिथिलहोइजाते ॥ पश्चात् समस्तवैश्वानरकी उपासनाके
विधानकरणेकूं राजायहकहताभया ॥ राजोवाच ॥ भोऋषयः तुमने पृथक्पृथक्वैश्वानरकूंजानकरि व्यर्थहीअन्नकूंभक्षणकरते दिनव्य
तीतकरे ॥ अबयथार्थवैश्वानरकेस्वरूपकूं तुमश्रवणकरो ॥ तिसवैश्वानरका स्वर्गहीमस्तकहै ॥ सूर्यचक्षुहै ॥ वायुप्राणहै ॥ देहकामध्यधड
आकाशहै ॥ समुद्रमूत्रस्थलहै ॥ पृथिवीपादहैं ॥ यज्ञमैंजावेदिभूमिहै साभूमिउरहै ॥ दर्भरोमहैं ॥ गार्हपत्यनामकअग्निहृदयहै ॥ अन्वाहा
र्यपचननामकअग्निमनहै ॥ आहवनीयनामकअग्नि वैश्वानरकामुखहै ॥ जोपुरुष यावैश्वानरका आपनाआत्मारूपजानताहूआ ध्यानकरे
है ॥ सोपुरुषसर्वलोकोंविषे तथासर्वभूतोंविषे सर्वअन्नकूंभक्षणकरेहै ॥ भोजनकालमैं प्रथमग्रासकूं आहुतिरूपध्यानकरि ताआहुतिकूं प्रा
णायस्वाहा यामंत्रकूंसूक्ष्मउच्चारणकरिकै आपनेमुखमैं हवनकरे ॥ ताहोमसेंप्राणतृप्तहोवेहै ॥ प्राणकीतृप्तिहोनेसें चक्षुतृप्तहोवेहै ॥ चक्षुतृ
प्तहोनेसें आदित्यतृप्तहोवेहै ॥ आदित्यकेतृप्तहोनेसें स्वर्गतृप्तहोवेहै ॥ स्वर्गकेतृप्तहोनेसें स्वर्गतथाआदित्यकूं आश्रयकरिजेप्राणिहैं तेसर्व
तृप्तहोवेहैं ॥ ऐसेदूसरीग्रासरूपआहुतिका व्यानायस्वाहा यामंत्रकूंउच्चारणकरि हवनकरणेसें व्यानतृप्तहोवेहै ॥ व्यानकीतृप्तिसें श्रोत्र
चंद्रमादिशा दिशाचंद्रमाकेमध्यवर्तीसर्वप्राणि यहसर्वप्राणि यहसर्वहीपूर्वकहेक्रमसें तृप्तहोवेहैं ॥ तीसरीग्रासरूपआहुतिकूं अपानायस्वाहा
यामंत्रकरिहवनकरणेसें अपानतृप्तहोवेहै ॥ पश्चात्क्रमसें वाक् अग्नि पृथिवी पृथिवीतथाअग्निकेआश्रितप्राणिमात्र यहसर्वतृप्तहोवेहैं ॥ च
तुर्थीग्रासरूपआहुतिकूं समानायस्वाहा इसमंत्रकरिहवनकरणेसें समानतृप्तहोवेहै ॥ समानकीतृप्तिकेपश्चात्क्रमसें मन पर्जन्य विद्युत

विद्युत्पर्जन्यकेआश्रितप्राणिमात्र यहसर्वतृप्तहोवेहैं ॥ पंचमीग्रासरूपआहुतिकूं उदानायस्वाहा यामंत्रकेउच्चारणपूर्वक हवनकरणेसें उदानतृप्तहोवेहै ॥ ताउदानकीतृप्तिकेपश्चात् वायु आकाश वायुआकाशकेआश्रितप्राणिमात्र यहसर्वपूर्वकहेक्रमसेंतृप्तहोवेहैं ॥ ऐसे वैश्वानरकेउपासकपुरुषकूं पुत्रपौत्रादिरूपप्रजाप्राप्तहोवेहै ॥ गौ अश्व हस्ती आदिपशुप्राप्तहोवेहैं ॥ अनेकप्रकारकेभक्षणकरणेयोग्य अन्नप्राप्तहोवेहैं ॥ वेदकेपठनसें उत्पन्नहोनेहारे ब्रह्मतेजकूं प्राप्तहोवेहै ॥ जोपुरुष पूर्वकहेअग्निहोत्रकूं नजानकरि बाह्यअग्निहोत्रकूं करताहै ॥ सोपुरुष अंगारोंकूंत्यागकरि भस्मविषे हवनकरणेवालेपुरुषजैसाहै ॥ वैश्वानरकेउपासकपुरुषके सर्वकर्मक्षीणहोवेहैं याअर्थमे श्रुतिदिखावेहैं ॥ तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतं प्रदूयतैवंहास्यसर्वेपाप्मानःप्रदूयंते ॥ अर्थयह ॥ तद्नाम तिसवैश्वानरकीविद्यामाहात्म्यविषे यथानाम दृष्टांतहै ॥ इषीकातूलंनाम मुंजकेमध्यवर्तीनालकाजोतूलहै ॥ अग्नौप्रोतंप्रदूयतनाम अग्निमैगेरासोतूल दग्धहोवेहै ॥ एवंहास्यसर्वेपाप्मानःप्रदूयंते नाम इसवैश्वानरउपासकके सर्वधर्माधर्मरूपकर्म दग्धहोवेहैं ॥ औरजैसेबालक क्षुधाकरिपीडितहूए माताकाही ध्यानकरेहैं जोयहमाताहमकूं कबभोजनदेवेगी ॥ तैसेतावैश्वानरउपासकके पूर्वकहेअग्निहोत्रका सर्वप्राणिध्यानकरेहैं जोयहकबभोजनकरेगा याकेभोजनकरणेसेंहमतृप्तहोवेंगे ॥ वैश्वानरकाउपासक आपकूं वैश्वानररूपमानेहै वैश्वानरसेंकोईप्राणिभिन्ननहीं वैश्वानरनामसेंहीयाअर्थकालाभहोवेहै ॥ विश्वनामसर्वकाहै विश्वरूपहोवेपुनःसर्वकाकारणहोनेसें नररूपहोवेसोकहीयेवैश्वानर ॥ औरविश्वहोवैनियम्यजाके ऐसेनियामकपरमात्माका नामवैश्वानरहै ॥ औरआपही विश्वनामसर्व नरनामपुरुष सर्वपुरुषरूपहोवेसोकहीयेवैश्वानर ॥ यातें वैश्वानरसर्वरूपहै ताकूं आपनास्वरूपमाननेवालाजोउपासकहै तावैश्वानरउपासकके तृप्तहोनेसें सर्वजगत् तृप्तहोवेहै ॥

॥ इतिछांदोग्येपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

ॐनमोगिरिजायै ॥ पूर्वपंचमअध्यायकेअंतमैयहकह्याहै ॥ वैश्वानरभगवान्कीउपासनाकाफलयहहै ॥ जोवैश्वानरकेउपासकके भोजनकरणेसें सर्वजगततृप्तहोवेहै ॥

जबीआत्माकाभेदमानेतौएकपुरषकेतृप्तहोनेसें द्वितीयपुरुषतृप्तहोवेनहीं ॥ और श्रुतिमैंएकउपासककेतृप्तहोनेसें सर्वजगत्कीतृप्तिलि
खीहै ॥ यातेंआत्माकेअभेदमैंही श्रुतिभगवतीकातात्पर्यहै ॥ ताआत्माकीएकताकेबोधनवासते याषष्ठअध्यायकाआरंभहै ॥ अरुणऋ
॥ १४ ॥ षिकापुत्रजोउद्दालक ताउद्दालकऋषिकापुत्र श्वेतकेतुनामकहोताभया ॥ ताश्वेतकेतुविषे मातापिताकीबहुतप्रीतिहोतीभयी ॥ इसीसें
सोश्वेतकेतु क्रीडाविषेही बहुत आसक्तहोताभया ॥ औरउपनयनसंस्कारसेंभीरहितहूआ सोश्वेतकेतु स्त्रीबालकोंकूंमहान्दुःखदेताभ
या ॥ किसीब्राह्मणका कठोरवचनसेंतिरस्कारकरताभया ॥ तथाकिसीबालकऔरस्त्रीआदिकोंकूं दंडकाप्रहारकरिके आपनेगृहविषेभाग
जाताभया ॥ ऐसेपुत्रकूंदेखकरि पिताउद्दालकमुनि किंचित्क्लेशकूं प्राप्तहोताभया ॥ किसीकालविषे विनयसहितहूआश्वेतकेतु पिता
केसमीपस्थितभया ॥ ताकूंदेखकरिपिताकहेहैं ॥ हेपुत्र नीतिशास्त्रविषे यहलिखाहै ॥ जेमातापितापुत्रकूंताडनकरिकै शास्त्रपठनादिशु
भमार्गमें लगातेनहीं ॥ तेमातापिता तापुत्रकेशत्रुहैं ॥ शिक्षाकेनकरनेसें पुत्रउन्मत्तहूआ यालोकमें तथापरलोकमैं दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥
यातेंतीनवर्षपर्यंत मातानेपुत्रकूंशिक्षाकरणी ॥ अष्टवर्षपर्यंत पितानेशिक्षाकरणी ॥ पश्चात्अष्टवर्षसेंलेकरि षोडशवर्षपर्यंत आचार्यने
शिक्षाकरणीयोग्यहै ॥ जबीपुत्रषोडशवर्षकाहोइजावे तबीपुत्रकेतांईकरणेयोग्यकामकूं पितामित्रकीन्यांईकहे ॥ कदाचित्ताडनकरिकै
कहेनहीं ॥ हेपुत्र तेरीमाताने तथामैंपिताने तुमारेकूंशिक्षाकरीनहीं ॥ यातेंही तूंद्वादशवर्षकाहूआभी ब्राह्मणोंकेकर्मोंसेंरहितहोइके
ब्राह्मणोंमें अधमजैसाप्रतीतहोवेहैं ॥ अबपर्यंत उपनयनादिकसंस्कारसेंविना तथावेदकेअध्ययनविना तुमनेक्रीडामैंहीकालव्यतीतक
राहै ॥ औरमेरातेरेमैंस्नेहहै जाकाजामैंस्नेहहोवे तापुत्रादिकोंकी तापिताआदिकोंमैं श्रद्धाहोवेनहीं ॥ यातेंमैं तुमारेकूंउपदेशकरिसक ॥ ८१ ॥
तानहीं ॥ किसीगुरुआचार्यके समीपजाइकरि ब्रह्मचर्यपूर्वक वेदकेअध्ययनकूंकरो ॥ ऐसेंपिताकेवचनोंकूंश्रवणकरि श्वेतकेतुविचारकूं
प्राप्तभया ॥ पिताकीआज्ञाकूंमानकरि स्वगृहकात्यागकरताहूआ किसीवेदवेत्ताआचार्यकूंप्राप्तभया ॥ तागुरुसें अर्थसहितचतुर्वेद त

थाषट्अंगपठनकरे ॥ परंतुउपनिषद्रूपवेदांतभाग श्वेतकेतुनेनहींपठनकरा ॥ चौवीसवर्षपर्यंत वेदकूंपठनकरिकै तागुरुसेंआज्ञालेकरि आपनेगृहकूंआवताभया ॥ मार्गमैंआवताहूआ सोश्वेतकेतु यहविचारकरताभया ॥ जैसेमैंवेदोंकेपाठकूं तथाअर्थकूंजानताहूं ॥ तैसेमेरे पितानहींजानते ॥ काहेतें जोमेरेगुरुवोंने शपथोंकरिकै मेरेकूंयहकह्याहै ॥ हेश्वेतकेतो हमजेतीविद्याजानतेथे सासंपूर्णविद्यातेरेकूं हमनेउपदेशकरीहै ॥ इससेंअधिकविद्या हमनहींजानते ॥ यातेंमैंआपनेपितासें अधिकविद्यावान्हूं ॥ ऐसेविचारकरि महान्गर्वकूंप्राप्तहूआश्वेतकेतु गृहविषेआइकरिपिताकेतांई नमस्कार नकरताभया ॥ ऐसेस्तब्धश्वेतकेतुकूंदेखकरि पिताक्रोधकूंनप्राप्तभया ॥ पुत्रमैं कृपायुक्तहूआ पुत्रकेहितवासते याप्रकारकेवचनकूंकहताभया ॥ हेपुत्र जाअधिकताकेअभिमानकरिकै तूं स्थाणुकीन्यांई स्तब्धभया हैं ॥ अर्थयह नम्रतारहितभयाहैं ॥ तथाजाअधिकताकेगर्वकरिकै आपकूं सर्ववेदकाज्ञातामानताहैं ॥ तथाआपकूं सर्वसेंअधिकमानताहैं ॥ साअधिकता तुमारेकूं आपनेउपाध्यायसें कौनप्राप्तभयीहै ॥ तुमनेआपनेगुरुसें यहभीकबीपूछाथा जिसएकवस्तुकेश्रवणकरनेसें अश्रुत पदार्थोंकाभी श्रवणहोवैहै ॥ तथाजाएककेमननसें सर्वकामननहोवैहै ॥ तथाएककेनिश्चयसें सर्वअनिश्चितपदार्थोंकाभी निश्चयहोवैहै ॥ हेपुत्र ऐसाकौनवस्तुहै जबीतुमजानतेहो तौहमारेकूंश्रवणकरावो ॥ ऐसेपिताकेवचनकूंश्रवणकरि श्वेतकेतु परमआश्चर्यकूंप्राप्तभया ॥ उत्तरकेनजाननेसें गर्वरहितहोइकरि श्रद्धासेंपिताकूंनमस्कारकरिकै यहकहताभया ॥ हेभगवन् तावस्तुकूं मैंनहींजानता आप कृपाकरिकहो ॥ पिताकहैहैं ॥ हेपुत्र जैसेएककारणमृत्तिकाकेज्ञानहूए मृत्तिकाकेकार्यघटशरावादि संपूर्णोंकाज्ञानहोवैहै ॥ काहेतें तामृत्तिकासें जबीभिन्नघटादिककार्यहोवैं ॥ तबतौमृत्तिकाकेज्ञानहोतेभी भिन्नघटादिकोंकाज्ञाननहोवे ॥ सोभिन्नतौ घटादिकहैंनहीं किंतु मृत्तिकामात्रहीहैं ॥ औरघटादिकविकारकूं नाममात्रहोनेसें वाणीसेंउच्चारणही तिनघटादिकोंकाहोवैहै ॥ तावाणीकरि उच्चारणकरेनामसेंभिन्न किंचित्भीघटादिपदार्थहैंनहीं ॥ किंतुनाममात्र सर्वघटादिपदार्थहैं ॥ ऐसेस्वर्णलोहकेदृष्टांतोंविषेजानना ॥ जैसे एकस्वर्णपिंडके

जाननेसें स्वर्णकेकार्यकटककुंडलादि ज्ञातहोवेहैं ॥ औरजैसेएकलोहपिंडकेज्ञानहोनेसें तालोहकाकार्यखड्गादि ज्ञातहोवेहैं ॥ औस्वर्ण
कार्यकुंडलादि तथालोहकार्यखड्गादिविकार केवलनाममात्रहोनेसें वाणीकरिउच्चारणकरेजावेहैं ॥ वास्तव मृत्स्वर्णलोहसेंकिंचित्भी भि
॥१५॥ न्नहीं मृत्तिका स्वर्णलोह यहकारणहीसत्यहैं ॥ मृत्तिका स्वर्ण लोहरूप कारणकेज्ञानहोनेसें कार्यघटकुंडल खड्गादिकोंका ज्ञानअ
वश्यहोवेहै ॥ तैसेएकआत्माकेज्ञानहोनेसें ताआत्माकेकार्यरूपसर्वपदार्थोंका ज्ञानहोवेहै ॥ हेसोम्य एककेज्ञानसें सर्वकाज्ञान ऐसेंहो
वेहै ॥ श्वेतकेतु आपनेमनविषे यहविचारताभया जोपितामेरेकूंगुरुकेपासपुनः नभेजें ॥ किंतु आपहीपितामेरेकूं उपदेशकरें यातात्प
र्यसें श्वेतकेतुकहेहै ॥ हेभगवन् अत्यंतपूज्य जेमेरेगुरुहैं तिनकीमेरेविषे महान् कृपाथी यातैंमेरेकूं तिनोंनेसमग्रविद्याकाउपदेशकराहै ॥
औरयातुमारेप्रश्नकेउत्तरकूंतौ मेरेगुरुभीनहींजानते ॥ जबीजानतेतौ मैअत्यंतप्रियशिष्यकूं किसवास्तेनकहते ॥ कह्यातौतिनोंनहींहै यातें
तुमारेप्रश्नकेउत्तरकूं नहींजानते ॥ ऐसेश्वेतकेतुकेवचनकूंश्रवणकरिपिताकहेहैं ॥ हेसोम्यनामप्रियदर्शनपुत्र यहसंपूर्णनामरूपजगत् उत्पत्ति
सेंप्रथम सत्अद्वितीयब्रह्मरूपहोताभया ॥ याजगत्केस्थूलनामरूप नहोतेभये औरनास्तिकजेशून्यवादीबौद्धहैं ॥ तेबौद्धयहकहेहैं उत्प
त्तिसेंप्रथम शून्यरूपअसत्हीहोताभया ॥ औरसोअसत्हीएकअद्वितीयहोताभया ॥ ताअसत्सेंही सत्नामरूपजगत् उत्पन्नहोताभ
या ॥ हेपुत्र ऐसेशून्यवादी असत्कूंहीकारणमानेहैं ॥ तिनकामानना केवलहठमात्रहै औरयुक्तिविरुद्धहै ॥ जबीअसत्कूंभीकारणमा
ने तौवंध्यापुत्रकूंभी कारणमाननाचाहिये ॥ जैसेवंध्यापुत्रसें किसीकार्यकीउत्पत्तिहोवेनहीं ॥ तैसेअसत्रूपशून्यसेंभी किसीकार्यकी
उत्पत्तिहोवेनहीं ॥ यातेंसजातीय विजातीय स्वगतभेदरहित अद्वितीयब्रह्महीं उत्पत्तिसेंप्रथमहोताभया ॥ नामरूपप्रपंचकिंचित्भी ॥१०॥
स्थूलरूपसें नहोताभया ॥ अबतासत्यअद्वितीयब्रह्मकेबोधनवास्ते नामरूपप्रपंचकीउत्पत्तिकहनेकूं परमात्माकेविचारकूंकहेहैं ॥ सत्यरू
पपरमात्मा याप्रकारकाचिंतनकरताभया ॥ मैपरमात्माब्रह्महीं बहुतरूपकरिकेउत्पन्नहोवों ॥ मेरेविनाप्रपंचबहुतरूपहोनानहीं यातेंमै

ब्रह्मही बहुतरूपताकूंप्राप्तहोवों ॥ याप्रकारकाचिंतनकरिकै मायाशबलपरमात्मा आकाशादिकपंचभूतोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ यद्यपि
याछांदोग्यउपनिषत्मै पृथिवी जल तेज यातीनभूतोंकीही उत्पत्तिकहीहै वायुआकाशकीउत्पत्तिकहीनहीं ॥ तथापि तैत्तिरीयश्रुति
मै आकाशादिकपंचभूतोंकीउत्पत्तिकहीहै ॥ औरश्रीव्यासभगवान्जेवेदांतकेआचार्यहैं तथाभगवान्श्रीशंकराचार्यहैं तिनोंनेश्रीमत्
शारीरकनामकग्रंथके द्वितीयअविरोधअध्यायके तृतीयवियत्पादमै तैत्तिरीयउपनिषत्कीअनुसारतासें पंचभूतोंकीहीउत्पत्तिकहीहै ॥
यातेंयाउपनिषत्का तैत्तिरीयश्रुतिसेंविरोधनहींहै ॥ ऐसेपरमात्मा आकाशवायुकूंउत्पन्नकरिकै तेजकूंउत्पन्नकरताभया ॥ तेजउपहितहू
आसोपरमात्मा याप्रकारकाचिंतनकरताभया ॥ मैबहुतरूपकरिकैउत्पन्नहोवों ॥ तथातेजउपहितहूआपरमात्मा जलोंकूंउत्पन्नकरताभ
या ॥ लोकमैभीयहसर्वप्रसिद्धहै ॥ जबीतप्तबहुतपडेहै तबीवृष्टिहोवेहै ॥ यातेंअग्निसें जलोंकीउत्पत्तिकही ॥ पुनःजलउपहितपरमात्मा
याप्रकारकेविचारकूंकरताभया जोमैबहुतरूपकरिकैउत्पन्नहोवों ॥ जलउपहितपरमात्मासें अन्नशब्दकाअर्थजापृथिवीहै सापृथिवीउत्प
न्नभयी ॥ लोकमैभीयहप्रसिद्धहै जादेशमैवर्षाहोवेहै ॥ तादेशमैहीअन्नबहुतउत्पन्नहोवेहै ॥ यातेंजलोंसेंही अन्नशब्दकाअर्थपृथिवीउत्प
न्नहोवेहै ॥ हेश्वेतकेतो पृथिवीजलतेजइनतीनभूतोंकेअनुसारही अंडज उद्भिज्ज जरायुज यहतीनभूतोंकेबीजउत्पन्नहोवेहैं ॥ स्वेद
जदोप्रकारकेहैं एकतौ मशकादिरूपस्वेदज उद्भिज्जरूपहोवेहैं ॥ दूसरेयूकादिरूपस्वेदज अंडजरूपहोवेहैं ॥ यातेंस्वेदजका जलकेका
र्यउद्भिज्जरूपकरिकै तथापृथिवीकेकार्य्य अंडजरूपकरिकै ग्रहणकरणा ॥ गर्भकेवेष्टनवालेचर्मकानाम जरायुहै ताजरायुकी जाठर
अग्निरूपतेजसें उत्पत्तिहोनेसें तेजकाकार्यकहीयेहै ॥ परमात्मा पृथिवीआदिकतीनभूतोंविषे प्रविष्टहूआ याप्रकारकेविचारकूंकरताभ
या ॥ इनतीनभूतोंविषे मैपरमात्माजीवरूपसेंप्रवेशकरिकै नामरूपकूंस्पष्टकरूं ॥ प्रथमइनतीनभूतोंके तीनतीनभागोंकूंकरूं इनभू
तोंकेनवभागकरणेसें नामरूपस्पष्टहोवेंगे ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै सोपरमात्मा एकएकभूतकेदोदोभागोंकूंकरिकै पुनःतिनमैसेंए

कएकभागकूं पृथक्राखकरि शेषरहेतीनभागोंके दोदोभागकरिकै आपनेआपनेभागकूंत्यागकरि तिनवृद्धभागोंविषेमेलनेसें त्रिवृत
करणकरताभया ॥ यहत्रिवृतकरण पंचीकरणकाउपलक्षणहै ॥ इसरीतिसेंउद्दालकपिताने नामरूपप्रपंचकीउत्पत्ति भूतोंसेंवर्णनकरी ॥
॥ १६ ॥ तिसपितानेही अग्नि सूर्य चंद्रमा विद्युत् यहच्यारिदृष्टांत जगत्के अपवादवासतेकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो अग्निआदिचारोंविषे जोर
क्तरूपप्रतीतहोवेहै ॥ सोरक्तरूपतेजकाजानना ॥ इनचारोंविषेजोशुक्लरूपहै सोजलोंकाजानना ॥ इनचारोंविषेजोकृष्णरूपहै सोपृ
थिवीकाजानना ॥ कारणतेजआदिकोंकेरूपसेंविना कार्यभूतअग्नि सूर्य चंद्र विद्युतआदिविकार वाणीकरिकैहीसिद्धहैं ॥ नाममात्र
सेंपृथक्नहीं ॥ पृथक्करेमिथ्याहीहैं ॥ ऐसेजोजोसंसारविषे पदार्थप्रतीतहोवेहै ॥ सोसो आपनेकारणतेजजलपृथिवी, इनकेरूपोंसें पृथ
क्नहीं ॥ तेजआदिकसर्वपदार्थोंकाकारणपरमात्माहै ॥ तापरमात्मारूपकारणसें भिन्नकरिकै कोईतेजआदिसिद्धहोवेनहीं ॥ यासत्य
परमात्मारूपकारणकेज्ञानसें तेजआदिकार्यकाज्ञानहोवेहै ॥ ऐसेएककेज्ञानसें सर्वकाज्ञानकह्या ॥ अबयाअर्थविषे विद्वानोंका अनुभववर्ण
नकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतो केईकविद्वान् कारणकूंसत्यजानकरि हर्षकूंप्राप्तहूए याप्रकारकावचनकहतभये ॥ हमारेविद्यारूपकूलमै जोपुरुष
उत्पन्नहोगा ॥ तिनमैकोईपुरुषभी अज्ञातवस्तुकाकथन नकरेगा ॥ किंतुकारणरूपसत्यकूंजानकरि तथाकारणसेंभिन्नकार्यकूंमिथ्याजा
नकरि ज्ञातवस्तुकाहीनिरूपणकरेगा ॥ ऐसेबाह्यअग्निचंद्रादिसर्वपदार्थोंमै भूतकार्यतावर्णनकरिकै अंतरस्थूलसूक्ष्मशरीरमैभी भूतकार्य
ताकूंवर्णनकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतो भक्षणकरेअन्नके उदरमैतीनभागहोवेहैं ॥ अन्नकाजोस्थूलभागहै सोविष्ठाहोइजावेहै ॥ जोमध्यमभागहै ॥ ११ ॥
ताकामांसहोइजावेहै ॥ सूक्ष्मभागकामनकार्यहोवेहै ॥ पानकरेजलकेभीतीनभागहोवेहैं ॥ स्थूलभागकामूत्रहोइजावेहै ॥ मध्यमभागका
रुधिरहोवेहै ॥ सूक्ष्मभागकाकार्यप्राणहोवेहै ॥ तैलघृतादिरूपतेजके भक्षणकरणेसें स्थूलभागकाकार्य अस्थिहोइजावेहै ॥ मध्यमभाग
का मज्जाहोवेहै ॥ सूक्ष्मभागकावाक्इंद्रियउत्पन्नहोवेहै ॥ यातेंअन्नकाकार्यमनहै जलकाकार्यप्राणहै अग्निकाकार्यवागइंद्रियहै ॥ यद्यपि

अन्यउपनिषत्मै भूतोंकेसात्विकभागकाकार्यमन भूतोंकेराजसभागकाकार्यप्राण औरआकाशकेराजसभागकाकार्यवाग्इंद्रियकह्या है ॥ तथापि तैलघृतादिरूपतेज वाग्इंद्रियकीपुष्टिकाहेतुहै ॥ तथाप्राणकीस्थितिकाहेतुजलहै ॥ मनकीपुष्टिकाहेतुअन्नहै ॥ औरमनआदिककार्यतौभूतोंकेसात्विकभागोंकेहीहै ॥ श्वेतकेतुरुवाच हेभगवन् सूक्ष्मजेमनआदिकहैं तेस्थूलअन्नआदिकोंकाकार्यकैसेहैं ॥ उद्दालकउवाच हेश्वेतकेतो जैसेदधिकेमथनकरणेसें स्थूलदधिसेंभी सूक्ष्मघृतकीउत्पत्तिहोवेहै ॥ तैसेमनआदिकसूक्ष्मभी स्थूलभूतोंसेंप्रगटहोवेहैं ॥ जैसेस्थूलदधिका मध्यमभागफेनहोवेहै स्थूलभागतक्रहोवेहै ॥ तैसेस्थूलभूतोंकेमध्यमस्थूलभागोंकाकार्य पूर्वनिरूपणकराहै ॥ हेश्वेतकेतो जबीतेरेकूंमनअन्नकाकार्यहै याअर्थकेदृढनिश्चयकरणेकासंकल्पहै तबीपंचदशदिनपर्यंत भोजनमतिकरो ॥ परंतुजलकापान आपनीइच्छाकेअनुसारकरणा ॥ जबीजलकापानभीनहींकरोगे तबीशरीरनेरहनानहीं ॥ हेसोम्य यहमनोमयजीव अन्नकीशक्तिकरिके षोडशकलावालाकहावेहै ॥ अन्नकेभक्षणसेंउत्पन्नभयीजेमनकीयांवृत्तियांहैं तेवृत्तियांहीकलाकहीयेहैं ॥ तिनवृत्तियोंविशिष्टपुरुषभी षोडशकलकहीयेहै ॥ ऐसेपिताकीआज्ञाकूंमानंकरि पंचदशदिनपर्यंत पुत्रभोजनकूं नकरताभया ॥ पिताकूंप्राप्तहूए तापुत्रकूं पिताकहेहैं ॥ हेपुत्र तुमनेजेगुरुकेसमीपवेदपठनकरेहैं तिनकूंमेरेतांई श्रवणकरावो ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् ऋग् यजुर् साम जे मैनेगुरुकेपाससें श्रवणकरेहैं ॥ तिनमैसेंमेरेकूं एकभी अबनहींस्फुरणहोता ॥ पिताकहेहैं ॥ हेपुत्र जैसेमहान्प्रज्वलितअग्नि काष्ठादिकोंकूं दग्धकरिके केवलखद्योतसदृश अंगाररूपशेषरहिजावे तबताअग्निकरिकै बहुतकाष्ठादिकोंकादाहहोवेनहीं ॥ तैसेपंचदशदिनपर्यंत तुमनेभोजनकरानहीं यातेंतुमारेमनकीपंचदशकलावोंकानाशभयाहै ॥ एककलाशेषरहीहै ॥ यातेंमनकरिकैतुमकिंचित् जानतेनहीं ॥ अबीभोजनकरो ॥ जबीताश्वेतकेतुनेभोजनकरा औरपितावेदपूछनेलगे तबीश्वेतकेतुसर्वकहताभया ॥ पिताकहेहैं हे पुत्र जैसेखद्योतसदृशअग्निकूं शुष्कतृणोंकरिवृद्धकरें तबीमहान्काष्ठोंकूंभी सोअग्निदाहकरेहै ॥ अहारकेनकरणेसें तेरेमनकीकला

177

शेष एकरहीथी अबीभोजनकरणेंसेंअग्निकीन्यांई तेषोडशकलासावधानभयीहैं ॥ यातेंहीतुमवेदोंकूं जानतेहो ॥ इसरीतिसेंपिता
उद्दालक तेजआदिकोंकाकारण अद्वितीयपरमात्मा तत्पदार्थकानिरूपणकरतेभये ॥ अबसो अद्वितीयपरमात्माहीत्वंपदार्थप्रत्यक्
॥ १७ ॥ रूपहैं याअर्थकूंवर्णनकरेहैं ॥ हेश्वेतकेतो यहजीवात्मा सुषुप्तिअवस्थाविषे सद्रूपब्रह्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ मनरूपउपाधिकेलयहोनेसें यहजी
व आपनेवास्तवब्रह्मरूपकूं सुषुप्तिमैंप्राप्तहूआ स्वपिति यानामवालाहोवेहै ॥ स्वपिति नामकाअर्थयह स्वजोआपनास्वरूप ताकूंप्राप्त
होवेहै ॥ यातेंहीस्वपिति नामवालाजीव सुषुप्तिमैंकह्याजावेहै ॥ जैसेचीलनामकपक्षी सूत्रकरिबांधाहूआ अनेकदिशावोंमैंचलायमान
होवेहै परंतुअन्यस्थानमैं आश्रयकूंनप्राप्तहोइकरि आपनेखूंटीरूपस्थानमैं प्राप्तहोवेहै ॥ तैसेमनविशिष्टजीवभी जाग्रतस्वप्नमैंभ्रमणकर
ताहूआ स्थितिकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ सुषुप्तिअवस्थामै ब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेश्वेतकेतो यहआत्मा वास्तवसेंक्षुधापिपासासेंरहितहै ॥ प्राणों
काधर्महीक्षुधापिपासाहैं ॥ प्राणोंकेसाथअध्यासकरिके जागरितस्वप्नअवस्थाविषे तिनप्राणोंकेधर्मक्षुधापिपासाकूं व्यर्थही आपनेविषे
मानेहै ॥ जबीक्षुधाकरिपीडितहूआपुरुष अन्नकाभक्षणकरेहै ताअन्नकूं जलद्रवीभावकरिकेलेजावेहैं ॥ यातेंजलोंकानाम अशनाया
है ॥ अर्थयह अशनजोभोजन ताकूंजोलेजावे ताकूं अशनायाकहेहैं ॥ जैसेअश्वोंकेप्राप्तकरणेहारेकूं अश्वनायकहेहैं ॥ गौवोंकूंलेजा
नेवालेकूं गोनायकहेहैं ॥ तैसेजलोंकानामअशनाययाहै ॥ औरपानकरेजलकूं तेजशोषणस्वभाववाला लेजावेहै ॥ यातेंतेजकानाम
उदन्या यहश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ दृष्टांतअश्वनाय गोनायकायामैंभी जानलेना ॥ हेश्वेतकेतो याशरीररूपकार्यकरि अन्नरूपकारणकूं
जानो ॥ काहेतेकार्यद्वाराहीकारणकाज्ञानहोवेहै ॥ यातेंशरीररूपकार्यद्वारा कारण अन्नकाज्ञानहोवेहै ॥ ताअन्नरूपकार्यसें पृथिवी ॥ १२ ॥
रूपकारणकूंनिश्चयकरो ॥ तथापृथिवीरूपकार्यसें जलरूपकारणकूंनिश्चयकरो ॥ जलरूपकार्यसें तेजरूपकारणकूंनिश्चयकरो ॥ तेजरू
पकार्यकरिके कारणजो सदात्माब्रह्महै ताकूंनिश्चयकरो ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वप्रजा सद्ब्रह्मकाहीकार्यहैं ॥ तथातासद्रूपब्रह्म

मेस्थितहैं ताब्रह्ममैंहींलयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंसर्वनामरूपप्रपंचआत्मरूपहै यासूक्ष्मआत्मासेंभिन्ननहीं ॥ सोब्रह्महीआत्माहै ॥ ऐसे ब्रह्मरूपहीतुमहो ॥ शंका ॥ हेभगवन् मैंब्रह्मरूपकैसेहूं मैंपरिच्छिन्नहूं ब्रह्मतोव्यापकहै यातेंमैंब्रह्मरूपनहीं ॥ समाधानरूपप्रथमाभ्यास कूं पिताकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो जबीपुरुषमृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तापुरुषके प्रथमनेत्रादिइंद्रियसहितवाक्इंद्रिय मनमैंलयहोइजावेहैं ॥ मन प्राणविषेलयभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ प्राणसूक्ष्मपंचभूतोंसहित जीवात्मामैंलयहोवेहै ॥ तिनभूतोंसहितजीवात्मा मायासहितब्रह्मविषे लय भावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंमरणकालविषे जाब्रह्ममैंएकताकूं जीवप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसेब्रह्महीतुमहो ॥ औरनित्यहीसुषुप्तिअवस्थामैं ताब्रह्म केसाथअभेदभावकूंप्राप्तहोतेहो ॥ परिच्छिन्नताआदिकभी केवलशरीरादिउपाधिकरिकेहैं वास्तवसेंतूंशुद्धपूर्णब्रह्मरूपहीहैं ॥ यातेंपरिच्छि न्नदेहादिकोंविषे अभिमानकूंत्यागकरि आपनेशुद्धरूपकूंस्मरणकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन्जबीसर्वजीव सुषुप्तिअवस्थाविषे ब्रह्ममैंए कताकूंप्राप्तहोवें तबीसर्वपुरुषोंनेअनुभवकराचाहिये जोहमब्रह्मकेसाथअभिन्नभयेहैं ॥ अभेदभीहोवे औरज्ञाननहोवे यामैंअनुकूल दृष्टांतकूं मेरेतांई आपनिरूपणकरो ॥ ऐसेप्रश्नकूंश्रवणकरिकै पिताद्वितीयअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र जैसेनानावृक्षोंकेरसोंकूं मक्षिका मधुमैंप्राप्तकरेहैं ॥ तिनरसोंकूं यहज्ञानहोवेनहीं हमअमुकवृक्षोंकेरसहैं ॥ औरजैसेकिसीपुरुषकेगृहमैंही स्वर्णनिधि मृत्तिकासेंआवृतहूई स्थितहोवे तापुरुषकूंनिधिकाज्ञानहोवेनहीं ॥ तैसेही तुमनित्यब्रह्ममैं सुषुप्तिअवस्थाविषे एकताकूंप्राप्तहोतेहो ॥ परंतुअज्ञानकेसद्भावसें तुमारेकूं हमब्रह्मसेंअभिन्नभयेहैं यहज्ञानहोवेनहीं ॥ तथाज्ञानकेसाधनमनआदिकोंकेअभावहोनेसेंभी सुषुप्तिमैंज्ञाननहींहोवेहै ॥ औरअ विद्याकर्मवासनाकेअनुसार व्याघ्र सिंह वृक वराह कीट पतंग दंश मशक इत्यादिआपनेशरीरोंकूं उठकरिप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंजाआ पनेब्रह्मरूपकूं नजानकरि अनेकक्षुद्रयोनियोंकूं पुरुषप्राप्तहोवेहैं ॥ ऐसाशुद्धब्रह्म तुमारास्वरूपहै ताकूंनिश्चयकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिअवस्थाविषे तथामरणअवस्थाविषे एकताकूंतौजाना ॥ परंतु जैसेपुरुष गृहसेंबाहिरआवेहै ताकूंयहस्मरणहोवेहै ॥ जोहमगृहसेंबा

हिरआयेहैं ॥ तैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे ब्रह्मकेसाथ हमअभिन्नभयेथे ॥ अबताब्रह्मसेंही हमने आगमनकराहै ॥ ऐसाजागरितमैं स्मरण
हूआचाहिये होवेनहीं यातेंमैंब्रह्मनहींहूं ॥ याशंकाकेसमाधानकरणेवासते तृतीयअभ्यासकूंपिताकहेहैं ॥ हेपुत्र जैसेप्राणीयोंकेकर्मों
॥१८॥ करिप्रेरेहूएमेघ समुद्रसेंजलकूंग्रहणकरिकै अन्यदेशमैंगेरेहैं ॥ सोजल नदीरूपसें सागरकेसन्मुखगमनकरेहै ॥ तेनदीयां आपनेवास्तवस
मुद्ररूपकूंजानेनहीं ॥ तैसेतुमभीअद्वितीयब्रह्मरूपहो केवलउपाधिकरि परिच्छिन्नभावकूं तुमनेधारणकराहै ॥ यातेंदेहादिउपाधिकरिकै
तुमपरिच्छिन्नताकूंप्राप्तहूएहो ॥ अबतुमदेहादिउपाधिकूंत्यागकरि आपनेशुद्धरूपकूंनिश्चयकरो ॥ तुमशुद्धनिर्विकारब्रह्मरूपहो ॥ शंका ॥
हेभगवन् नदीयोंकेदृष्टांतविषे मेरेकूंसंदेहहै ॥ जैसेनदीयां समुद्रमैंलयभावकूंप्राप्तहूई नाशकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसेजीवकानाशहोवेगा ताना
शीजीवकीब्रह्मसेंएकताबनेनहीं ॥ औरनामरूपप्रपंचभी तासद्रूपब्रह्मसेंउत्पन्नभयाहै सोप्रपंचसत्यहूआचाहिये ॥ याशंकाकीनिवृत्ति
वासते पिताचतुर्थअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो जैसेयावृक्षकेमूलदेशमैं कुठारआदिकोंकेप्रहारकरनेसेंरसनिकसेहै ॥ मध्यमैंवृक्षकूंप्रहार
करें तौभीरसनिकसेहै ॥ तथातावृक्षकेअग्रदेशमैं प्रहारकरणेसें रसनिकसेहै ॥ यातेंसोवृक्षजीवसहितनिश्चयहोवेहै ॥ तथासोवृक्षशरीर
वालाजीव जबीएकशाखाकात्यागकरे तबीसाशाखाशुष्कहोइजावेहै ॥ द्वितीयशाखाकेत्यागकरणेसें द्वितीयशाखासूकजावेहै ॥ जबी
सर्ववृक्षशरीरकात्यागकरेहै तबीसर्ववृक्षसूकजावेहै ॥ तैसेयहजीवात्मा मनुष्यदेहादिकोंकूंत्यागताहूआ द्वितीयदेहोंकूंग्रहणकरेहै ॥ कबी
जीवकानाशहोवेनहीं केवलकर्मोंकरिप्राप्त यास्थूलशरीरकाहीनाशहोवेहै ॥ यहनित्यजीवात्माहीब्रह्मरूपहै ॥ औरब्रह्मसेंउत्पन्नभया
जोनामरूपजगतहै सोरज्जुसर्पकीन्यांईमिथ्याहैसत्यनहीं ॥ जैसेरज्जुसेंसर्पउत्पन्नभयामिथ्याकहीयेहै सत्यनहींकहीयेहै ॥ तैसेब्रह्मसेंउत्प ॥१३॥
न्नभया प्रपंचमिथ्याहैसत्यनहीं ॥ यास्थानमैंयहअभिप्रायउपरिसेंजाननेयोग्यहै ॥ जैसेरज्जुकासर्पविवर्त्तहै तैसेब्रह्मकाजगत् विवर्त्तहै ॥
विवर्त्तकालक्षणयहहै ॥ अतात्त्विकोऽन्यथाभावोविवर्त्तः ॥ सत्यअधिष्ठानमेंहीमिथ्यारूपसेंप्रतीतहोना यहलक्षणकाअर्थहै ॥ ब्रह्मकाज

180

गत्परिणामहोता तबजगतसत्यहोता काहेते ॥ तात्विकोऽन्यथाभावः परिणामः ॥ जैसेदुग्धवास्तवसेंदधिरूपताकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ता
दुग्धसेंभिन्नहीदधिहै ॥ तैसेनिरवयवब्रह्मका यहजगत्परिणामबनेनहीं ॥ विवर्त्ततौनिरवयवआकाशमैंभी नीलरूप तथाकटाहाकाररूप
सेंहोवेहै ॥ यातें जैसेरज्जुमै सर्पमिथ्याउत्पन्नहोवेहै औरजैसेआकाशविषे मिथ्यानीलरूपादिप्रतीतहोवेहैं ॥ तैसेब्रह्मसें मिथ्याहीउत्पन्नहू
आजगत् ब्रह्ममैंहीप्रतीतहोवेहै ॥ यातें हेश्वेतकेतो तुमआपनेअद्वितीयभावकूं स्मरणकरो ॥ शंका ॥ हेभगवन् यासूक्ष्मब्रह्मसें यहस्थू
लप्रपंचकैसेउत्पन्नहोवेहै ॥ तथाब्रह्मयास्थूलजगत्काआधारभीकैसेहै ॥ स्थूलमृत्तिकाहीघटकूंउत्पन्नकरेहै परमाणुसें घटकीउत्पत्तिदेख
नेमैं आवेनहीं ॥ तथासूक्ष्म परमाणुकेआश्रितहोइकरि घटस्थितभीहोवेनहीं किंतु स्थूलमृत्तिकामैंस्थितहोवेहै ॥ यहसूक्ष्मब्रह्म जगत्
कारण तथाआश्रयकदाचितबनेनहीं ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पितापंचमअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र यावटवृक्षसें एकफलकूंलेआवो ॥
श्वेतकेतुलेआताभया ॥ पिताकहेहैं याफलकूंभेदनकरो ॥ श्वेतकेतुकहेहै हेभगवन् याफलकाभेदनकराहै ॥ पिताकहेहैं याभेदनकरेफ
लमैं तुमक्यादेखतेहो ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् सूक्ष्मबीजप्रतीतहोवेहैं ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र इनबीजोंमैंसें एकसूक्ष्मबीजकूंभेदनकरो ॥ पु
त्रनेभेदनकरिकै कहा हेभगवन् बीजभेदनकराहै ॥ पिताकहेहैं भेदनकरेबीजमें तुमक्यादेखतेहो ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् मेरेकूंअबकिं
चित्भी प्रतीतनहींहोता ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र यहमहान् वटवृक्ष यासूक्ष्मवटबीजमैंस्थितहै ॥ जबीताबीजमैं वृक्षकाअभावमानेतौ जैसे
वंध्यापुत्रसें किंचित् उत्पन्नहोवेनहीं ॥ तैसेतासूक्ष्मबीजसेंभी वृक्षउत्पन्ननहींहोवेगा ॥ यातेंसूक्ष्मरूपसें यहमहान्वृक्ष उत्पत्तिसेंप्रथमता
बीजमैंस्थितहूआ तासेंहीउत्पन्नहोवेहै ॥ तैसेयासूक्ष्मब्रह्मविषेभी यहजगत् सूक्ष्मरूपसेंस्थितहूआ तासेंहीउत्पन्नहोवेहै ॥ औरहेपुत्र य
हहमारासमाधान तुमारीशंकाकूंमानकरिहै वास्तवसेंतौ महान्आकाशादिकोंसेंभी ब्रह्ममहान्है ॥ औरसत्तारूपसें घटादिरूपसर्वजग
त्मैं व्यापकहै ॥ सूक्ष्मरूपसेंजोश्रुतिमैंकथनकराहै ॥ सोकेवलदुर्लक्ष्यअभिप्रायसेंकह्याहै ॥ अल्पहै याकहनेमैं श्रुतिकातात्पर्यनहीं ॥

जैसेसूक्ष्मवस्तुकादर्शनसावधानहूएविनाहोवेनहीं ॥ तैसेसावधानहूएविना ब्रह्मकाप्रत्यग्रूपसें दर्शनहोवेनहीं ॥ यातेंतुमशुद्धब्रह्मरूपहो ॥

शंका ॥ हेभगवन् प्रत्यग्ब्रह्मजबीसर्वत्रव्यापकहै ॥ तौसर्वकूंआपनाआत्मारूपसें प्रतीतहूआचाहिये ॥ तथासर्वजगत्विषे व्यापकहोनेसें सर्वजगत्मैभीप्रतीतहूआचाहिये ॥ जबोसूक्ष्महोनेसें दर्शनकेअयोग्यकहोगे तौताब्रह्मकासाक्षात्कार किसीपुरुषकूंभीनहोनेसें संसारभ्र

॥ ११ ॥ मकिसीकाभी निवृत्तनहींहूआचाहिये ॥ यातेंमैब्रह्मरूपकैसेहूं ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पिता षष्ठअभ्यासकाउपदेशकरेहैं ॥ हेपुत्र यालवणकूंरात्रिमैजलविषेगेरकरि प्रातःकालमै मेरेकूंतुमनेप्राप्तहोना ॥ श्वेतकेतुनेतैसेकरा प्रातःकालमैपिताकेसमीपआइस्थितभया ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र जोलवणरात्रिविषे तुमनेजलमैगेराथा ताकूंनिकासलेवो ॥ श्वेतकेतुने जलमैहस्तकूंपाइकरि निकासनेवासते बहुतप रिश्रमकरा परंतुजलसेंबाहिरनिकसानहीं ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र जलकेउपरिदेशसेंआचमनकरो ॥ श्वेतकेतुनेजबी आचमनकरा तबपि तापूछेहैं यामैक्याहै ॥ पुत्रकहेहै हेभगवन् लवणहै ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र याजलकेमध्यदेशसेंआचमनकरो ॥ पुत्रनेजबीमध्यदेशसें आ चमनकरा तबीपितापूछेहैं यामैक्याहै ॥ पुत्रकहेहै ॥ भगवन् लवणहै ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र अबनीचेदेशसें आचमनलेवो ॥ जबीपुत्रनेआ चमनलीया तबीपितापूछेहैं यामैक्याहै ॥ पुत्रकहेहै भगवन्लवणहै ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र याजलकूंत्यागकरि हमारेपासआवो ॥ पुत्र लवणसदावर्त्तमानहै ऐसेकहताहूआ पिताकेपासप्राप्तभया ॥ पिताकहेहैं हेपुत्र जैसेयाजलमै लवणहैभी परंतुतुमारेकूं इननेत्रोंकरिप्र

तीतहोवेनहीं ॥ तैसेसर्वमै व्यापकब्रह्मभी बहिर्मुखइंद्रियोंकरि प्रतीतहोवेनहीं ॥ औरजैसेलवणकारसनाकरिज्ञानहोवेहै ॥ तैसेशुद्धबु ॥ १४ ॥

द्धिकरिकै आत्माप्रत्यक्षहोवेहै ॥ यातेंश्रद्धासहितशुद्धबुद्धिकरिके आपनेशुद्धस्वरूपकूंनिश्चयकरो ब्रह्मकूंकहींदूरनहींजानो याशरीरमै ही साक्षीरूपसेंब्रह्मस्थितहै ॥ जैसेजलसेंभिन्नहीलवणहै तैसेदेहादिकोंसेंपृथक्हीप्रत्यग्ब्रह्महै ॥ यातेंदेहादिकोंसेंभिन्न शुद्धब्रह्मरूपतुम हो ॥ शंका ॥ हेभगवन् नेत्रादिकोंकेअविषयस्वभाव आत्माकेप्रत्यक्षमै कोईउपायकथनकरो ॥ जाउपायसें मैशीघ्रहीआत्माकूं जानक

रि कृतार्थहोवों ॥ याशंकाकेप्रहारवासते पितासप्तमअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्रगंधारदेशविषेरहणेहारे किसीपुरुषकूं चौरपुरुषपक डकरि वनमैलेआवतेभये ॥ तापुरुषकेनेत्रोंकूंबांधके तावनमै ताकेभूषणवस्त्रोंकूंउतारकरि छोडतेभये ॥ सोगंधारदेशकापुरुष तावन विषेमहान्दुःखकूंप्राप्तहूआ रुदनकरेहै ॥ कबीपूर्वमुखकरिकेरुदनकरेहै ॥ कबीउत्तरमुखकरिकेरुदनकरेहै ॥ कबीनीचेमुखकरिकेरुदन करेहै ॥ औरमुखसेंयहशब्दकहेहै ॥ मैगंधारदेशमैरहणेवालेपुरुषकूं चौरोंने नेत्रादिकबांधकैतथावस्त्रभूषणउतारकरि याकठिनवन मै मेरेकूंछोडदीयाहै ॥ यावनमै मेरेकूं सिंहव्याघ्रसर्पादि दुःखदेवेहैं ॥ ऐसेऊचेपुकारतेपुरुषकूं दुःखीदेखिकरि कोईकृपालुपुरुष ता केनेत्रोंकेबंधनकूंखोलकरि यहकहताभया ॥ हेपुरुष जागंधारदेशसें तूंआयाहैं ॥ यामार्गसेंतुमआपनेगंधारदेशकूंचलेजावो ॥ या दिशामैहीगंधारहैं ॥ सोपुरुषतादयालुके उपदेशकूंश्रवणकरि आपनेगंधारदेशमैंप्राप्तभया ॥ कैसाभीसोपुरुषथा जोउपदेशकेग्रहण करणेमैसमर्थ ॥ तथाआपबुद्धिमान्था सोआपनेदेशकूंप्राप्तहोइके परमआनंदकूंप्राप्तभया ॥ हेश्वेतकेतो ऐसेहीतुमारेकूं कामक्रोधा दिचोरोंने शुद्धब्रह्मस्वरूपस्वदेशसेंलेआइके संसाररूपीवनमैप्राप्तकराहै ॥ तिनकामक्रोधादिकचोरोंने तुमारेसाक्षीरूपनेत्रकूंबांध के महान्दुःखकूं प्राप्तकराहै ॥ यातेंहीतूंसंसाररूपीवनमै दुःखकूंप्राप्तभयाहैं ॥ ब्रह्मवेत्तागुरुके महावाक्यउपदेशरूपहस्तकरिकै अज्ञानरूपदृढबंधनकी निवृत्तिकरो ॥ यातेंतुमभी गंधारदेशकीन्यांई आपनेब्रह्मरूपदेशकूंप्राप्तहोवो ॥ गुरुकाउपदेशहीब्रह्मप्राप्तिमै द्वारहै ॥ ताकेसहकारीशिष्यकीबुद्धि तथाआत्मजिज्ञासा यहदोनोंजानने ॥ गुरुकेउपदेशकूंश्रवणकरिकै आत्मनिश्चयवालापुरुष ब्रह्म स्वरूपकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तामहात्माज्ञानीका तबपर्यंतशरीर प्रतीतहोवेहै जबपर्यंतप्रारब्धहै ॥ भोगकरिप्रारब्धकेनिवृत्तभये सोविद्वान् वि देहकैवल्यकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जाब्रह्ममै विद्वान्अभिन्नहोवेहै ऐसाशुद्धब्रह्महो तुमारास्वरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सुषुप्तिकीन्यांई मरणका लविषे जैसे अज्ञानी ब्रह्मसेंअभिन्नहोवेहै ॥ तैसेविद्वान्भी ब्रह्मसेंअभिन्नहोवेहै ॥ वाकोईऔररीतिसें ब्रह्मकेसाथअभिन्नहोवेहै ॥ याशं

183

 काकीनिवृत्तिवासते पिताअष्टमअभ्यासकूंकहेहैं ॥ हेपुत्र मरणकालमै अज्ञानीपुरुषकेसमीपसंबंधिआइकरिपूंछेहैं ॥ तुममैपुत्रकूंजा
नतेहो तुममैपिताकूंजानतेहो ॥ सोपुरुषतबपर्यंतजानताहै जबपर्यंत ताकेवाग्‌आदिइंद्रिय मनमैलयभावकूंनहींप्राप्तभये ॥ तथा
॥२०॥ मनप्राणमै प्राणजीवमै जीवपरमात्मामैलयभावकूं प्राप्तनहींभया ॥ जबीताकेवाग्‌आदिसर्व लयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तबकिंचितभी
जानेनहीं ॥ ब्रह्मप्राप्तिपर्यंततौ याक्रमसें विद्वान्‌अज्ञानीकीसमानगतिहै ॥ विलक्षणतायहहै जोअज्ञानीपुरुषहै सोमरणकालमै सुषुप्ति
कीन्यांई ब्रह्ममैलयभावकूंप्राप्ततौहोवेहै ॥ परंतु ज्ञानकेअभावसें ताकीअविद्यानिवृत्तहोवेनहीं ॥ तथाकर्मवासनाभी सुषुप्तिकीन्यांई सूक्ष्म
रूपसेंस्थितहोवेहैं ॥ यातें सोअज्ञानीपुरुष अविद्याकामकर्मकेआधीनहूआ पुनःजन्ममरणकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरज्ञानीपुरुषकीअविद्याका
ब्रह्मज्ञानकरिनाशहोवेहै ॥ अविद्याकेनाशहोनेसें ताअविद्याकेकार्य वासना कर्म संशय विपर्ययादिसर्वनिवृत्तहोवेहैं ॥ तथाताज्ञानीके
प्राणादिक परलोकमैगमनकरेंनहीं ॥ किंतुब्रह्ममै लयभावकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ यातेंहेश्वेतकेतो ज्ञानीयाशरीरकूंत्यागके जाब्रह्मसेंअभिन्नहो
वेहै ॥ ऐसेशुद्धब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवो सोईतुमारास्वरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबीअज्ञानीपुरुषकूं मृत्युपरलोकमैप्राप्तकरेहै ॥ ज्ञानी
कूंभी किसवासतेमृत्युपरलोकविषेनहींलेजाता ॥ यामै मेरेतांई कारणकूंकहो ॥ अथवाअज्ञानीभीमरणकालमै ब्रह्मकूंप्राप्तहूआ पर
लोकमै सुखदुःखकूं किसवासतेप्राप्तहोवेहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते अंत्यकानवमअभ्यासपिताकहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो ॥ जैसेएकपुरुष
चोरथा दुसरापुरुषसाधुथा ॥ तिनदोनोंकूं राजाकेकिंकरोंने चोरजानके बलात्कारसें पकडलीया ॥ राजाकेसमीपप्राप्तकरिके किंकरोंने
कहा ॥ यहदोनोंचोरहैं इनोंनेधनकीचोरीकरीहै ॥ चोरकहेहै मैनेचोरीनहींकरी साधुपुरुषभीकहेहै हमनेचोरीनहींकरी ॥ राजाकेमं
त्रीकहेहैं ॥ जबीतुमनेचोरीनहींकरी तौयातप्तपरशुकूं हस्तसेंग्रहणकरो ॥ जबीतुमचोरनहींहोवोगे ॥ तबतुमाराहस्त दग्धहोवेगानहीं ॥
प्रथमचोरनेआपनेकर्मकूंप्रगटनकरा ॥ औरमिथ्यासंभाषणकरिकै तप्तपरशुकूंग्रहणकरा ॥ तबीताचोरकाहस्त दाहकूंप्राप्तभया ॥ राजाके

भृत्योंनेताकूं चोरजानकरि अनेकप्रकारकादंडदीया ॥ साधुपुरुषकूंतप्तपरशुग्रहणवासते जबीकहा ॥ तबीतासाधुकाहस्तदाहभयान हीं ॥ ताकालमैंराजाने तथाराजाकेभृत्योंने तासाधुपुरुषकूंक्षमाकराई ॥ तथाआपनाअपराधक्षमाकराइके तासाधुकूंअन्नवस्त्रादिकभी दीये ॥ ऐसेहीअज्ञानीपुरुष आपनेशुद्धरूपकूंनजानताहूआ कहेहै मैब्रह्मनहींहूं मैसुखीदुःखीजन्ममरणवालाहूं ॥ यहहीचोरीरूपस्वकर्म काछिपानाहै ॥ जैसेताचोरके प्रथमहस्तकादाहभया पश्चात् राजाकेभृत्योंने बांधकेदुःखदीया ॥ तैसेयहअज्ञानीप्रथममृत्युसेंपीडाकूंप्रा प्तहोवेहै पश्चात् चौरासीलक्षयोनिरूप बंधनकूंप्राप्तहूआ दुःखकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसे साधुपुरुषकूं किंचित्भीदुःखहोवेनहीं सर्वराजाआदिक ताकापूजनहीकरतेभये ॥ तैसेज्ञानीपुरुषभी आपनेशुद्धस्वरूपमै निश्चयवालाहूआ तथासर्वविक्षेपसेंरहितहूआ ब्रह्माआदिकोंकरिकैभी पूज्यहोवेहै ॥ यातेंअज्ञानीपुरुषआपनेशुद्धरूपकूं नजानकरि आपनेअज्ञानकरिकैही पुनःपुनःजन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ज्ञानीतौशुद्धस चिदानंदब्रह्मकूंआपनास्वरूपजानकरि पुनःजन्ममृत्युकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ जाब्रह्मस्वरूपकूं ज्ञानीप्राप्तहोवेहै हेश्वेतकेतो तत्त्वमसि ॥ अर्थ यह ॥ सोब्रह्मतुमारा आपनास्वरूपहै ॥ ताकूंजानकरि कृतकृत्यभावकूंप्राप्तहोवो ॥ श्रुतिभगवती सर्वमुमुक्षुजनोकूंकहेहै ॥ भोमुमुक्षवः ऐसेउपदेशकूंपिताउद्दालकसें श्वेतकेतुने श्रवणकरा ॥ औरब्रह्मस्वरूपकूंजानकरि प्रारब्धकूंभोगकरि क्षयकरताहूआ विदेहकैवल्यकूंप्रा प्तभया ॥ ऐसीऐसीअनेककथाद्वारा श्रुतिभगवती सर्वमुमुक्षुजनोंकेमोक्षवासते ब्रह्मका आत्मरूपसें उपदेशकरेहै ॥ यातेंमुमुक्षुजनोंकूं ब्रह्मकेआत्मरूपसेंनिश्चयवासते आत्माकेहीश्रवणमनननिदिध्यासनकर्त्तव्यहैं ॥ अबप्रसंगसें श्रवणआदिकोंकूंकहेहैं ॥ श्रवणदोप्रकारका है ॥ एकसाधारणश्रवणहै द्वितीयअसाधारणश्रवणहै ॥ साधारणकथाआदिकोंकाश्रवण तथामहात्मासंतजनोंकेवचनोंकाश्रवण याकूं साधारणश्रवणजानना ॥ औरषड्विधलिंगोंसें वेदांतोंकाअद्वितीयब्रह्ममै तात्पर्यनिश्चयकरणा यहद्वितीयअसाधारणश्रवणहै ॥ अबवेदां तोंकेतात्पर्यकेग्राहक षड्विधलिंगोंकूंकहेहैं ॥ उपक्रमउपसंहार ॥ १ ॥ अभ्यास २ ॥ अपूर्वता ३ ॥ फल ४ ॥ अर्थवाद ५ ॥ उपपत्ति ६ ॥

185

तिनषट्के नामोंकूंकहिकरि अबतिनएकएककूंकहैहैं ॥ उपक्रमनाम आरंभकाहै उपसंहारनामसमाप्तिकाहै ॥ अद्वितीयब्रह्मके आदिअंतमैं
कथनकानाम उपक्रमउपसंहार यहप्रथमलिंगहै ॥ छांदोग्यउपनिषद्केया षष्ठप्रपाठकके आरंभमैं यहश्रुतिवचनहै ॥ सदेवसोम्येदमग्र आ
॥२१॥ सीत् एकमेवाऽद्वितीयं ॥ अर्थयह ॥ हेसोम्ये यहसर्वजगत् उत्पत्तिसेंप्रथम सत्स्वरूपहीहोताभया ॥ सोसत्ब्रह्म सजातीय स्वगत वि
जातीय भेदत्रयसेंरहितहै ॥ प्रसंगसमाप्तिमैंयहश्रुतिवचनहै ॥ ऐतदात्म्यमिदंसर्वं ॥ अर्थयह ॥ इदंसर्वंनाम यहसर्वजगत् ऐतदात्म्यंना
म याआत्माकाहीस्वरूपहै ॥ आदिअंतमैंएकअर्थकाबोधकहोनेसें उपक्रमउपसंहारएकहीलिंगहै ॥ अबद्वितीयअभ्यासनामकलिंगका
निरूपणकरेहैं ॥ सत्अद्वितीयब्रह्मके वारंवारकथनकानामअभ्यासहै ॥ याछांदोग्यकेषष्ठप्रपाठकमैंही यहश्रुतिवचननववारकहाहै ॥
तत्सत्यंसआत्मातत्त्वमसिश्वेतकेतो ॥ यानववारपठितश्रुतिका अर्थयहहै ॥ तत्सत्यंनाम सोब्रह्मसत्यहै ॥ सआत्मानामसाक्षीआत्मारूप
हीब्रह्महै ॥ श्वेतकेतुकहेहैमेरेकूंक्या ॥ तबताश्वेतकेतुकूं पिताउद्दालककहेहैं ॥ हेश्वेतकेतो तत्त्वमसिसोशुद्धब्रह्मस्वरूप सजातीय स्वगत
विजातीयभेदत्रयरहित तुमाराआत्माहै ॥ अबतृतीयलिंगअपूर्वताकूंकहेहैं ॥ अद्वितीयब्रह्ममैं उपनिषत्प्रमाणसेंविना अन्यप्रत्यक्षादिप्र
माणोंके अविषयत्वप्रतिपादनकानाम अपूर्वताहै ॥ याछांदोग्यके षष्ठप्रपाठकमैंही अपूर्वताप्रतिपादकयहश्रुतिवचनहै ॥ अत्रवावकिल
सत्सोम्यननिभालयसे ॥ अर्थयह ॥ हेश्वेतकेतो ॥ अत्रवावनाम यादेहमैंही सत्सोम्यननिभालयसेनाम सत्स्वरूपब्रह्मस्थितहै ॥ ताकूंतु
मनहींजानते ॥ किलपदआचार्यकेमहावाक्यउपदेशरूपउपायकूं ब्रह्मप्राप्तिमैंद्वाररूपसेंकहेहै ॥ अबचतुर्थ फलरूपलिंगकूंकहेहैं ॥ अद्वि
तीयब्रह्मकेज्ञानसें ताअद्वितीयब्रह्मकी प्राप्तिरूपफलकेकथनकानामफललिंगहै ॥ ताफलमैं याछांदोग्यउपनिषत्के षष्ठअध्यायकीश्रुति ॥१६॥
कहेहैं ॥ तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये ॥ अर्थयह ॥ तस्यतावदेवचिरंनाम ताज्ञानीकूं विदेहमैं तावत्कालविलंबहै ॥ यावन्नवि
मोक्ष्ये नाम यावत्काल प्रारब्धसेंरहितनहींहोता ॥ अथनाम भोगकरिप्रारब्धकेनिवृत्तहूए संपत्स्येनामविदेहकैवल्यकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अ

बपंचमअर्थवादरूपलिंगकूंकहेहैं ॥ अद्वितीयब्रह्मकेज्ञानकी स्तुतिकरणेकानामअर्थवादहै ॥ याछांदोग्यकेषष्ठअध्यायमैंही यहश्रुतिवच नहै ॥ येनाऽश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातमिति ॥ अर्थयह ॥ येनाऽश्रुतंश्रुतंभवतिनाम जाएकब्रह्मकेश्रवणकरणेसें नहींश्रव णकराभी पदार्थ श्रवणहोइजावेहै ॥ अमतंमतंनाम नहींमननकराभी मननहोइजावे ॥ अविज्ञातंविज्ञातमितिनाम अनिश्चितपदार्थ भी निश्चितहोइजावे ॥ ऐसेअद्वितीयब्रह्मके श्रवणमनननिदिध्यासनकरणेसें अन्यअश्रुतअमतअविज्ञातपदार्थके श्रवणादिरूपसेंस्तु तिकथनकरीहै ॥ अबषष्ठउपपत्तिरूपलिंगकानिरूपणकरेहैं ॥ अद्वितीयब्रह्मका दृष्टांतरूपयुक्तियोंसें वारंवारप्रतिपादनकानाम उपपत्तिहै ॥ ताउपपत्तिकेप्रतिपादक छांदोग्यश्रुतिके याषष्ठअध्यायकेवाक्यकूंकहेहैं ॥ वाचाऽऽरंभणं विकारोनामधेयंमृत्तिकेत्येवस त्यं ॥ अर्थयह ॥ वाचाऽऽरंभणंविकारःनाम वाणीकरिउच्चारणमात्रही घटादिविकारहै ॥ नामधेयंनाम जिससेंघटादिनाममात्रहै यातें मिथ्याहीहै ॥ मृत्तिकेत्येवसत्यंनाम कारणरूपमृत्तिकाहीसत्यहै ॥ ऐसेछांदोग्यविषे उद्दालकऋषिने मृत्तिकास्वर्णलोहादिकोंकेदृष्टांतोंसें कारणब्रह्मकूं अद्वितीयताप्रतिपादनकरीहै ॥ इसप्रकारकेषड्विधलिंगोंसें अद्वितीयब्रह्ममैं वेदांतोंकेतात्पर्यकेनिश्चयकानामश्रवणहै ॥ वेदांतब्रह्मकेप्रतिपादकहैं वाअन्यकिसीअर्थकेप्रतिपादकहैं याप्रकारकीअसंभावना याश्रवणसें निवृत्तहोवेहै ॥ अबमननकूंकहेहैं ॥ भेद बाधकयुक्तियोंसें अद्वितीयब्रह्मकेचिंतनकानाममननहै ॥ युक्तियहहैं ॥ जीवईश्वरकास्वाभाविकभेदहै वाऔपाधिकभेदहै ॥ स्वाभावि कभेदमाने साक्षीरूपजीवचेतनसेंईश्वरकूंभिन्नमाने तौईश्वरमैंजडताकीप्राप्तिहोवेगी ॥ ईश्वरकूंचेतनरूपश्रुतिकहेहै ॥ श्रुतिसेंविरोधहोवे गा ॥ चेतनरूपईश्वरसें जीवकूंभिन्नमाने तौएकहीचेतनहै चेतनभिन्नजडहोवेहै ॥ यातेंजीवमैंजडताकीप्राप्तिहोवेगी ॥ ऐसेंस्वाभावि कभेदनहीं ॥ उपाधिकरिकेभेदमानेतौ अंतःकरणउपाधितौ सुषुप्तिमैंरहेनहीं यातेंसुषुप्तिमैंजीवईश्वरकेभेदकालोपहोवेगा ॥ जबीअज्ञान उपाधिमानेतौबनेनहीं ॥ काहेतें अज्ञानशुद्धब्रह्मसें ईश्वरकेभेदकासाधकहै जीवईश्वरकेभेदकासाधकनहीं ॥ जबीमानेतौभी जीवईश्वर

187

केभेदकूं अज्ञानउत्पन्नकरेहै वाप्रकाशकरेहै वास्थितकरेहै ॥ जीवईश्वरकेभेदकूं अनादिमाननेसें प्रथमपक्षअसंगतहै ॥ अज्ञानकूंजडहो
नेसें द्वितीयपक्षबनेनहीं ॥ तृतीयपक्षमैंयहदोषहै ॥ प्रयोजनविनातौ अज्ञानभेदकूंस्थितकरेनहीं औरआश्रयविषयलाभसेंविना अज्ञान
 काऔरप्रयोजनकह्याजावेनहीं ॥ आश्रयविषयतौनिर्विभागचेतनहीबनेहै ॥ भेदकूंअज्ञाननेस्थितकरणानिष्फलहै इत्यादियुक्तिचिंतन
रूपमननसें भेदकीनिवृत्तिहोवेहै ॥ तैलधारावत् ब्रह्माकारवृत्तिरूपनिदिध्यासनसें अखंडब्रह्मकेज्ञानद्वारा मोक्षप्राप्तहोवेहै ॥ ॥ ॐ
शांतिःशांतिःशांतिः ॥ ॥ ॥ इतिछांदोग्येषष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
ॐनमोभगवतेसूर्याय ॥ पूर्वषष्ठअध्यायविषेसाक्षात्ब्रह्मकानिरूपणकराहै ॥ अबसप्तमअध्यायविषे नामादिद्वारा ब्रह्मकापरंपरासें उप
देशकरेहैं ॥ एककालमैनारदमुनि संसारकेतापोंकरितप्तहूआ एकांतदेशमैंस्थितसनत्कुमारऋषिकीशरणकूंप्राप्तभया ॥ औरकहताभ
या ॥ हेभगवन् आपब्रह्मात्माकूं भलीप्रकारजानतेहो ॥ तांब्रह्मकामेरेकूंउपदेशकरो ॥ सनत्कुमारकहेहैं ॥ हेनारद आपजितनीविद्या
जानतेहैं सासंपूर्ण हमारेकूंश्रवणकरावो ॥ पश्चात् तुमारेतांई हमब्रह्मकाउपदेशकरेंगे ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् ऋक् यजुर् साम अथर्व
इनच्यारोंवेदोंकूं मैपिताब्रह्माजीकीकृपासेंजानताहूं ॥ तथाभारतरूप पंचमवेदकूं पुराणोंकूं व्याकरणकूं मैजानताहूं ॥ श्राद्धादिकपितृक
र्मकेकहनेहारे पित्र्यनामकशास्त्रकूंमैजानताहूं ॥ तथागणितशास्त्र तथाउपद्रवकाबोधकशास्त्र तथास्वर्णादिधनदावेहूएका जाशास्त्रसेंज्ञान
होवेहै ताकूंमैजानताहूं ॥ तर्कशास्त्रनाम न्यायशास्त्रकूंतथानीतिशास्त्रकूं तथानिरुक्तअंगकूं तथाशिक्षाकूं तथाकल्पकूं मैजानताहूं ॥ तथा
वैद्यकआयुर्वेदकूं तथाअस्त्रशस्त्रादिकोंकूंकहनेहारे धनुर्वेदकूंमैजानताहूं ॥ तथाज्योतिषनामकअंगकूं तथागारुडविद्याकूं तथागीतविद्या
कूं मैजानताहूं ॥ हेभगवन् सर्वविद्यावोंका साक्षात् औरपरंपरासेंअद्वैतब्रह्ममैहीतात्पर्यहै ॥ ताब्रह्मकूंमैजानतानहीं यातेंमैतिनविद्यावोंके
पाठमात्रकूं जानताहूं ॥ अर्थसेंनहींजानता ॥ हेभगवन् आपसदृशब्रह्मवेत्तामहात्मावोंसें मैयहश्रवणकरताभया ॥ तरतिशोकमात्मवित ॥

अर्थयह जोआत्मवेत्तापुरुष शोकरूपसर्वसंसारकूं कारणसहितनिवृत्तकरेहै ॥ भगवन् मैतौंमहान्शोककूंप्राप्तहूं ॥ जैसेयुवाअवस्थावाली तथाछोटेबालकोंवालीपतिव्रतास्त्रीका पतिमृतहोइजावे ॥ तबोसापतिव्रतास्त्री महान्शोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेआत्मज्ञानसेंरहित मैनारद महान्शोककूं प्राप्तहोइरहाहूं ॥ यातें मेरेकूंशोकसमुद्रसें आपकृपाकरिपारकरो ॥ याप्रकारकेनारदकेवचनोंकूंश्रवणकरि स्थूलअरुंधतीन्यायकरिके आत्माकेबोधनवासते सनत्कुमारऋषि याप्रकारकावचनकहताभया ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद जिनवेदादिकोंकूं तुमजानतेहो तेसर्वनाममात्रहीहैं ॥ ऋग्वेदादि तथाइतिहास पुराण व्याकरणादिषट्अंग तथापित्र्यशास्त्रादि तुमनेजेप्रथमनिरूपणकरेहैं ॥ तेसर्वहीनामस्वरूपहैं यातें हेनारद नामकूंब्रह्मरूपज़ानकरि उपासनकरो ॥ जैसेशालिग्रामविषे विष्णुकाध्यान नर्मदेश्वरमैशिवकाध्यान शास्त्रकीआज्ञामानिकैहोवेहै ॥ तैसेनामविषे ब्रह्मकाध्यानशास्त्रकहेहै ॥ नामके ब्रह्मरूपसेंउपासनाका फलकहेहैं ॥ जापदार्थकानामसेंउच्चारण होवेहै ॥ तासर्वलोकआदिकोंमै नामकूंब्रह्मरूपसेंउपासनकरणेवालेका राजाकीन्यांईस्वतंत्रगमनहोवेहै ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् नामसें अधिकभीकोईपदार्थहै ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ यानामसें नामकाहेतुवाक्अधिकहै ॥ जैसेदोविभीतकानाम बहेडे तथादोबदरीफल मुष्टिकेअंतर्गतहोवेहैं ॥ तैसेवाणीमनमैस्थितहै ॥ वाणीसेंमनव्यापकहैयहभावहै ॥ मनकीइच्छाविना वाणीसेंशब्दउच्चारणहोवेमहीं ॥ ऐसेनामकीयांई वाग्आदिकोंकीउपासनावोंकेफलभी सर्वलोकोंमै स्वतंत्रगमनादिकजानलेने ॥ ऐसेहीनारदकेअधिकताप्रश्न औरसनत्कुमारके उत्तर जाननेयोग्यहैं ॥ तावाक्सें वाक्काप्रेरकइच्छारूपमनअधिकहै ॥ तामनसेंकर्त्तव्यअकर्त्तव्यकूं पृथक्पृथक्जाननेहारी इच्छाकीहेतु संकल्परूपअंतःकरणकीवृत्तिअधिकहै ॥ संकल्पसेंसंकल्पकाहेतुस्मरणरूपचित्तअधिकहै ॥ वृत्तियोंकाप्रवाहचिंतारूपध्यान ताचित्तसेंअधिकहै ॥ ध्यानभीताकाहोवेहै जाकाविशेषज्ञानहोवे यातेंताध्यानसें विशेषज्ञानरूपविज्ञानअधिकहै ॥ विशेषज्ञानवालेबहुतपुरुषोंकूंभी एकबलवालापुरुषकंपायमानकरेहै यातें ताविज्ञानसेंबलअधिकहै ॥ बलसेंबलकाहेतुअन्नअधिकहै ॥ पृथिवीरूपअन्नकाहेतुजलहैं

तेजल अन्नसेंअधिककैहैं ॥ जलोंसें तिन्नकाहेतुतेजअधिककहै ॥ तेजसें आकाशअधिककहै ॥ ईहांतेज तथावायु इनदोनोंकूं जलरूपवृष्टिका
कारणहोनेसें तेजशब्दकरिके तेजका तथावायुका इनदोनोंकाग्रहणकरणा ॥ आकाशसेंअध्यासकाहेतु स्मरणअधिककहै स्मरणविना
॥ २३ ॥ आकाशकासत्वसिद्धहोवेनहीं ॥ यातेंआकाशसेंस्मरणअधिककहै ॥ आशाकरिकैही पुरुष मंत्रोंकूं स्मरणकरेहै तथापुत्रपशुआदिकोंकीइ
च्छाकरेहै ॥ यातेंस्मरणसेंआशाअधिककहै ॥ प्राणविनाआशाहोवेनहीं यातेंताआशासेंप्राणअधिककहै ॥ हेनारद जैसेरथकीनाभिमैअरांस्थि
तहोवेहैं ॥ तैसेसमष्टिव्यष्टिरूपप्राणोंविषे यहस्थूलसर्वजगत्स्थितहै ॥ प्राणआपनीस्वतंत्रताकरिकैही गमनकरेहै ॥ दातापुरुषरूपप्राण
ही गोरूपप्राणकूंदानकरेहै तथादानलेनेवाला ब्राह्मणादिभी प्राणहै ॥ प्राणही पिता माता भगिनी आचार्य ब्राह्मणादिरूपहै ॥ हे
नारद प्राणादियुक्तपिताआदिकोंकूं जोपुत्रादि तूंशब्दकरिकेउच्चारणकरेहै ॥ ताकूंबुद्धिमान् दूसरेपुरुषकहेहैं ॥ तुमने तूं शब्दकरिकै
पितामातादिकोंकूं जोउच्चारणकराहै ॥ सोतुमने पितामाताआदिकोंकावधकराहै ॥ यातेंतुमहत्यारेकूंधिक्कारहै ॥ जबीतिनपिताआ
दिकोंके प्राण शरीरसेंनिकसजावें ॥ तबअग्निविषे तीक्ष्णकाष्ठकरि वेधनकरतेहूएपुत्रादिकोंकूं ब्रह्महत्याराकहेनहीं ॥ यातेंजोपुरुषप्रा
णकूं सर्वरूपजानताहै सोपुरुषप्राणकेस्वरूपसर्वरूपकूं जानताहूआ मुख्यअतिवादीहोवेहै ॥ जैसेकोईपुरुष किसीदूसरेपुरुषकूंकहे मैतेरा
पिताहूं ताकूंबुद्धिमान्कहेहैं ॥ तूं मर्यादाकात्यागकरियहवचनकहताहैं ॥ परंतुसोगौणअतिवादीकहीयेहै ॥ काहेतेंआचार्यतेरामैहूं य
हतौनहींकहा ॥ जोपुरुषप्राणकूं आपनेआत्मारूपसेंजानताहै सोमुख्यअतिवादीहैं ॥ प्राणही पितामातादिसर्वरूपसेंवर्त्तमानहै यातें
सोप्राणवेत्ताहीमुख्यअतिवादीहै ॥ ताप्राणकेस्वरूपकूं आत्मरूपसें जाननेवाले पुरुषकूं जबीकोईपुरुष कहेतूंअतिवादीनहीं तबसोऐसे ॥ १८ ॥
नहींकहे मैअतिवादीनहीं ॥ मैअतिवादीहूं यहहीवचनकहे ॥ ऐसेप्राणकेमाहात्म्यकूंश्रवणकरि प्राणकूंहीपरमतत्त्वजानताहूआ याप्राणसें
भीकोईअधिककहै याप्रकारकेप्रश्नकूं नारदनकरताभया ॥ ऐसेमिथ्याप्राणकेस्वरूपकूंआत्मरूपसें जाननेवालाजोनारदहै ताकूं कृपालुस्व

भाव भगवान्सनत्कुमारकहतेभये ॥ हेनारद प्राणात्मवादीपुरुष मुख्यअतिवादीनहीं किंतुप्राणसेंअधिकसत्यब्रह्महै जोसत्यब्रह्मकूं आपनाआत्मारूपकरिजाननेहाराहै सोईअतिवादीहै ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरिकें नारदकहेहैं ॥ हेभगवन् मैसत्यब्रह्मकेजाननेकी इच्छाकरताहूं ॥ यातेंसत्यब्रह्मकाही मेरेतांईउपदेशकरो ॥ तासत्यब्रह्मकेज्ञानकरिही मैअतिवादीहोवोंगा ॥ याप्रकारकेवचनकूं श्रवणकरि सनत्कुमारकहेहैं ॥ हेनारद जोपुरुषसत्यब्रह्मकूंजानताहै सोईपुरुषस्पष्टरूपसें ब्रह्मकूंकथनकरेहै ॥ स्पष्टकथनब्रह्मकेप्रत्यक्षकरेविनाहोवेनहीं ॥ यातेंयथार्थप्रत्यक्षरूप विज्ञानही तेरेकूंज्ञातव्यहै ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् मैविज्ञानकेजाननेकीइच्छाकरताहूं ॥ ऐसेनारदके प्रश्नमननादिपंचपदार्थोंविषे औरभीजानलेने ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद युक्तिचिंतनरूपमननसेंविना विज्ञानहोवेनहीं ॥ यातेंमननतुमारेकूंज्ञातव्यहै ॥ तथागुरुशास्त्रकेवचनोंविषे विश्वासरूपश्रद्धाविना मननकेनहोनेसें श्रद्धाहीतुमारेकूंज्ञातव्यहै ॥ ताश्रद्धाकीहेतु गुरुसेवाआदिरूपनिष्ठासेंविना श्रद्धाहोवेनहीं ॥ यातेंसानिष्ठाहीज्ञातव्यहै ॥ इंद्रियसंयम तथाचित्तकीशुद्धिपूर्वकएकाग्रतारूपजाकृतिहै ॥ ऐसीकृतिकूं निष्ठाकाकारणहोनेसें साकृतिज्ञातव्यहै ॥ इंद्रियसंयमादिरूपकृतिभी सुखप्राप्तिकीइच्छाविनाहोवेनहीं ॥ यातेंताकृतिकेकारणसुखकेजाननेकीइच्छाकूंकरो ॥ नारदउवाच ॥ हेभगवन् मैसुखकेजाननेकीइच्छाकरताहूं तासुखकाहीमेरेतांई निरूपणकरो ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद ॥ योवैभूमातत्सुखंनाऽल्पेसुखमस्ति ॥ अर्थयह ॥ त्रिविधपरिच्छेदशून्यजोभूमपदार्थब्रह्महै सोब्रह्महीसुखरूपहै ॥ अल्पनामपरिच्छिन्ननामरूपजगतमै कदाचित् सुखनहीं ॥ अज्ञानीमूढोंकूं ब्रह्मानंदप्राप्तिसेंविना स्त्रीआदिकविषयोंविषे सुखभ्रांतिहोइरहीहै ॥ नारदकहेहैं हेभगवन् सुखस्वरूपभूमाब्रह्मकूं मैजान्याचाहताहूं ॥ यातेंमेरेतांई आपभूमाकाउपदेशकरो ॥ भूमाकिसकूंकहेहैं ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेनारद भूमाकालक्षणयहहै ॥ जापदार्थकेबुद्धिमै निश्चयहूए ज्ञानीपुरुष आपनेसेंभिन्नकिसीपदार्थकूं नेत्रोंसें देखेनहीं ॥ तथाआपनेसेंभिन्नकिसीपदार्थकूं श्रोत्रसेंश्रवणकरेनहीं ॥ तथाआपनेसेंभिन्नकिसीपदार्थकूं मनकरिकेजानेनहीं ॥ तापरिच्छे

दरहितब्रह्मकूं भूमाकहेहैं ॥ जापदार्थकूं अज्ञानकालमै आपनेसेंभिन्न नेत्रोंसेंदेखेहै ॥ तथाआपनेसेंभिन्नपदार्थकूंश्रवणकरेहै ॥ तथाआ
पनेसेंभिन्न पदार्थकूंमनकरिकेजानेहै ॥ तापरिच्छिन्नपदार्थकूं अल्पकहेहैं ॥ हेनारद जोभूमाहै सोईअमरणधर्माहोनेसें अमृतहै ॥ जोअ
 ल्पहै सोमरणधर्माहै ॥ नारदउवाच ॥ सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितः ॥ अर्थयह ॥ हेभगवन् सोभूमाकहांरहेहै ॥ सनत्कुमारउवाच ॥ हेना
रद व्यवहारदृष्टिकरिकै तुमभूमाकाआश्रयपूछतेहो ॥ वापरमार्थदृष्टिकरिकेआधारपूछतेहो ॥ प्रथमपक्षमैउत्तरयहहै ॥ स्वेमहिम्नि ॥ अ
र्थयह ॥ जैसेदेवदत्तनामकपुरुष पशुस्वर्णदासभार्याग्रहक्षेत्रादिरूपआपनीविभूतिकेआश्रयहोइकरि स्थितप्रतीतहोवेहै तैसेमाया और
मायाकाकार्यरूप आपने महिमाविषे भूमास्थितहै ॥ द्वितीयपरमार्थपक्षमै उत्तरयहहै ॥ यदिवानमहिम्नीति ॥ अर्थयह सोभूमावास्त
वसेंआपनेमहिमाविषेभीरहेनहीं ॥ काहेतें गो अश्व हस्ति स्वर्ण दास भार्या क्षेत्र ग्रहइत्यादिविभूतिरूपदेवदत्तकेमहिमाविषे जैसेदेवद
त्तस्थितहोवेहै ॥ तैसेभूमाब्रह्म वास्तवसें कहींस्थितहोवेनहीं ॥ घटादिकोंसेंभिन्नभूतलादिकही तिनघटादिकोंकेआधारबनेहैं ॥ सर्वरूप
तथासर्वमैव्यापक भूमाका कोईआधारबनेनहीं ॥ हेनारद ॥ सोभूमाहीनीचेहै ॥ सोभूमाहीउपरिहै सोभूमाही पश्चिम पूर्व उत्तर दक्षिणा
दिदिशावोंमै व्यापकहै ॥ तथाभूत भविष्यत् वर्तमानकालमै व्यापकहै ॥ देशकालवस्तुसर्वही ताभूमासेंपृथक्नहींहै॥ सोभूमाही प्रत्यगा
त्मस्वरूपहै ॥ यातेंप्रत्यगात्मरूपसें अबभूमाकूंवर्णनकरेहैं ॥ मैहीनीचेहूं मैहीउपरिहूं ॥ मैपूर्वआदिसर्वदिशावोंमै तथाभूतादिसर्वका
लोंमै व्यापकहूं ॥ सर्वदेश सर्वकाल सर्ववस्तुरूपमैहूं मेरेसेंकिंचितभिन्ननहींहै ॥ अहंशब्दकाअर्थतौ यहशरीरभीहै याशरीरकूंसर्वरू
पताकहनीविरुद्धहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते आत्माहीसर्वदेशकालादिरूपहै यहश्रुतिभगवतीकहेहै ॥ याजडपरिच्छिन्नशरीरमैतौसर्व
रूपताबनेनहीं ॥ यातेंभिन्नहीआत्माहै ॥ अबआत्मज्ञानकेफल जीवन्मुक्तिकूं तथाविदेहमुक्तिकूंकहेहैं ॥ जोपुरुष गुरुशास्त्रउपदेशसें संश
यविपर्ययसेंविना आपनेस्वरूपकूं यथार्थजानताहै ॥ सोविद्वान् जीवन्मुक्त आत्मरतिहै ॥ अर्थयह ॥ जैसेकामीपुरुषविदेशमैप्राप्तहूआभी

रतिआपनीस्त्रीमैंराखेहै ॥ तैसेजीवन्मुक्त आत्मामैंरतिवालाहै ॥ जैसेबालक दूसरेबालकोंसेंक्रीडाकरेहै ॥ तैसेविद्वान् वेदांतकेचिंतनकाल मै आनंदरूपआत्माविषेही क्रीडाकरेहै ॥ जीवन्मुक्तपुरुषकीदोअवस्थाहैं ॥ एकव्युत्थान दूसरीसमाधि ॥ व्युत्थानकालमै वेदांतकूंचिंतन करताविद्वान् आत्मक्रीडः यानामवालाहोवेहै ॥ स्नानभोजनादिकालविषे आत्मचिंतनकरणेवालेविद्वान्कूं आत्मरतिकहेहैं ॥ समाधिदो प्रकारकीहै एकसविकल्पसमाधिहै द्वितीयनिर्विकल्पसमाधिहै ॥ जैसेएकांतमै मिथुनभावकूंप्राप्तहूए स्त्रीपुरुषआनंदकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ तैसे ध्याताध्येयकरिसहितजोसविकल्पसमाधिहै तासमाधिविषेविद्वान् आनंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताविद्वान्कूं आत्ममिथुनकहेहैं॥ हेनारद त्रिपु टीरहितनिर्विकल्पसमाधिविषे निर्विकल्पब्रह्मानंदकूंप्राप्तभयाजोविद्वान्है ताकूंआत्मानंदःयानामकरिकैकहेहैं ॥ अबविदेहमुक्तिकूंकहेहैं ॥ हेनारद ऐसेवर्त्तमानजोज्ञानीहै सोप्रारब्धकूं भोगकरिकैक्षयकरताहूआ शरीरकेनाशहोनेसें ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ किसीकेवशहोवेनहीं ॥ तथापरिच्छिन्नपदार्थोंविषे इच्छाकूंकरेनहीं ॥ ऐसेभूमाविद्याकेफलकूंकहकरि आत्मज्ञानरहितपुरुषोंकूं अनर्थप्राप्तिकहेहैं ॥ जेपुरुषभूमाब्र ह्मकूं आत्मरूपसेंजानेनहीं तेसर्वदापरवशहूए नाशवान्लोकोंकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ तिनपुरुषोंका आपनीइच्छाअनुसार सर्वलोकोंविषेगम नहोवेनहीं ॥ हेनारद जाविद्वान्ने तत्पदार्थरूपभूमाकूं आपनास्वरूपजानाहै ॥ ताविद्वान्सेंही नामादिप्राणपर्यंतपंचदशतत्त्व उत्प न्नहोवेहैं ॥ ताविद्वान्सेंही स्वर्गादिफलसहितकर्म तथाऋगादिवेदउत्पन्नहोवेहैं ॥ भूमाकूं विद्वान्जानताहूआ मृत्युकूं तथारोगकूं त थारोगादिनिमित्तकदुःखोंकूं देखतानहीं ॥ सर्वभावकूंप्राप्तहूआ सर्वप्रपंचकूं आपनेविषेकल्पितदेखेहै ॥ कल्पितरूपसेंजान्याहूआपदार्थ इंद्रजालकेसर्पकीन्यांई दुःखदाताहोवेनहीं ॥ हेनारद ज्ञानी तेजजलपृथिवीरूपसें त्रिधाहोवेहै ॥ आकाशादिरूपसें पंचधानामपंचप्र कारकाहोवेहै ॥ भूरादिसप्तलोकरूपसें सप्तप्रकारकाहोवेहै ॥ सूर्यादिनवग्रहरूपसेंनवप्रकारकाहोवेहै ॥ मनसहितदशइंद्रियरूपसें एका दशप्रकारकाहोवेहै ॥ मनसहितदशइंद्रियोंकी दशदशवृत्तियोंवालाहोनेसें सोविद्वान् दशउपरिएकशत ११० प्रकारकाहोवेहै ॥ दिन

छां०उ० रात्रिविषे इकीसहजारषट्शत २१६०० श्वासप्रश्वासचलेहैं ॥ तिनश्वासप्रश्वासवायुकरि उच्चारणकरेजेहंसमंत्र तिनमंत्रोंकरि इकीस भा०१
सहस्रषट्शतप्रकारका सोविद्वान्होवेहै ॥ उपाधिभेदकरि ताविद्वान्केएतेभेदहैं ॥ वास्तवसेंतौएकअद्वितीयब्रह्महै ॥ हेनारद चित्तकी
॥२५॥ शुद्धिविना आत्मज्ञानहोवेनहीं ॥ यातेंमुमुक्षुपुरुषोंने चित्तशुद्धि अवश्यसंपादनकरणी ॥ चित्तशुद्धि आहारकीशुद्धिविनाहोवेनहीं ॥
आपनेवर्णाश्रमकेअनुसार अन्नजलादिकोंकेग्रहणकानामआहारहै ॥ ताकीशुद्धियहहै जोरागद्वेषसेंरहितअन्नजलादिकोंकाग्रहणहै ॥
तथापापबुद्धिसेंरहित जोअन्नादिकोंकासंपादनहै ॥ याप्रकारकीआहारशुद्धिविना तथारागादिकोंसेंरहित जोशब्दादिकोंकाग्रहणरूप
आहारशुद्धि ताआहारशुद्धिविना चित्तशुद्धहोवेनहीं ॥ जबीचित्तशुद्धहोवेहै तबभूमारूपब्रह्मकी निश्चलस्मृतिहोवेहै ॥ जाकूंभूमाब्रह्म
की अचलस्मृतिभयीहै ॥ सोविद्वान् ब्रह्मज्ञानकरिकै काम कर्म अध्यास संशयादि सर्वग्रंथीयोंकूं निवृत्तकरेहै ॥ इसरीतिसें रागद्वेषादिदो
षरहित अंतःकरणवालेनारदकूं भगवान्सनत्कुमारअज्ञानसेंरहित शुद्धब्रह्मकाप्रत्यक्षकरातेभये ॥ तासनत्कुमारकूं स्कंदतथास्वामिकार्तिके
यभीकहेहैं ॥ स्वामिकार्तिकेयनाममैं निमित्तकूंप्रसंगसेंकहेहैं ॥ एककालमैं काशीविषे भवानीसहित महादेव गंगातीरमैंआतेभये ॥ ताम
हादेवकूं देखकरि सर्वऋषि उठकरिनमस्कारकरतेहूए नानाप्रकारकीस्तुतिकरतेभये ॥ महादेवभी तिनकीइच्छाअनुसारवरदेतेभये ॥
परंतु सनत्कुमारऋषि ध्यानमैंस्थितहूए अभ्युत्थानकर्मकूंनकरतेभये तथानमस्कारकूंनकरतेभये ॥ महादेवतौ सनत्कुमारकूं परब्रह्मवित्
जानकरि आनंदकूंप्राप्तभये ॥ परंतुभवानी महादेवकातिरस्कारजानतीहूई सनत्कुमारकूं शापदेतीभयी ॥ हेसनत्कुमार जगत्केकर्त्ता ॥१००॥
हर्त्ता परमेश्वरस्वरूपमेरेपतिका तुमनेतिरस्कारकराहै ॥ यातेंदुःखकूंप्राप्तहोनेहारा जोअश्वोंकापालकहै ताकेजन्मकूं तुमप्राप्तहोवो ॥
पार्वतीकूंमहादेवने वारणभीकरा परंतु क्रुद्धहूईदेवी बलात्कारसेंशापदेकरि तहांसेंमहादेवसहितगमनकरतीभयी ॥ जबीअश्वोंकापालक
सनत्कुमारभये तबकालपाइकरि भवानीसहितमहादेव सनत्कुमारकूं परमआनंदकूंप्राप्तहुआदेखा ॥ भवानीनेकहा हेसनत्कुमार तुमवर

194

मांगो सनत्कुमारयहकहतेभये ॥ हेदेवी मेरेमलमूत्रकात्याग विनाक्लेशसेंहोवे मैं यहहीवरमांगताहूं ॥ तबदेवीपुनःक्रोधकरिकै शापदेती भयी ॥ हेसनत्कुमार तुमारेकूंउष्ट्रजन्मकीप्राप्तिहोवे ॥ तबीसनत्कुमारउष्ट्रकेजन्मकूंप्राप्तभये ॥ ताउष्ट्रनेराजाकेगृहविषे जबीकिंचित्भी शिक्षानहींग्रहणकरी ॥ तबीतेराजपुरुष ताउष्ट्रकूंवनमैं त्यागकरिआवतेभये ॥ तावनमैं करीरादिकोंकूंभक्षणकरिकै तथाश्रीगंगाजलकूं पानकरिकै सोउष्ट्रबहुतस्थूलताकूंजबीप्राप्तभया ॥ तबभवानीसहित महादेवपरमआनंदकूंप्राप्तहूआदेखतेभये ॥ पार्वतीकहेहै हेसनत्कु मार मैतुमारेउपरिबहूतप्रसन्नभयीहूं यातेंतुमवरमांगो ॥ सनत्कुमारकहेहैं याउष्ट्रशरीरजैसा कोईशरीरमैंनहींजानता याशरीरविषे मैपर मानंदकूंप्राप्तहोइरहाहूं ॥ यहहीमेरेकूंवरदेवो जोयहमेराशरीरनिवृत्तनहोवे ॥ जबीपूर्णकाम सनत्कुमारनेकोईवरनहींलीया ॥ तबीपा र्वतीकहेहै तुममेरेगृहमैं पुत्ररूपसेंउत्पन्नहोंवो यहमेरेकूंहीवरदेवो ॥ सनत्कुमारनेवरदीया ॥ तबब्रह्मचारीरूप स्वामिकार्तिकेयहोते भये ॥ यातेंयासनत्कुमारकूं स्कंदनामकरिकहेहैं ॥ ॥ इतिश्रीछांदोग्येसप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥ ॥ ॥

ॐनमोविष्णवे ॥ पूर्वषष्ठसप्तमाध्यायमैं उत्तमतथामध्यमअधिकारीजनोंकूं श्रुतिभगवतीने ब्रह्मउपदेशकरा ॥ अबइसअष्टमाध्यायमैं मंदबुद्धिवालेअधिकारीजनोंकूं श्रुतिउपदेशकरेहै ॥ ब्रह्मकीप्राप्तिकेयोग्ययास्थूलशरीरकूं ब्रह्मपुर यानामसेंकथनकरेहै ॥ याब्रह्मपुर मैं एकछोटासा हृदयकमलरूपीगृहहै ॥ ताहृदयकमलमैंस्थित दहरनामसूक्ष्म आकाशरूपब्रह्मकूं गुरुशास्त्रादिउपायसें अन्वेषण करणाचाहिये ॥ तथातासूक्ष्मब्रह्मकाही सर्वजगत्काआश्रयरूपसें साक्षात्करणायोग्यहै ॥ आपहीश्रुति शिष्यरूपसें प्रश्नकरेहै ॥ पूर्व उक्तप्रकारसें सूक्ष्महृदयकमलमैं स्थितजोदहरआकाशहै तादहरआकाशमैं क्यावर्त्तताहै जाकाअन्वेषणकरणाचाहिये तथासाक्षात्करणा चाहिये ॥ आचार्यनेऐसेउत्तरदेनायहश्रुतिकहेहै ॥ हेशिष्य यद्यपिअंतःकरणउपाधिवशसें दहरनामअल्पभीब्रह्महै तथापिवास्तवसें या दहरआकाशब्रह्मकूं बाह्यभूताकाशकीन्यांई परिपूर्णजानो ॥ औरयादहरआकाशमैंही यहस्वर्गऔरपृथिवीस्थितहैं ॥ तथा अग्नि वायु

सूर्य चंद्रमा विद्युत् नक्षत्र तादहर आकाशमैंस्थितहैं ॥ औरइसजीवकी ममताकेविषय जेपदार्थवर्त्तमानहैं तथाजेपदार्थनष्टभयेहैं तथा
जेपदार्थभविष्यत्मैंहोनेहारेहैं ॥ तेसर्वपदार्थ यादहरआकाशमैंस्थितहैं ॥ शिष्यकहेहै ॥ हेगुरो जाहृदयआश्रित दहरआकाशमें पृथि
॥२६॥ वीआदिसर्वस्थितहैं ॥ तथास्थावरजंगमसर्वभूतस्थितहैं तथाकामनाकेविषयसर्वपदार्थस्थितहैं ॥ जबीयहदेह वृद्धअवस्थाकूं प्राप्तहूआ
नष्टहोवेहै ॥ तादेहकेनाशहोनेसें हृदयकानाशहोवेहै ॥ ताआश्रयरूपहृदयकेनाशहोनेसें दहरआकाशरूपब्रह्मकीस्थितिप्रतीतहोवे
नहीं ॥ आचार्यकहेहैं ॥ यास्थूलशरीरकेजीर्णहोनेसें यहदहरआकाशरूपब्रह्म जीर्णहोवेनहीं ॥ शस्त्रादिकोंसें याशरीरकेनाशहोनेसेंभी
याआत्माकाबाह्यआकाशकीन्यांई नाशहोवेनहीं ॥ ऐसेब्रह्ममैंही सर्वजगत्स्थितहै ॥ हेशिष्य यहब्रह्मही तुमाराआत्माहै ॥ औरयहआ
त्माही धर्मअधर्मसेंरहितहै ॥ विजर नामजराअवस्थासेंरहितहै ॥ विमृत्युनाममृत्युसेंरहितहै ॥ भोजनकीइच्छासेंरहितहै यातें अवि
जिघत्सहै ॥ पानकरनेकीइच्छासें रहितहै यातेंअपिपासहै ॥ औरजाकीइच्छानिष्फलनहीं यातें सत्यकामकहेहै ॥ और जाआत्माका इ
च्छाकाजनकज्ञानरूपसंकल्प निष्फलनहींहै यातेंसत्यसंकल्पहै ॥ और या आत्माके नजाननेसें पुण्यकाजोफलहै सोविनाशी तथापरा
धीनतासहितही उत्पन्नहोवेहै ॥ जैसेराजाकेभृत्यआदि राजाकीआज्ञाकूं मानतेहूए देशमैंक्षेत्रभागकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ औरराजसेवा
आदि कर्मकरिसंपादित जोतिनोंका कृषि आदिभोगरूपलोकहै सोलोकनाशकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेहीआत्माकेनजाननेसें अग्निहोत्रा
दिपुण्यकर्मोंकरिसंपादित जोपरलोकमैंभोगरूपलोकहै सोभोगरूपलोकभी इंद्रादिकोंकीआधीनताकरिग्रस्तहै ॥ औरअंतमैंनाशकूंप्रा
प्तहोवेहै ॥ औरतिन अज्ञानीपुरुषोंका सर्वलोकोंमै स्वतंत्रगमनभीहोवेनहीं ॥ औरजेपुरुष आत्माकूंयथार्थजानतेहैं औरआत्मामैंही ॥१०१॥
स्थितसर्वपदार्थोंकूंजानतेहैं ॥ तेपुरुषशरीरकूंत्यागकरि राजाकीन्यांई सर्वलोकोंमै स्वतंत्रआपनीइच्छाअनुसार प्राप्तहोवेहैं ॥ औरताद
हरआत्माके उपासकपुरुषकीपरलोकविषे यदिमृतभयेपितरोंकेप्राप्तिकीइच्छाहोवे तौताउपासककीइच्छाअनुसार पितरप्राप्तहोवेहैं ॥ ता

पितृलोकमै समृद्धिकूंप्राप्तहूआ उपासकमहान्महिमाकूं अनुभवकरेहै ॥ ऐसेमाता भ्राता भगिनी सखा इनकीजबीउपासककूं इच्छा होवे तबइनकीप्राप्तिहोनेसें सोउपासकपरमआनंदकूं अनुभवकरेहै ॥ जबीसुगंधवालीपुष्पमालावोंका तथाअन्नपानका तथागानाऔर मृदंगादिकोंकासंकल्पकरेहै ॥ तबयहसर्वपदार्थप्राप्तहोवेहैं ॥ जबीस्त्रीयोंका संकल्पकरेहै ॥ तबस्त्रीयोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ बहुतक्याकहें जिसजिसपदार्थकी उपासकइच्छाकरेहै ॥ तातापदार्थकूं संकल्पमात्रसें प्राप्तहोवेहै ॥ पूर्व कहे दहरआत्माके ध्यानवासते साधनोंके अनुष्ठानकरनेकूं पुरुषोंकाउत्साहउत्पन्नहोवे याअभिप्रायसें श्रुतिभगवतीपुकारतीहूई उपदेशकरेहै ॥ भोपुरुषा जिनजिनपदार्थोंकी तु मइच्छाकरतेहो तेसर्वपदार्थ आत्मामैही स्थितहैं ॥ परंतु तुमआपनेआत्मासें बहिर्मुखहूए स्त्रीआदिविषयोंमै तृष्णावालेहो इसीवासते आत्मामैस्थितभी सर्वपदार्थोंकूं तुमप्राप्तहोतेनहीं ॥ औरजिनपदार्थोंकी इच्छाकरतेहूएभी तुमप्राप्तहोतेनहीं तिनसर्वपदार्थोंकूं आत्मा केध्यानकरणेहारापुरुष प्राप्तहोवेहै ॥ आत्माकेअज्ञानसें आत्मामैस्थितभी सर्वपदार्थोंकूं तुमप्राप्तहोतेनहीं ॥ जैसेकिसीस्थानमै स्वर्ण निधिदाबीहोवे तानिधिकूंनजाननेहारे पुरुष तास्थानकेउपरिदिनदिनमै अनुसंचरणकरेहैं ॥ परंतुअज्ञानसें प्राप्तभीनिधिकूंभी प्राप्त होवेंनहीं ॥ तैसेतुमदिनदिनमै सुषुप्तिअवस्थाविषे प्राप्तब्रह्मानंदकूंभी प्राप्तहोतेनहीं ॥ बडाकष्टहै ॥ जोबाह्यविषयोंकी तृष्णाकूंदूरकरिके ध्यानकरिअंतरआत्माकूं प्राप्तहोना आपनेआधीनभीहै ॥ तुमनेतौताआत्माकी उपेक्षाहीकरीहै ॥ औरयहआत्मा हृदयदेशमैस्थितहै याअर्थमैतुमने संशयकरणानहीं ॥ काहेते हृदययाशब्दकाअर्थयहहै ॥ हृदि अयम् हृदयम् ॥ अर्थयह ॥ हृदयकमलमै यहआत्माव र्त्तमानहै यातेंही याहृदयकमलकूं हृदयकहेहैं ॥ जोपुरुष याहृदयदेशमैस्थित दहरब्रह्मकूं जानताहै ॥ सोपुरुष दिनदिनमै ब्रह्मानंदकूं प्रा प्तहोवेहै ॥ ऐसेदेहादिकोंमै आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि जास्वयंप्रकाशब्रह्मकूं विवेकीपुरुष आपनाआत्मारूपजानताहूआ ताब्रह्ममैही अ भेदभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोब्रह्मतुमासआत्माहै ॥ औरयहब्रह्मात्माही अमृतरूपहै तथाअभयरूपहै ॥ ताब्रह्मकाही सत्यंयहनामहै ॥ स

छां०उ० त्यंयानाममैं तीनअक्षरहैं ॥ स ती यं इनतीनोंमैं ोप्रथमसकारअक्षरहै सोसत्अमृतब्रह्मकावाचकहै ॥ और तनामक अक्षर मर्त्यकावा भा०१
चकहै ॥ ता तकारमैंईकारउच्चारणार्थहै ॥ औ[र] यकारअक्षरकरिकैं सत्यनामकाउपासकपुरुष मर्त्यअमृतइनदोनोंकूं आपनेआधीनक
॥२७॥ रेहै ॥ जबीसत्यब्रह्मकेनामकेध्यानकाभीऐसाम[ा]हात्म्यहै तबसत्यनामवालेब्रह्मकेध्यानकामाहात्म्यकैसेनहोवेगा ॥ यातेंअवश्यब्रह्मकाध्या 198
नकरणा ॥ यहआत्माहीभूरादिलोकोंकेरक्षावास्ते वर्णआश्रमादिभेदवालेजंतुमात्रका धारणकरणेहाराहै ॥ जैसेमृत्काष्ठमयबाह्यसेतु
जलोंकाभेदकरेहै ॥ तैसेयहआत्माजंतुमात्रकेवर्णाश्रमादिभेदोंका धारणकरणेहाराहै ॥ यातेंहीसेतुकीन्यांईसेतुहै ॥ यासेतुरूपआत्माकूं
दिनरात्रिपरिच्छिन्नकरिसकतेनहीं ॥ तथाजरामृत्युशोकधर्म अधर्मइत्यादिसर्वपापरूपयाआत्मासेंनिवृत्तहोवेहैं ॥ जिसहेतुसें यहआत्मा
अपहतपाप्माहै ॥ अर्थयह दूरभयेहैं धर्माधर्मादिरूपपापजिससें ॥ धर्मकूंपापरूपताकाकथन जन्ममरणादिवालेलोकोंकाकारणहोनेसें
जानना ॥ औरअंधत्वादिदोष याशरीरकाहीधर्महैं तेधर्मअध्यासकरिआत्मामैंभासतेथे देहसेंभिन्नआत्माकूं प्राप्तहूआविद्वान् देहकेधर्मअं
धत्वादिकोंकात्यागकरेहै ॥ शरीरआदिकोंमैंअध्यासकरणेसेंही आपकूंदुःखीरोगीमानताथा अध्यासकेनिवृत्तहोनेसें आपकूंदुःखीरोगी
मानेनहीं ॥ याआत्मामैंदिनरात्रिहैंनहीं ॥ यांतेंसर्वदाप्रकाशरूप आत्मामैं रात्रिरूपतमनहीं ॥ ऐसेप्रकाशरूपआत्माकूंही विवेकीप्राप्तहो
वेहैं ॥ औरयाआत्माकीप्राप्ति ब्रह्मचर्यसेंहोवेहै ॥ ब्रह्मचर्यसहितजेविद्वान्हैं तिनोंकासर्वलोकोंविषे इच्छापूर्वकविचरणाहोवेहै ॥ ब्रह्मचर्य
करिकेहीआपनेस्वरूपकूंप्राप्तहोवेहै ॥ यातेंब्रह्मवेत्ता याब्रह्मचर्यकूंही यज्ञरूपकथनकरेहैं ॥ औरदर्शपौर्णमासादिइष्टभीयहब्रह्मचर्यहै ॥ औ
रईश्वरकाआराधनरूपइष्टभी ब्रह्मचर्यहै ॥ जिसहेतुसेंब्रह्मचर्यकरिकेही आत्माकापूजनकरताहूआविद्वान् ताआत्माकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ॥१०२॥
जाकर्मकेबहुतयजमानहोवें ताकर्मकूं सत्रायणकहेहैं ॥ सोसत्रायणकर्मभीब्रह्मचर्यरूपहै ॥ काहेते ब्रह्मचर्यकरिकेही सत्यस्वरूप
आपनेआत्माकी रक्षाकरेहै ॥ औरध्यानरूपमौनभी ब्रह्मचर्यहै ॥ काहेते ब्रह्मचर्यकरिकेही गुरुउपदेशसें आत्माकाश्रवणकरि पुनःमन

न्ध्यानकरेहै ॥ औरउपवासादिरूप अनाशकायनभीब्रह्मचर्यहै तिसब्रह्मचर्यकरिप्राप्तजोआत्माहै ताआत्माकानाशहोवेनहीं ॥ यातेंब्र ह्मचर्यकूं अनाशकायन यानामसेंकह्याहै ॥ औरवनवासकूं अरण्यायनकहेहैं ॥ अरऔरण्य इसनामवालेदोह्रदोंसहित जोब्रह्मलोकहै ॥ ताब्रह्मलोककीप्राप्ति याब्रह्मचर्यसेंहोवेहै यातेंहीयाब्रह्मचर्यकानामअरणायनहै ॥ ऐसेब्रह्मचर्यसहितउपासनाकरि प्राप्तहोनेयोग्य ब्रह्म लोककानिरूपणकरेहैं ॥ यालोकसेंलेकरि तीसरेस्थानमैस्थितब्रह्मलोकमै अरऔरण्ययानामवाले समुद्रकेंतुल्यदोह्रदहैं ॥ औरताब्रह्म लोकमै अन्नकारसरूप तथामदकेउत्पन्नकरणेहारा ऐरंमदीय यानामवालासरोवरहै ॥ औरताब्रह्मलोकमै अश्वत्थवृक्षकेसदृश सोम सवन यानामवालावृक्षहै ॥ तासोमसवननामकवृक्षसें सर्वदाअमृतस्रवेहै ॥ औरताब्रह्मलोकमै हिरण्यगर्भकीपुरीहै ॥ सापुरी ब्रह्म चर्यादिसाधनयुक्तपुरुषोंसें भिन्नपुरुषोंकरिप्राप्तहोवेनहीं यातेंतापुरीकूं अपराजिता यानामसेंकहेहैं ॥ औरताब्रह्मलोकमै प्रभुहिरण्य गर्भकरिरचित स्वर्णकामंडपहै ॥ ऐसेब्रह्मलोककूं ब्रह्मचर्यकरिही प्राप्तहोवेहैं ॥ ताब्रह्मचर्यकरिकेही इच्छापूर्वकसर्वलोकोंमै विचरणाहो वेहै ॥ अबब्रह्मचर्यसंपन्न तथाहृदयमै स्थितब्रह्मउपासककी मूर्धन्यनाडीसेंगतिकहनेकूं नाडीयोंकानिरूपणकरेहैं ॥ याहृदयकमलके साथसंबंधवालीनाडीयां सूक्ष्मपिंगलवर्णवालेअन्नरसकरिकेपूर्णहूईस्थितहोवेहैं ॥ तथाशुक्लनीलपीतरक्तादिरूपसूक्ष्मअन्नरसकरिके नाडी यांभीशुक्लपीतादिरूपहूईवर्त्तेहैं ॥ औरइननाडीयोंकानीलपीतादिरूपहोनाभी नीलपीतादिरूपसूर्यके संबंधसेंहैं ॥ इसअर्थकेसूचनकरणे वासते सूर्यभगवान्कूं पिंगल शुक्ल नील पीत लोहितरूपसें श्रुतिमैकहाहै ॥ जैसेयालोकमै कोईमहान्मार्ग दोग्रामोंमैसंबंधवालाहो वेहै ॥ तैसेसूर्यभगवान्कीरश्मीयां यापुरुषसें तथा आदित्यमंडलसेंसंबंधवालीहैं याआदित्यमंडलसें रश्मीयां यासंसारमैप्रसृतहोवेहैं ॥ औरपुरुषकीनाडीयोंकेसाथ संबंधवालीहोवेहैं ॥ औ यहविज्ञानमयजीव जबीसुषुप्तिअवस्थाकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताअवस्थामै इंद्रियमनआ दिकोंकेलीनहोनेसें स्वप्नादिकोंके विशेषज्ञानसेंरहितहूआ ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मानंदकीप्राप्तिमै द्वारनाडीयांहैं ॥ ताब्रह्मसेंअभिन्न

 भयेजीवकूं धर्माधर्मकासंबंधहोवेनहीं ॥ औरवृद्धअवस्थाकेप्राप्तहोनेसें निर्बलताकूं प्राप्तभयायहदेह मरणअवस्थाकेसन्मुखहोवेहै ॥
तबसंबंधीजन चारोंदिशावोंमै उसकेपासस्थितहोवेहै ॥ औरतेसंबंधीजनयहकहेहैं ॥ तुममै पुत्रकूंजानतेहो ॥ तुममैपिताकूंजानते
॥२८॥ हो ॥ जबतकतापुरुषके प्राणोंकाबहिर्गमननहींभया तबतक सोपुरुषजानेहै ॥ प्राणोंकेबहिर्निःसरणकेपश्चात् सोपुरुषजानेनहीं ॥ बा
ह्यपरलोकमैभी तिननाडीयोंसेंहीगमनकरेहै ॥ जोपुरुष हृदयकमलमैस्थित दहररूपब्रह्मका ध्यानकरणेवालाहै ॥ सोउपासक प्रण
वकाध्यानकरताहूआ यादेहकूं इसलोकमै त्यागकरि मनकेवेगकीन्यांईशीघ्र आदित्यमंडलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सोआदित्यमंडल ब्रह्मलोककी
प्राप्तिमैद्वारहै ॥ ताआदित्यमंडलद्वारा सोउपासक ब्रह्मलोकमैप्राप्तहोवेहै ॥ उपासनादिसाधनरहितपुरुषकूं आदित्यमंडलकीप्राप्तिहोवे
नहीं ॥ इननाडीयोंकरि बाह्यगमनकरणेमै ब्राह्मणभागरूपछांदोग्यश्रुति आपहीमंत्रभागकीसंमतिदेवेहै ॥ हृदयरूपकंदकीसंबंधी
एकशतएक१०१प्रधाननाडीयांहैं ॥ तिननाडीयोंकेमध्यमै एकसुषुम्नानामवालीनाडी मस्तकसेंनिकसीहै ॥ तासुषुम्नानामनाडीसें उपरि
आदित्यमंडलकीप्राप्तिद्वारा उपासकब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरदूसरीनाडीयांतौ नानायोनियोंकाग्रहणरूप संसारप्राप्तिवासतेहीहोवे
हैं ॥ ऐसेदहरविद्याकूं समाप्तकरिकै अबदेवताअसुरोंकूं प्रजापतिकाउपदेशरूपवचनकथनकरेहैं ॥ सोवचनयहहै ॥ यआत्माअपहतपाप्मा
विजरोविमृत्युर्विशोकोविजिघत्सोऽपिपासःसत्यकामःसत्यसंकल्पःसोऽन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः ॥ अर्थयह ॥ जोआत्मापापसेंरहितहै ॥
मृत्युसेंरहितहै ॥ संतापरूपशोकसेंरहितहै ॥ अविजिघत्सःनामभोजनकीइच्छासेंरहितहै ॥ पानकीइच्छासेंरहितहै ॥ सफलकामनावालाहै ॥
सफलज्ञानरूपसंकल्पवालाहै ॥ सोगुरुशास्त्रकेउपदेशसेंअन्वेषणकरणेयोग्यहै ॥ औरविजिज्ञासितव्यहै कहीये अनुभवकरिअपरोक्ष जान
नेयोग्यहै ॥ जोपुरुष याआत्माकूं अपरोक्षरूपसें निश्चयकरताहै सोज्ञातापुरुष सर्वलोकोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरकामनाकेविषयसर्वभोगोंकूं
प्राप्तहोवेहै ॥ याप्रजापतिकेवचनकूं देवतातथाअसुर परंपरासेंश्रवणकरतेभये ॥ तेदेवताऔरअसुर आपनीआपनीसभामै यहकहतेभये ॥

भोदेवा यदितुमसर्वकीसंमतिहोवे तौप्रजापतिकेउपदेशसें आत्माकूंजानकरि हमसर्वलोकोंकूं तथाउत्तमभोगोंकूंप्राप्तहोवें ॥ ऐसेहीअ सुरोंने आपनीसभामैकहा ॥ कोईबुद्धिमान्होवेसोप्रजापतिकेपाससें ब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरिहमसर्वकूं उपदेशकरे ॥ तबइंद्र प्रजापतिके समीपआनेकूं आपनेलोकसेंनिकसताभया ॥ असुरोंकाराजाविरोचनभी आपनेलोकसेंचला ॥ ताब्रह्मलोकमै दोनोंएककालमैहीप्रा प्तभये ॥ इंद्रविरोचनदोनों आपसमैमैत्रीकूं नकरतेहूए समित्पाणिहोइकरि प्रजापतिकेशरणकूंप्राप्तभये ॥ तिनदोनोंकाअंतरमैअत्यंतवै रभीथा परंतुआपनेकार्यकीसिद्धिवासते तेबुद्धिमानइंद्रविरोचन बाहिरसेंप्रीतिकरतेभये ॥ प्रजापतिकेसमीपप्राप्तहूए इंद्रविरोचन बती स ३२ वर्षपर्यंत स्त्रीभोगादिकोंकूंत्यागकरिस्थितभये ॥ ब्रह्माजीनेभी उनकेअभिमानादिकोंकीनिवृत्तिवासते बतीसवर्षपर्यंतउपेक्षाक री ॥ अपमानकूंसहारतेहूएभी आपनेकार्यकीसिद्धिवासते स्थितहोतेभये ॥ ऐसेबतीसवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकूंधारणकरनेवालेइंद्रविरोचन कूं ब्रह्माजीपूछतेभये ॥ भोइंद्रविरोचनौ तुमआपनेस्वर्गादिलोकोंकात्यागकरि दुःखपूर्वक ईहांकिसवासतेस्थितभयेहो ॥ तुमक्याचाहते हो ॥ इंद्रविरोचनकहेहैं ॥ हेभगवन् ॥ धर्माधर्मसेंरहित जरामृत्युसेंरहित शोकसेंरहित अशनइच्छातथापानइच्छासेंरहित अमोघकाम अमोघसंकल्प जोआत्माहै ॥ ताआत्माकूं अपरोक्षरूपसेंनिश्चयवाला सर्वलोकोंकूं तथासर्वभोग्यविषयोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यहवचनआपने सभाविषेकहाथा ॥ तावचनकूंश्रवणकरि ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासते आपकेसमीप ब्रह्मचर्यधारणपूर्वक बतीसवर्षपर्यंतहमस्थितभये हैं ॥ आपकृपाकरिकै ताआत्मज्ञानकाउपदेशकरो ॥ ऐसेइंद्रविरोचनकेवचनकूं श्रवणकरि प्रजापतिउपदेशकरेहै ॥ यएषोऽक्षिणिपु रुषोदृश्यतएषआत्मा ॥ अर्थयह ॥ जोयहपूर्णपुरुष नेत्रोंमैस्थितहै औरध्यातापुरुषोंने नेत्रोंमैस्थितदेखीताहै सोईयहआत्माहै ॥ यहआ त्माहीअमृतहै ॥ तथाअभयहै ॥ औरयहआत्माब्रह्मरूपहै ॥ याप्रकारकेवचनकूं श्रवणकरि इंद्रविरोचन नेत्रस्थछायाकूंहीआत्माजा नतेभये ॥ पांडित्यकेअभिमानकरियुक्तहूए ब्रह्माजीकूं याप्रकारकावचनकहतेभये ॥ हेभगवन् नेत्रस्थछायाकीन्यांई जलोंमैभीछाया

201

 प्रतीतहोवेहै ॥ तथादर्पणमैछायाप्रतीतहोवेहै ॥ तथ खड्गआदिकोंमै छायाप्रतीतहोवेहैं ॥ तेसर्वछायाआत्माहैं वाइनमैसेंकोईएकही
आत्माहै ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि प्रजापति उनक मूढताकूंजानतेभये ॥ तिनकीमूढताकी उपेक्षाकरिकै आपनेअनुभवअनुसारयहक
॥२१॥ हतेभये ॥ हेइंद्रविरोचनौ यहनेत्रस्थद्रष्टा आत्माहै व्यापकहोनेसें जलदर्पणादिसर्वउपाधियोंमैं प्रतीतहोवेहै ॥ तिनकीमूढताकीनिवृत्ति
वासते ब्रह्माजीउपायकहेहैं ॥ भोइंद्रविरोचनौ ज लकरिपूर्णशरावमै आपनेकूंदेखकरि जबीतुमआत्माकूं नहींनिश्चयकरो तबतुममेरेकूंक
थनकरो ॥ इंद्रविरोचन जलकरिपूर्णशरावमै अ पकूंदेखतेभये ॥ ब्रह्माजीपूछतेभये ॥ तुमनेक्यादेखा ॥ ऐसेपूछेहूए इंद्रविरोचनकहतेभ
ये ॥ हेभगवन् नखलोमादियुक्तयाशरीरके तिबिंबरूपआत्माकूंही हमनेदेखाहै ॥ विरोचनने तौ छायामैआत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि
छायावालेदेहमै आत्मत्वबुद्धिकरी ॥ छायामै विरोचनयहदोषदेखताभया ॥ छोटेदर्पणमैछोटीछायाहोवेहै ॥ बडेदर्पणादिकोंमैबडीछाया
होवेहै ॥ ऐसेदर्पणादिउपाधिकेनीलपीतादि रूपहोते छायाभी नीलपीतादिरूपवालीहोवेहै ॥ औरजाकी छायाहैसोदेहतौ एकजैसाहै
यातेंदेहहीआत्माहै ॥ इत्यादियुक्तियोंसें विर ोचनने देहमैही आत्मरूपता निश्चयकरी ॥ देहमै वाछायामै विपरीतप्रत्यय अबइनका
निवृत्तकरणाचाहिये याअभिप्रायसें भगवान प्रजापतिकहेहैं ॥ हेइंद्रविरोचनौ तुममुंडनकराइके तथासुंदरवस्त्रभूषणादिकोंकरिकै अलं
कृतहूए पुनःजलपूरितशरावमै आपकूंदेखक रमेरेकूंकथनकरो ॥ ब्रह्माजीनेयहचिंतनकरि मुंडनादिकोंका उपदेशकरा ॥ जोयहस्थूलदे
ह विलक्षणहोइजावेगा यातेंयापरिणामीशरी रमैतथाछायामै इनकीआत्मत्वबुद्धिनिवृत्तहोवेगी ॥ परंतु इंद्रविरोचनतौ मुंडनादिककरा
इकरिभी देहमैहीआत्मत्वबुद्धिकरतेभये ॥ प्र जापति इंद्रविरोचनकूंपूछताभया ॥ भोइंद्रविरोचनौ तुमनेमुंडनादिकराइकरि जलपात्रमै ॥१०४॥
क्यादेखाहै ॥ इंद्रविरोचनकहेहैं ॥ हेभगव सुंदरवस्त्रभूषणसहित यहदेहही याजलमैप्रतीतहोवेहै ॥ जबीइंद्रविरोचनने यहकहा और
स्थूलदेहकूं आत्मरूपतानिश्चयकरी ॥ तबप्र जापतिआपनेमनमै यहविचारकरतेभये ॥ जैसेइंद्रविरोचनने छायाविषे दोषदेखकरि अ

नात्मतानिश्चयकरीहै ॥ तैसे यादेहमैभी जडता परिच्छिन्नता जरामरणादिअनेकदोषप्रत्यक्षसिद्धहैं ॥ यातैं यहदेहभी आत्मानहीं ॥ ऐसे यादेहमैभी इंद्रविरोचन अनात्मतानिश्चयकरिलेवें याअभिप्रायसें देहमैजिनधर्मोंकासंभवनहोइसके तिनआत्माकेधर्मोंका उपदेशकर तेभये ॥ भोइंद्रविरोचनौ यहचिद्रूपआत्मा अमृतनाममरणसेंरहितहै ॥ तथाभयसेंरहितहै ॥ औरदेशकालवस्तुपरिच्छेदसें रहितब्रह्म स्वरूपहै ॥ प्रजापतिने देहमै नबननेहारेधर्मोंका उपदेशकराभी परंतुतेअभिमानीइंद्रविरोचन प्रजापतिकेअभिप्रायकूं नजानतेहूए चलेआतेतेभये ॥ विरोचनतौरसायनमंत्रयोगादिउपायसें यादेहमैही आत्माके अजरअमृत अभयत्वादिधर्मोंकूंजानताभया ॥ इंद्रनेछा यामैही आत्मरूपतानिश्चयकरी ॥ जबप्रसन्नहोइकरिदोनोंगमनकरतेभये ॥ तिनकूंदेखकरि प्रजापतियहवचनकहतेभये ॥ जेदेवता वाअसुर अजर अमर अभयरूपआत्माकूं गुरुशास्त्रसेंनजानकरि तथाअपरोक्षनिश्चयविना इंद्रविरोचनकीन्यांईनिश्चयवालेहोवेंगे तेदे वतावाअसुर क्लेशकूंहीअनुभवकरेंगे ॥ विरोचनतौप्रसन्नहूआ असुरोंकूंप्राप्तभया ॥ असुरोंकूंयहउपदेशकरताभया ॥ भोअसुरा प्रजा पतिने यहदेहहीआत्माकह्याहै ॥ यहदेहरूपआत्माकाहीपूजनकरणाचाहिये तथायादेहरूपआत्माकीही अनेकप्रकारकेवस्त्रभोजनभूष णभोगोंकरिके सेवाकरणीयोग्यहै ॥ ऐसेदेहरूपआत्माकी पूजातथासेवाकरणेवाला यालोककूंतथापरलोककूं प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसाअसुरों कासंप्रदाय अबपर्यंतसंसारविषे देखनेमैआताहै ॥ जोपुरुष देहआत्मवादरूप असुरोंकेसंप्रदायकूंमानकरि अतिथिभिक्षुआदिकोंकेतांई अन्नादिकोंकूं श्रद्धापूर्वकनहींदेता ऐंसेश्रद्धाहीनपुरुषकूं उत्तमपुरुषअसुरकहेहैं ॥ अबइंद्रकेवृत्तांतकूंकहेहैं ॥ देवताहोनेसेंसात्विक देवताइंद्र देवतावोंकूंप्राप्तहूएविनाही अर्धमार्गविषेछायाआत्मामाननेमै याप्रकारके भयकूंदेखताभया ॥ याशरीरके भूषणवस्त्रादि करिसुंदरअलंकारकरणेसें छायात्माभीअलंकृतहोवैहै ॥ यादेहमैअंधत्वादिहोनेसें छायात्मामैभीअंधत्वादिदोषहोवैहैं औरयादेहकेहस्ता दिकोंकेकाटनेसें छायात्माकेभीहस्तादिकाटेहूए प्रतीतहोवैहैं ॥ औरयादेहकेनाशहोनेसें छायात्माकाभीनाशहोवैहै ॥ याछायात्माकेज्ञा

नसें कुछफलकूंमैंनहींदेखता ॥ याप्रकारकेदोषोंकूं छायात्मामाननेमैं इंद्रदेखताहूआ समित्पाणिहोइकरि प्रजापतिकेशरणकूंप्राप्तभया ॥ ताशरणमैंप्राप्तभयेइंद्रकूं प्रजापतिकहतेभये ॥ हेइंद्र तुमविरोचनकेसाथप्रसन्नमनहूआचल्यागयाथा अबपुनः किसप्रयोजनवासतेआया
॥ ३० ॥ हैं ॥ इंद्रउवाच ॥ हेभगवन् यास्थूलदेहकेअंधहोनेतें छायात्माभीअंधहोवेहै ॥ यादेहकेनाशहोनेंसें छायात्माकानाशहोवेहै ॥ आत्मातौ अजरअमरअभयब्रह्म आपनेनिरूपणकराथा ॥ याछायात्मामैंतौ आत्माकेधर्मघटेंनहीं तथाछायात्माकेज्ञानसेंभी कुछप्रयोजनकीप्राप्तिमैं देखतानहीं ॥ ऐसेइंद्रकेवचनोंकूं श्रवणकरि प्रजापतिकहेहैं ॥ हेइंद्र जिसआत्माकाउपदेश विरोचनसहिततुमारेप्रति मैंनेकराथा ताआत्मा काहीउपदेशतुमारेप्रति मैपुनःकरूंगा ॥ परंतु अंतःकरणकीशुद्धिवासते बतीसवर्षपर्यंत पुनःब्रह्मचर्यकूंकरो ॥ ऐसेप्रजापतिकेवचनकूंश्रवण करिइंद्रबतीसवर्षपर्यंत पुनःब्रह्मचर्यकरताभया ॥ बतीसवर्षकेपश्चात् शरणागतइंद्रकूं प्रजापतिकहेहैं ॥ हेइंद्र जापुरुषकातुमारेतांई मैंनेउप देशकराथा सोईयहपुरुष स्वप्नअवस्थाविषे आपनीअविद्याकरिरचितपदार्थोंकूं अनुभवकरेहै ॥ सोईयहआत्माअमृतअभयब्रह्मस्वरूपहै ॥ ऐसेउपदेशकूंश्रवणकरि सूक्ष्मशरीरविशिष्ट स्वप्नावस्थाके अभिमानी तैजसनामाजीवकूं आत्मरूपजानकरि प्रसन्नताकूंप्राप्तहूआ इंद्रच लाआवताभया ॥ अर्धमार्गविषेही स्वप्नावस्थावालेतैजसकूं आत्मतामाननेमैं इंद्रऐसेविचारकरि भयकूंदेखताभया ॥ यद्यपि छायाकी न्यांई यास्वप्नद्रष्टाविषे स्थूलशरीरकेअंधत्वकाणत्वादिधर्मोंकासंबंधनहींहै ॥ तथापि सिंहव्याघ्रादिकोंकरिके अनेकक्लेशोंकूं यहस्वप्नद्रष्टा जीवअनुभवकरेहै ॥ औरप्रियपुत्रादिकोंकेवियोगसें महानरुदनकरेहै ॥ औरआत्मातौ सर्वउपद्रवोंसें शून्यहै ॥ याप्रकारकाविचारकर ताहूआइंद्र पुनःसमित्पाणिहोइकरि प्रजापतिकीशरणकूंप्राप्तभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र तुमप्रसन्नमनहोइकरि चल्यागयाथा ॥ अ ॥ १०५ ॥
बपुनःकिसवासतेआयाहैं ॥ इंद्रनेपूर्वकहेदोषोंका स्वप्नद्रष्टापुरुषविषेनिरूपणकरा ॥ तबप्रजापतियहकहतेभये ॥ हेइंद्र बतीसवर्षप र्यंत तुमपुनःब्रह्मचर्यकरो पश्चात् ताआत्माकातेरेतांई मैउपदेशकरूंगा ॥ इंद्रबतीसवर्षपर्यंत पुनःब्रह्मचर्यकरताभया ॥ बतीसव

र्षकेपश्चात् प्रजापतिइंद्रकूंकहतेभये ॥ हेइंद्र सुषुप्तिअवस्थामै यहपुरुष इंद्रियादिकोंकेअभिमानविनास्थितहूआ परमानंदकूंप्राप्त होवेहै ॥ तथाकिसीस्वप्नकूंदेखेनहीं यहसुषुप्तिकाद्रष्टापुरुषही आत्माहै तथाअमृतअभयब्रह्मरूपहै ॥ ऐसेश्रवणकरि इंद्रजाइकरिपुनः अर्धमार्गविषेविचारकरताहूआ सुषुप्तिअवस्थाकेअभिमानीप्राज्ञविषेभी भयकूंदेखताभया ॥ औरयाविचारकूंकरताभया ॥ यद्यपिया सुषुप्तपुरुषमै स्वप्नकेरोदनादिदुःखनहींहै ॥ तथापि यहकादाचित्कहै तथाआगामीभयकाऔरदुःखोंकाबीजहै ॥ और यहप्राज्ञसुषुप्तिअवस्थाविषे आपनेकूंजानेनहीं तथाअन्यभूतोंकूंभीजानेनहीं ॥ जैसेमृतहूआपुरुष स्वपरकेज्ञानसें शून्यहोवेहै तैसेयहसुषुप्तपुरुष जडकीन्यांईस्थितहोवेहै ॥ यासुषुप्तपुरुषमैंभी अमृतअभयब्रह्मरूपताबनेनहीं ॥ और यासुषुप्तपुरुषकेज्ञानसेंभी कुछपुरुषार्थसिद्धिकूं मैदेखतानहीं ॥ ऐसेविचारकरि पुनःसोइंद्र समित्पाणिहूआ प्रजापतिकीशरणकूंप्राप्तभया ॥ प्रजापतिरुवाच ॥ हेइंद्र प्रसन्नहोइकरि तूंचलागयाथा अबपुनःक्याइच्छाकरताहूआआयाहैं ॥ इंद्रउवाच ॥ हेभगवन् यहप्राज्ञनामाजीव अनेकदोषोंकरि ग्रस्तहै आत्मातोअजरअमरअभयरूप आपनेकहाथा ॥ यातेंकृपाकरि यथार्थरूपसें आत्माकाउपदेशकरो ॥ ऐसेंइंद्रकेवचनोंकूंश्रवणकरि प्रजापतियहकहे है हेइंद्र अबपंचवर्षपुनःब्रह्मचर्यकूंकरो पश्चाततेरियाआत्माकेयथार्थरूपकूं तेरेतांईकहूंगा ॥ याप्रकारकेवचनकूंश्रवणकरि इंद्रपुनःपंचवर्षब्रह्मचर्यकूं करताभया ॥ प्रथमतीनवार बतीसबतीसवर्षब्रह्मचर्यकरताभया ॥ चतुर्थवारपंचवर्षब्रह्मचर्यकरताभया ॥ सर्वमिलकरिएकशतएक १०१ वर्षभये ॥ ऐसेश्रेष्ठपुरुषकहेहैं जोइंद्रप्रजापतिकेपासएकशतएकवर्षपर्यंत ब्रह्मचर्यकरताभया ॥ ऐसेश्रेष्ठपुरुषोंकीसंमतिकूं श्रुतिभगवतीआपहीकहेहै ॥ अबतुरीयआत्माकेउपदेशवासते प्रजापति प्रथमस्थूलशरीरविषे विनश्वरताकूं कहताभया ॥ हेइंद्र यहस्थूलशरीरविनश्वरहोनेसें मृत्युकरिग्रस्तहै ॥ तथासुखदुःखकरिकेव्याप्याहूआहै ॥ औरसूक्ष्मशरीरमैभीविनश्वरता जडता तथासुखदुःखसमानहैं ॥ तथाकारणशरीररूपअज्ञानभी सर्वदुःखोंकाबीजहै विनश्वरताजडतादिअनेकधर्मोंकरियुक्तहै ॥ चिद्रूपआत्माविषेतो विनश्वरता

तथासुखदुःखादिअनात्मधर्मोंकासंबंध किंचित्भीनहींहै ॥ जैसेहस्तपादादिकरियुक्त शरीरसेंरहित वायु मेघ विद्युत् आदि प्राणिकर्म
अनुसार अकस्मात् प्रगटहोइकरि वृष्टिआदिकार्योंकूंकरेहैं ॥ वृष्टिआदिकार्योंकूंकरिके सुखदुःखसेंरहितहूएही आपनेस्वरूपकूंप्राप्तहोवे
॥ ३१ ॥ हैं ॥ तैसेयहजीवशरीरोंकेसाथ तादात्म्याध्यासकूंप्राप्तहूआ किसीदयालुगुरुकेउपदेशकूंश्रवणकरि तिनशरीरोंमैअध्यासकेत्यागसें आप
नेस्वप्रकाशब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्मकेस्वरूपसेंअभिन्नभयेपुरुषकूं उत्तमपुरुषकहेहैं ॥ ऐसाउत्तमपुरुष जीवन्मुक्त प्रारब्धकर्मअनुसा
र अनेकप्रकारकेविषयोंकूं भोगताहूआ तथाआपनेस्त्रीसंबंधी आदिकोंकेसाथरमणकरताहूआ तथारथादिकोंपरआरूढहूआ जनोंकेस
मीपवर्त्तमानजोआपनाशरीरहै ताकूंस्मरणकरैनहीं ॥ औरजैसेसारथीपुरुषकेउपरामहूएभी शिक्षितअश्व रथकूंआपनेस्थानमैप्राप्तकरे
हैं ॥ तैसे याजीवन्मुक्तउत्तमपुरुषके उपरामहूएभी प्रारब्धकर्मकेअनुसार यादेहकीप्राणरक्षाकरेहैं ॥ औरप्रजापतिने जिसआत्माका
उपदेशकराथा सोआत्माही रूपादिकोंकेज्ञानवासते नेत्रगोलककेकृष्णताराऽग्रमैस्थितहूआ चक्षुयानामकरिकेकह्याजावेहै ॥ ताआत्मा
काजबगंधग्रहणकासंकल्पहोवेहै ॥ तबआत्माही घ्राणनामवालाकह्याजावेहै ॥ जबशब्दकेउच्चारणकासंकल्पकरेहै तबवाक्यानामसेंकह्या
जावेहै ॥ जबशब्दकेश्रवणकासंकल्पकरेहै तबश्रोत्रनामवालाहोवेहै ॥ यहआत्माहीजबमननकासंकल्पकरेहै तबदैवचक्षुनामक मनना
मसेंकहीयेहै ॥ दैवचक्षुमनसें व्यवहित तथाभूतभविष्यत् पदार्थोंकाज्ञानहोवेहै औरमुक्तपुरुषभी यादैवचक्षुरूपमनकरि संकल्पमात्रसें ब्र
ह्ममैस्थितनानाप्रकारके भोगोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेआत्माकेउपदेशकूंश्रवणकरि आत्मज्ञानकूंप्राप्तहूआइंद्र सर्वभोग्यपदार्थोंकूंप्राप्तभया ॥
औरसर्वदेवतावोंकूंभी उपदेशकरताभया ॥ इंद्रकीन्यांईजोकोई इदानींतनपुरुषअजरअमर अभयब्रह्मकूं यथार्थरूपसेंजानेहै सोपुरुष ॥१०६॥
सर्वपदार्थोंकूं तथासर्वलोकोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेप्रजापतिकहतेभये ॥ अबपूर्वकहीदहरविद्याकेअंगभूतमंत्रोंके अर्थकूंकहेहैं ॥ उपासक
कहेहै मैहार्दब्रह्मकेध्यानसें ब्रह्मस्वरूपब्रह्मलोककूंप्राप्तहोताहूं ॥ केवलनामरूपउपाधिकरिकेही परिच्छिन्नसूक्ष्मरूपहार्दकूंप्राप्तभयाथा वा

266

स्तवसेंमैंब्रह्मरूपहूं यातेंआपनेवास्तवब्रह्मस्वरूपकूंही प्राप्तहोताहूं ॥ जैसेअश्वआपनेरोमोंके कंपायमानकरणेसें धूलीसेंरहितहोवेहै ॥ औरजैसेचंद्रमाराहुसेंमुक्तहूआप्रकाशरूपहोवेहै ॥ तैसेउपासकहार्दब्रह्मकेज्ञानकरि सर्वकर्मोंकूंदूरकरताहूआ आपनेप्रकाशरूपब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरपूर्वनिरूपणकराजोदहराकाश सोआकाशही बाह्यभूताकाशकीन्यांई व्यापकहै ॥ औरतादहराकाशमैंही नामरूपवर्त्तेहैं ॥ यहदहराकाशही अमृतब्रह्मरूपहै यहदहराकाशहीआत्मरूपहै ॥ अबउपासकप्रार्थनाकरेहै ॥ मैंउपासक प्रजापतिकेसभामंदिरकूंप्राप्त होवूं औरमैंही ब्राह्मणोंका तथाराजावोंका तथावैश्योंका आत्माहूं ॥ औरब्राह्मणादिकोंके इंद्रियादिकोंकासाक्षीहूं तासाक्षीआपनेरूपकूं प्राप्तहूआचाहताहूं ॥ हेपरमात्मन्मैंस्त्रीकीयोनिकूंमतिप्राप्तहोवूं ॥ यास्त्रीकीयोनिकूं सेवनकरणेवालेपुरुषोंकूं दांतोंसेंविनाही यहस्त्रीयोनिभक्षणकरेहै ॥ हेभगवन् यामहाअपवित्रस्त्रीकीयोनिकूं मैंकबीनहींप्राप्तहोवूं ॥ यास्त्रीयोनिकीसेवाकरणेवालेपुरुषोंकी वारंवारगर्भवासमैंस्थितिहोवेहैं याअर्थकेसूचनकरणेकूं उपनिषत्मैंवारंवारस्त्रीयोनिकानिषेधहै ॥ पूर्वकह्याजोसाधनोंसहितआत्मज्ञानहै यासाधनोंसहितआत्मज्ञानकूंही प्रजापतिब्रह्मा विराटकेतांई कहतेभये ॥ सोविराट् आपनेपुत्रमनुकेतांई उपदेशकरताभया ॥ सोमनुभगवान् त्रैवर्णिक पुरुषोंकेप्रति याप्रकारकाउपदेशकरतेभये ॥ हेद्विजातयः ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिवासते जबतकतुमाराअंतःकरणशुद्धनहोवे तबतक चारिआश्रमोंमैंसेंकिसीएकआश्रमकूंग्रहणकरि शुभकर्मोंकूंकरो ॥ कर्मोंसेंशुद्धअंतःकरणवालेहूए ब्रह्मज्ञानद्वारामोक्षकूंप्राप्तहोवोगे ॥ याउपनिषत्कीसमाप्तिमैं कर्मीपुरुषोंकेसंतोषवास्तेयहकह्याहै ॥ जोपुरुषसर्वदागुरुकीसेवामैंतत्परहै ॥ सेवासें शेषरहेकालमैं गुरुसेंवेदकाअध्ययनकरिके गुरुकुलसेंआइकरि स्त्रीकेग्रहणसें गृहस्थाश्रमकूंप्राप्तहूआ तथापवित्रदेशमैंस्थितहूआ वेदोंकापठनकरेहै ॥ और धर्मात्माशिष्योंकेप्रति इनवेदोंकापाठनकराताहै ॥ औरआपनेसर्वइंद्रियोंकूं निषिद्धविषयोंसें निवृत्तकरेहै ॥ ऐसापुरुषहिंसासेंरहितहूआ जन्मभरशुभकर्मैंकरताहूआ शरीरकूंत्यागकरि ब्रह्मलोकमैंप्राप्तहोवेहै ॥ नचपुनरावर्त्तते ॥ अर्थयह ॥ ऐसापुरुषयासंसारविषे पुनः

 आवृत्तिकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ उपनिषत्कीसमाप्तिकेबोधनकरनेकूं नचपुनरावर्तते यहवचनदोवारपठनकराहै॥ ॐ शांतिःशांतिःशांतिः ॥
इतिछांदोग्येऽष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ ॐतत्सत् ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीमच्छंकरभगवत्पूज्यपादशि
॥ ३२ ॥ ष्यसंप्रदायप्रविष्टपरमहंसपरिव्राजक स्वामिअच्युतानन्दगिरिविरचितेप्राकृतोपनिषत्सारे छांदोग्यार्थनिर्णयः ॥ ९ ॥

268

॥ अथ बृहदारण्यकोपनिषद्भाषांतरं प्रारभ्यते ॥

209

बृ०उ० ॐश्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अबयजुर्वेदकीबृहदार॰यकउपनिषत्केअर्थकूं कहेहैं ॥ ब्रह्मज्ञानविनामोक्षहो॰वेनहीं यहवेदमैवारंवारलिखा भा०१०
है ॥ विवेक वैराग्य शमादिमुमुक्षुता इनसाधनों॰ ताब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिहोवेहै ॥ विवेकवैराग्यादिसाधन ॰ चित्तशुद्धिविनाहोवेनहीं ॥
॥ १ ॥ शुभकर्मकरेविना चित्तशुद्धिहोवेनहीं ॥ यातेंचि॰शुद्धिवासते शुभकर्म प्रथमअपेक्षितहैं ॥ इसीवासते चित्त॰द्धिकेसाधनकर्मोंका प्र
थमकर्मकांडमै निरूपणकराहै ॥ फलरूपज्ञानके प्रतिपादकज्ञानकांडका पश्चात्वर्णनकराहै ॥ सर्वयज्ञोंमैश्रेष्ठ ॰ोअश्वमेधयज्ञहै उपा
सनासहिततिसअश्वमेधयज्ञका हिरण्यगर्भभा॰कीप्राप्तिरूपसंसारही परमफलहै यहदिखायाहै ॥ जबउपासनास॰हितअश्वमेधयज्ञका
भी संसारहीफलहै तबअत्यंतअल्पजेअग्निहो॰ादिकर्महैं तिनकासंसारफलहै यामैक्याकहनाहै ॥ यातेंकर्मोंकेफलसें अधिकारी पुरु
षोंने वैराग्यकूंप्राप्तहोना यातात्पर्यसें अश्व॰धमै अनधिकारी पुरुषोंकूं अश्वमेधकीउपासनासें अश्वमेधकेफलकीप्राप्तिवासते ताय
ज्ञमैप्रधानअंगरूप जाअश्वविषयकउपासनाहै ताउपासनाकावर्णनकराहै ॥ पश्चात्अश्वमेधयज्ञमैहोनेहारी अग्निविषयकउपासनाका
निरूपणकराहै ॥ पश्चात्कर्मऔरउपासनाकाफल प्रजापतिभावकीप्राप्तिवर्णनकरीहै ॥ पुनःकर्मऔरउपासनाकीस्तुतिवासते प्रजाप
तिकी जगत्उत्पत्तिआदिकोंमैस्वतंत्रतावर्णनकरीहै ॥ सृष्टिसेंप्रथम यहजीवसाक्षी ब्रह्महीहोताभया अज्ञानकालमै अंतःकरणादिउ
पाधिकरि आपकूंजीवमानेहै ॥ ब्रह्मनिष्ठदयालुगुरुके उपदेशसें ॥ अहंब्रह्मास्मि ॥ यहजानेहै ॥ ऐसेदेवताऋषि मनुष्योंमै जोब्रह्मकूं
जानेहै सोब्रह्मकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेयाब्राह्मणमैसंक्षेपसेंब्रह्मविद्याकहीहै ॥ औरआगेसप्तान्नब्राह्मणमैतौउरुषने काम्यकर्मऔरउपास
नाकरिके उत्पन्नकरेप्रपंचकाभोगकासाधनहोनेकरि सप्तअन्नरूपसेंवर्णनकराहै ॥ पश्चात्उत्पन्नभयेजगत्का नाम रूप कर्मऐसेतीन ॥१०८॥
रूपसें संकोचवर्णनकराहै ॥ यातृतीयाध्यायसेंलेकरि अष्टमाध्यायपर्यंत श्रीशंकराचार्योंने व्याख्याकरीहै ॥ यातृतीयाध्यायसेंपूर्व प्रथ
मऔरदूसरेअध्यायमै कर्मोंकानिरूपणकराहै ॥ इसीवासतेतिनोंमे तिनदोनोंअध्यायोंकूंत्यागकरि यातृतीयाध्यायकीव्याख्या करीहै ॥

210

याउपनिषतकी वनमैंअध्ययनकीविधिहै ॥ यातेंयाउपनिषत्‌कानामआरण्यकहै ॥ ग्रंथसेंतथाअर्थसें महान्‌होनेकरि बृहदारण्यक कहेहैं ॥ ब्रह्मकूंसमीपप्रत्यग्‌रूपकरिकेबोधनकरेहै यातेंइसग्रंथकानाम उपनिषत्‌है ॥ ऐसेबृहदारण्यकउपनिषत्‌ इनपदोंका अर्थहै ॥

॥ इतिबृहदारण्यकेतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥ ॐश्रीसरस्वत्यैनमः ॥ पूर्वतृतीयअध्यायविषे आत्मेत्येवोपासीत यहविद्यासूत्रकह्याहै ॥ अर्थयह देशकालवस्तुपरिच्छेदरहित स्वप्रकाशात्माहै ऐसेंचिंतनकरे ॥ इत्यादिकोंकरि संक्षेपसेंसूचनकरीजाब्रह्मविद्या ताकाफलब्रह्म विद्याकेनिरूपणवासते याचतुर्थअध्यायकाआरंभहै ॥ आख्यायिकाद्वारा निरूपणकराअर्थ बुद्धिविषे शीघ्रहीआरूढहोवेहै ॥ यातें प्रथमबालाकि औरअजातशत्रुराजाकी आख्यायिकाकूं निरूपणकरेहैं ॥ गर्गकेवंशमैंहोनेहारा तथाबलाकानामा किसीस्त्रीकापुत्रहो नेसेंबालाकिनामकूंप्राप्तहूआ कोईएकब्राह्मणवेदकेपठनसें बहुतअभिमानी होताभया ॥ सोबालाकि कुरुपंचालादिदेशोंमैं शास्त्रार्थसें आपनाविजयकरताभया ॥ अनेकदेशोंमैं विजयकरताहूआ सोबालाकिश्रीकाशीमैंभी विजयकरणेवासतेप्राप्तभया ॥ ताश्रीकाशीमैं राजाअजातशत्रुकूं प्राप्तहूआबालाकि आपनेविजयवासते राजाअजातशत्रुकूं यहकहताभया ॥ हेअजातशत्रो ॥ ब्रह्मतेब्रवाणि ॥ याश्रुतिकाअर्थयह ॥ तेरेतांई मैंब्रह्मकाउपदेशकरताहूं तूंसावधानहोइकरिश्रवणकर ॥ ऐसेवचनकूंश्रवकरि सोराजाअजातशत्रु मत्स रसेंरहितहूआ प्रसन्नहोइकरि एकसहस्रगौ याबालाकिकेतांईदेताभया ॥ राजाके गौवोंकेदेनेकाअभिप्राययह ॥ जोजनकनामक राजाहै सोपिताकीन्यांईआपकूंमानकरि औरब्राह्मणोंकूंपुत्रकीन्यांईमानताहूआ तिनब्राह्मणोंकेतांईदानकरेहै ॥ औरब्रह्मविद्याकादान भी आपकूंपितारूपमानकरिहीकरेहै ॥ और मैंतौ ब्रह्मतेब्रवाणि यावचनकूंश्रवणकरतेही याबालाकिब्राह्मणकेतांई एकसहस्रगौदान करीहैं ॥ यातेंब्राह्मणजनककेसमीप किसवासतेगमनकरतेहैं ॥ राजायाअभिप्रायसें गौवांकादानकरताभया ॥ राजोवाच ॥ हेबाला के मेरेसमीप आइकरि अनेकवृद्धब्राह्मण आपनी अनेकविद्यावोंका निरूपणकरतेहैं ॥ परंतुब्रह्मविद्याकूंतौ पूछेहूएभी निरूपणकरते

नहीं ॥ औरआपतौबालककहूए तथापूछेविनाही उपदेशकरतेहो ॥ मैआपकेउपरि बहुतप्रसन्नहूं आपब्रह्मकाउपदेशकरो ॥ बालाकिरु
वाच ॥ हेराजन् जोप्राणरूपपुरुष समष्टिव्यष्टिभेदसें आदित्यमंडलमै तथानेत्रोंमैं स्थितहै ॥ ऐसेएकही अभिमानीपुरुष जोनेत्रादिद्वा
राहृदयमै प्रवेशकरि कर्त्ताभोक्ताहोवेहै ॥ तापुरुषकी मैउपासनाकरताहूं ॥ यापुरुषकीउपासनाके फलकहेहैकी इच्छावालेबालाकिकूं
हस्तसेंवारणकरताहूआ राजा यहकहताभया ॥ हेबालाके यापुरुषकूंमैजानताहूं यहपुरुष सर्वभूतोंमैपूज्यहै ॥ तथासर्वकाप्रकाशकरा
जाहै ॥ ऐसेकर्त्ताभोक्तापुरुषकूं मैनिरंतरजानताहूं ॥ जोअधिकारी यापुरुषकीउपासनाकरताहै सोअधिकारीपूज्यहोवेहै तथाराजाहो
वेहै ॥ पुनःबालाकि चंद्र विद्युत् आकाश वायु अग्नि जल मेघशब्द आदित्यसहितइनअष्टअधिदैवतोंकूं ब्रह्मरूप निरूपणकरिकै अ
ष्टव्यष्टिशरीरमैस्थित अध्यात्मोंकूं ब्रह्मरूपसें निरूपणकरताभया ॥ तिनअध्यात्मअष्टब्रह्मपुरुषोंकूंदिखावेहैं ॥ प्रतिबिंबग्राहक दर्पणादि
उज्वलपदार्थ १ श्रोत्र २ पुरुषकेआकारजैसीपुरुषकीछाया ४ स्थूलशरीर ५ सूक्ष्मशरीर ६ दक्षिणनेत्रमैस्थितशरीरकासूक्ष्मआकार ७
तथावामनेत्रमैस्थितसूक्ष्मआकार ८ पूर्वकहेअष्टअधिदैव तथाअष्टअध्यात्मोंकूं ब्रह्मरूपसेंकथनकरिके तिनकीउपासनाकेफलोंकूंकथ
नकराहैं ॥ राजातौवारंवारयहहीकहतेभये ॥ मैइसकूंजानताहूं औरइससेंभिन्नब्रह्मकहो ॥ इनसेंभिन्ननिर्गुणब्रह्मकेस्वरूपकूं नजानता
हूआबालाकि नीचेमुखकरिकै तूष्णींस्थितभया ॥ पूर्वबालाकिनेकह्याथा तेरेकूंमैब्रह्मउपदेशकरताहूं ॥ तायथार्थब्रह्मकेनकहनेसें जा
कीप्रतिज्ञाभंगभयीहै सोबालाकि सभामैचोरकीन्यांईस्थितभया ॥ ताबालाकिकूंदेखकरि अजातशत्रुयहकहताभया ॥ अरेबालाके ए
तावन्मात्रतूंजानताहै वाकुछअधिकभीजानताहै ॥ बालाकिरुवाच ॥ हेराजन् मै एतावन्मात्रजानताहूं इससेंअधिकमैनहींजानता ॥
राजोवाच ॥ हेबालाके तैनेब्रह्मकेस्वरूपकूंनहींजाना ॥ मिथ्यासंभाषणकरणेवालापुरुष आत्महत्याराकह्याहै ॥ औरदेवताऋराजादि
कोंकेसमीप जोमिथ्यासंभाषणकरताहै सोपुरुष कर्मकरिचांडालहै ॥ सोतूं मैराजाकीसभामै मिथ्यासंभाषणकरताभयाहैं तौतुमनेअ

त्यंतअनुचितकर्मकराहै ॥ आजसेंलेकरि पु[illegible]ःतुमनेमिथ्यासंभाषणनहींकरणा ॥ तुमनेकथनकरेजेषोडश १६ पुरुषहैं इनसर्व[illegible]काजोक
र्त्ताब्रह्महै तथासर्वजगत्का जोकर्त्ताब्रह्महै सोब्रह्महीं तुमकूंज्ञातव्यहै ॥ सोब्रह्मभी वेदविरुद्धशुष्कतर्कोंसें जानाजावेनहीं ॥ [illegible]ातेंब्रह्म
निष्ठकिसीगुरुकी शरणकूंप्राप्तहोइकरि ताआपनेस्वरूपकूं शीघ्रहीनिश्चयकरो ॥ याआत्माकेजानेविनातौ यहविद्यामद तथाध[illegible]मद त
थाकुलमद तुमकूंनरकमैप्राप्तकरेगा ॥ ऐसेवचनोंकूं श्रवणकरताहूआ सोबालाकि आपनेमनमैं यहविचारकरताभया ॥ जोपुरु[illegible] किसी
पुरुषकूं ऐसाउपदेशकरेजो जिसउपदेशकेग्रहणकरणेसें श्रोतापुरुष लघुताकूंत्यागकरि गुरुत्वभावकूंप्राप्तहोवे ॥ सोउपदेष्टापुरु[illegible] ताश्रो
तापुरुषकागुरुहै यहविद्यादिमद मेरेकूंलघुकरणेवालाथा मेरेकूंदुःखकरणेहारायहमद याराजानेनिवृत्तकराहै-यातेंयहरा[illegible]ण[illegible]ग[illegible]रुहै ॥ इस
गुरुरूपराजाकूंत्यागकरि जबीमैंकिसीअन्यकेसमीपजावूंगा तबमेरेकूं कृतघ्नतादोषकीप्राप्तिहोवेगी यातेंयाराजासें[illegible]ह्मविद्याकूंग्रह
णकरूं ॥ औरयाराजासेंभिन्नतौ मेरेतांईब्रह्मविद्याके उपदेशकरणेवालाकोईप्रतीतभीहोतानहीं जिसकेसमीपसें मैंब्र[illegible]विद्याकूंग्रहणक
रूं ॥ औरकिसीसेंभी मेरेतांईउपदेशहोनान[illegible]हीं यामैंहेतुयह ॥ जेमेरेगुरुहैं तेजेतनीविद्याजानतेथे सासंपूर्णविद्या मे[illegible]तांई तिनगुरुवों
ने उपदेशकरीहै ॥ याब्रह्मविद्याकूं मेरेगुरु[illegible]ानतेनहीं ॥ औरहिमाचलसेंलेकरि सेतुबंधरामेश्वरपर्यंत जेत्रैवर्णिकहैं[illegible]। तिनसर्वकूंजी
तकरिही काशीकेजीतनेवासते मैंप्राप्तभया[illegible] ॥ यातेंऔरसर्वपुरुष मेरेकरिजीतेहूएहोनेसें मेरेशिष्योंकेतुल्यहैं ॥ तिनसेंमेरेकूं यहदु
र्लभब्रह्मविद्या प्राप्तनहींहोवेगी ॥ औरदेवतातौ भोगोंमैंआसक्तहोइरहेहैं ॥ यातेंतेदेवता आत्माकूंजानतेभीनह[illegible]ानते ॥ जैसेउन्मत्त
पुरुष घटादिकोंकूं देखतेभीनहींदेखते तैसेदेवता विषयोंमैलंपटहोनेसें आत्माकूंजानतेभी नहींजानते ॥ और[illegible]राजातौ देवतावोंकेस
दृश लक्ष्मीकूंप्राप्तहूआभी कामक्रोधसेंरहितहोइक[illegible] संन्यासीयोंकीन्यांई गृहमैंभीस्थितहोइरहाहै ॥ औरइ[illegible]राजाकेसदृश कामक्रोधसें
रहित औरकोईपुरुषनहींहै यासंसारमैंकामीपुरुष[illegible]ीयोंके तथानटविटादिकोंकेवासते हजारोंरुपीये [illegible]चकरतेहूए प्रतीतहोवेहैं ॥

ब्रह्मवेत्तावोंकेवासतेतो पंचवराटकाभीखरचकरणीकठिनहैं ॥ कामीपुरुषकी कामरूपदोषकरि मलिनबु...
ताकामीकूंहोवेनहीं ॥ जैसे ज्वरवालेपुरुषकूं मधुरभीशर्करादिक कटुभानहोवेहैं ॥ तैसेकामरूपज्वरवा...होनेसें पात्रकुपात्रकाज्ञान
॥ ३ ॥ श्रवण पात्रमैंदानादि सुखकरणेवालेकर्मभी दुःखदाताभानहोवेहैं ॥ सोसर्वदोषोंकामूलकाम याराजाविषे...पुरुषकूं सत्संग सच्छास्त्र
...धिकारीब्राह्मणआदिकोंकेतांई यहराजादानकरताहै ॥ औरयाराजामें क्रोधभीनहीं जिससें मैंअपराधीकेतांईभी देखतानहीं ॥ जिससेंअ...
गौवोंकादानकरताभयाहै ॥ औरमैंनेंगुरुशास्त्रसें यहश्रवणकराहै जोब्रह्मवेत्ताविना औरप्राणियोंमें कामक्रोधरहेहै...प्रसन्नहोइकरि सहस्र
कामक्रोधहोवेंनहीं ॥ यातेंयहराजा कामक्रोधकेरहितहोनेसें ब्रह्मज्ञानीहै ॥ यातेंइसराजासेंहीमैंब्रह्मविद्याकूंग्रहणकरूं ॥ ब्रह्मवेत्ताकेमनमें
ज्ञानलाभसंदिग्धहै ॥ यामैंहेतुयह जोप्रथमतौ देवतावोंका प्रत्यक्षहोनाकठिनहै ॥ तपआदिकोंकेकरणेसें याजन्ममेंवा...औरदेवतावोंसें
देवताप्रत्यक्षभीहोवें तौभीब्रह्मवेत्ताउनमैंभीदुर्लभहै ॥ जबीब्रह्मवेत्ताभीहोवेगा तौभीभोगोंकी अधिकताहोनेसें राजस...जन्मांतरमें जबी
औरमेरेतपआदिकोंकरि प्रसन्नहूआभी मेरेतांईब्रह्मविद्याका उपदेशकरेवानहींकरे औरमेरेकूंभोगोंमैंही आसक्तकरिदेवे...कृतिहोवेगा ॥
सेंविद्याप्राप्तिहोनीसंदिग्धहै ॥ औरसर्वपुरुषतौ मेरेसेंन्यूनज्ञानवालेहैं ॥ ऐसेविचारकरि सोबालाकिपंडित राजाकेधर्म...यातें देवतावों
हूआ ब्रह्मविद्याकीप्राप्तिवासते समित्पाणिहोइकरि राजाकेसमीपआवताभया ॥ ब्रह्मविद्याविना बृहस्पतिजैसाभी औरविद्या...करि शुद्ध
होवे सोभीशिष्यहीहै ब्रह्मविद्यावालाहीगुरुहै ...आवार्त्ताकूं सोबालाकिदिखावताभया ॥ बालाकिरुवाच ॥ हेभगवन् मेरेतांई आप...मेंपंडित
ब्रह्मविद्याका उपदेशकरो ॥ राजोवाच ॥ हेबालाके विधाताने जातिकरि ब्राह्मणहीगुरुउत्पन्नकरेहैं औरक्षत्रियादिशिष्यहीउत्पन्न...पाकरि
मैंक्षत्रियराजाका आपकूंशिष्यहोनाउचितनहीं ॥ जबीमेरेकठोरवचनकूं श्रवणकरिके आपकूंकोपउत्पन्नभयाहो औरताकोपसेंमें...करेहैं ॥
आचाहतेहो ॥ तबहम आपसें अपराधक्षमाकरातेहैं आपकृपाकरि मेरेअपराधकूं क्षमाकरो ॥ मैंने आपकूं विद्यादिकोंकेमदसहितश्र...शिष्यहू
...णकरा

औरमदसहित तुमकूंनेत्रोंसेंभीदेखाराजधर्मकूं आश्रयकरि आपकीशिक्षावासते मैबालकने आपकूंकठोरवचनकहे ॥ मेरेकूंधि[illegible]रहे तथा क्रूरमेरेराजधर्मकूं धिक्कारहै ॥ आपकृपाकरिप्रसन्नहोवो ॥ औरजबीतुममेरेसें भयमानकरि शिष्यहूआचाहतेहो ॥ तबआप[illegible]भयहोवो मेरेसें किंचित्आपकूंभयमतिहोवे ॥ जेचौरादिकहैं तिनकूंभी धनदेकरि चोरीआदिकर्मोंसें मैनिवृत्तकरताहूं नाशनहींकरता ॥ जबी सर्वथातेचोरीआदिकर्मोंसें तेचोरादिनहींनिवृत्तहोवें तबपश्चात्यथायोग्यमै तिनकूंदंडदेताहूं ॥ जबीचोरादिकअपराधीपुरुषोंमै[illegible]भी मैदुःख करतानहीं तौआपउत्तमब्राह्मणकूं किसवासतेभयप्राप्तहोताहै ॥ यातेंआपनिर्भयहूए ब्राह्मणहोइकरिक्षत्रियकाशिष्यहोनारूप [illegible]प्रतिलोम कर्मसें निवृत्तहोवो ॥ जैसेआनंदसेंआयेथे तैसेआनंदपूर्वक आपनेगुरुकीशरणकूंप्राप्तहोवो ॥ ऐसे अनेकवचनकूं श्रवणक[illegible]बालाकिनीचे मुखकरिके पादकेअग्रसेंभूमिकूंलिखताहूआ तथादीर्घश्वासोंकूं लेताहूआस्थितभया ॥ जबी बालाकिनेगमनकरानहीं [illegible]राजातिसकीचे ष्टासें तिसकीलज्जातथाचिंताकूंजानकरि यहकहताभया ॥ हेबालाके वेदपठाना यज्ञकराना दानलेना यहब्राह्मणोंकेकर्महैहैं ॥ क्षत्रियकेय हकर्मनहीं ॥ औरमेरायहव्रतहै प्राणोंकूंभी मैं ब्राह्मणोंकेतांई दानकरताहूं ॥ औरब्रह्मविद्याकी आपयाञ्चाकरतेहैं यातेंयविद्याकूं तुमग्रहण करो ॥ परंतुदानविधिसेंही विद्याकूंग्रहणकरो ॥ गुरुतौआपब्राह्मणहीहो ॥ हमक्षत्रियतौशिष्यहीहैं ॥ ऐसेकथनकरिके[illegible]नःराजायहकहता भया ॥ हेबालाके प्राणादिकोंसेंभिन्न जोआनंदस्वरूपआत्मा प्राणादिकोंकूंप्रकाशेहै ताआत्माकूंब्रह्मरूपसेंनिश्चयकरो ॥ ऐसेकहताहूआ राजा बालाकिकेदृढनिश्चयवासते उठकरिताबालाकिकेहस्तकूंग्रहणकरिकेतेदोनों अंतःपुरकेद्वारमैप्राप्तभये ॥ तानंतरमै राजाकाकोईभृत्य शयनकरताथा ॥ तासुप्तपुरुषके समीप बालाकिसहितराजा स्थितहोताभया ॥ बालाकि जाप्राणकूं सूर्यचंद्रादिरूपसेंजानताथा तिनप्रा णकेनामोंकरि तासुप्तपुरुषकूं राजाबुलावताभया ॥ हेआदित्यचंद्ररूप ॥ हेबृहत्पांडुरवासः ॥ बृहत्पांडुरवासकाअर्थयह ॥ बृहत्नामअधि क पांडुरनामशुक्ल अधिकशुक्लरूपवालेजेजल तेजलहीहैंवासनामवस्त्रजाका ॥ छांदोग्यश्रुतिमे प्राणकेजलवस्त्रहैं यहहमकहआयेहैं ॥ या

215

तेंब्रहत्पांडुरवास यहप्राणकानामहै ॥ हेसोम ॥ यासोमशब्दकाअर्थ प्रियदर्शन वा सोमनामचंद्रमाकाहै ॥ हेराजन् याराजन्शब्दकाअर्थयह अनेकदेवतारूपसें जोप्रकाशे ॥ ऐसेप्राणकेअनेकनामोंसें राजानेबुलायाभी परंतुसोसुप्तपुरुष उठानहीं ॥ जैसेजडघटादिक अनेक नामोंकरि बुलायेहूएभी स्वपरकूंजानेंनहीं ॥ तैसेजडप्राणभी अनेकनामोंकरि बुलायेहूए किंचित्मात्रनजानतेभये ॥ ऐसे जडघटादिकोंकीन्यांईजडप्राणभीआत्मानहीं ॥ जबीप्राणोंकूं आत्मामाने तौसुप्तपुरुषकेप्राण विशेषरूपसेंचलतेहैं बुलानेसें स्वासतेजानतानहीं ॥ यातेंघटकीन्यांई प्राणअनात्माहे ॥ याअभिप्रायकेबोधनवासते ही राजाप्राणकेनामोंसें तासुप्तपुरुषकूं बुलाताभया ॥ ऐसे अनात्मता बोधनकरिके आपनेमनविषेराजा यहविचारताभया ॥ निर्विशेषआत्माका साक्षात्बोधनकरणातौबनेनहीं ॥ स्थूलारुंधतीन्यायसें किसीउपाधिविशिष्टता करिके ताआत्माका प्रथमउपदेशकरूं ॥ याअभिप्रायसें तासुप्तपुरुषकेहस्तकूं आपनेहस्तसेंराजादबावताभया ॥ ताहस्तकेदबावनेसें सोसुप्तपुरुषउठताभया ॥ ऐसेकरणेसें बालाकिने उपाधिविशिष्टआत्माकूंतौजाना शुद्धआत्माकूं जानानहीं ॥ ताशुद्धआत्माके जनावनेवासते राजाअजातशत्रु ताबालाकिसेंयहपूछतेभये ॥ प्रश्नतौ राजाकेपास बालाकिनेहीकरूं चाहियेथा परंतु बालाकिनेजबीनहींपूछा तबराजा ब्रह्मविद्याकेदेनेकी प्रतिज्ञाकूं पालनकरतेहूए शुद्धआत्माकेबोधनवासते यहपूछतेभये ॥ हेबालाके बुद्धिउपाधिकहोनेसें विज्ञानमयनामकूं प्राप्तभयायहपुरुष हस्तकरिदबावनेसेंप्रथम कैसेस्वरूपमें शयनकरताभया ॥ और सोकैसास्वरूपहै जास्वरूपसें यहपुरुष हस्तकेदबावनेकेउत्तर जागरितकालमेंप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेउपनिषद्भाष्यमें यहदोप्रश्नदिखायेहैं आत्मपुराणकर्त्ता श्रीशंकरानन्दस्वामिने तीनप्रश्नदिखायेहैं ॥ सोभीमुमुक्षुजनोंके उपदेशवासतेप्रकारहे ॥ औरहमनेतौभाष्यकीअनुसारतासें दोप्रश्नकहेहैं ॥ ऐसेशयनकाजोआधार तथाजासेंजागरितअवस्थाभयीहै तिनदोनोंप्रश्नोंकेउत्तरकूं बालाकिनजानताभया ॥ तब राजा याअभिप्रायसें उत्तरदेताभया ॥ वास्तवसें आत्मामें कर्तृत्वभोक्तृत्वादिसंसारनहीं किंतुवागादिउपाधिकेसंबंधकरिके मिथ्या

कल्प्याहै ॥ राजोवाच ॥ हेबालाके जाआकाशविषे यहविज्ञानमयपुरुष शयनकरेहै ताआधारकूंश्रवणकरो ॥ यहजीव वागनेत्रश्रो
त्रादिकइंद्रियोंकेसामर्थ्यकूं ग्रहणकरिके सुषुप्तिकालमै औपाधिकपरिच्छिन्नताकूं त्यागकरि स्वाभाविकआपनेस्वरूपमै एकताकूं
प्राप्तहोवेहै ॥ जबजीव वागादिकइंद्रियोंकेसामर्थ्यकूं ग्रहणकरिके शयनकरेहै ॥ तबयापुरुषकूं स्वपिति यानामसें कथनकरेहैं ॥ आ
पनेस्वरूपकूं जोप्राप्तहोवे ताकूंस्वपितिकहेहैं ॥ तासुषुप्तिकालमै घ्राण वाग् नेत्र श्रोत्र मन आदिकोंकेलीनहोनेसें कर्तृत्वभोक्तृत्वा
दिरूप संसारकाभीअभावहै ॥ जागरितस्वप्नमै इनवागादिकोंकासद्भावहै कर्तृत्वभोक्तृत्वरूपसंसारभीबनरहाहै ॥ ऐसेकर्तृत्वभोक्तृत्व
संसारकूं औपाधिकहोनेसें परमार्थसें निर्विशेषसच्चिदानंदआत्माहै ॥ हेबालाके जबीयहपुरुष स्वप्नावस्थाकूंप्राप्तहोवेहै तबआपनीमाया
के बलकरि अनेकमिथ्यापदार्थोंकूंउत्पन्नकरेहै ॥ जागरितअवस्थामै भिक्षुभी स्वप्नावस्थामैमहाराजाहोवेहै ॥ मूर्खभीपंडितहोवेहै ॥ दे
वादिउत्तमदेहोंकूं तथापशुपक्षीआदिनीचदेहोंकूं स्वप्नावस्थामैप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेजागरितावस्थामै चक्रवर्तीराजा आपनीइच्छाअनु
सार आपनेंदेशोंविषे अटनकरेहै ॥ तैसेस्वप्नावस्थाकूं प्राप्तहूआपुरुष अनेकदेशोंमै आपनीइच्छाअनुसार अटनकरेहै ॥ स्वप्नावस्थामै
भिक्षुनेराजाहोइजाना तथादेशोंमैअटनादियहसर्वही जागरितकालमैरहेनहीं यातेंमिथ्याहै ॥ तैसेजाग्रतके जेसर्वपदार्थहैं तेसर्वही
स्वप्नमैरहेंनहीं यातेंमिथ्याहैं ॥ हेबालाके इनजाग्रतस्वप्नदोनों अवस्थावोंविषे देहइंद्रियादिउपाधिरहेहै ॥ यातेंहीयहजीव अनेकप्रका
रके दुःखोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सुषुप्तिअवस्थामै नामरूपजगत्केविशेषज्ञानसेंरहितहोइकरि स्थितहोनेसें परमानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हृदयसेंनि
कसकरि बहत्तरहजारनाडीयां सर्वशरीरमैव्यापकहोइरहीहैं ॥ इननाडीयोंकीअधिकसंख्याप्रश्नउपनिषत्मैकहीहै ॥ हितफलकीप्राप्ति
का यहनाडीयांद्वारहैं यातेंइननाडीयोंकानाम हिताकह्याहै ॥ तानाडीयोंकरिके पुरीतद्द्वारा ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हृदयकमलके
चारोंदिशासें वेष्टनकरिकेस्थितजोचर्महै ताचर्मकूंपुरीतत्नामसें कथनकराहै ॥ तापुरीतद्द्वारा सुषुप्तिअवस्थाविषे ब्रह्मानंदकूंप्राप्तभया

बृ० उ० जोजीवहै ॥ तामैयहदृष्टांतकहेहैं ॥ जैसेअत्यंतबालक दुग्धकूं पानकरि शय्यामैस्थितहूआ रागद्वेषादिकोंकेअभावसें परमानंदकूंप्राप्त भा० १०
होवेहै ॥ तथाजैसेचक्रवर्तीराजा सर्वभोगोंकरितृप्तहूआ आनंदकीअवधिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तथाजैसेविद्याविद्यादिकोंकूं प्राप्तहूआजीव
॥ ५ ॥ न्मुक्तब्राह्मण आनंदकीसीमाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेसुषुप्तिअवस्थामैं यहपुरुष निरवधिकआनंदकूंप्राप्तहोवेहै । ऐसेकिसआधारमैं यहपु
रुषशयनकरताहै याप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं ऐसेकहा ॥ जोयहजीव सुषुप्तिअवस्थामैं पुरीतद्वारा ब्रह्ममैएकताकूं प्राप्तहूआही शयनकरे
है ॥ ब्रह्मसेंभिन्नहोइकरि किसीभिन्नआधारमैं हिनहीं ॥ जागरितअवस्थामैं किसअवधिसेंप्राप्तभयाहै ॥ याद्वित[illegible]प्रश्नकाउत्तरभी य
हहीजानना ताब्रह्मसेंहीजागरितकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यातेंजागरितकी अवधिभीब्रह्महै दूसरानहीं ॥ यास्थानमैंभाष्यवि[illegible] ऐसीशंकादिखा
ईहै ॥ देवदत्तनामकपुरुष श्रीगंगाजीसें आइकरि आपनेगृहमैंप्रवेशकरेहै ॥ याकहनेसें गंगाअवधिप्रतीतहोवेहै और[illegible]गृहआधारप्रतीत
होवेहै ॥ तैसेपुरुषकेशयनकेआधार औरअवधिभिन्नभिन्नकहनेचाहिये ॥ एकब्रह्मकूं उभयरूपता कैसेनिरूपणकरी ॥ याशंकाकीनिवृ
त्तिवासते ऊर्णनाभिनामलूताकीटका तथाअग्निकादृष्टांतकहाहै ॥ जैसेएकहीऊर्णनाभिनामककीट किसीदूसरेकीसहायताविनाही आ
पनेमुखसें तंतुवोंकूं उत्पन्नकरिके आपनेविषेही लीनकरेहै ॥ तैसेयहजीव सुषुप्तिअवस्थामैं जिसब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥
ताब्रह्मसेंही वागादिकसर्वप्राण भूरादिकसर्वलोक अग्निआदिसर्वदेव ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंतसर्वभूत उत्पन्नहोवेहैं । औरजैसेएक
रूपप्रज्वलितअग्निसें अनेकविस्फुलिंग उत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसेएकब्रह्मसेंही नानाप्रकारकाजगत् उत्पन्नहोवेहै ॥ औरता[illegible]ब्रह्मविषेहीस्थित ॥११२॥
है ॥ तथाताब्रह्मविषेहीलीनहोवेहै ॥ ताजगत्केउत्पत्तिआदिकभीवास्तवनहींहैं ॥ जगत्हीवास्तवनहीं तबताकेउत्पत्तिआदिकवास्तव
कैसेहोवेंगे ॥ हेबालाके यहसंपूर्णजगत् जाग्रतस्वप्नमैउत्पत्तिकूंप्राप्तहोवेहै ॥ सुषुप्तिमैं प्रलयकूंप्राप्तहोवेहै ॥ दूसरेजागरितस्वप्नमैं पुनः
उत्पन्नहोवेहै ॥ दूसरीसुषुप्तिविषे पुनःलीनहोवेहै ॥ ऐसेअनेकवार जगत्केउत्पत्तिआदिकहोवेहैं ॥ सोईकलदिनकाय[illegible]गृहहै सोईयह

क्षेत्रहै इत्यादिप्रत्यभिज्ञाज्ञानसर्वभ्रमरूपहैं ॥ जैसेकोईकहे सोईयहनदीहै ॥ सोईयह दीपज्वालाहै इत्यादिप्रत्यभिज्ञाज्ञानभ्र[illegible]रूपहैं ॥
काहेते सोनदीकाप्रवाहनहींरह्या तथासोईदीपज्वालानहींरही ॥ केवलअविवेकसेंही सोईयहनदीहै सोईयहदीपज्वालाहै यहज्ञानहोवे
हैं ॥ तैसेदिनदिनविषे लीनहोनेहारेजगत्मै सोईकलदिनकायहगृहहै सोईयहक्षेत्रहै सोईयहपुस्तकहै इत्यादिसर्वज्ञानभ्रमरूपहैं ॥
वास्तवसेंतौ क्षणक्षणविषे जगत्उत्पन्नहोवेहै ॥ क्षणक्षणविषेलीनहोवेहै ॥ इसीवासतेश्रीवसिष्ठ आदिसर्वज्ञऋषियोंने दृष्टिसृष्टिवाद
अंगीकारकराहै ॥ दृष्टिकहीये ज्ञानरूपब्रह्महो सृष्टिनामप्रपंचहै तादृष्टिरूपब्रह्मसेंभिन्नसृष्टिनहीं ॥ औरदृष्टिसृष्टिइसशब्दका अ
र्थयहभीलिखाहै ॥ जबतकदृष्टिरूपवृत्तिहै तबतकयहसृष्टिहै वृत्तिसेंआगेपीछेसृष्टिनहीं ॥ ब्रह्मरूपसमुद्रमैं बुद्बुदकीन्यांई क्षणक्षणविषे
यहप्रपंच उत्पन्नहोवेहै तथाक्षणक्षणविषे लीनहोवेहै ॥ श्रीव्यासभगवान्ने शारीरकके दूसरेअध्यायमै जोक्षणिकवादका खंडनकराहै
सोअधिष्ठानरूपसत्यब्रह्मकूं नमाननेहारेबौद्धके मतकाखंडनहै ॥ द्रष्टादृश्यदोनोंकूं बौद्धक्षणिकमानेहै ॥ वेदांतसिद्धांतमै दृश्य
रूपप्रपंचतौ क्षणिकमान्याहै द्रष्टारूपब्रह्मकूं एकरससत्यरूप अंगीकारकराहै ॥ यातेंश्रीव्यासकेअनुसारही यहप्रपंचक्षणिकवा
दहै विरुद्धनहीं ॥ ग्रंथविस्तारकेभयसें गौरविशेषयुक्ति हमनेलिखीनहीं ॥ ऐसेसर्वप्रपंच जाब्रह्मविषेउत्पन्नहोवेहै तथास्थितहो
वैहै तथाप्रलीनहोवेहै ॥ ताब्रह्मकीप्रतिपादक यहउपनिषत्है ॥ उपनामसमीपकाहै निनामनिरंतरकाहै षत्नामप्राप्तकरणेहारे
काहै ॥ ब्रह्मकूं समीपहीजानिरंतर प्राप्तकरणेहारीहोवे ताकूंउपनिषत्कहेहैं ॥ तारहस्यरूपउपनिषत्कूं दिखावेहैं ॥ सत्यस्यसत्य
मितिप्राणावैसत्यंतेषामेषसत्यम् ॥ अर्थयह ॥ सत्यस्यसत्यंनाम ब्रह्मदेवसत्यकेसत्यहैं ॥ सत्यकेसत्यहैं इसकाअर्थ आपहीउपनिष
त्कहेहै ॥ प्राणावैसत्यं प्राणहीस्थूलसूक्ष्मप्रपंचरूपसत्यहैं ॥ तेषामेषसत्यंनाम तिनसर्वप्रपंचरूपप्राणोंका यहब्रह्मदेवसत्यहैकहीये
अधिष्ठानहै ॥ ऐसेबालाकिविद्याकूंग्रहणकरि मोक्षकूंप्राप्तभयाइति ॥ पूर्वप्रथमब्राह्मणमै प्राणोंकूंसत्यरूपताकही तासत्यरूपप्राणकी

 शिशुरूपसेंउपासनाकेवासते दूसराशिशुब्राह्मणहै इति ॥ तीसरेमूर्त्तामूर्त्तनामकब्राह्मणमै प्राणरूपकार्यब्रह्मकूं सत्यरूपताकाकथन
है ॥ द्वेवावब्रह्मणोरूपेमूर्त्तंचैवामूर्त्तंच ॥ अर्थयह ॥ नेतिनेतिइत्यादिवाक्योंकरि निरूपणकराजोपरमार्थरूपब्रह्महै ताब्रह्मके माया
 मयदोरूपहैं एकमूर्त्तहै दूसराअमूर्त्तहै ॥ इनदोनोंविषे जोमूर्त्तहै सोमर्त्यनाममरणेहाराहै ॥ दूसराअमूर्त्तअमरहै ॥ मूर्त्तपरिच्छिन्न
है अमूर्त्तअपरिच्छिन्नहै ॥ मूर्त्तप्रत्यक्षहै अमूर्त्तअप्रत्यक्षहै ॥ पृथिवी जल तेज यहभूतत्रयमूर्त्तहैं ॥ वायु आकाश यहअमूर्त्तहैं ॥ पृथिवी
आदितीनभूतोंके सघनअवयवहोनेसें तिनकूं मर्त्यरूपताकही ॥ वायु आकाशकूंविपरीतहोनेसें अमर्त्यरूपताकही ॥ तिनपृथि
वी आदितीनभूतोंका यहआदित्यमंडलसारहै ॥ वायुआकाशरूपअमूर्त्तका आदित्यमंडलस्थ हिरण्यगर्भरूपपुरुषसारहै ॥ ऐसेअधि
दैवविभागकूंकथनकरिके अबअध्यात्मविभागकूंकहैहैं ॥ पृथिवीआदिभूतत्रयका चक्षुसारहै ॥ वायु आकाशका दक्षिणचक्षुमैस्थि
त लिंगात्मापुरुषसारहै ॥ अबलिंगशरीरउपाधिकआत्माके अनेकरूपोंकूंवर्णनकरैहैं ॥ यहलिंगात्मा स्त्रीआदिकोंकेवियोगहोने
सें हरिद्राकरिकेरंगे पीतवस्त्रकेतुल्यहोवैहै ॥ ऐसेपीतशुक्लरक्तादिकअनेकरूपोंकूं सत्व रज तमइनगुणोंकीन्यूनताऽधिकतासें यह
पुरुषप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसेसमष्टिव्यष्टिलिंगात्माके अनेकरूपोंकूंकथनकरिके अब याहिरण्यगर्भरूपप्राणसत्यका ब्रह्मसत्यहै यासत्य
केसत्यब्रह्मका निरूपणकरैहैं ॥ अथाऽत आदेशोनेतिनेति ॥ अर्थयह ॥ अथनामसत्यस्वरूपके निरूपणके पश्चात् सत्यकासत्यजो
ब्रह्महै ताकूंकहैहैं ॥ जिससेंमूर्त्तअमूर्त्तकेनिरूपणकेपश्चात् ब्रह्मकाहीनिरूपणअपेक्षितहै ॥ औरमूर्त्तअमूर्त्तका निरूपणभी ब्रह्मकेनिरूप
णवासतेहीकराहै ॥ यातें नेतिनेति ऐसेब्रह्मकाकथनहै ॥ दोनकारोंसें मूर्त्तअमूर्त्तका स्थूलसूक्ष्मका अविद्या अविद्याकेकार्यका भाव
अभावका इत्यादिसर्वअनात्मपदार्थोंका निषेधजानना ॥ औरनिषेध अधिष्ठानविनाहोवैनहीं यातेंसर्वप्रपंचकेनिषेधका अवधिरूपब्रह्म
अबाध्यहै ॥ औरशुद्धब्रह्मकूं मनवाणीकाअविषयहोनेसें यहनिषेधरूपमुख्यउपदेशही ब्रह्मकेप्राप्तकरणेहाराहै ॥ ऐसेहिरण्यगर्भरूपप्राण

सत्यहै तिनप्राणोंका अधिष्ठानरूप ब्रह्महीसत्यहैइति ॥ ॥ तृतीय ब्राह्मणमै कहीजाब्रह्मविद्या ताब्रह्मविद्याके अंगरूप न्यासके
विधानवासते चतुर्थमैत्रेयीब्राह्मणहै ॥ मैत्रेयीब्राह्मण याउपनिषत्के याचतुर्थाध्यायमै तथाषष्ठाध्यायमै पठनकराहै ॥ तिनदोनोंस्थानोंमै
पठनकरे मैत्रेयीब्राह्मणकाअर्थ याउपनिषत्के षष्ठाध्यायमैकहेंगे ॥ औरइसमैत्रेयीब्राह्मणमै सर्वात्मताकहीहै तासर्वात्मताकीसिद्धिवास
तेही मधुब्राह्मणहै ॥ तामधुब्राह्मणकेअर्थकूंकहेहैं ॥ जैसेअनेकमधुकरमक्षिका एकमधुकेअपूपकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तैसेब्रह्मादिपिपीलिका
पर्यंत सर्वप्राणियोंकी यहपृथिवी मधुकीन्यांईमधुनामकार्यहै ॥ यापृथिवीके सर्वभूतकार्यहैं ॥ जोयापृथिवीमै प्रकाशस्वरूप तथाअमृ
तस्वरूपपुरुषहै ॥ तथाजोलिंगात्मापुरुष याशरीरविषेवर्त्तमानहै ॥ तिनदोनोंसमष्टिव्यष्टि अभिमानीपुरुषोंका अभेदहै ॥ यहएकहीआ
त्मा उपकारकरूपसें तथाउपकार्यरूपसेंस्थितहै ॥ तथा जल अग्नि वायु आदित्य दिशा चंद्र विद्युत् मेघ आकाश धर्म सत्य मानुष्य
इत्यादिसर्वअधिदैवोंमै तथा रेतवागादिक सर्वअध्यात्मोंमै स्थितजोपुरुषहै तिनदोनोंकाअभेदहै ॥ एकहीआत्मा पृथिवीआदिकोंमै
स्थितहूआ सर्वभूतोंविषेउपकारकरणेहाराहै ॥ व्यष्टिभूतोंके अदृष्टोंकेआधीनही पृथिवीआदिरचेहैं यातेंव्यष्टिभूतोंमैस्थितहूआ यहआ
त्मा पृथिवीआदिकोंका उपकारकरणेहाराहै ॥ ब्रह्मैवेदंसर्वम् ॥ अर्थयह ॥ वास्तवसें यहउपकार्य उपकारकरूप सर्वजगत् ब्रह्मस्वरूप
है ॥ औरयहब्रह्मात्मा सर्वभूतोंका स्वतंत्रपाराहै तथासर्वभूतोंका प्रकाशकराजाहै ॥ जैसेरथकीनाभिमैअरास्थितहोवेहैं ॥ तैसे याब्र
ह्मात्मामै ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंत सर्वभूतस्थितहोवेहैं ॥ तथाअग्निआदिसर्वदेव तथाभूरादिसर्वलोक वागादिसर्वप्राणं विज्ञानमयसर्वआ
त्मा यापरमार्थरूप अधिष्ठानआत्मामै स्थितहोवेहैं ॥ याब्रह्मविद्याकीस्तुतिवासते आख्यायिकाकहीहै ताआख्यायिकाकूं संक्षेपसें कथनक
रेहैं ॥ कोईएकऋषि अश्विनीकुमारोंकूं आपनेकार्यवासते प्राप्तहूआ यहकहताभया ॥ हेअश्विनौ मेरेकार्यकूंकरो ॥ जबीतुममेराकार्यनहीं
करोगे तबतुमारेघोरपापकूं मैप्रगटकरूंगा ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि अश्विनीकुमारकहेहैं ॥ हेऋषे हमारेपापकूं प्रथमप्रगटकरो पश्चात्हम

आपकाकार्यकरेंगे ॥ ऋषिरुवाच ॥ हेअश्विनौ तुम रूपऔरयौवनअवस्थाके अभिमानकरिके कदाचित्देवराजइंद्रकी अवज्ञाकरतेभ
ये ॥ तुमकूंवैद्यजानकरि तथाअवज्ञाकूंप्राप्तहूआइंद्र तुमारेयज्ञभागकूं दूरकरताभया ॥ यज्ञभागसेंरहितहूए तुम महान्दुःखकूंप्राप्त
॥ ७ ॥ होतेभये ॥ आपनेदध्यङ्नामक दधीचगुरुके समीपआइकरि क्रोधसेंयहवचनकहतेभये ॥ हेगुरो इंद्रने हमारायज्ञभाग दूरकराहै
अबहमक्याकरें ॥ हमइंद्रकेमारणेके अनेकउपायजानतेहैं अबहमइंद्रकानाशकरेंगे ॥ आपकीकृपासें हमइंद्रसेंमृत्युकूं नप्राप्तहोवें
गे ॥ आपभीसंमतिदेवो जोअबक्याकरणाउचितहै ॥ ऐसेतुमारे वचनकूंश्रवणकरि तुमारागुरु यहकहताभया हेअश्विनौ तुमारा इंद्र
शत्रुनहींहै यहक्रोधही तुमाराशत्रुहै ॥ जबतुमक्रोधरूपीशत्रुके जीतनेविषेभी समर्थनहीं तबतुमइंद्रकूं कैसेजीतोगे ॥ जबीइंद्रही
तुमाराशत्रुहोता तबतिसइंद्रने तुमारेक्रोधसें प्रथमही तुमारायज्ञभाग किसवासते दूरनकरा ॥ यातेंइंद्रशत्रुनहीं क्रोधनेही तुमारेकूं दी
नसेंदीनकराहै ॥ जोप्राणि आपनेमहावैरी कामक्रोधकेजीतेविना औरसेंवैरकरताहै सोमहामूढपुरुषहै ॥ हेअश्विनौ जबीतुमारेमें
कुछसामर्थ्यहै तबतुम आपनेकामक्रोधरूपवैरीयोंकानाश किसवासतेनहींकरते ॥ दधीचगुरुने तुमारेक्रोधकेदूरकरणेहारे शांतिवाक्य
कहेभी परंतुतुमाराक्रोधनिवृत्तनहींभया ॥ तबतुमारेगुरुने यहकह्या ॥ हेअश्विनौ जबतुमक्रोधरूपअग्निकूंशांतकरोगे तबतुमारेतां
ई दुर्लभब्रह्मविद्याका हमदानकरेंगे ॥ इंद्रकेसाथयुद्धकरणा अत्यंतअनुचितहै ॥ जबीपृथिवीकेदेवतारूप ब्राह्मणोंका मारणाभी
महापातकहोनेसें अत्यंतअनुचितहै ॥ तबस्वर्गकेदेवता इंद्रादिकोंकामारणा कैसेअनुचितनहींहै ॥ यातेंइंद्रसें तुमवैरकात्यागक
रो ॥ औरयज्ञभागकी प्राप्तिकेउपायकूं मैंतुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ शर्यातिनामकराजाका जामातारूप च्यवनऋषि तुमारेकूं य ॥११४॥
ज्ञभागकादानकरेगा ॥ च्यवनऋषिकेनेत्रनहींहैं जबतुमताऋषिकेतांई नेत्रकादानकरोगे तबतुमारेतांई सोऋषि यज्ञभाग अव
श्यदेवेगा ॥ ऐसेगुरुकेवचनोंकूंश्रवणकरि तुमच्यवनऋषिकेसमीप जाइकरि यज्ञभागकूंप्राप्तभये ॥ सोच्यवनऋषि इंद्रसें निर्भयहो

इकरि तुमारेतांई यज्ञभागकादानकरताभया ॥ याच्यवनऋषिकीकथा भारतके वनपर्वमै लोमशनामकऋषिने महाराजाधर्मपुत्र युधिष्ठिरकेप्रति कथनकरीहै ॥ जबतुमदधीचनामकगुरुकेसमीपसें चलेआये ॥ तबपश्चात् तादधीचनामकगुरुकेसमीप देवराजइंद्र प्राप्त होताभया ॥ तुमारेगुरुने इंद्रका आतिथ्यभावकरिके यहकहा ॥ हेइंद्र तुमाराप्रियमैक्याकरूं ॥ इंद्रउवाच ॥ हेऋषे दुर्लभजाब्रह्मविद्या है ताब्रह्मविद्याकूं मेरेतांई तुमकथनकरो ॥ तबदधीचऋषि आपनेमनमै यहविचारकरताभया ॥ वैराग्य श्रद्धा गुरुभक्तिआदिसाधनोंसें विना अनधिकारीकूं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा अत्यंतअयोग्यहै ॥ भोगोंमैलंपटयाइंद्रमै वैराग्यादिकसाधनोंकेअभावसें ब्रह्मविद्याका अधिकारनहीं ॥ औरजबीमै ब्रह्मविद्याका उपदेशनहींकरूं तबमैंनेप्रथमयहकह्याथा ॥ जोतेरा प्रिय मैं क्याकरूं ॥ इंद्रनेब्रह्मविद्यामां गी ॥ जबीमै ब्रह्मविद्याकादाननहींकरूं तबमेरीप्रतिज्ञाभंगहोवेगी ॥ ताप्रतिज्ञाभंगकेभयसें इंद्रकेतांई दधीचऋषि ब्रह्मविद्याकाउपदे शकरताभया ॥ साब्रह्मविद्यां मधुब्राह्मणरूपहै ॥ ताकापूर्वनिरूपणकराहै ॥ औरसंक्षेपसें मधुब्राह्मणकाअर्थयहहै ॥ एकहीब्रह्मात्मा पृथिवीआदिकोंमै तथामनुष्यशरीरादिकोंमै व्यापकहोइरहाहै ॥ औरयाब्रह्मात्मानेही पशुपक्षीआदिकोंके शरीरोंकूं उत्पन्नकरिके आ पहीप्रवेशकराहै ॥ हेइंद्र एकहीआत्मा तेरेशरीरमै तथाश्वानकेशरीरमै समानहीव्यापकहै ॥ पंचभूतोंकादेहभी श्वानका तथातुमइंद्र का तथामेरासमानहै ॥ औरइंद्रनाम परमऐश्वर्यवालेकाहै परमऐश्वर्यवालापरमात्माहै तुमतौव्यर्थही अभिमानकरि आपनाऐश्वर्यमान लेहो ॥ ऐसेअनेकयथार्थवाक्योंकूं श्रवणकरि राजसप्रकृतिवालाइंद्र परमक्रोधकूंप्राप्तहोताभया ॥ औरयहकहताभया हेऋषे आजसेंले करि यामधुविद्याकूं तूंकिसीकेतांईकहेगा तबतेराशिर आपनेवज्रसें मैकाटदेवूंगा ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि दधीचऋषि परमहर्षकूंप्रा सभया ॥ जिसविचारकूंकरिके तादधीचऋषिने इंद्रकूंशापनदीया सोविचारयहहै ॥ देवोथर्वाऋषिमेरेगुरुने मेरेताई वेदविद्याकाउपदे शतौकरा परंतु जीवन्मुक्तिकेसुखकीप्राप्तितौ इंद्रकीकृपासेंहीभयीहै ॥ जीवन्मुक्तिसुखकाविरोधीतौ मेरेमैयहहीथा जोविद्याकाउपदेशकर

223

 णा ॥ यहमेराशिष्यहै मैगुरुहूं इत्यादिभेदबुद्धिकी इंद्रकीकृपासें सर्वथानिवृत्तिभयीहै ॥ औरकिंचित् अपकारकेप्राप्तहोनेसें ज्ञानीपुरुषभी
जबीक्रोधकरेंगे तबसर्पश्वानादिकोंसें ज्ञानीकीक्यावलक्षणताहोवेगी ॥ जेपुरुष अपकारकरणेवालेमै क्रोधनहींकरते उत्तमज्ञानीतेहैं ॥
॥ ८ ॥ औरअपकारकरणेवालाभी आत्माकाअपकारकरताहै वादेहइंद्रियादिरूप अनात्माका अपकारकरताहै ॥ निर्विकारआत्माकेअपकार
करणेकूंतौ कोईसमर्थनहीं ॥ अंगीकारकरेंतौभी आत्मानाम आपनेस्वरूपकाहै आत्माएकहीहै तबअपकारकर्त्तासोपुरुष आपनाही
अपकारकरेहै ॥ औरअनात्मादेहइंद्रियादिकोंके अपकारकरणेसेंभी ज्ञानीकोक्या ॥ ज्ञानीतौ देहइंद्रियादिकोंसेंभिन्न शुद्धनिर्विकार
ब्रह्मरूप आपकूंमानताहै ॥ औरज्ञानीकेहीसर्वदेहहैं एकदेहसें दूसरेदेहकेअपकारहूएभी ज्ञानीकूंक्रोधकरणायोग्यनहीं ॥ जैसेआपनेदं
तोंकरि आपनीजिव्हाकेकाटनेसें पुरुष पाषाणकरिके आपनेदंतोंकूं तोडकरि बाहिरनिकासेंनहीं ॥ तैसेएकदेहमैस्थितहूआआत्मा
अपकारकरेहै दूसरेदेहमैस्थितहूआ अपकारकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरवास्तवसेंतौ आत्मामैअपकारादिकोंकासंबंधनहीं ॥ आत्माकेयथार्थ
स्वरूपकूं नजाननेवालेपुरुषनेभी यहविचारकरणाचाहिये ॥ उपकारअपकारादिकोंसेंहोनेवालेसुखदुःख आपनेकर्मजन्यहैं ॥ यातेंआ
पनेपापरूपकर्मकेफलदुःखकूं पुरुषप्राप्तहोवेहै ॥ दूसराकोई सुखदुःखकेकरणेहारानहींहै ॥ ऐसेअनेकप्रकारकेविचारकरि सोदधीचऋषि
शापनदेताभया ॥ पश्चातइंद्रकूं सोऋषियहकहताभया ॥ हेइंद्र तुमकुछऔरआपनाकार्यकहो विद्याकाउपदेशनहींकरणा यहजोतुम
नेमेरेकूंकहा सोयहतौमेराही हितकराहै ॥ आपनाकोईऔरकार्यकहो जाकूंमैकरूं ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि इंद्रयहकहताभया ॥ हे
ऋषे मेरायहहीकार्यहै जोतुमनेविद्याका किसीकूंउपदेशनहींकरणा ॥ ऐसेकथनकरिके इंद्रस्वर्गलोकमै प्राप्तहोताभया ॥ पश्चात् तुमदो
नोंतादधीचगुरुकेसमीप आइकरि यहकहतेभये ॥ हेगुरो आपने ब्रह्मविद्याकेदेनेवासतेकहाथा ॥ सोअबआपकृपाकरि ब्रह्मविद्याकाउ
पदेशकरो ॥ ऐसेतुमारेवचनकूंश्रवणकरि सोदधीचऋषि परमचिंताकूंप्राप्तभया ॥ औरचिंताकानिमित्त तुमारेकूं सर्वकहकरि यह

कहताभया ॥ जबीतुमारेकूं मैब्रह्मविद्याकादाननहींकरता तबमेरीप्रतिज्ञाभंगहोवेहै जबीताब्रह्मविद्याका तुमारेकूंउपदेशकरूं तब इंद्रमेराशिरकाटेगा ॥ मरणसेंतौ मैभयनहींकरता ॥ काहेते जोशरीरतौदृष्टविनश्वरहै ॥ शरीरकानाशहोनेके यहनिमित्तप्रसिद्धहैं ॥ व्याधि सर्प सिंह चोर विष जल अग्नि शत्रु अजीर्ण उच्चस्थानसेंगिरना इत्यादिअनंतनिमित्त याशरीरकेनष्टहोनेकेवर्त्तमानहैं ॥ यातेंश रीरकानाशतौ अवश्यहोवेगा शरीरकेनाशहोनेसें मेरेकूंकिंचित्भीतिनहीं ॥ भीतितौमेरेकूंप्रतिज्ञाभंगसेंहै ॥ औरशरीरनाशहोनातौ उत्त महै परंतु प्रतिज्ञाभंगकरणी अत्यंतनिंदितहै ॥ जबीतुमारेतांई ब्रह्मविद्याका मैदानकरणेलगा बीचमैही इंद्रनेमेराशिरकाटदीया तब मेरीप्रतिज्ञाभंगहोवेगी ॥ ऐसेगुरुकेवचनोंकूंश्रवणकरि तुमनेगुरुवोंकूंयहकहा ॥ हेगुरो यहअश्वहै इसकाशिरकाटकरि हमआपकीग्री वामै स्थापनकरतेहैं आपकाशिरकाटकरि अश्वकीग्रीवामै स्थापनकरतेहैं ॥ ताअश्वकेमुखसें आपहमारेतांई ब्रह्मविद्याकाउपदेशक रो ॥ जबीइंद्रवज्रसें आपकाशिरकाटदेवेगा तबहमपुनः आपकाशिरहीस्थापनकरेंगे ॥ ऐसेकरणेसें आपकाभीमृत्युनहींहोगा तथा अश्वकाभीमृत्युनहींहोगा ॥ जबीआप हमारेतांई ब्रह्मविद्याकादानकरोगे तबआपकीप्रतिज्ञाभंगभी नहींहोगी ॥ जबीतुमारेगुरुने अंगी कारकरा तबतुमशस्त्रसें आपनेगुरुकाशिरकाटकरि अश्वकाशिरलगाइदीया ॥ हेअश्विनौ जबीतुमने ऐसाघोरपापकरा तबतुमारागुरु अश्वकेशिरसेंही तुमकूं तामधुविद्याका उपदेशकरताभया ॥ तिसकालमै दधीचगुरुके ताअश्वकेशिरकूंइंद्र काटदेताभया ॥ तबतुमने अश्वकेशिरकूं पृथिवीमैगिरादेखकरि अश्वकेशिरकूं अश्वकीग्रीवामैस्थापनकरा ॥ औरदधीचगुरुकेशिरकूं गुरुकीग्रीवामै स्थापनकरा ॥ हेअश्विनौ संक्षेपसें ताविद्याकूं मैकथनकरताहूं ॥ यहआत्मा पृथिवीआदिसर्वभूतोंकूंउत्पन्नकरिके दोपदोंवालेशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभ या ॥ तथाचारिपदोंवालेशरीरोंकूं उत्पन्नकरताभया ॥ शरीरोंकूंउत्पन्नकरिके तिनमै लिंगशरीरउपहितहूआ प्रवेशकरताभया ॥ सर्वश रीररूपीपुरीयोंमै स्थितहोनेसेंही पुरुषकहावेहै ॥ परमात्माहीअंतरबाहिर सारेपरिपूर्णहै ॥ याआत्माकाप्रवेशभी सूर्यकेप्रतिबिंबकीन्यां

वृ॰उ॰ ई बुद्धिमैप्रतिबिंबरूपहीजानना ॥ यहआत्मा अनेकशक्तिवाली आपनीमायाशक्तिकरि बहुतरूपसें प्रतीतहोवेहै इति ॥ षष्ठब्राह्मणमै भा॰१॰
ब्रह्मविद्याकीस्तुतिवासते तथाजपवासते तथाब्रह्मविद्यामै असांप्रदायिकत्वशंकाकीनिवृत्तिवासते ऋषियोंकावंशकथनकराहै ॥ ॥ इ
॥ ९ ॥ तिबृहदारण्यकेचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॐ नमः परमेष्ठिने ॥ पूर्वचतुर्थाध्यायमै शास्त्रप्रधानतासें आत्माकानिरूप
णकरा युक्तियोंसें आत्माकेनिरूपणवासते यापंचमाध्यायकाआरंभहै ॥ प्रथमविद्याकीस्तुतिवासते कथाकहीहै ॥ विदेहोंकेवंशमैहोने
सें वैदेहनामकूं प्राप्तहोनेवालाजनकराजा यज्ञकूंकरताभया ॥ तायज्ञकानाम बहुदक्षिणथा ॥ तायज्ञमै कुरुपांचालादिदेशोंकेब्राह्मण एकठे
होतेभये ॥ तिनअनेकब्राह्मणोंकूं देखकरि राजाजनककेमनविषे ऐसीजिज्ञासाभयी जोइनमैअधिकवेदकेअर्थकूंजाननेवाला ब्रह्मिष्ठको
नहै ॥ पश्चात्राजाने आपनेमनविषे यहविचारकरा धनमैअनेकप्रकारकेदोषहैं ॥ धनकरिहीआपसमैविवादकरेंगे तब इनब्राह्म
णोंविषे ब्रह्मिष्ठकानिर्णयहोवेगा ॥ ऐसेविचारकरि एकसहस्रगौवोंके एकएकशृंगमै पंचपंचमुहररूपस्वर्णकूं बांधकरि सभामैस्थाप
नकरताहूआ यहकहताभया ॥ भोब्राह्मणा जोतुमारेमै अतिशयकरिब्रह्मज्ञहै ऐसेब्रह्मिष्ठकेवासते यहगौवांस्थापनकरीहैं ॥ जबकोई
ब्राह्मणभी आपनेकूंब्रह्मिष्ठमानकरि गौवोंकेलेजानेविषे समर्थनभया ॥ तबयाज्ञवल्क्य सामवेदकेपठनकरणेवाले ब्रह्मचारिशिष्यकूं
यहकहतेभये ॥ हेसौम्य इनगौवोंकूं मेरेगृहविषे तूंलेजा ॥ ऐसेयाज्ञवल्क्यकेवचनकूंश्रवणकरि सोब्रह्मचारी गौवोंकूं याज्ञवल्क्यकेगृ
हविषे लेजाताभया ॥ तिसकालमै ब्राह्मणक्रोधकूंप्राप्तभये ॥ औरयहकहतेभये यहयाज्ञवल्क्य आपकूंब्रह्मिष्ठमानकरि हमारासर्वकाति ॥११६॥
रस्कारकरताभयाहै ॥ तबराजाजनककाऋत्विग् राजआश्रितहोनेसें महाअभिमानी याज्ञवल्क्यकूं यहकहताभया ॥ हेयाज्ञवल्क्य तूं
आपकूं सर्वसेंअधिकब्रह्मज्ञानीमानताहै क्यादूसरेब्राह्मणब्रह्मिष्ठनहींहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआश्वल ब्रह्मिष्ठकूं हमवारंवार नमस्कारक
रतेहैं ॥ आश्वलउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य जबतूंब्रह्मवेत्ताकूं नमस्कारकरताहै तबसर्वब्रह्मिष्ठब्राह्मणोंके वासते प्राप्तभयीगौवोंकूं तूंआपने

ग्रहविषे किसवासतेलेजाताभयाहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेआश्वल स्वर्णसहितगोवोंकूं देखकरि मेरेमनविषे अभिलाषाउत्पन्नभयी या
तेंहीमैंगोवोंकूं आपनेग्रहविषेलेगया ॥ राजादेनेवालाहै मै लेजानेवालाहूं ब्राह्मणोंकूं अकारणक्रोध किसवासतेउत्पन्नभयाहै ॥ औरध
नकूं यहब्राह्मणराजासेंग्रहणकरें हेआश्वल तुमयाराजासें औरधनकूंग्रहणकरो मैवारणनहींकरता ॥ यातेंब्राह्मण क्रोधकिसवासतेकरते
हैं ॥ जैसेअग्निमै आहुतिकेगेरनेसें अग्निप्रज्वलितहोवेहै ॥ तैसेयाज्ञवल्क्यकेवचनकूं श्रवणकरि आश्वलमहान्क्रोधकूं प्राप्तहूआवादक
रताभया ॥ सोआश्वल कर्मसंबंधीअनेकप्रश्नोंकूंकरताभया इति ॥ पश्चात् आर्त्तभाग ग्रहऔरअतिग्रहविषयकप्रश्नकरताभया ॥
औरमरणकालमैंपुरुषके वागादिकजबलीनहोवेहैं तबपूर्वशरीरकूंत्यागकरि किसकूं आश्रयकरिके दूसरेशरीरकूं पुरुषग्रहणकरेहै ॥
ऐसेप्रश्नोंकूंश्रवणकरि तबयाज्ञवल्क्यमुनि उत्तरदेतेभये ॥ इंद्रियग्रहहैं औरविषयअतिग्रहहैं ॥ जैसेसमुद्रविषे प्राप्तभयेपुरुषकूं म
करादिकग्रह भक्षणकरेहैं औरतिनमकरादिकोंकूं अतिग्रहरूपतिमिंगिलादि भक्षणकरेहैं ॥ तैसेसंसाररूपसमुद्रमै नेत्रश्रोत्रादिरूपग्र
ह पुरुषकूं आपनेआधीनकरेहैं ॥ तिनग्रहरूपइंद्रियोंकूं रूपादिविषयरूपअतिग्रह आपनेआधीनकरेहैं ॥ औरदूसरेशरीरकेग्रहण
कानिमित्त कर्मकूंकथनकरा ॥ हेआर्त्तभाग पुण्यकेकरणेहारापुरुष देवादि उत्तमयोनियोंकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ पापकेकरणेहारापुरुष
श्वानशूकरादि नीचयोनियोंकूं प्राप्तहोवेहै इति ॥ पश्चात् भुज्युनामकब्राह्मण याज्ञवल्क्यसें यहपूछतभया ॥ अश्वमेधनामकयागके
करणेहारे पुरुष याशरीरकूं त्यागकरि कहांप्राप्तहोवेहैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेभुज्यो इंद्रादिकदेवतावोंकीकृपासें अश्वमेधकरणेहारेपुरु
ष याब्रह्मांडसेंबाह्य सूत्रात्माकूं प्राप्तहोवेहैंइति ॥ ऐसेसंसारमैहोनेहारे कर्मफलकीअवधिकूं निरूपणकरिके अबवास्तवब्रह्मस्वरूपके
रूपणवासते अध्यायकाशेषहै ॥ प्रथमचतुर्थउषस्तब्राह्मणमै अपरोक्षसाक्षीआत्मासें ब्रह्मकाअभेदनिरूपणकराहै ॥ उषस्तउवा
याज्ञवल्क्य जैंसेकोईपुरुष गौकाशृंगग्रहणकराइकरि गौकाउपदेशकरे जोयहगौहै ॥ तैसेतूंमेरेतांई आत्माकाअपरोक्ष

जोयहआत्माहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउषस्त यहजडप्राण जाआत्माकीचेतनतासें चेष्टाकरेहैं ॥ तथारूपादिकोंकूं नेत्रादिग्रहणकरे
हैं ॥ यहसर्वकेअंतरआत्मादेहइंद्रियादिकोंकी चेष्टाकरानेवालाही ब्रह्मरूपहै ॥ अतोऽन्यदार्त्तं ॥ अर्थयह ॥ हेउषस्त याअंतरब्रह्मात्मासें
अन्यनामरूपप्रपंच आर्त्तहै नामपीडितहै ॥ अर्थयहमिथ्याहैइति ॥ पूर्वचतुर्थब्राह्मणमें ब्रह्मविद्याकही ॥ अबजीवन्मुक्तिसुखकीप्राप्तिवा
सते संन्याससहितब्रह्मविद्याका यापंचमब्राह्मणमें कथनकरेहैं ॥ कहोलनामकब्राह्मण यहप्रश्नकरेहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य क्षुधापिपासा शो
कमोह जरामृत्यु इनषट्ऊर्मियोंसहितजीवात्माकी सर्वधर्मातीतशुद्धब्रह्मकेसाथ एकताकैसेंहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेकहोल क्षुधापि
पासा प्राणोंकाधर्महैं ॥ शोकमोहमनकाधर्महैं ॥ जरामृत्यु यास्थूलशरीरकाधर्महैं ॥ साक्षीआत्मा सर्वधर्मसेंरहितहै ॥ यातेंही याप्रत्य
गात्माकी ब्रह्मसेंएकताबनेहै ॥ याब्रह्मात्माकूं जानकरि सर्वइच्छारूपएषणाकूंत्यागकरि विद्वान्संन्यासकूंग्रहणकरेहैं ॥ जिनएषणावों
का ज्ञानीत्यागकरेहैं तेएषणातीनप्रकारकीहैं ॥ एकपुत्रएषणाहै ॥ दूसरीवित्तएषणाहै ॥ तीसरीलोकएषणाहै ॥ यालोककी तथास्व
र्गादिलोकोंकी इच्छाकानामलोकएषणाहै ॥ इनसर्वएषणावोंकूं त्यागकरि संन्यासाश्रमकूंग्रहणकरतेहूएविद्वान् भिक्षाअटनसें शरीरनि
र्वाहकूंकरेहैं ॥ औरहेकहोल पुत्र पशु गृह क्षेत्र धन इनसर्वपदार्थोंकानामवित्तहै ॥ यातेंवित्तएषणा तथालोकएषणा यहदोनों
एषणाहैं ॥ ऐसीएषणासें निवृत्तहूएवामदेवादिविद्वान् जीवन्मुक्तिके परमानंदकूंप्राप्तहोतेभये ॥ यातेंअबकेमुमुक्षुजनोंकूंभी सर्वए
षणाकेत्यागपूर्वक संन्यासाश्रमकूं ग्रहणकरिके आत्माकेश्रवणमननिदिध्यासनकर्त्तव्यहैं ॥ तिनश्रवणादिकोंसें अपरोक्षज्ञानकूंप्राप्त ॥११७॥
होवेहै ॥ ताअपरोक्षज्ञानकूं प्राप्तहूआविद्वान् कृतार्थताकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयाब्रह्मात्मारूपज्ञानीसेंभिन्न नामरूपप्रपंचमिथ्याहै ॥ और
मिथ्याभूत क्षुधापिपासादिअनात्मधर्मोंसें निर्विकारअसंगआत्माका संबंधनहींहै ॥ यातेंताअसंगप्रत्यगात्माकी ब्रह्मकेसाथ एकता
बनेहै इति ॥ पूर्वनिरूपणकरे सर्वांतरआत्माकेनिर्णयवासते षष्ठगार्गीब्राह्मणकाआरंभहै ॥ वचक्नुऋषिकीपुत्री गार्गीनामाब्रह्मविदुषी

तायाज्ञवल्क्यकूं यहपूछतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य यहनियमहै ॥ जोजोकार्यहै सोसोआपनेकारणमै स्थितहोवेहै ॥ जैसेपटरूपकार्य आपनेतंतुरूपकारणमैस्थितहोवेहै ॥ तैसेब्रह्मांडरूपपृथिवी आपनेकारणरूप जलोंमै स्थितहोवेहै ॥ तिनजलोंका आश्रयकौनहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी तेजलवायुमैही तंतुवोंविषेपटकीन्यांई ओतप्रोतहोइकरिस्थितहैं ॥ इंधनादिआश्रयसैंविना अग्निप्रतीतहोवेनहीं यातेंअग्निरूपआश्रयकूं त्यागकरि वायुकूंहीपृथिवीकाआश्रयकथनकरा ॥ गार्गीप्रश्नकरेहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य वायुकिसमैओतप्रोतहै ॥ पक्षीआदिकोंकेगमनकाआश्रय जोअंतरिक्षलोकहै ताअंतरिक्षलोकमैही वायुओतप्रोतहै ॥ अंतरिक्षलोकका आश्रय गंधर्वलोकहै ॥ गंधर्वलोककाआश्रय आदित्यलोकहै ॥ आदित्यलोककाआश्रय चंद्रलोकहै ॥ चंद्रलोककाआश्रय नक्षत्रलोकहै ॥ नक्षत्रलोककाआश्रय देवलोकहै ॥ देवलोककाआश्रय इंद्रलोकहै ॥ गंधर्वलोकसैंलेकरियाइंद्रलोकपर्यंत स्थूलभूतोंकी सूक्ष्मअवस्थाजाननीयोग्यहैं ॥ तेअवस्था पूर्व अवस्थाकीअपेक्षासैं सूक्ष्महैं उत्तरउत्तरअवस्थाकीअपेक्षासैं स्थूलहैं ॥ इंद्रलोककीजनकजे भूतोंकीसूक्ष्मावस्थाहैं तेअवस्थाही इंद्रलोककाआश्रयहैं ॥ इंद्रलोककीआश्रयजाअवस्थाहै तिसकानाम प्राजापतिलोकहीश्रुतिमैकह्याहै ॥ प्रजापतिपदकाअर्थ स्थूलभूतरूपविराट्है ॥ तिसस्थूलभूतरूप विराट्का अपंचीकृत सूक्ष्मभूतआश्रयहैं ॥ तिनअपंचीकृतसूक्ष्मभूतोंका सूत्रात्मरूप ब्रह्मलोकनामसैं कथनकराहै ॥ गार्गीनेपूर्वपूर्वके आश्रयकाप्रश्नकरा याज्ञवल्क्यनेउत्तरउत्तरआश्रयवर्णनकरे ॥ पश्चात्गार्गी तर्करीतिसैं तिसब्रह्मलोकका आश्रयपूछतीभयी ॥ शास्त्रगम्यसूत्रात्माकूं तर्करीतिसैंपूछनेवालीगार्गीकूं याज्ञवल्क्ययहकहतेभये ॥ हेगार्गी तुमअतिप्रश्नमतिकरो ॥ शास्त्रगम्यसूत्रात्माकूं अबीतुम तर्करीतिसैंपूछेगी तबतेराशिर पृथिवीपरगिरजावेगा ॥ ऐसेश्रवणकरि भयभीतहूईगार्गी तूष्णींहोतीभयीइति ॥ सप्तमब्राह्मणमै शास्त्ररीतिसैं सूत्रात्मातथाअंतर्यामीकानिर्णयकराहै ॥ उद्दालकप्रश्नकरेहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य यहपृथिवीलोक तथापरलोक तथा ब्रह्मासैंलेकरिपिपीलिकापर्यंत सर्वभूत जासूत्रकरिकेग्रथितहैं तासूत्रकूंतूंजानताहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक तासूत्रकूं मैजानता

हूं ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य जबीतूंजानताहैं तौकिसवासतेकहतानहीं व्यर्थहीआपनीवाचालतासें तूंकहताहैं मैजानताहूं मैं
जानताहूं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेउद्दालक श्रवणकर ॥ सूत्रात्मरूप समष्टिवायुकरिकेही यहलोक तथापरलोक ब्रह्मादिसर्वभूत ग्रथि
॥ ११ ॥ तहोइरहेहैं ॥ जबप्राणरूपवायु याशरीरसेंनिकसेहै तबयहशरीर नाशकूंप्राप्तहोवेहै ॥ उद्दालकउवाच ॥ हेयाज्ञवल्क्य अबअंतर्यामीकानि
रूपणकर ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ यःपृथिव्यांतिष्ठन् पृथिव्याअंतरो यंपृथिवीनवेद यस्यपृथिवीशरीरं यःपृथिवीमंतरोयमयति एषत आत्मा
अंतर्याम्यमृतः ॥ अर्थयह ॥ हेउद्दालक जोपृथिवीमैंस्थितहै सोअंतर्यामीहै ॥ पृथिवीमैंस्थिततौ घटादिकभीहैं क्याघटादिकहीअंतर्या
मीहैं ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासतेपृथिवीके अंतरहै यहकह्या घटादिकपृथिवीकेबाह्यहै अंतर्यामी पृथिवीके अंतरहैपृथिवीके अंतरतौ पृ
थिवीअभिमानीदेवताहै क्यापृथिवीअभिमानीदेवताही अंतर्यामीहै ॥ याशंकाकीनिवृत्तिवासते पृथिवीदेवताजाकूं जानेनहीं यहक
ह्या ॥ ताअंतर्यामीकाशरीरकौनहै ॥ तहांउत्तरकहैहैं यस्यपृथिवीशरीरं जाअंतर्यामीका पृथिवीहीशरीरहै ॥ अंतर्यामीजिसकूंप्रेरणकरेहै
ताप्रेर्यसेंभिन्नप्रेरकरूप अंतर्यामीकाशरीरनहींहै ॥ ऐसेअंतरवर्त्तमानहूआजोअंतर्यामी पृथिवीकूं तथापृथिवीअभिमानीदेवताकूं प्रेरणक
रेहै ॥ हेउद्दालक सोयहअंतर्यामी तेराआत्माहै ॥ औरअंतर्यामीआत्मा अमृतनाम कूटस्थतथाआनंदस्वरूपहै ॥ ऐसेही जोअंतर्यामी
जलोंमैंस्थितहै जलअभिमानीदेवता जाकूंजानेनहीं इत्यादिसर्वपदार्थोंविषे पृथिवीमैंकहीरीतिसें सोअर्थसर्व घटायलेना ॥ अग्नि
अंतरिक्ष वायु स्वर्ग आदित्य दिशा चंद्र तारा आकाश तमः तेजसामान्य इनअधिदैवपदार्थोंमै अंतर्यामीकह्या ॥ अब अधिभूत
पदार्थोंविषे अंतर्यामीका निरूपणकरेहैं ॥ ब्रह्मादिपिपीलिकापर्यंत सर्वभूतोंविषे अंतर्यामीस्थितहै सर्वभूत जाअंतर्यामीकूंजानेनहीं ॥ पृ ॥११८॥
थिवीमैंकहीरीति सर्वत्रइनपदार्थोंविषे घटायलेनी ॥ अबअध्यात्मपदार्थोंमै अंतर्यामीकानिरूपणकरेहैं ॥ जोअंतर्यामीप्राणमैंहै तथावाक्
चक्षु श्रोत्र मन त्वक् विज्ञान रेत इत्यादिसर्वजगतमैं जोअंतर्यामीव्यापकहै ॥ जोअंतर्यामी नेत्र श्रोत्र मन बुद्धिआदिकोंकाअविष

यहै ॥ तथानेत्र श्रोत्र मन बुद्धिके साथमिलकरि द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञाताहोवैहै ॥ औरवास्तवसें याअंतर्यामीसें द्रष्टा श्रोतामंता विज्ञाता जीव भिन्ननहींहै ॥ यहअंतर्यामीही जीवभावकूं प्राप्तहूआ द्रष्टा श्रोता मंता विज्ञातादिरूपहोवैहैइति ॥ सप्तमउद्दालकब्राह्मणमैं सोपाधिकब्रह्मकानिरूपणकरा निरुपाधिकब्रह्मकेनिरूपणवासते यहअष्टमगार्गीब्राह्मणहै ॥ याज्ञवल्क्यकेशापकेभयसें गार्गीब्राह्मणोंसें आज्ञालेवैहै ॥ हेब्राह्मणा भगवंतः जबआप मेरेकूं आज्ञादेवो तबमैंदोप्रश्न याज्ञवल्क्यसें पूछतीहूं तिनमेरेदोनों प्रश्नोंकेउत्तरोंकूं जबयहयाज्ञवल्क्यकहदेवेगा तबतौ यायाज्ञवल्क्यकूं कोईजीतनेवालानहींहै ॥ जबीनहींकहेगा तबमेरेशापसें इसयाज्ञवल्क्यकामस्तक पृथिवीपर गिरेगा ॥ यातें तुमसर्वही मेरेकूं आज्ञादेवो ॥ ब्राह्मण आज्ञादेतेभये ॥ तबगार्गीयाज्ञवल्क्यकूं यहकहतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य बहुलताकरिके पुरुषोंसें स्त्रीकीबुद्धि अधिकहोवैहै ॥ तिनस्त्रीयोंमैभी मेरेकूं सरस्वतीजैसा तुमनेजानना ॥ मैंतौयहजानतीहूं जोपुरुष आपनेहृदयमैं साक्षीरूपसेंस्थित आत्माकूंनहींजानता सोपुरुषनपुंसकहै पुरुषनहीं ॥ औरजोपुरुष आत्मज्ञानसेंरहितहै सोईस्त्रीहै ॥ आत्मज्ञानकरियुक्त मैंस्त्रीनहींहूं ॥ अज्ञानीपुरुष स्त्रीयोंमैभी निषिद्धस्त्रीवेश्यारूपहैं ॥ जैसेवेश्याकूं अनेकपामरपुरुष भोगतेहैं तैसेकामक्रोधलोभमोह अहंकारादिरूप अनेकपुरुष अज्ञानी पुरुषरूपस्त्रीकूं भोगतेहैं ॥ औरमैंतो दुःसहयायौवनअवस्थामै कामक्रोधादिकोंसेंरहितहूईस्थितहूं ॥ यातें मैंस्त्रीनहीं किंतुपुरुषहूं ॥ आत्मबोधसहितही पुरुष होवैहै ॥ आत्मबोधशून्यतौ वेश्याजैसीस्त्रीहै ॥ औरहेयाज्ञवल्क्य. वास्तवसेंतौ स्त्रीपुरुष नपुंसकयहभेदही अज्ञानकृतहै ॥ जैसेएकनट आपनीमायासें अनेकरूपोंकूंधारणकरेहै ॥ तैसेएकहीआत्मदेव आपनीमायाकरि अनेकरूपोंकूं धारणकरेहै ॥ परंतु वास्तवसेंतौ अद्वितीयब्रह्महै ॥ जैसेस्वप्नमैंएकहीद्रष्टा आपनीनिद्राशक्तिकरि हस्ती सिंह पुरुष स्त्री आदिरूपसें प्रतीतहोवैहै ॥ तैसेएकहीब्रह्मदेव आपनीमायाशक्तिकरि अनेकरूपसें प्रतीतहोवैहै ॥ हेयाज्ञवल्क्य जैसेकाशीकाराजा दिवोदासकापुत्रप्रतर्दन वाजनकराजा आपनेधनुषमै दोबाणोंकूं आरोपणकरिके क्रोधसेंशत्रुवोंपरचलावैं ॥ तैसेमैंगार्गी दो

प्रश्नरूपीबाणोंकूं आपनीवाणीरूपीधनुषमैं आरोपणकरिकै चलातीहूं ॥ तिनबाणरूपीप्रश्नोंकूं सहारो अर्थयहतिनप्रश्नोंकाउत्तरदे
वो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी तुमप्रश्नकर ॥ गार्गीकहतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य पृथिवीतथास्वर्गकेमध्यमैं होनेहारेसर्वपदार्थ तथापृ
॥ १२ ॥ थिवीकेनीचे तथापृथिवी औरस्वर्गलोक तथाभूतभविष्यत्वर्त्तमान यातीनकालमैंहोनेहारेपदार्थ इत्यादिसर्वपदार्थ किसमैंओतप्रोत
हैं ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी अव्याकृतआकाश ईश्वर अंतर्यामीनारायण इत्यादिजाकेअनंतनामहैं ॥ तामायाशबलईश्वरमैंही
सूत्रात्मापर्यंत सर्वजगत्स्थितहै ॥ ऐसेजबीयाज्ञवल्क्यने प्रथमप्रश्नकाउत्तरदीया तबगार्गी यहकहतीभयी ॥ हेयाज्ञवल्क्य तेरेतां
ई मेरानमस्कारहै ॥ अबदूसरेप्रश्नकेउत्तरकूंकहो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेगार्गी तुमदूसराप्रश्नकरो ॥ हेयाज्ञवल्क्य जिसअ
व्याकृत आकाशमैं सर्वनामरूपप्रपंच ओतप्रोतहै सोअव्याकृतआकाश किसमैंओतप्रोतहै ॥ गार्गीकेमनमैं यहअभिप्रायथा ॥
याज्ञवल्क्य जबीउत्तरकहेगा तबशुद्धब्रह्मकूंवाणीकाअविषयहोनेसें अवाच्यवचनरूपदोषहै ॥ उत्तरनहींकहेगा तबउत्तरकी अस्फूर्तिरूप
अप्रतिभानामक निग्रहस्थानकूंप्राप्तहोवेगा ॥ जिसदोषकेप्राप्तहोनेसें उत्तरदाता जीत्याजावे ताकूंनिग्रहस्थानकहेहैं ॥ सोयाज्ञवल्क्य
उत्तरकहेगा तबभीजीत्याजावेगा ॥ नहींकहेगा तबभीजीत्याजावेगा ॥ दोनोंप्रकारोंसें गार्गी आपनाजयमानतीहूई पूछतीभयी ॥
तबयाज्ञवल्क्यभी तागार्गीकेअभिप्रायकूं जानतेहूए यहउत्तरदेतेभये ॥ स्थूलतासूक्ष्मतादिधर्मोंसेंरहित जोअक्षरब्रह्महै ताशुद्धब्रह्ममैंही
अव्याकृतआकाश ओतप्रोतहै ॥ ऐसेब्रह्मवेत्ताकहेहैं ॥ ऐसेकहनेसें दोनोंदोषोंका याज्ञवल्क्यने निवारणकरा ॥ प्रथमअवाच्यवचनदोषतौ ॥११९॥
मेरेकूंतबप्राप्तहोता जबकेवलमैंहीकहता ॥ सर्वब्रह्मवेत्ताऐसेकहेहैं यातेंअवाच्यवचनरूप प्रथमदोषनहीं ॥ स्थूलतादिसर्वधर्मोंसेंर
हित अक्षरब्रह्मकूं अव्याकृतआकाशका आश्रयकथनकरा यातें अप्रतिभानामक दूसरादोषनहीं ॥ अबता अव्याकृतआकाशके अधि
ष्ठानरूपअक्षरकाही निरूपणकरेहैं ॥ हेगार्गी यहअक्षरनामनाशसेंरहित तथाव्यापक जोब्रह्महै सोह्रस्व दीर्घ लोहित स्नेह छाया तम

इनसर्वसेंरहितहै तथाइनसर्वसेंभिन्नहै ॥ पृथिवीआदिपंचभूतोंसें तथाशब्दस्पर्शादिकोंसें रहितहै तथातिनपृथिवीआदिकोंसेंभिन्नहै ॥
हेगार्गी यहअक्षरआत्मा भोक्तृत्वभोग्यत्वादिकधर्मोंसेंरहितहै ॥ औरयहशुद्धअक्षरही आपनीमायाशक्तिसाथमिलकरि सूर्यचंद्रादिकों
कूं आपनीआज्ञाविषे चलावेहै ॥ हेगार्गी याअक्षरब्रह्मकीआज्ञाविषे स्वर्गलोक तथापृथिवीलोक इत्यादिलोकस्थितहैं ॥ याअक्षरब्रह्मकी
आज्ञाविषे निमेष मूहूर्त्त दिन रात्रि पक्ष मास ऋतु वर्ष युग कल्प इत्यादिकालस्थितहै ॥ हेगार्गी पर्वतोंसेंनिकसकरि पूर्व पश्चिम उत्तर
दक्षिणादिदिशावोंमैं चलनेहारी श्रीगंगायमुना नर्मदादिनदीयां याअक्षरब्रह्मकी आज्ञामैंवर्त्तेहैं ॥ और हेगार्गी फलप्रदाता याअक्षरआ
त्माकूं मान्नकरिही दातापुरुष अन्न वस्त्र गौ स्वर्णादिकोंका दानकरेहैं ॥ औरताअक्षरकूं मानकरिकेही श्रेष्ठपुरुष दातापुरुषकीस्तुतिकरे
हैं ॥ औरयजमानपुरुषके आश्रयहोइकरि देवता पितर आपनाजीवनकरेहैं ॥ सोदेवतादिकोंका यजमानकेआधीनहोनाभी ता
अक्षरकी आज्ञासें जानना ॥ महान्शक्तिवालेइंद्रादिकभी यजमानकेआधीनही परमेश्वरनेरचेहैं ॥ हेगार्गी जोपुरुष याअक्षरकेज्ञानवि
ना यालोकमैं अग्निहोत्रयज्ञ तप दानादिअनेककर्मकरेहै तिनसर्वकर्मकाफल विनाशीहीउत्पन्नहोवेहै ॥ योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वा
ऽस्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष याअक्षरकेजानेविना यालोकसें मृत्युकूंप्राप्तहोवेहै सोपुरुष कृपणहैनाममहा
दीनहै ॥ औरजोपुरुषयाअक्षरब्रह्मकूंजानकरि याशरीरकात्यागकरेहै ॥ सोविद्वान्ब्राह्मणहोवेहै ॥ अर्थयह ब्रह्मस्वरूपहूआमुक्तहोवेहै ॥
हेगार्गी यहअक्षर नेत्र श्रोत्र मन बुद्धिआदिकोंका अविषयहूआभी आपद्रष्टाश्रोतामंताविज्ञातादिरूपहै ॥ चैतन्यरूपहोनेसें द्रष्टृत्वादि
क मुख्यआत्माविषेहीहैं ॥ नेत्रादिकोंविषेतौ आत्माकेआधीनही रूपादिकोंकेदर्शनकासामर्थ्यहै ॥ औरहेगार्गी याअक्षरसेंभिन्न द्रष्टा
कोईनहींहै ॥ तथायाअक्षरसेंभिन्न श्रोतामंताविज्ञातानहींहै ॥ याब्रह्मात्मारूपअक्षरमैंही अव्याकृतआकाश ओतप्रोतहोइकरिस्थितहै ॥
अर्थयह मायाकाआश्रय निर्विभाग शुद्धचितिहै ॥ ऐसेयाज्ञवल्क्यसें श्रवणकरि तायाज्ञवल्क्यकूं गार्गीनमस्कारकरतीभयी ॥ और

सागार्गी ब्राह्मणोंकूं यहकहतीभयी ॥ हेब्राह्मणा मैंसत्यकहतीहूं तुमसर्वश्रवणकरो ॥ या याज्ञवल्क्यसें तुमनेव्यर्थहीविवादकाआरंभ
कराहै ॥ जबतुमया याज्ञवल्क्यमुनिकेतांई नमस्कारकरोगे तबहीतुम कल्याणकूं प्राप्तहोवेगे ॥ औरइसयाज्ञवल्क्यके जीतनेकीइच्छा
॥१३॥ कबीकरणीनहीं यहतौ सर्वज्ञपुरुषहै ॥ ऐसीअनेकप्रकारकी याज्ञवल्क्यकीस्तुतिकरतीहूई सागार्गी पश्चात् तूर्णींहोइजातीभयी ॥
गार्गीकेवचनोंकूं श्रवणंकरि सर्वब्राह्मण याज्ञवल्क्यकेतांई नमस्कारकरतेभये ॥ परंतुएकशाकल्यनामब्राह्मणनमस्कारकूं नकरताभ
या ॥ ऐसे या अष्टमगार्गीब्राह्मणमें अक्षरब्रह्मका पारमार्थिकरूपवर्णनकराइति ॥ पूर्वअंतर्यामीब्राह्मणमें सूर्यचंद्रादिदेवतावोंका प्रेर
कअंतर्यामी परमात्माहै यहकह्याथा ॥ तिनप्रेरणेयोग्यदेवतावोंके विस्तार संकोचद्वारा तापरमेश्वरके निर्णयवासतेही यहनवमशाक
ल्यब्राह्मणहै ॥ देवतावोंकीसंख्याके प्रश्नोंकेउत्तर याज्ञवल्क्यमुनिनेसर्वकहे ॥ परंतुसोशाकल्य कालकरिप्रेराहूआ प्रश्नोंसें उपरामन
होताभया ॥ अनेकप्रश्नोंकेउत्तर देते पश्चात् याज्ञवल्क्यताशाकल्यकूं यहकहतेभये ॥ हेशाकल्यतुमप्रश्नोंसेंउपरामहोइजावो ॥ जबशा
कल्यनिवृत्तनभया तबयाज्ञवल्क्ययहकहतेभये ॥ हेशाकल्य जबसूर्यभगवान्सें मैंनेविद्याग्रहणकरीथी तबतासूर्यभगवान्ने मेरेकूंयह
कह्याथा ॥ जोपुरुष तेरेमैंस्थितमेरी विद्याका तिरस्कारकरेगा तिसकामैंशिरकाटदेवूंगा ॥ पुनःमैंने नानावरोंकूंलेकरि तासूर्यभगवा
नकूं क्षमाकरवाई ॥ पश्चात्सूर्यभगवान् यहअवधिकरतेभये ॥ हेयाज्ञवल्क्य जोपुरुष वीस २० प्रश्नपर्यंतभी निवृत्तनहोगा तादुरा
त्माका मैंशिरकाटदेवूंगा ॥ तबमैंतासूर्यभगवान्सें भयभीतहूआतूर्णींहोइजाताभया ॥ यातेंतुमारामृत्युनहोवे ॥ ऐसेकहनेसेंभीशाक
ल्य द्वेषकूं नत्यागताभया ॥ तबअंतमैंयाज्ञवल्क्यने यहवचनकहा ॥ तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामि ॥ अर्थयह ॥ हेशाकल्य तिस उपनि ॥१२०॥
षदोंकरि जाननेयोग्य आत्माकूं मैंतेरेसेंपूछताहूं ॥ जबीतुमयासर्वकेअधिष्ठानआत्माकूं नहींकहेगा तबतेरामस्तक पृथिवीपरगिरजावे
गा ॥ जबशाकल्य उत्तरकहनेकूं समर्थनहींभया तबशाकल्यकामस्तक पृथिवीपरगिरगया ॥ तबसर्वब्राह्मणभयभीतहोइजातेभये ॥

शाकल्यकीहीसर्वलोकनिंदाकरतेभये ।। तबयाज्ञवल्क्य ब्राह्मणोंकूं यहकहतेभये तुमसर्वही प्रश्नकरो मैं उत्तरदेवूंगा ।। जबकिसी
ब्राह्मणने प्रश्ननहींकरा ।। तबयाज्ञवल्क्य आपहीप्रश्नकरतेभये ।। विस्तारभयसें याशाकल्यकेप्रश्न तथायाज्ञवल्क्यकेप्रश्नलिखेन
हीं इति ।। ।। इतिबृहदारण्यकेपंचमोऽध्यायः ।। ५ ।। ।। ।। ॐ नमः स्वप्रकाशचिदात्मने ।। पूर्वपंचमाध्या
यमैं जल्पकथासें ब्रह्मकानिरूपणकरा अबषष्ठाध्यायमैं वादकथासें. ताब्रह्मकानिरूपणकरेहैं ।। पंचमाध्यायकेअंतमैं विज्ञानानंदरूपब्र
ह्मकानिरूपणकराहै ।। ताब्रह्मकी प्राणवागादिकोंके अधिष्ठातावायुअग्निआदिकोंमे ब्रह्मदृष्टिरूपउपासनाके विधानवासते प्रथमदोब्रा
ह्मणहैं ।। प्रथमब्राह्मणकानाम षडाचार्यब्राह्मणहै ।। दूसरेब्राह्मणकानाम कूर्चब्राह्मणहै ।। विद्याकीस्तुतिवासते कथादिखावेहैं ।। जब
याज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरि शाकल्यमृत्युकूंप्राप्तभया ।। औरसारात्रिव्यतीतभयी प्रातःकालविषे राजाजनक आपनीसभामैविराजमान
भया ।। तथायाज्ञवल्क्यमुनि अत्यंतसत्कारकूंप्राप्तहूए तासभामैविराजमानहोतेभये ।। तबराजाजनक नम्रतासहितहूआ याज्ञवल्क्यमु
निकूं यहकहताभया ।। हेभगवन् आपसदृशमहात्मा केवलहमलोकोंके उद्धारवासतेही यापृथिवीमंडलमैविचरतेहैं ।। आपकृपाकरि मेरे
कूंउपदेशकरो जिसकूंग्रहणकरि. मैमोक्षकूंप्राप्तहोवूं ।। याज्ञवल्क्यउवाच ।। हेराजन् तेरेतांईजोऋषियोंनेपूर्व उपदेशकराहै सोमेरेकूं
श्रवणकरावो पश्चात्मैतेरेतांईकहूंगा ।। तबराजा जोऋषियोंने देवतावोंकीउपासनारूपउपदेश कराथा ताकूंकहताभया ।। याज्ञवल्क्य
ऊनउपासनावोंमे न्यूनताकहतेहूए ताउपासनाकीपूर्त्तिकूं कथनकरतेभये ।। तबराजाजनक गुरुदक्षिणा एकसहस्रगौदेनेकूं कहता
भया ।। याज्ञवल्क्य यहकहतेभये ।। हेराजन् मेरेकूंआपनेपिताने यहउपदेशकराथा जोशिष्यकेकृतार्थहूएविना गुरुदक्षिणाग्रहण
करणीनहीं ।। ऐसेलोभरहितयाज्ञवल्क्यमुनिकूं देखकरिराजा आपनेकूर्चनामसिंहासनकूं त्यागताहूआ दंडवत्प्रणामकरिके तायाज्ञव
ल्क्यमुनिकूं यहकहताभया ।। हेमुने तेरेतांईमेरावारंवारनमस्कारहै ।। संसारसमुद्रविषे डूबरहाजोमैहूं तिसमेरेकूं आपकृपाकरि शीघ्रबा

हिरनिकासो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् यहइंद्ररूपआत्मा जागरितअवस्थामै दक्षिणनेत्रमैस्थितहोवेहै ॥ औरबुद्धिरूपइंद्राणी वा
मनेत्रमैस्थितहोवेहै ॥ जागरितअवस्थामै नेत्रश्रोत्रादिइंद्रियोंसें नानाप्रकारकेभोगोंकूं सोइंद्रभोगताहूआ नाडीरूपद्वारकरि स्वप्नकूंअनु
॥ १४ ॥ भवकरेहै ॥ तथासुषुप्तिमै परमानंदकूं प्राप्तहोवेहै ॥ औरवास्तवसें यहआत्मा स्थूलसूक्ष्मसंघातसेंरहितहै ॥ यहआत्मा कर्मइंद्रियोंकरि
ग्रहणहोवेनहीं ॥ देहइंद्रियादिकोंकेनाशहोनेसें आत्माकानाशहोवेनहीं ॥ औरयाअसंगआत्माका किसीकेसाथवास्तवसेंसंबंधनहींहै ॥
हेजनक याआत्माकूंजानकरि तूंअभयपदकूंप्राप्तभयाहैं ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् आपमेरेकूंअभयरूपताका बोधनकरतेहो ॥ यातेंआ
पकेतांई मेरावारंवारनमस्कारहै ॥ मेरेविदेहदेशोंकूं आपभोगवासतेग्रहणकरो ॥ औरयहमेरादेहभी आपकीसेवाविषे सर्वदातत्पर
रहे ॥ मेरेकूंआपनादासजानकरि आपनेचरणोंविषेराखो ॥ ऐसेवचनकूंश्रवणकरि याज्ञवल्क्यमुनि आपनेआश्रममै चलनेकासंकल्पक
रतेहूए राजाजनककूं यहकहतेभये ॥ हेराजन् यहदेश तथाधन तथातुमाराशरीरयह सर्वहीहमारेहैं ॥ परंतुहमारीआज्ञासें तु
मयादेशकाराज्यकरो तुमहमारेदासहो तुमारी इसीप्रकारकीश्रद्धाभक्ति सर्वदाबनीरहे ॥ ऐसेकथनकरिकै याज्ञवल्क्यमुनितो आपनेआश्र
ममैजाते आवतेभये ॥ कालपाइकरि राजाजनक अग्निहोत्रमैतत्परहूआ ताआत्मज्ञानकूं विस्मरणकरताभया ॥ याज्ञवल्क्यमुनिभी लोकों
सें यहश्रवणकरतेभये तथादिव्यदृष्टिसें यहजानतेभये जोराजाजनकनेआत्मज्ञानकूं विस्मरणकराहै ॥ तबयाज्ञवल्क्यमुनि आपनेमनमे य
हविचारकरतेभये ॥ अबजनककूं जातेही आत्मउपदेशकरेंगे ॥ औरव्यवहारकीवार्त्ता करणीनहीं ॥ ऐसेविचारकरि जनककीसभा ॥१२१॥
मै सोयाज्ञवल्क्यमुनि प्राप्तहोतेभये ॥ आगेराजाजनकने आपनीसभामै त्रैवर्णिकपुरुषोंकूं यहकह्याथा ॥ जोतुमअग्निहोत्रविषे प्रश्नकरो
मैसर्वकेउत्तरदेवूंगा ॥ तबयाज्ञवल्क्यमुनि अग्निहोत्रमै नानाप्रकारकेप्रश्नकरतेभये ॥ राजाजनक संपूर्णप्रश्नोंकेउत्तरोंकूंकहताभया ॥
तबराजाकीबुद्धिकीकुशलताकूं देखकरि परमप्रसन्नहूए याज्ञवल्क्यमुनि वरदेतेभये ॥ राजाजनक कामप्रश्नरूपवरकूं मांगताभया ॥

जैसे शाकल्य बहुतप्रश्नकरणेसें मृत्युकूंप्राप्तभया ॥ तैसेबहुतप्रश्नोंकेकरणेसें यायाज्ञवल्क्यमुनिकेशापकरि मैभीमृत्युकूं प्राप्तनहींहोवूं ॥ याअभिप्रायसें प्रश्नसमुदायरूपवरकूं सोजनकराजामांगताभया ॥ ऐसेकामप्रश्नरूपीवरकूं प्राप्तहूआ राजाजनकप्रश्नकरताभया ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् यहस्थूलसूक्ष्मसंघातरूपपुरुष किसप्रकाशकज्योतिकरिके अनेकव्यवहारोंकूंकरेहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् याआदित्यरूपज्योतिकरिके यहसंघातरूपपुरुष आसनादिव्यवहारकरेहै ॥ तथायाआदित्यकरिकेही देशांतरोमैगमनकरेहै तथागमनकरिकेकर्मकरेहै ॥ तथादेशांतरोंसें आगमनकरेहै ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् जबसूर्यअस्तहोवेहै तबयासंघातका प्रकाशक ज्योतिकौनहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेजनक तबचंद्रमाकरिके यापुरुषका पूर्वकह्यासर्वव्यवहारसिद्धहोवेहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् जबसूर्यचंद्रमादोनोंअस्तहोइजावें तबयापुरुषकाकौनज्योतिहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ तबअग्निही यासंघातकाज्योतिहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् जबसूर्यचंद्र यहदोनों अस्तहोइजावें औरअग्निशांतहोइजावे तबकौनज्योतिहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ तबवाग्हीज्योतिहै ॥ जाअंधकारमै आपनाहाथभीनहींदेखाजाता ताअंधकारमै दूसरेपुरुषकेकहनेसें पुरुष आसनादि सर्वव्यवहारकरेहैं ॥ यातेंसूर्यचंद्रअग्निइनतीनोंकरि जहांप्रकाशनहीं तहांवाग्रूपज्योतिसेंही व्यवहारहोवेहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् जास्वप्नअवस्थामै सूर्यादिक्याेंकाप्रकाशनहीं तहांकिसज्योतिकरिसर्वव्यवहारहोवेहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ तास्वप्नावस्थामै साक्षीआत्मारूपज्योतिकरिके सर्वव्यवहारसिद्धहोवेहै ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् देहइंद्रिय प्राण मन बुद्धिइनमै कौनज्योतिआत्माहै ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् देहइंद्रिय प्राण मन बुद्धिआदिकोंसेंभिन्न देहइंद्रियादिकोंकीचेष्टाकरानेवाला स्वयंज्योतिआत्माहै ॥ बुद्धिउपाधिकहोनेसें ताआत्माकूं विज्ञानमय भीकहेहैं ॥ सोविज्ञानमयआत्माही बुद्धिकेसाथमिलकरि लोकपरलोकमैतथाजागरितस्वप्नमै गमनआगमनकरेहै ॥ जैसेअग्निकरितपाये लोहके चतुष्कोणादिकेहोनेसें अग्निभी चतुष्कोणादिरूपप्रतीतहोवेहै ॥ ध्यायतीवलेलायतीव ॥ अर्थयह ॥ तैसेलोहप्रविष्टअग्निकीन्यांई

बुद्धिकेध्यानकरते आत्माभीध्यानकरतेकीन्यांई प्रतीतहोवेहै ॥ औरबुद्धिप्राणादिकोंकेचलनेसें आत्माभी चलतेकीन्यांईप्रतीतहोवेहै ॥
वास्तवसेंताआत्मामै ध्यानादि तथाचलनादिनहींहैं ॥ काहेते जोयहबुद्धिउपाधिकविज्ञानमयआत्मा जबजागरितमैहोनेहारे स्थूलशरीर
॥१५॥ केअभिमानकूं त्यागकरेहै ॥ तथातास्वप्नअवस्थामै अविद्यारचितजागरितकेपदार्थोंका त्यागकरेहै ॥ औरयहविज्ञानमय आपनेकर्मोंकेअ
नुसार पूर्वशरीरकेत्यागरूपमरणकूं प्राप्तहूआ अपूर्वशरीरकेसाथप्राणादिकोंकेसंयोगरूपजन्मकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताविज्ञानमयकेही दोस्थानहैं
एकतौयहदृश्यमानजन्महै दूसराभावीजन्महै ॥ औरतीसरास्वप्नस्थानरूपसंध्यहै ॥ तासंध्यरूपअवस्थामै स्थितहूआपुरुष याजन्मकेशुभा
शुभकूंदेखेहै ॥ तथाभावीजन्मकेशुभाशुभकूं देखेहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामै आपनेकर्मकेअनुसार स्वप्नकेदेहकूं रचकरि आपहीप्रकाशकरेहै ॥
अत्रायंपुरुषःस्वयंज्योतिर्भवति ॥ अर्थयह ॥ यास्वप्नावस्थामै यहआत्मा स्वयंज्योतिहीप्रकाशकहै ॥ आदित्यादिप्रकाशक स्वप्नअव
स्थामैहैंनहीं वागादिकउपसंहारकूंप्राप्तहोइरहेहैं ॥ औरमन आपहीविषयरूपकरि प्रणामकूं प्राप्तहोइरहाहै ॥ यातेंस्वप्नअवस्थामै आ
त्माकूं स्वयंज्योतिरूपसें वर्णनकराहै ॥ तास्वप्नअवस्थामैरथनहींहैं तथारथकेचलानेवालेअश्वनहींहैं तथारथकेचलनेयोग्यमार्गनहींहैं ॥
[illegible]रथादिकोंके अभावहूएभी तास्वप्नमै आपनीअविद्याकेबलसें तिनरथादिकोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तैसेजागरितमै होनेहारेसर्व
सुख तथातडागनदीयां इत्यादिसर्वजगत् स्वप्नमैव्यावहारिकनहींहैं ॥ केवलआपनीअविद्याकरिके यहविज्ञानमय तास्वप्नअवस्था
मै तिनसर्वकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तास्वप्नअवस्थामै दृग्रूपयहआत्मा उत्पन्नभयेमिथ्याभूतसर्वपदार्थोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ औरयहआत्माप्रा ॥१२२॥
णकरिके यास्थूलशरीरकीरक्षाकरेहै ॥ वास्तवसेंआपअसंगहूआभी जिनजिनविषयोंमै याकीकामनाहै तिनतिनविषयोंकूं प्राप्तहोवे
है ॥ तथातास्वप्नअवस्थामै देवादिउत्तमदेहोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ तथापशुपक्षीआदिनीचदेहोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेअनंतशरीरोंकूं धा
रणकरताहूआ तथास्त्रीआदिकोंकेसाथ मोदमानहूआ तथासिंहादिकोंसेंभयकूंप्राप्तहूआ यहआत्मास्वप्नकूं अनुभवकरेहै ॥ आरा

ममस्यपश्यंतिनतंपश्यतिकश्चन ॥ अर्थयह हेजनक अज्ञानीपुरुष याआत्माकीक्रीडाकेस्थानस्वप्नरूपसर्वजगत्कूंहीदेखेहैं तांद्रष्टा आत्माकूं कोईदेखेनहीं ॥ जागरितस्वप्नदोनोंतुल्यहैं दोनोंअवस्थामै आत्मास्वप्रकाशहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामै जोस्वप्रकाशताश्रुतिमै वर्णनकरीहै सोमुमुक्षुकेबोधनवासतेहै ॥ जागरितअवस्थामै सूर्यादिकप्रकाशकोंके संकीर्णहोनेसें आत्माकीस्वयंज्योतिरूपता मुमुक्षुजनोंकूं निर्णयहोवेनहीं ॥ औरसुषुप्तिअवस्थामै मनआदिसर्वकेलीनहोनेसें विशेषज्ञानकाअभावहै ॥ यातें मुमुक्षुजनकूं तासुषुप्तिअवस्थामै कोईव्यवहारप्रतीतहोवेनहीं जाव्यवहारकासाधक आत्माअंगीकारकरें ॥ यातेंतिनजागरितसुषुप्ति इनदोनोंअवस्थाओंकूंत्यागकरि केवलस्वप्नअवस्थामै श्रुतिभगवतीने आत्माकीस्वप्रकाशता निरूपणकरीहै ॥ ऐसेउपदेशकूंग्रहणकरिके राजाजनक याज्ञवल्क्यकूंयहकहताभया ॥ हेमुने आपने मेरेतांईउपदेशकराहै यातें आपकेतांईमै एकसहस्रगौंदेताहूं ॥ औरहेभगवन् स्वप्नअवस्थामै आत्माकीस्वप्रकाशतातोकही परंतु स्वप्नअवस्थामै भयशोकादिसंसारधर्मसेंरहित यथार्थज्ञानकीप्राप्तिवासते आपउपदेशकरो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेराजन् यहविज्ञानमयआत्मा स्वप्नअवस्थामै अनेकप्रकारकीक्रीडाकूंकरताहूआ सुखदुःखकूंअनुभवकरिके सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरस्वप्नअवस्थामै जिनपुण्यपापकेंफलसुखदुःखकूं अनुभवकरेहै ॥ तिनसुखदुःखकेसंबंधसें यहआत्मारहितहै ॥ असंगोह्ययंपुरुषः ॥ अर्थयह ॥ जिसहेतुसें यहआत्माअसंगहै इसीवासतेयहआत्मा सुखदुःखादिसंसारधर्मोंसें संबंधकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ हेजनक जैसेएकमहामत्स्य नदीके पूर्व तथापरतीरमैविचरेहै औरतिनदोनोंतीरोंसें आपअसंगहै तथाभिन्नहै ॥ तैसेयहआत्मा जागरितस्वप्नइनदोनोंस्थानोंकूं प्राप्तहोवेहै औरतिनस्थानोंकेसंबंधसेंरहितहोनेसें तिनस्थानोंसेंभिन्नहै ॥ औरजैसे श्येनपक्षी वागरुडपक्षी अनेकप्रकारकीचेष्टासें श्रमकूंप्राप्तहूआ आपनेपक्षोंकूंसंकोचकरिके नीडविषेधावनकरेहै ॥ तैसेयहविज्ञानमय जागरितस्वप्नमै भ्रमणकरणेसें श्रमकूंप्राप्तहूआ आपनेनीडरूपब्रह्ममै आनंदप्राप्तिवासते धावनकरेहै ॥ पूर्वकहीहितानामानाडीयोंसें आपनेस्वरूपभूत ब्रह्म

 नंदकूंप्राप्तहूआ नामरूपप्रपंचके ज्ञानसेंरहितहोवेहै ॥ जैसेआपनीप्रियास्त्रीसें गाढआलिंगनकरणेवाला कामीपुरुष सुखकूंअनुभवकर
ताहूआ बाह्यघटादिकोंकूं अंतरदुःखादिकोंकूंजानेनहीं ॥ तैसेसुषुप्तिअवस्थाविषे अंतःकरणरूपउपाधिकेलीनहोनेसें ब्रह्मकेसाथएकताकूं
॥१६॥ प्राप्तहूआ यहविज्ञानमय बाह्यअंतरप्रपंचकूं जानेनहीं ॥ सुषुप्तिअवस्थामै जिसब्रह्मकेसाथ अभेदभावकूं यहविज्ञानमयप्राप्तहोवेहै सोब्र
ह्म सर्वकाम पापशोकादि अनात्मधर्मोंसेंरहितहै ॥ औरतासुषुप्तिअवस्थामै ब्रह्म स्थूलशरीरादिकोंकेसंबंधसेंरहितहै ॥ याविज्ञानमयकूं
ताब्रह्मसें अभिन्नहोनेसें ताविज्ञानमयकापिताअपिताहोवेहै ॥ माताअमाताहोवेहै ॥ ऐसेयास्थूलशरीरके सर्वधर्मोंसेंरहितहूआ तथापु
ण्यपापकेफलसुखदुःखसेंरहितहूआ सर्वशोकादिकोंसेंरहितहोवेहै ॥ औरहेजनक सुषुप्तिअवस्थामै नामरूपप्रपंचकूं आत्माजानेनहीं सो
आत्मानेप्रपंचकूं नजानना प्रपंचकेहीअभावहोनेसेंहै ॥ कोईआत्माकेअभावसेंनहींहै ॥ जिसहेतुसें साक्षीकूटस्थआत्माकी स्वरूपभूतजा
दृष्टिहै तादृष्टिका कदाचित्नाशहोवेनहीं ॥ औरतासुषुप्तिअवस्थामै साभासअंतःकरणनहींहै चक्षुआदिकरणनहींहैं रूपादिविषयनहीं
हैं ॥ यातेंहीताअवस्थामै नामरूपप्रपंचकूं आत्माजानेनहीं ॥ ऐसेहीसुषुप्तिअवस्थामै घ्राणकरिगंधकूं जानेनहीं ॥ रसनाकरिरसकूंजाने
नहीं ॥ वाणीकरि शब्दकूंकथनकरेनहीं ॥ श्रोत्रकरि ताशब्दकूंश्रवणकरेनहीं ॥ मनकरि किंचित्मननकरेनहीं ॥ त्वगिंद्रियकरिस्पर्श
करेनहीं ॥ बुद्धिकरि किसीकेनिश्चयकूंकरेनहीं ॥ पूर्वकहीरीतिसें तासुषुप्तिमै प्रमाताप्रमाणप्रमेयका अभावहोनेसें श्रोत्रादिइंद्रियोंकरि
शब्दादिकोंकेज्ञानहोवेंनहीं ॥ जागरितस्वप्नमै साभासअंतःकरणरूपप्रमाताहै इंद्रियादिरूपप्रमाणहैं रूपादिविषयहैं ॥ इसीवासते जा ॥१२३॥
गरितस्वप्नमै भिन्नभिन्नरूपादिकोंकूं तिननेत्रादिकोंकरिके देखेहै ॥ ऐसेउपाधिकरि तीनअवस्थाकूं प्राप्तहोनेवालाआत्मा वास्तवसेंशुद्ध
है ॥ सलिलएकोद्रष्टाऽद्वैतोभवति ॥ अर्थयह ॥ हेजनक यहआत्मा शुद्धजलकीन्यांई शुद्धहै यातेंताआत्मामै विजातीयभेदनहीं ॥
एककहनेसें सजातीयभेदकावारणकरा ॥ अद्वैतहैनाम द्वितीयहस्तपादादिकोंकरिके होनेहारेस्वगतभेदसेंरहितहै ॥ ऐसेविजातीय

सजातीय स्वगतभेदसेंरहितहोनेसें यहआत्मास्वप्रकाशद्रष्टाहै तथापरमपुरुषार्थरूपहै ॥ औरविज्ञानमयआत्माकी यहआत्माहीपरमग तिहै ॥ ब्रह्मलोकादिकोंकीगतितौ अपरमहैं ॥ तिनसर्वगतियोंसें यहआत्माही गतिनाम परमगंतव्यस्थानहै ॥ औरकुबेरकीसंपत्की न्यांई परमसंपत्रूपहै तथास्वप्रकाशपरमानंदरूपहै ॥ एतस्यैवानंदस्यान्यानिभूतानिमात्रामुपजीवंति ॥ अर्थयह ॥ इसआनंदरूपआ त्माके लेशमात्रआनंदकूंग्रहणकरिकै चक्रवर्त्तीराजासेंलेकरि हिरण्यगर्भपर्यंत सर्वभूतआनंदीहोइरहेहैं ॥. चक्रवर्त्तीराजासेंलेकरि हि रण्यगर्भपर्यंत शतशतगुणअधिकआनंदकह्याहै सोतैत्तिरीयउपनिषत्मै हमकथनकरिआयेहैं ॥ ऐसेउपदेशकूं श्रवणकरिके राजा यहकहताभया ॥ हेभगवन् आपनेमेरेतांईविद्याकाउपदेशकराहै यातें सहस्रगौवोंकूं मै आपकेतांईदेताहूं ॥ औरजिसउपदेशसें मे रामोक्षहोवे ताउपदेशकूं आपकृपाकरिकेंहो ॥ राजाकेमनमै अभिप्राययह जोवास्तवसें असंगआत्माभी अविद्याकरि जागरितस्वप्नके भोगप्रदकर्मोंकेक्षीणहोनेसें सुषुप्तिमै ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ पुनः तिनकर्मोंकरि जागरितस्वप्नकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अवस्थात्रयसेंविवेककरे भी जन्ममरणरूपसंसारकेहेतु अविद्याकामकर्मके युक्तियोंकरि ननिराकरणकरणेसें याउपदेशसेंभी मुक्तिहोवेनहीं ॥ यातेंकर्तृत्वभो क्तृत्वादिकोंकानिवर्त्तक मोक्षकेकरणेहारा अबउपदेशकरो ॥ ऐसेप्रश्नकूंश्रवणकरि याज्ञवल्क्यमुनिभयकूं प्राप्तहोतेभये ॥ भयप्राप्तहो नेमैनिमित्तयह ॥ जोमेरेहजारोंशिष्यहैं परंतुयाजनकराजाकेसदृश कोईबुद्धिमान्नहींहै ॥ जिसजनकने एकवरकरिके संपूर्णमेरीविद्या ग्रहणकरीहै ॥ वररूपपाशकरिकै मैनिरुद्धहूआ अबविद्याकूंकहूं ॥ ऐसेमनमैविचारकरि अविद्याकरिप्राप्तहोनेहारेसंसारकूं प्रथमयाज्ञव ल्क्यमुनि वर्णनकरतेभये ॥ हेजनक जैसेस्वप्नकेभोगप्रदकर्मकेक्षीणहोनेसें यहजीव जागरितकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेशरीरकेनिमित्तभूत प्रारब्धकर्मकेक्षीणहोनेसें अन्यशरीरकूं जीवप्राप्तहोवेहै ॥ पूर्वशरीरकेत्यागमै दृष्टांतकूंश्रवणकरो ॥ जैसेकिसीधनीका कोईशकटअनेक पदार्थोंकरिपरिपूर्णहोवे ॥ जबसोधनी किसीनगरमै शकटसहित गमनकरेहै ॥ तबसोशकट अनेकपदार्थोंकरिपूर्णहोनेसें मार्गविषे श

241

ब्दोंकूंकरताहूआ मंदमंदगमनकरेहै ॥ ऐसेजीवरूपीधनीका पुण्यपापरूपीपदार्थोंसें पूर्णहूआ सूक्ष्मशरीररूपीशकट यास्थूलदेहके त्या गकालमें नानाप्रकारकेशब्दोंकूंकरताहूआपरलोकविषेगमनकरेहै ॥ मरणकालमें प्रियपुत्रस्त्रीआदिकोंकेवियोगसें यहकहेहै ॥ हापुत्र हाजाये नवयौवने हाधनजोमेरेकूं बहुतक्लेशोंसें प्राप्तभयाथा हामित्र हाबंधुजन ॥ धिक्कारहैमैंपापीकूं जोइनकूंत्यागकरिअत्यंतदूरमार्ग विषे एकलाहीमैंचलाहूं ॥ औरमैंनेबालकोंकूं बहुतताडनकराहै ॥ तथादेवतावोंकेमस्तकमें आपनेपादोंकास्थापनकराहै ॥ औरजिस माताने मेरेकूं बहुतदुःखोंसेंउत्पन्नकरा तथामेरामलमूत्र आपनेहस्तोंसें जामाताने उठाया तथाबहुतयत्नोंसें मेरापालनकरा तामाताका मैंनेपालन नकरा ॥ उलटातामाताकूं मैंनेदुःखदीया तथातामाताकूं दुःसहकठोरवचनकहे ॥ जामाताकाउपकार किसीप्रकारसें दूरन हींहोइसकता तामाताकेहितवचन मैंनेअंगीकारनकरे ॥ केवलआपनीस्त्रीके तथाआपनेशरीरके पालनपोषणमैंही आसक्तरहा ॥ धि क्कारहैमेरेकूं जिसमैंने ऐसेंउपकारकरणेवालीमाताका तिरस्कारकरा ॥ औरपिता तथा वेदवेत्ताब्राह्मण तथासंतजन तथा सुहृद्जन इत्यादिकोंकूं मैंनेकठोरवचनकहे ॥ औरअभक्ष्यमांसादिमैंनेभक्षणकरे ॥ औरअपेयमदिरादि मैंनेपानकरे ॥ औरलोकवेदविरुद्धही स र्वकर्मकरे ॥ यौवनअवस्थामें प्रियायुवतीकाहीचिंतनकरा ॥ जैसेउत्तमपुरुष आपनेकल्याणवासते शिवविष्णुआदिदेवतावोंकास र्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तैसेयौवनअवस्थाविषे आपनी तथापरकीस्त्रीयोंकाहीमैंनेचिंतनकरा ॥ तिनस्त्रीयोंकीकूकरसूकरयोनियोंमैंभीप्राप्ति होतीरही तिनक्लेशकरणेहारेविषयोंकाहीध्यानकरा ॥ औरआपनेकल्याणवासते तिनशिवविष्णुआदिकोंका ध्यानकरानहीं ॥ हा म हानशोकहै यहदुर्लभमानुष्यदेह व्यर्थहीखोइदीया ॥ औरदुष्पूरलोभकेनित्यवृद्धहोनेसें साधुवोंके तथाब्राह्मणोंके गृहक्षेत्रधनादिक मैंने हरलीये ॥ ऐसेयौवनअवस्थामें संपूर्णदिन लोभकरिके मैंनेव्यतीतकरे ॥ औरसर्वरात्रि स्त्रीयोंसेंक्रीडाकरतेही व्यतीतकरी ॥ औरजे ब्रह्महत्यादिघोरपाप मैंनेकरेहैं तेपापमेरेकूं अबमहानदुःखदेवेंगे ॥ जबमैंवृद्धअवस्थाकूंप्राप्तभया तबकामक्रोधलोभादि अत्यंतअधिक

होइगये ॥ तिनकामक्रोधलोभादिकोंकरि मैनें असमर्थहोनेसें अत्यंतदुःखकूंही अनुभवकराहै ॥ औरयावृद्धअवस्थामै पुत्रस्त्रीआदिकोंकरि
कै महान्तिरस्कारकूं मैनेसहनकराहै ॥ औरशरीरतौ मेरासर्वथा जीर्णहोइगया परंतुकामक्रोधलोभादिवैरी जीर्णनभये ॥ जैसे काष्ठोंक
रि अग्नि दिनदिनविषे प्रज्वलितहोवेहै ॥ तैसेदिनदिनविषे यावृद्धअवस्थामै मेरेकामक्रोधादि वृद्धिकूंप्राप्तहोतेगये ॥ अबमृत्युभी मेरेमार
णेवासते समीपअ[illegible]याहै ॥ हाकष्टहै मेरेकूंकोईकाटताहै ॥ जैसेहिंसकपुरुषपशुकोहिंसाकरेहैं तैसेमेरेअंगोंकूं कोईकाटताहै ॥ जैसेब
हुतसूचोयोंकरि कोईपुरुष किसीकेशरीरकाभेदनकरें ॥ तैसेमेरेअंगोंकूं कोईभेदनकरिरहाहै मेरेकूंदिखतानहीं ॥ औरमेरेहस्तपाद
[illegible]जडहोतेजावेहैं ॥ जैसे दुर्दांतपशु आमनेवशहोवेनंहीं तैसेनेत्रश्रोत्रमनआदि मेरेअधीनरहेनहीं ॥ नेत्रोंसें मेरेकूंकुछ
दिखतानहीं श्रोत्रोंसें श्रवणहोवेनहीं ऐसेऔरसर्वइंद्रियोंके व्यापारहोवेंनहीं ॥ जाठरअग्नि पवनसहितहूआ मेरेशरीरका दाहकरि
रहाहै ॥ जैसेकेईकोटिवृश्चिक किसीपुरुषकूं वारंवारकाटेंतिनकेकाटनेसें जितनीतापुरुषकूं पीडाहोवेहै ॥ तैसीहीअबमरणकालमै मेरे
कूंपीडाहोइरहीहै ॥ हेजनक ऐसेअनेकप्रकारकेशब्दोंकूं उच्चारणकरताहूआ यास्थूलदेहका त्यागकरेहै ॥ जैसेसुषुप्तिअवस्थामै यहजी
वविशेषज्ञानसेंरहितहूआ ब्रह्मानंदकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसेमरणकालमै विशेषज्ञानसेंरहितहूआ यहजीव दीर्घऊर्ध्वश्वासलेताहूआ कार
णोपाधिकईश्वरसें अभिन्नहोवेहै ॥ जबजराअवस्थासें तथाज्वरादिकव्याधियोंसें अत्यंतकृशताकूं यहदेहप्राप्तहोवेहै ॥ तबयादेहकात्याग
करेहै ॥ जैसेआम्रादिकफल पक्वहूए पृथिवीपर अवश्यगिरेहैं ॥ तैसेशरीरकेहेतु प्रारब्धकर्मके क्षीणहोनेसें जीवआत्मा यादेहकात्याग
करेहै ॥ यादेहकूंत्यागकरि पापोंकीअधिकताहोनेसें अनेकप्रकारकीनरकोंमै पीडाकूंअनुभवकरेहै ॥ जबीपूर्वदेहकेउत्पादक वास
नातथाकर्मके तुल्यहीवासनातथाकर्महोवें तबपूर्वदेहकेसदृशही दूसरेदेहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ विनाब्रह्मबोधसें यासूक्ष्मशरीरका विनाश
होवेनहीं ॥ हेजनक जैसेराजाकेकिंकरादि किसीदेशांतरसेंआनेवालेआपनेराजाकी प्रतीक्षाकरेहैं ॥ तैसेजीवजबपूर्वस्थूलदेहका त्याग

करेहै तबदूसरे स्थूलशरीरकेजनक जेभूतहैं तेभूतदूसरेशरीरमै याजीवकीप्रतीक्षाकरेहैं ॥ हेराजन् जबयहजीवअन्यलोकमैगमनकरेहै
तामैदृष्टांतकूंश्रवणकरो ॥ जैसेराजाकेकिसीदेशके गमनसमयमै ताराजाकेभृत्यादिक संपूर्णसाथहीगमनकरेहैं ॥ तैसेजबमरणकालमै
॥१८॥ यहजीव ऊर्ध्वश्वासोंकूंलेताहै तबवागादिइंद्रिय मुख्यप्राणसहित याजीवकेसाथही गमनकरेहैं ॥ तबयहशरीर श्मशानभूमिकेयोग्यहो
वेहैइति ॥ पूर्वज्योतिब्राह्मणमै प्रथमआत्माके स्वप्रकाशरूपकूं कथनकरिकै अंतमै आविद्यकसंसारकावर्णनकरा ॥ तासंसारकेनिरूप
णवासते तथासंसारकीनिवृत्तिकेनिरूपणवासते यहशारीरकनामाब्राह्मणहै ॥ जबयहशरीर अतिनिर्बलताकूंप्राप्तहोवेहै तबयहजीव
आपनेपुत्रादिकोंकूंजानेनहीं तथावागादिक इंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै हृदयमैस्थितब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ ताब्रह्ममैएकताकूंप्राप्तहूआ नेत्रादि
कइंद्रियोंसें दर्शनादिकरेनहीं ॥ जबीमरणकालमै पृथिवीपर शयनकरेहै तबपासमै स्थितपुरुष यहकहेहैं ॥ जोअबयहनहींदेखता
तथानहींश्रवणकरता नहींमननकरता ॥ जबसर्वइंद्रियोंकूं उपसंहारकरि हृदयमैस्थितहोवेहै तब हृदयकानाडीरूप अग्रभाग चैत
न्यकेआभासकरिकै प्रकाशितहोवेहै ॥ ताप्रकाशितनाडीरूपमार्गकरि नेत्रश्रोत्रमुखनासिकादिद्वारसें प्राणोंसहितबाह्य गमनकरेहै ॥
उदारनेत्रवालेपुरुष बाह्यगमनकरेहै ॥ लिंगइंद्रियसें कामीकानिकसनाहोवेहै ॥ अन्नरसमैआसक्तपुरुष मुखसेंनिकसेहै ॥ गंधमैआसक्त
पुरुष नासिकासेंनिकसेहै ॥ गायनकेजाननेवाला श्रोत्रसेंनिकसकरि गंधर्वलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ नेत्रसें निकसकरि सूर्यकूंवाचंद्रकूंवा ॥१२५॥
अग्निकूंप्राप्तहोवेहै ॥ मस्तकसेंनिकसनेवाला ब्रह्मलोककूंप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेनेत्रश्रोत्रादिमार्गोंकेज्ञानवालाहूआ पुनः भाविशरीके ज्ञानवा
लाहोवेहै ॥ पूर्वजन्मकीविहितनिषिद्धउपासना तथाविहितनिषिद्धकर्म तथापूर्वजन्मकेसंस्कार यहतीनों इसजीवकेसाथगमनकरेहैं ॥ औ
रयहजीव स्थूलशरीरविनास्थितहोवेनहीं ॥ जैसेतृणजलौकानामकजीव उत्तरदूसरेतृणकूंग्रहणकरिकेही पूर्वतृणकात्यागकरेहै ॥ तैसे
यहजीवभी उत्तरदेहकूं ग्रहणकरिकैही पूर्वदेहकात्यागकरेहै ॥ औरताआत्मामै गमनआगमनादिकसर्व बुद्धिकेसंबंधकरिकै आरो

पितहैं ॥ वास्तवसेंआत्मामै गमनागमनादिनहींहैं ॥ जैसेस्वर्णकार स्वर्णकूंग्रहणकरिके पूर्वरचनासें नवीनकुंडलादिरूप रचनाकूं करेहै ॥ तैसेआत्मा अविद्यारूपीस्वर्णसें नवीनही देहकूंउत्पन्नकरेहै ॥ पूर्वशुभकर्मोंसें उत्तमपितृलोकमै तथागंधर्वलोकमै वा विराट्लोकमै वा हिरण्यगर्भलोकमै देहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ मिश्रितकर्मोंसें मनुष्यादिदेंहोंकूंप्राप्तहोवेहै ॥ अधमकर्मोंसें श्वानशूकरादिदेहोंकूं प्राप्तहोवेहै ॥ यहबंधकेवलउपाधिकरिके ही कल्पितहैवास्तवनहीं ॥ याअर्थकेकहनेवासते तिनउपाधियोंकानिरूपणकरेहैं ॥ हेजनक यहब्रह्महीबुद्धिकेसाथ अध्यासकरणेसें विज्ञानमयकहीयेहै ॥ मनकेसाथअध्यासकरणेसें मनोमयकहीयेहै ॥ ऐसे प्राणमय चक्षुर्मय श्रोत्रमयकहीयेहै ॥ पृथिवीकेशरीरकेसाथ अध्यासकरणेसें पृथिवीमयकहीयेहै ॥ ऐसेहीआपोमय वायुमय आकाशमय तेजोमय तिनतिनभूतोंके देहोंकेसाथ अध्यासकरणेसें वायुमयइत्यादिरूपजानने ॥ औरपशुप्रेतादिकोंकेशरीर अतेजोमयहैं ॥ आत्माभीतिनशरीरोंसाथमिलकरि अतेजोमयकहीयेहै ॥ कार्यशरीरोंकेसाथमिलकरि अनेकवृत्तियोंकेभेदकरिआत्मा काममय अकाममय क्रोधमय अक्रोधमय धर्ममय अधर्ममय सर्वमय इत्यादिरूपवालाहोवेहै ॥ प्रत्यक्षघटादिरूप आत्माहीहोवेहै यातें आत्माकूं इदंमययहकह्याहै ॥ परोक्षपदार्थरूपभीआत्माहीहोवेहै यातें आत्माकूं अदोमयकह्याहै ॥ देहइंद्रियादिकोंकेसाथमिलकरि आत्माजैसेकर्मकरेहै तैसेहीदेहकूंप्राप्तहोवेहै ॥ औरयासंसारका असाधारणकारणतौकामहै ॥ जैसापुरुषकेकामहोवेहै तैसाहीतापुरुषकानिश्चयहोवेहै ॥ तानिश्चयकेअनुसारही पुरुषकर्मकरेहै ॥ जैसेकर्मकरेहै तिनकर्मोंकेअनुसार तैसेहीफलकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जिसपदार्थमै इसपुरुषका दृढआसक्तमनहै कर्मोंसहित तिसपदार्थकूंहीप्राप्तहोवेहै ॥ यामनुष्यदेहमै जेकर्मकरेहैं तिनकर्मोंकेफलकूं परलोकादिकोंमैभोगकरि यापृथिवीलोकमै पुनःप्राप्तहोवेहै ॥ पुनःपृथिवीमैकरेकर्मकेफलकूं भोगकरियापृथिवीमंडलमै पुनःप्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेकामनावालापुरुष यासंसारमै घटीयंत्रकीन्यांई प्राप्तहोवेहै यातेंमुमुक्षुजनोंकूं कामनासेंरहितहोनाचाहिये ॥ और हेजनक जोपुरुष आत्माविषेही कामनावालाहै सोईपुरुष आप्तकामहै ॥ यातेंहीतापुरुषकी अंतरबाह्य

सर्वकामना निवृत्तभयीहैं ॥ नतस्यप्राणाउत्क्रामंति ब्रह्मैवसन् ब्रह्माप्येति ॥ अर्थयह ॥ निवृत्तकामतिसजीवन्मुक्तकेशरीरसें बाह्यप्राण
निकसेंनहीं ब्रह्मविषेहीलीनहोवेहैं ॥ औरसोज्ञानी पूर्वब्रह्मरूपहूआही ब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ कामनाहीप्रतिबंधथा कामनाकेनिवृत्तहोनेसें
॥१९॥ शरीरकालभेही ब्रह्मकूंप्राप्तहोवेहै ॥ जैसेसर्प आपनीत्वचाकूं आपनास्वरूपनजानताहूआ तांत्वचाकात्यागकरेहै ॥ तैसेजीवन्मुक्तपुरुष
स्थूलसूक्ष्मशरीरमे आत्मत्वबुद्धिकूंत्यागकरि अशरीरसाक्षीअमृतब्रह्मविज्ञानघनरूपसेंस्थितहोवेहै ॥ ऐसेजनकउपदेशकूंग्रहणकरिकै यहक
हताभया ॥ हेभगवन् आपकेतांईमैसहस्रगौदक्षिणादेताहूं ॥ राजानेतत्त्वज्ञानतौश्रवणकरा परंतुतातत्त्वज्ञानकेकारण साधनोंकेजाननेकी
इच्छावालाहूआ पूर्वकीन्यांई प्रश्नकरताभया ॥ जनकउवाच ॥ भगवन् आपज्ञानकेसाधनोंकूंभीकथनकरो ॥ तबयाज्ञवल्क्यमुनि आ
त्मज्ञानकेसाधनोंकूं मंत्रोंसेंकथनकरतेभये ॥ तिनमंत्रोंकेअर्थ ईशावास्य कठ इत्यादिउपनिषदोंमैहमकथनकरिआयेहैं ॥ जिनमंत्रोंके
अर्थनहींकहे तिनमंत्रोंकासंक्षेपसेंअर्थकहेहैं ॥ हेजनक यहज्ञानरूपमोक्षका मार्गसूक्ष्महै तथासंसारसमुद्रकेपारकरणेहाराहै तथावैदिकहो
नेसें यहज्ञानमार्गपुराणहै ॥ औरयाज्ञानमार्गकरिके ब्रह्मचर्यादिसाधनयुक्तहूएविद्वान् यादेहकूंत्यागकरि मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ हेजनक
[illegible] मेरेकूंप्राप्तभयाहै ॥ ऐसेज्ञानमार्गकीस्तुतिवासते इतरनाडीआदिमार्गोंकीनिंदाकथनकरीहै ॥ पुनःज्ञानमार्गविषेस्थित
पुरुषके क्लेशोंकीनिवृत्तिकूं यहमंत्रकथनकरेहै ॥ आत्मानंचेद्विजानीयादयमस्मीतिपुरुषः किमिच्छन्कस्यकामाय शरीरमनुसंज्वरेत् ॥
अर्थयह ॥ यानित्यअपरोक्षपूर्णआत्माकूं हृदयमैस्थित क्षुधातृषादिधर्मोंसेंरहित जबीअधिकारीजाने तबआत्मासेंभिन्न किसफलकी
इच्छाकरताहूआ किसभोक्ताकेवासते तथाकिसफलकीप्राप्तिवासते शरीरोंकेदुःखीहोते आपदुःखीहोवे ॥ तात्पर्ययह विवेकीपुरुषप्रार ॥१२६॥
ब्धानुसार शरीरोंके दुःखीहोतेभी आपकूं असंगनिर्विकारमानताहूआ तपायमानहोवेनहीं ॥ याश्रुतिकेव्याख्यानकरते श्रीविद्यारण्य
स्वामीने पंचदशीनामकग्रंथमै चिदाभासकीसप्तअवस्थाकथनकरीहैं ॥ अज्ञान आवरण विक्षेप परोक्षज्ञान अपरोक्षज्ञान शोकापगम

निरंकुशतृप्ति यहसप्तअवस्थाहैं ॥ जैसे सरलमतिवाले दशपुरुष नदीसैंपारउतरकरि दशमपुरुषकूं नदीमै वहगयामानतेभये ॥ तादश
मकूं नजानानायहहीअज्ञानहै ॥ दशमनहींहै औरदशमभाननहींहोता इनदोनोंव्यवहारोंकाकारण असत्त्वापादक तथाअभानापादक
दोप्रकारकायहआवरणहै ॥ दशमकेशोकसें रोनापीटनारूपविक्षेपहै ॥ कृपालुपुरुषकेकहनेसें दशमकहींजीवताहै यहज्ञानपरोक्ष
ज्ञानहै ॥ दशमतूंहैं यहवचनश्रवणकरते दशममैहूं यहज्ञान अपरोक्षज्ञानहै ॥ दशमके लाभहोनेसें शोककीनिवृत्तिकानाम शोकाप
गमहै ॥ दशमकेलाभहोनेसेंही पश्चात्होनेहारेपरमआनंदकानाम निरंकुशतृप्तिहै ॥ तैसेयहचिदाभासरूपजीव विषयोंमैआसक्तहू
आ[illegible]स्वरूपकूंजानेनहीं आपनेस्वरूपकूंनजानना यहअज्ञानरूप प्रथमअवस्थाहै ॥ औरप्रसंगसें यहकहेहै कूटस्थनहींहै ॥ औरकूट
स्थ नहींभानहोता यहद्विविधआवरणहै ॥ कर्त्ताभोक्तासुखीदुःखी कामीक्रोधी क्षुधातृषावाला बलीनिर्बलइत्यादिरूपविक्षेपहै ॥ गुरुकेउप
देशसें प्रथमकूटस्थहै ऐसाज्ञानहोना परोक्षज्ञानहै ॥ विचारकरणेसें पश्चात् मैही कूटस्थहूं ऐसेअपरोक्षज्ञानकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ताअपरो
क्षज्ञानकूं प्राप्तहूआ कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूप शोककूं निवृत्तकरेहै ॥ औरकरणेयोग्य मैनेकरिलीया प्राप्तहोनेयोग्यकूंमै प्राप्तभया ऐसीनिरं
कुशतृप्तिकूं प्राप्तहोवेहै ॥ ऐसेसप्तअवस्थाप्रसंगसें दिखलाईहैं ॥ और हेजनक यहआत्मा अनेक अनर्थयुक्तदेहमै प्रविष्टहूआभी स्वयं
ज्योतिरूपहै तथासर्वअनात्मधर्मोंसेंरहितहै ॥ यहआत्माही सर्वप्रपंचकाकर्त्ताहै याआत्माकेजाननेवालाब्राह्मणभी सर्वप्रपंचकाकर्त्ता
होवेहै ॥ तथाताब्राह्मणकाही सर्वप्रपंचआत्माहै सोप्रपंचताब्राह्मणसेंभिन्ननहींहै ॥ ऐसेयथार्थब्रह्मकेस्वरूपकूं निश्चयकरो ॥ याभारतखं
डमै मानुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकरि मानुष्यदेहमैभी शूद्रादिकअनधिकारीदेहसेंभिन्न उत्तमदेहकूं प्राप्तहोइकरि तथारोगादिउपद्रवोंकेन
होतेभी जबहमआपनेस्वरूपकूं नजानेतबहम अनंतवारजन्ममरणादिरूप अत्यंतहानिकूं प्राप्तहोवेंगे ॥ यातें ऐसेदुर्लभ मानुष्यदे
हकूं प्राप्तहोइकरि क्षणिकविषयसुखकूं त्यागकरि जेपुरुषआत्माके यथार्थरूपकूं जानतेहैं तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवेहैं ॥ और आत्मा

के यथार्थरूपकूं नजाननेवालेपुरुषोंकेवासते चौरासीलक्षयोनिवर्त्तमानहैं ॥ तिनयोनियोंविषे तेअज्ञानीपुरुषविषयरसास्वादी 'म
हान्दुःखकूं अनुभवकरेहैं ॥ हेजनक सूर्यादिज्योतियोंकाज्योति सर्वकाअधिष्ठान आकाशकीन्यांईव्यापक तथाअजन्मा नित्यशुद्धबु
॥२०॥ द्धमुक्तस्वभावयाआत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशसें जानकरिआत्माकारवृत्तिकूंही मुमुक्षुपुरुषकरे ॥ औरअनात्मवार्त्ताकेकहनेसें कंठशुष्कहो
वेहै औरमनकूंविक्षेपहोवेहै ॥ ऐसेआत्माकूं जाननेवालेविद्वान्की पापकर्मोंसेंकिंचितहानिनहीं पुण्यकर्मोंसेंकिंचित्वृद्धिनहीं ॥ अभिप्रा
ययह जोविद्वान् सर्वप्रपंचकूंमिथ्याजाननेवाला तथापरमानंदस्वरूप आपनेकूंमानताहूआ पापोंविषे कर्तृत्वबुद्धिकेअभावसें प्रवृत्तहोवेन
हीं ॥ औरजेपिपीलिकामर्दनादिं अज्ञातपापहैं तिनसेंलिपायमानहोवेनहीं ॥ पूर्वजन्मकेसंचित पुण्यपापोंकाज्ञानरूप अग्निकरि भस्मी
भावहोवेहै ॥ कमलपत्रमैजलकीन्यांई आगामीकर्मलिपायमानहोवेंनहीं प्रारब्धकाभोगकरिनाशहोवेहै ॥ ऐसेसर्वबंधरहितहूआविद्वान्
मोक्षकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेजनक ऐसेआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतेहीवेदकापठन यज्ञ दान तप इत्यादि साधनहैं ॥ और या आत्माकेजाननेकीइ
च्छाकरतेहूए अधिकारीजनविधिपूर्वक विविदिषासंन्यासकूं धारणकरेहैं ॥ और याआत्माकूंजानकरिभी जीवन्मुक्तिकेसुखकीप्राप्ति
[illegible] वित्त लोक इनतीनोंकीएषणाकूं त्यागकरि विद्वत्संन्यासकूं विधिपूर्वकग्रहणकरेहैं ॥ औरहेजनक साधनोंसेंविना जिस
वासते आत्माकी प्राप्तिहोवेनहीं इसीवासते बाह्यइंद्रियोंकेनिरोधरूपदमसहितहोवे ॥ तथाशांतमनहूआ संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरे ॥
तथाश्रद्धातथाशीतउष्णादिद्वंद्वोंकासहनरूपतितिक्षा तथाचित्तकी सावधानता इनसाधनोंसहितहूआ आपनेअंतःकरणमै आपनेस्वरू
पकूंप्रत्यक्षकरे ॥ ताआत्माकेप्रत्यक्षकरणेसें सर्वपुण्यपापादिकोंकूंदूरकरि निःसंदेहहूआ ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवेहै ॥ हेजनक ऐसेअभयब्रह्मकूंतूं ॥१२७॥
प्राप्तभयाहै ॥ जनकउवाच ॥ हेभगवन् आपकीकृपाकरि मै अभयब्रह्मकूंप्राप्तभयाहूं ॥ यातेंमेरेविदेहनामदेशोंकूं आपग्रहणकरो और
मेराशरीरभीआपकीसेवामैलगे मेरेकूंआपनासेवकजानकरिग्रहणकरोइति ॥ ॥ पूर्वयुक्तियोंसेंआत्माकानिरूपणकरा पुनःआगमप्र

धानतासें आत्माकेनिरूपणवासते तथासंन्यासकूंब्रह्मविद्याकी अंगताके निरूपणवासते मैत्रेयीब्राह्मणहै ॥ याउपनिषत्केचतुर्थाध्यायमै तथाषष्ठाध्यायमै पठनकरे मैत्रेयीब्राह्मणका अर्थकहेहैं ॥ ऐसेसूर्यकेशिष्य याज्ञवल्क्यमुनि जनकादिकराजावोंकूं तथाअनेकब्राह्मणोंकूं वेदविद्याकाउपदेशकरतेभये ॥ वृद्धावस्थाकूं प्राप्तहूएयाज्ञवल्क्य विषयोंमै अनेकदोषोंकूंदेखकरि परमवैराग्यकूंप्राप्तहूए संन्यासाश्रम केग्रहणका संकल्पकरतेभये ॥ तायाज्ञवल्क्यमुनिकीदोभार्याहोतीभयी ॥ एककानामकात्यायनीथा दूसरीकानाममैत्रेयीथा ॥ कात्यायनीतौ गृहकार्यमैबहुतनिपुणमति होतीभयी ॥ दूसरीज्येष्ठाभार्यामैत्रेयी परमवैराग्यकूंप्राप्तहोतीभयी ॥ औरसंसारकूं दुःखरूपजानकरि उत्कटमोक्षकीइच्छाकूंकरतीभयी ॥ याज्ञवल्क्यमुनिसंन्यासकेग्रहणकालमै आपनीज्येष्ठाभार्यामैत्रेयीकूं बुलायकरियहकहतेभये ॥ हेमैत्रेयी तेरेकूंतथाकात्यायनीकूं भिन्नभिन्नधनदेकरि मैंतुमाराविभागकराचाहताहूं ॥ औरमेरासंन्यासलेनेकासंकल्पहै ॥ ऐसे वचनकूंश्रवणकरि अबमैत्रेयीकहेहै ॥ सर्वापृथिवीवित्तेनपूर्णास्यात्कथंतेनामृतास्याम् ॥ अर्थयह ॥ हेभगवन् यहधनकरिपूर्ण सर्व पृथिवी जबीमेरेकूंप्राप्तहोवे तबताधनकरि तथाधनकरिहोनेहारे अग्निहोत्रादिकर्मोंकरि क्यामैमुक्तहोवूंगी ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेमैत्रेयी धनकरिकेयालोकमै अनेकभोगप्राप्तहोवेहैं धनकेप्राप्तहोनेसें भोजनआच्छादनादिकोंकरिके तेराजीवनाहीहोवेगा ॥ अमृतत्वस्यतुनाशास्तिवित्तेन ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी मोक्षकीतौ ताधनकरिके आशाभीकरणीनहीं ॥ मैत्रेयीकहेहै ॥ हेभगवन् जिसधन करि मेरामोक्षनहींहोना ताधनकूं मैंक्याकरूंगी ॥ जोआपमोक्षकासाधनजानतेहैं तासाधनकूंही मेरेतांई कृपाकरिकथनकरो ॥ याज्ञवल्क्यउवाच ॥ हेमैत्रेयी तूंमेरेकूं प्रथमभीप्रियरूपसेंज्ञाततथी अबभीमेरेअनुकूलहीकथनकरतीहैं ॥ अबमैतेरेतांई मोक्षकेसाधन आत्मज्ञानकूंकथनकरताहूं तूं सावधानहोइकरिश्रवणकर ॥ प्रथमयाज्ञवल्क्यमुनि आत्मज्ञानकेसाधन वैराग्यकीउत्पत्तिवासते कथनकरेहैं ॥ नवाअरेपत्युःकामायपतिः प्रियोभवत्यात्मनस्तुकामायपतिः प्रियोभवति ॥ अर्थयह ॥ अरेमैत्रेयी वैनाम यहवार्त्तासंसारविषेप्रसिद्धहै

249

भार्याकूंपतिकेप्रयोजनवासते पतिप्रियनहींहै किंतु आपनेप्रयोजनवासतैही भार्याकूंपतिप्रियहै ॥ ऐसेपतिकूं जायाकेप्रयोजनवासते
जायाप्रियनहींहै किंतु आपनेप्रयोजनवासते पतिकूंजायाप्रियहै ॥ हेमैत्रेयी पुत्र धन ब्राह्मणजाति क्षत्रियजाति भूरादिलोक देवता भूत
॥२१॥ इत्यादिसर्वजगत् आपनेप्रयोजनवासतेहीप्रियहै ॥ पुत्रादिकोंकेप्रयोजनवासते पुत्रादिकप्रियनहीं ॥ यातेंऔरसर्वजगत्मै गौणीप्रीति
है आत्मामैमुख्यप्रीतिहै ॥ आत्मावाअरेद्रष्टव्यःश्रोतव्योमंतव्योनिदिध्यासितव्यः ॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी परमप्रीतिकाविषयजोआत्मा
है सोआत्मा साक्षात्कर्त्तव्यहै ॥ ताआत्माकेसाक्षात्कारवासते शास्त्रआचार्यसें श्रवणकर्त्तव्यहै ॥ तथाभेदबाधकयुक्तियोंसें मननकर्त्तव्य
है ॥ तथावारंवारध्यानकर्त्तव्यहै ॥ हेमैत्रेयी आत्माके श्रवणमनननिदिध्यासनपूर्वक प्रत्यक्षकरणेसें सर्वप्रपंचकाज्ञानहोवेहै औरहेमैत्रेयी
भेदरहितयाआत्मासें जोकोईपुरुष ब्राह्मणजाति तथाक्षत्रियजातिकूं भिन्नजानताहै ॥ ताभेदद्रष्टाका ताब्राह्मणजातितथाक्षत्रियजाति
तिरस्कारकरेहैं ॥ नीचजातिकूंप्राप्तहोइकरि तिनब्राह्मणादिउत्तमजातियोंकी प्राप्तिनहोनी यहहीतिनजातियोंकातिरस्कारहै ॥ ऐसेस्वर्गा
दिलोक तथादेवता तथाभूतादिसर्वजगत् ताभेदद्रष्टाका तिरस्कारकरेहै ॥ यातें अभिन्नआत्मामै भेददेखनानहीं ॥ ब्राह्मण क्षत्रिय लोक
[illegible]द्रूपसें यहआत्माही प्रतीतहोवेहै ॥ हेमैत्रेयी जैसे दुंदुभि शंख वीणा इनसेंउत्पन्नभये जेअनेकप्रकारकेविशेषशब्दहैं ॥ तिन
सर्वशब्दोंमैरहणेहारे शब्दत्वरूपसामान्यकेग्रहणविना तिन्नदुंदुभीआदिकोंसें उत्पन्नभयेविशेषशब्दोंका ज्ञानहोवेनहीं ॥ किंतुशब्दत्वरूप
सामान्यके ग्रहणहुयेसेंही तिनविशेषशब्दोंका ज्ञानहोवेहै ॥ तैसे अस्ति भाति प्रियरूपसें व्यापकजोआत्माहै ताआत्माकेभानविना
किसीपदार्थकी प्रतीतिहोवेनहीं ॥ ऐसेयहसर्वजगत् ब्रह्ममैस्थितहै यामै दुंदुभीआदिकदृष्टांतकहेहैं ॥ उत्पत्तिमै अग्निकादृष्टांतहै ॥ जैसे
प्रज्वलितअग्निसें धूमविस्फुलिंगादि उत्पन्नहोवेहैं ॥ तैसेयाविभुआत्मासें पुरुषकेश्वासकीन्यांई चारिवेद इतिहास पुराण विद्या उपनिषत्
मंत्र सूत्र विवरणवाक्यादिसर्वजगतउत्पन्नहोवेहै ॥ अबप्रलयकालमै प्रपंचकीब्रह्ममै अभिन्नताविषे दृष्टांतकहेहैं ॥ हेमैत्रेयी जैसेसर्व नदी

योंकेजलोंका समुद्रआश्रयहोवेहै ॥ तैसें सर्वस्पर्शोंका त्वक् आश्रयहै ॥ रसोंका जिव्हा आश्रयहै ॥ गंधोंका नासिकाआश्रयहै ॥ रूपोंकाचक्षु तथाशब्दोंकाश्रोत्रआश्रयहै ॥ सर्वसंकल्पोंका मनआश्रयहै ॥ ऐसेसर्वविषयोंके इंद्रियोंकूंआश्रयताजाननी ॥ पूर्वकहेदृष्टि सृष्टिवादके अभिप्रायसें शब्दादिविषयोंका श्रोत्रादिइंद्रियकारणहैं ॥ यातेंशब्दादिविषय आपनेकारणश्रोत्रादिकोंमै लीनहोवेहैं ॥ श्रोत्रादिइंद्रिय आपनेकारणआकाशादि भूतोंविषे लीनहोवेहैं ॥ सर्वभूत मायाशबलब्रह्मविषे लीनहोवेहैं ॥ अबआत्यंतिकप्रलयमै दृष्टांतकहे हैं ॥ जैसेलवणकाखंड जलमैगेराहूआ जलभावकूंही प्राप्तहोवेहै ॥ ताविलीनलवणखंडकूं पुनःकोईपुरुष निकाससकेनहीं ॥ तैसेहेमैत्रेयी त्रिविधपरिच्छेदशून्य जोयहविज्ञानघनआत्माहै भूतोंकरि शरीरकेउत्पन्नहोनेसें यहआत्माभीप्रतिबिंबरूपसें उत्पन्नहोवेहै ॥ ब्रह्मवेत्ताकेशरीराकारभूतोंके नाशहोनेसें अमुकदेवदत्तनामामैहूं अमुककापुत्रहूं मेरायहक्षेत्रहै मेरायहधनहै इत्यादिसर्वविशेषज्ञान नष्टहोवेहैं ॥ अबमैत्रेयी प्रश्नकरेहै ॥ हेभगवन् आपनेमेरेतांई मोहकेउत्पन्नकरणेहारा वचनकह्याहै ॥ पूर्वआपने आत्माविज्ञानघनहै ऐसे कह्याथा अबयहकहतेहो जोमृत्युकूंप्राप्तहूआ ज्ञानसेंरहितहोवेहै ॥ यातेंपूर्वउत्तरविरोधहोनेसें मेरेकूंमोह उत्पन्नहोवेहै ॥ याज्ञवल्क्य उवाच ॥ हेमैत्रेयी याशरीरकाही नाशहोवेहै अविनाशीआत्माकानाशहोवेनहीं ॥ औरशरीरकेविनाशहोनेसें मनआदिकोंसेंहोनेहारे विशेषज्ञानका अभावकह्याहै विज्ञानघनस्वप्रकाशनित्यआत्माका कदाचित्नाशहोवेनहीं ॥ और अज्ञानकालमैही अज्ञानीआपकूं भिन्नमानताहूआ स्वभिन्नगंधकूं ग्रहणकरेहै ॥ तथारूपकूंदेखेहै ॥ शब्दकूं श्रवणकरेहै तथावाणीकरि शब्दकाउच्चारणकरेहै ॥ इतरकूंमननकरेहै इतरकूंही निश्चयकरेहै ॥ यत्रत्वस्यसर्वमात्मैवाभूत्तत्केनकंपश्येत्तत्केनकं जिघ्रेत् ॥ अर्थयह ॥ जाज्ञानकालमै इस विद्वान्के सर्वनामरूपप्रपंच आत्मरूपताकूंही प्राप्तभयाहै ॥ ताज्ञानकालमै किसइंद्रियकरि रूपकूंदेखे तथागंधकूंग्रहणकरे तथाकिसकाकथन किसकामनन किसकानिश्चयकरे ॥ विदेहकैवल्यावस्थामै इंद्रियादिकोंकेअभावहोनेसें किसीपदार्थकाभी दर्शन श्रवणमन

ादिहोवेनहीं ॥ और हेमैत्रेयी जाआत्माकरि नामरूप प्रपंचकूं यहपुरुषजानेहै ताआत्माकूं किससाधनकरिजाने ॥ सर्वकेविज्ञाता आत्माकूं कोई नेत्र श्रोत्रादि विषयकरिसकेनहीं ॥ ऐसे याज्ञवल्क्यमुनिमैत्रेयीकूंउपदेशकरिके संन्यासाश्रमकूंग्रहणकरतेभये ॥ और प्रारब्धकूं भोगकरि क्षयकरतेहूए मोक्षकूंप्राप्तहोतेभये ॥ ॥ इतिबृहदारण्यकेषष्ठोऽध्यायः ॥ ॥ ॥ ॐ नमोस्तुतेपूर्णात्मने ॥ पूर्वअध्यायमै निरुपाधिकब्रह्मका निरूपणकरा अबउपाधिविशिष्टआत्माकी उपासनावोंके निर्णयवासते उत्तरकेदोअध्यायहैं ॥ सर्वउपासनावोंके अंगभूत ॐकारदमदानदया इनसाधनोंकेविधानकरणेकीइच्छावालीहूईश्रुति जोउपासनाकाविषयब्रह्महै सो वास्तवसेंशुद्धहै याअभिप्रायसें शुद्धब्रह्मकेस्वरूपकूं मंत्रसेंवर्णनकरेहै ॥ ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ॥ पूर्णस्यपूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥ अर्थयह ॥ प्रथमतत्पदकेलक्ष्यकूं पूर्णकहेहै अदःनाम परोक्षजोतत्पदकालक्ष्यब्रह्महै सोब्रह्मपूर्णहै ॥ अबत्वंपदकेलक्ष्यकूंपूर्णकहेहैं ॥ इदंनाम यहजोनामरूपउपाधिविशिष्ट व्यवहारकाविषयभयाहै ॥ सोभीनिरुपाधिकरूपकरिकेहीपूर्णहै विशिष्टरूपकरिके पूर्णनहीं ॥ ऐसे दोनोंलक्ष्यअंशोंकूं कथनकरिके अबदोनोंवाच्यअंशोंका निरूपणकरेहैं ॥ पूर्णस्यपूर्णमादायनाम पूर्ण जाकीयात्मीब्रह्म [illegible]कीएकरसतारूप पूर्णताकूं ग्रहणकरिके पूर्णहीशेषरहेहै ॥ तात्पर्ययह जोआविद्यकउपाधिकृत धर्मोंकेत्याग करणेसें स्वभावसें शुद्धपरिपूर्णब्रह्महीशेषरहेहै ॥ पश्चात् ॐकारकाध्यानकह्याहै ॥ प्रधानॐकारकी उपासनाकथनकरिके दम दान दयाइनतीनसाधनोंकाविधानकरेहैं ॥ प्रजापतिकेसंतानरूप देवता मनुष्य औरअसुर यहतीनोंप्रजापतिकेसमीप ब्रह्मचर्यकूं करतेभये ॥ प्रथमदेवता प्रजापतिकूं यहकहतेभये ॥ हेभगवन् आपकृपाकरि हमारेतांई उपदेशकरो ॥ प्रजापति दकारअक्षरका उप [illegible] देशकराहै तमदेवता स्वभावसें ॥१२१॥